...त्व माला संख्या ५ Mandal series No. 5

...त्रिय-वंश प्रदीप

द्वितीय भाग

तथा

नौमुसलिम जाति निर्णय

प्रथम भाग

...त्रिय वर्शों की उत्पत्ति व गोत्रादि के विवर्ण के साथ साथ
...मुसलमान बादशाहों का उनके प्रति अत्याचार विवशरूप
से नौमुसलिम बने राजपूतों की शुद्धयर्थ व्यवस्था

जिसे

...त्रिय पं॰ छोटेलाल शर्म्मा M. R. A. S. तथा पुरातत्व
विशारद, व्याख्यान भूषण व महामन्त्री हिन्दू धर्म
वर्णव्यवस्था मण्डल फुलेरा ने रचा ।

...दयानन्द-यन्त्रालय अजमेर में पं॰ शिवदयाल द्वारा मुद्रित

...थम बार } ईस्वी सन १९२८ { मूल्य २॥)
२००० }

ओं अयाते अग्ने समिधा विधेम प्रातस्तोमं
मानं गृभाय । दहाशसो रक्षसः पाह्यस्मान् द्रुहोनि
महो अवद्यात् ॥ ऋ० ४ । ४ । १५ ॥

भावार्थ :—हे परमपूज्य ! परमवन्द्य ! ! जगन्नियन्त
दीश्वर ! ! ! मैंने इस पुस्तक द्वारा तनिकसी सेवा क
उद्योग तो किया पर मुझ अल्पज्ञ से लोक की व आप
सेवा बन न पड़ी इसका मुझे अति दुःख है तथापि
दास पर दया करके सुदामा के तंदुलवत इस कु
स्वीकार करके भविष्य में मेरे साहस को बढ़ावो
द्रोहियों को हम से दूर करो और हमें ऐसी बुद्धि दो
किसी का अपकार न करें।

अल्पमति—

श्रोत्रिय छोटेलाल शर्म

Mandal Series No. 5.

Om Jai Shiv.

KSHATTRIYA VANSH PRADEEP

PART II.

OR.

NAU-MUSLIM-JATI-NIRNAYA.

PART I.

CONTAINS.

Ethnological account of Kshattriya Castes their Customs and Manners before and after their Conversion as Muhammadans, Historical events with Treatment of Muhammadan Kings, quotations of Vedas and Hindu Dharam Shastras for their Purifications and re-admission as Hindus.

Compiled by

Shrotriya Pandit Chhotey Lal Sharma M. R. A. S. London, Research Scholar, Vyakhyan Bhooshan General Secretary Hindu Dharam Varan Vyavastha Mandal Phulera etc.

Author of

Different Six Volumes on Caste Distinction. With all Universal Authorities.

Such as Extracts of Veda, Vedang, Upang, Government Records, Works of European and Civil Indian Officers etc etc. ...

First Edition 2000 Copies } January 1928 { Price Per Copy. Rupees. 2-8-0

विषयानुक्रमणिका

जातियें

शुद्धि पत्र

विशेष निवेदनः—दो भिन्न भिन्न प्रेसों में बड़ी कठिनता से यह ग्रन्थ पूरा होने व हमारे दूर रहने के कारण छापेखाने की भूल से कई अशुद्धियें रहगई हैं जिन में से कतिपय मोटी मोटी अशुद्धियें इस प्रकार हैं आशा है कि पाठक सुधार कर पढ़लेंगे।

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ
आर	और	५४७
हा	हों	,,
वार्ता	बार्ता	५४८
केबल	केवल	,,
जाव	जीव	५५०
जनेऊवें	जनेउवें	५५१
छोटा	छोटी	५५५
के	को	,,
Manmud	Mahmud	५५६
हुवा	हुवा	,,
आर	और	,,
Trible	Tribal	५५९
बिवह	बिवाह	५६०
Muhamaddans	Muhammadans	५६१
अहाबाद	अलाहाबाद	५६३
अब	आप	५६४
यिपय	विषय	५६४

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ
सूक्ष्मरूम	सूक्ष्मरूप	५६५
५६५६	५६	५६६
धमा	धर्मी	,,
पापयोनमः	पापयोनयः	५६७
विराधी	विरोधी	५६६
आ०	आर्य्य	,,
ना०	नाश	,,
देवस्त्वास्तविता	देवस्त्वा सविता	५६८
न्तु	पुनन्तु	५७०
हमरा	हमारा	५७१
करा	करो	५७२
थना	प्रार्थना	५७३
अथात्	अर्थात्	५७६
विष्ण	विष्णु	५७६
गायत्र	गायत्री	५७७
चोर	चोरी	,,
कहही	कहतही	५८१
उस	इस	५८२
दावग्नि	दावाग्नि	५८३
मंत्र	मंत्र	,,
इत्यादि	हत्यादि	५८४
ादन	दिन	५८७
मुसलहान	मुसलमान	५८८
परस्प	परस्य	५८६
पित:वाऽन्यो पिवथिता	पितावाऽन्यो ऽपिवाथता	,,
ध० ण०	ध० शा०	५८९

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ
विद्धाना	विद्वानों	५३०
अपत्काले	आपत्काले	५८१
स्घस्थो	स्वस्थो	,,
लिसवा	लिसवान्	५८२
धोस्तक्षणो	घृयास्तक्षणो	५९३
सर्वस्त्र	[illegible]	५९३
शास्त्रा	शास्त्रों	५९४
शद्धि	शुद्ध	५९५
दुगुण	दुगुण	५९९
मध्यस्तु		६०३
घतस्प	घृतस्य	६०४
द्धार	द्वारानिर्माण की जाती है	६०६
प्रवतभा	प्रभावत	६१५
देश	देशं	६१९
आर्य्यावत	आर्य्यावर्त	६२०
ऋषिय	ऋषि	६२५
शनकस्तु	शनकैस्तु	६८६
पहादेव	महादेव	७०७
Domistic	Domestic	७१०
Couutry	Country	८१५
खाबर		
Gajarat	Gujrat	८०२
साये	सोये	८२५
गाढते	गाडते	८३३
जाढ़	जोड़	८६३
६४	४४	६५८

भूमिका

पाठक वृन्द ! सत्ताईस वर्ष के दीर्घ जाति अन्वेषण करने से पता चला कि इस भारतवर्ष देश में अनेकों क्षत्रिय वंश ऐसे हैं जिन्होंने विपत्तिवश विधर्मियों के अत्याचारों से पीड़ित होकर अपने पैत्रिक हिन्दु धर्म को छोड़कर सदा के लिये गोरक्षक से गोभक्षक बन गये उनसे प्रेमपूर्वक वार्तालाप में वे लोग बड़े दुःख व निराशा के साथ हिन्दुधर्म की संकीर्णता

दुःखमयी कहानी

का वर्णन करते हुये आह भरी आवाज के साथ पश्चाताप करते थे कि 'हिन्दूधर्म कूप मण्डूक के सदृश है, हम वापिस आना चाहते हैं पर हमें कोई लेता ही नहीं' नौमुसालिम भिन्न २ राजपूत जातियें हमें कई ऐसी मिलीं जिन्होंने श्रीराम व श्रीकृष्ण पर अभी तक अपना विश्वास रखते हुए वेद पुराणों को अपने धर्म ग्रन्थ मान रक्खे हैं।

हमारे जातियात्रा के भ्रमण में यू० पी० के कई जिलों में हमें ऐसे २ नौमुसलिम मिले जिन्हों ने हमें अपने टेवे जन्मपत्री दिखलाये, एक स्थान पर हमारा व्याख्यान हो चुकने के अनन्तर एक नौमुसलिम हमारे पास आये और कहने लगे कि महाराजजी ! यदि आप हमारे यहाँ जीम सकें तो हम

आपको सामान दिलवादें आप अपने रसोइया से बनवालें इस पर उस सज्जन का विशेष आग्रह देखकर हमने कहा कि 'हम किसी के यहाँ जीमते तो नहीं हैं पर आपके प्रेम के कारण स्वीकार कर लेते हैं, इतना कहते ही तत्काल हमारे चित्त में प्रश्न उत्पन्न हुआ कि इससे पूछना तो चाहिये कि यह कौन जाति है? तदनुसार हमने उससे पूछा कि आप कौन जाति हैं उसने कहा बिछुड़ा हुआ आपका पुराना यजमान मैं पहिले तो चौहान राजपूत था पर अब क्यामखानी हूं हमने कहा कि आप तो मुसलमान से दिखते भी नहीं तब उसने कहा कि महाराजजी हम वैसे मुसलमान नहीं जैसे आप विचार करते होंगे क्योंकि हमारा रहन सहन चाल ढाल खान पान सब हिन्दुओं कासा है, हमारे जीवन मरण के मुख्य समयों पर ब्राह्मण लोग आकर पूजन कराते रहते हैं हम चौका लगाकर भोजन करते हैं, गोमाता को पूजते हैं, हरेक मुसलमानों के घर व उनका झूठा नहीं खाते हां मुसलमान जाति में रहने के लिये केवल सुन्नत कराते भी हैं और नहीं भी और यह भी कहा कि महाराजजी हमारी जाति वाले रामनाम की माला फेरते रहते हैं, रोजमर्रह तो हम नमाज़ भी नहीं पढ़ते हां केवल दिखाने को जुम्मे की नमाज़ में शामिल हो जाते हैं। इस पर हमने उनसे कहा कि जहाँ आपने सामान ले लेने को कहा था तहां हमको जीमा हुआ ही समझिये तब उसने कहा अच्छा खैर! फिर उसने हाथ जोड़कर कहाँ कि आप जरा हमारे घर तक ही चलिये और वहाँ हम लोगों की स्थिति देखकर हमारे बाबत उच्च हिन्दु समुदाय से पूछिये कि हम कैसे व कौन हैं? तथा हमारा उनका कैसा व्यवहार है?

ऋषिसन्तान!!! इस प्रकार के वचन सुनकर हम स्वयं उनके घर व मुहल्ले में गये और देखा कि वे तो हिन्दु से ही

हैं हमने दूसरे लोगों से भी तहकीकात कियी और निश्चय हुआ कि ये लोग यथार्थ में हिन्दुपन से ही रहते सहते चले आ रहे हैं पर जब हिन्दु इन्हें अपनाते ही नहीं तब बेचारे कहीं रहें या नहीं ?

उस नौमुसलिम महाशय ने हमें केवल अपने ही को नहीं दिखलाया बरन् अपने अन्य स्वजाति नौमुसलिम बन्धुओं को भी हमें दिखलाया उनमें से एक नौमुसलिम सज्जन अपने पूर्व पुरुषाओं का जिक्र करते हुए हमारे सामने रो पड़ा और कहने लगा कि महाराज ! हमारा रोना यही है कि हम यह सोचते हैं कि हम पहले क्या थे और अब क्या होगये ?"

नौमुलिमों का रहन सहन

ऋषि सन्तान ? उसके ये करुणामय बचन सुनकर हमारा हृदय पाषाणवत् होगया क्योंकि उस समय हमारे सनातनी भाई शुद्धि के नाम से ही चोंकते थे तब हमने उस सज्जन को आश्वासन दिया था कि आप कुछ काल ठहरिये हम उद्योग करेंगे कि भगवान श्रीकृष्णचन्द्रजी की अनुग्रह से आप हिन्दु हो जायेंगे । तदनुसार हमने इस विषय का उद्योग आरंभ किया और भारत के प्रसिद्ध २ विद्वानों से सम्मति प्राप्त करने को फार्म छपवाये और नामाङ्कित विद्वानों से उन फार्मो को भरवाकर हमने लोकमत भी संग्रह किया और शास्त्रोंक्त प्रायश्चित् विधियें एकत्रित कीयीं।

तिनके अधारानुसार हमें इस बात की आवश्यकता पड़ी कि भारतवर्ष की नौमुसलिम जातियों का विवर्ण संग्रह किया जाय जिस में प्रत्येक नौमुसलिम जाति की अपनी वंशपरंपरा उनकी प्राचीन स्थिति, उनकी आजकल की रीति भाँति, रहन सहन चाल ढाल उनकी जिलेवार लोक संख्या और उन के आचार विचार युक्त विबर्ण उसमें हो।

यह उपरोक्त विवर्ण जो हम लिख आये हैं आज से दस वर्ष पूर्व की वार्ता है तब से हम प्रायः नौमुसलिम जातियों के अन्वेषण में लगे रहे, सभाओं के जलसों व अन्य नैमितिक कार्य्यवशात जहाँ कहीं हम जाते थे वहाँ के हिन्दुओं से तथा नौमुसलिमों से हम अन्वेषण करते ही रहते थे इस तरह इस दस वर्ष के समय में हमने बहुतसी नौमुसलिम जातियों का विवर्ण संग्रह किया है। यह सब कुछ करने का यह उद्देश्य है कि यह ग्रन्थ देश के लिये उपयोगी सिद्ध हो, तदनुसार इस ग्रन्थ में प्रत्येक क्षत्रिय वंश का आदि इतिहास देकर उन के मुसलमान किये जाने की घटनाओं का वर्णन किया है साथ ही में उनकी रीति भाँति चाल ढाल और रहन सहन, खान पान व उनकी जिलेवार लोकसंख्या भी बतलादी है जिससे यह ग्रन्थ हिन्दु महासभा तथा भारतीय शुद्धि सभा व आर्य्य समाजियों के भी काम का बन गया है।

हमने इस ग्रन्थ में अ से लेकर ज्ञ तक की नौमुसलिम जातियों को लिख देना चाहा था पर यह ग्रन्थ अनुमान ४५० पृष्ठ तक पहुंचने पर भी इसमें मुख्य २ केवल अ से लेकर भ तक की जातियें ही आसकी हैं अतएव शेष जातियों का विवर्ण दूसरे भाग में देंगे हम ने छोटी २ कई नौमुसलिम जातियों को छोड़ दियीं थी उनको भी दूसरे भाग में देने का उद्योग करेंगे।

हमने हरेक जातियों के Ethnological account वंश परंपरागत सम्बन्ध को देखकर निश्चय किया है कि इन सात क्रोड़ मुसलमानों में से एक लाख भी अरब के असली मुसलमान नहीं है ये सब ही एक समय हिन्दु थे ये लोग बादशाही समय में जबरन मुसलमान बना लिये गये,

सातक्रोड़ नौमुसलिम

भारत वर्ष में ही ये सब पैदा हुए हैं, भारतवर्ष ही इनको वंश परंपरा का स्थान है इन्हें सदैव इसही देश में रहना होगा हिन्दू व मुसलमान दोनों भाई हैं केवल अन्तर जरासा मतभेद का है।

ये सातक्रोड़ मुसलमान अरबस्थान के रहने वाले नहीं, ये सब मक्के मदीने से आये हुए भी नहीं हैं पर हैं हमारे राजपूत भाई क्योंक मुसलमानों के राज्य के पहिले यहां क्षत्रिय राजाओं का राज था वे ही एक मात्र भारत के प्रभु थे परन्तु वे राजमद में चूर रहते थे, उस समय उनमें विचार शक्ति के विकाश की त्रुटि थी क्योंकि उस समय के कतिपय राजा अन्धविश्वासी थे वे लोग दुर्गा व काली के भरोसे ही विजय प्राप्त होजाने के इच्छुक थे और बहुत से शराब के नशे में ही चूर रहते थे ऐसी दशा में वे संगठन के महत्व को क्या समझें ?

विक्रम सम्बत ७७० के करीब सब से प्रथम मुहम्मद कासिम ने सिंधु देशपर अरब से आकर चढ़ाई कियी थी परन्तु यहां के राजपूतों की भिडंत से उसे पीछे हटना पड़ा और उसने सोचा कि 'भारत में पैर जमाने के लिये संगठन शस्त्र के प्रयोग की बड़ी आवश्यकता है" तदनुसार वह अपनी दल बादल फौज के साथ २ साम दाम दण्ड भेद के सहारे से यहां की लड़ाकू जातियों को मुसलमान करने लगा और जब जहाँ उसकी फतह होजाती थी तहां ही कैद की हुई

राजपूत फौजों के लिये फतवा निकाला जाता था कि 'ये लोग इस्लाम धर्म कुबूल करें वरना कत्ल कर दिये जाँय" यह नीति मुहम्मद कासिम से लेकर औरंगजेब के मरने तक सम्बत १६६२

तक चलती रही अर्थात् मुहम्मद गज़नी, कुतबुद्दीन ऐवक और शाहबुद्दीन गोरी और औरंगजेब आदि २ सब ही बादशाहों ने इस नीति का अनुकरण किया था जिस के प्रति फल स्वरूप लाखों ही राजपूत प्रत्येक वर्ष मुसलमान कर लिये जाते थे।

आज कल ब्रिटिश गवर्नमेंट का राज्य है और इनका प्रबन्ध भी अच्छा है पर इनके समय में सन १९२२ से १९२६ के चार वर्ष के समय में ही मुसलमानी अत्याचारों को जिन्होंने कलकत्ता, दिल्ली, मुलतान, गोंडा, अजमेर, आगरा, सहारनपुर, अमृतसर आदि २ जिलों में स्वनेत्रों से देखा है उनके द्वारा सुननेमात्र से एक दम हमें अवाक् होकर स्तब्ध हो जाना पड़ता है।

परन्तु अंग्रेजी राज्य से पूर्व के मुसलमानी अत्याचार को प्राचीन सरकारी व ग़ैर सरकारी इतिहासों में पढ़ने से ज्ञात होता है कि इस देश के राजपूतों को मुसलमान करने के लिये बड़े २ सामदाम दण्ड भेद की नीतियों के अतिरिक्त विशेष रूप से दण्ड प्रहार व भयप्रदान तथा मृत्युप्रदान का भय दिया गया अर्थात जो हिन्दू मुसलमान नहीं होते थे उन पर जजिया नामक टेक्स लगाया गया था कि जिसका भाव यह था कि जो मुसलमानी राज्य में रहती हुयी हिन्दू जातियें मुसलमान न होना चाहें उन्हें कर देना पड़ेगा।

परन्तु राजपूत व अन्य लड़ाकू हिन्दू जातियें जो मुसलमान बादशाहों के पैर यहां नहीं टिकने देती थी उनके पराजय होने व गिरफ्तार हो जाने पर शाही फरमान निकलते थे कि

मुसलमानी अत्याचार

'या तो मुसलमान हो जावो नहीं तो खंजर से हलाक किये जावोगे' इसके अनुसार बहुत से लोग अपनी जान रक्षार्थ लाचारन मुसलमान हो गये और बहुत से गाजर मूली व भेड़ बकरे की तरह हलाक कर दिये गये।

१ मा० से० रिपोर्ट में लिखा है कि चार घंटे में इतने जनेऊ-धारी कतल किये गये थे कि उनकी जनेऊवें तोली गयीं तो ७४॥) साडे चहोत्तर मन पक्की हुयीं थीं।

२ गोरीशाह बादशाह ने पाली पर चढ़ाई कियी बहुत दिनों तक युद्ध होता रहा पर जब बादशाह ने देखा कि पाली विजय नहीं होती है तो श्रावणी पूर्णवासी (रक्षाबन्धन) के दिन गायें कटवाकर कूवों में गिरवादियीं जिससे पाली के राजपूत व ब्राह्मण को जल न मिलने के कारण वे पाली छोड़ भागे और बादशाह ने पाली पर कबज़ा कर लिया।

(मा० म० ग० रि० पृ० १२०)

जब कि अरबों और तुर्कों के हमले इस देश में होते थे तब यह कायदा था कि वे लोग फतह होने के पीछे आम हिन्दुवों और खास कर के राजपूत और दूसरी लड़ने वाली कौमों के आदमियों को या तो मुसलमान करलेते थे या मार डालते थे कि जिस से वे मुकाबिला करने के लायक न रहें, उसवक्त राजपूतों को जो लड़ाई में हारकर फिर मुकाबिला नहीं कर सक्ते थे जान बचाने की दोही सूरतें थी या तो मुसल्मान हो जांय, या रजपूती छोड़ कर कमीण जातियों में मिलकर वही कमीणों का सा धन्दा करने लगे अथवा काज़ी के खंजर के नीचे अपनी जान देदें आज जो हरेक कौम में राजपूतों की खांपे (भेद उपभेद) पायी जाती हैं वे उन्हीं दिनों के राजपूत मुसलमानों के दबाव से शामिल हुयी थीं ❀

३ They became Mohamadans chiefly In the time of Shahbuddin Ghori or at the end of 12th cetury

---

❀ मा० म० गण० रि० पृ० ६५।

भा०-ये लोग विशेषरूप से बादशाह शाहबुद्दीन गोरी के समय में मुसलमान हुये थे याने १२ वीं शताब्दि के अन्त में।

४ दीनदार बादशाह को खबर पहुंची की ठट्टे मुलतान के सूबों और खासकर बनारस (काशी) में ब्राह्मण लोग मदरसे बनाकर अपनी किताबें पढ़ाते हैं, हिन्दु और मुसलमान विद्यार्थी दूर दूर से इल्म पढ़ने के लिये उनके पास आते हैं, इस पर सब सूबों के नाजिमों को हुकम लिखे गये कि मन्दिर और मदरसे इन के गिरादेवें और पूरी पूरी ताकीद कर के जारी रहने और उन के पढ़ने की रसमें मिटादें। ❊

५ सम्बत १३९८ में बादशाह तैमूर ने भारत पर आक्रमण किया और पंजाब में आ धमका और लूटमार मचादी, जहां वह लूटता था वहां के हिन्दुवों को मुसलमान और गुलाम बनाता था जो हिन्दू मुसलमान व गुलाम होना स्वीकार नहीं करते थे कत्ल करादिये जाते थे × इस आज्ञा के पालन में १००००० एक लाख आदमी दो घंटे में कतल किये गये थे..........इस के बाद दिल्ली खूब लूटी गयी वहां के रहने वाले गुलाम और मुसलमान बनाये गये बाकी जो मुसलमान न बने वे कत्ल किये गये, सड़क और मकानात लाशों से भर गये। +

६ बादशाह के हुकुम से बखतावरखां ने बादशाही सरकार के और शहज़ादों के ज्योतिषियों से मुचलका लिखवा

❊ वीर विनोद तथा शुद्धि पृ० ४५।
× औरंगजेब नामा पृ० १२।
+ जाट उ० पृ० ३१।

लिया कि नये साल से तकवीम (तिथि पत्र) न निकला करें और ऐसा ही हुकम सब सूबों में भेज दिया गया ❀

७ शिवाजी के पुत्र सम्बाजी की जुबान औरंगजेब ने कटवा लियी और बाद को तरह तरह से दुःख देकर उसके सर को उड़वा दिया । ❀

८ दिल्ली के बादशाह शाहबुद्दीन गोरी ने पृथिवीराज चौहाण को पिंजरे में बन्द करवा कर उसकी आँखें निकलवा लियी थीं ।

९ दाराबखां जो खंडेले के राजपूतों को दबाने और शरीरों (बदमाशों हिन्दुवों) के बड़े बड़े मन्दिरों को ढाने (गिराने) के लिये गया था ५ सफर चैत सुदी ६, ८ मार्च सन १६७९ को वहां पहुंचा कई सौ राजपूत लड़कर मारे गये एक भी जीता न बचा खंडेले, साँवलते और जिले के तमाम बुतखाने (मन्दिर) गिरा दिये गये ।

१० बादशाह औरंगजेब के समय में बड़े २ रईसों से मुसलमानों की जूतियो में, मस्जिदों की पैड़ियों में माथा व नाक रगड़वाया था। (औरं० पृ० ११२)

११ औरंगजेब बादशाह की डायरी ७ सफर चैत सुदी ८ सम्वत १७३५ तदनुसार तारीख १० मार्च सन् १६७९ ईस्वी में लिखा है कि बादशाह की नियत शरीअत को बढ़ाने और काफिरों (हिन्दुओं) की बातों को घटाने

❀ आरंगजेब नामा भाग २ पृ० ५८ ।

❀ जाट उ० पृ० ३६ ।

की थी इसलिये हुक्म हुआ कि इस महीने की पहिली तारीख से और सूबों के जिम्मियों से जजिया ❋ लें ।

१२ बादशाह औरंगजेब का पूरा नाम अबुलमुजफ्फर मुइउद्दीन मोहम्मद औरंगजेब बहादुर आलमगीर बादशाह ग़ाज़ी ×

(ता० ९ जून सन १६५९; २४ रमजान २५ खुरराद)

१३ दीन को पनाह और मदत देने वाले बादशाह से अर्ज हुई कि काशी विश्वनाथ का मन्दिर गिरादिया गया +

१४ मथुरा में जो केशोराय का मशहूर देहरा (मन्दिर) था मुहम्मद पैगम्बर के दीन को जिन्दा करने वाले बादशाह

❋ उस महसूल को कहते हैं जो मुसलमान न होने के कारण प्रत्येक मनुष्य पीछे लगाया गया था इसको मुवाफ कराने को लाखों हिन्दु दिल्ली में इकट्ठे होकर बादशाह के झरोके के नीचे आकर गिड़गिड़ाये पर बादशाह ने एक न सुनी फिर जब बादशाह जुमा मसजिद को जाने लगे तो कर को मुवाफ कराने को इतने हिन्दू इकट्ठे हुए कि चोबदारों के डांट डपट करने पर भी सवारी दो दो कदम चलकर रुक जाती थी निदान बादशाह ने हाथी मंगवाकर हिन्दुओं पर छुड़वाये जिस में कई मरे और कई घायल हुये और कई जान बचाकर भागे और जजिया देने को लाचार राजी हुये ।

(औरंग० पृ० ८२ तथा तवारीख खफीवाँ)

× जो गैर मुसलमान को मारडाले व मरवाडाले वह गाजी कहाता है ।

+ औरंगजेबनामा पृ० १७

अत्याचारों की भरमार

ने उसके गिराने का हुकुम दिया और उस जगह मसजिद बनवादी इस की जड़ाऊ मूर्तियें अकबराबाद में लाकर नव्वाब कुदसिया बेगम की मसजिद की सीढ़ी के नीचे गाड़ दियी मथुरा का नाम इसलामाबाद रक्खा गया ×

१५ बादशाह ने यह सुन कर कि हुसैनअलीखां ने बेदीनों के मारने घर लूटने और गढ़ियों के गिराने में कोई बात बाकी नहीं छोड़ी है तो उसे बुलाकर बादशाह ने शाबासी दियी +

मुसलमान बादशाह लोग राजपूत हिन्दु राजाओं से जबर्दस्ती डोला लेते व उनकी लड़कियों के साथ शादी करते थे और जो राजा बादशाहों को डोला नहीं देता व अपनी लड़की का व्याह नहीं करता था वह बादशाह का कोपभाजन होता था इस प्रकार के उदाहरण अनेकों मिलते हैं यथाः—

१६ आमेर जयपुर के राजा भारमलजी ने हाजीखां पठान के साथ अपनी बड़ी लड़की का विवाह किया था और अपनी छोटी लड़की का विवाह अकबर के साथ किया था।

१७ महाराजा अजीतसिंहजी जोधपुर वालों ने अपनी पुत्री बाई इन्द्रकुंवरी का डोला ❋ बादशाह फरुखसियर के दिल्ली भेजा था जिसका वहाँ विवाह पोष बदी ८ संवत १७९२ में हुआ। (वीर विनोद)

× औरं० ना० पृ० २२

+ औरं० ना० पृ० २४

❋ डोला उसे कहते हैं कि अपने आप अपनी लड़की को पालकी व पिंजस में बिठाकर बिवाहार्थ बादशाह के यहां भेज दें।

१८ राजा उदयसिंहजी जोधपुर नरेश की पुत्री मानबाई का विवाह शाहज़ादा सलीम (बादशाह जहांगीर) के साथ सम्वत १६४४ में हुवा था । पुनः—Again.

They were farcibly converted by Manmnd of Ghazni. Then they migrated to Sirsa and thence at various times come into the Panjab

(Caste and Tribes Page 206.)

नौमसलिम राजपूत

भा० राई का राजपूतों का अन्वेषण करते हये सिविलियन अफसर ने लिखा है कि ये लोग बारहवीं शताब्दि में बादशाह शाहबूद्दीन गोरी के समय मुसलमान किये गये थे पुनः-महमूद गज़नी ने इन्हें जबर्दस्ती मुसलमान किये थे तब इन में कुछ लोग निकल कर सिरसे और वहां से ये लोग पंजाब में फैले गये ।

20. Malkana. A sept of Mohamadan Rajputs chiefly found in Mathura and Agra. Originally they were mostly Jais and Gaur Thakurs who have been converted to Islam by the Sword, but still retain many Hindu customs and are known by Hindu names.

(C. and T. P. 460.)

भा० मलकानाः—एक मुसलमान हुआ राजपूत वंश जो प्रायः मथुरा और आगरे के जिले में विशेष पाये जाते हैं यथार्थ में ये लोग पहिले जैस और गौड़ ठाकुर थे जो तलवार के ज़ोर से मुसलमान बनाये गये थे जिन में अभीतक हिन्दुवानी रीति भांति और हिन्दु नाम प्रणालि है ।

21. The eleventh in descent from Pratap Singh was Lalsingh, who, though a Hindu received from the Emperor Akbar the title of Khan whence the name Lalkhani, by which the family is orginally designated. It was his grandson, Itimad Rae in the reign of Aurangzeb, who first embrassed Mohamadanism.

(C. and T. P. 362)

भा०--परताबसिंह से ग्यारहवीं पीढ़ी में लालसिंह हुये जिसकी बहादुरी से प्रसन्न होकर बादशाह अकबर ने उसे खां की उपाधि मात्र दियी थी तब से लालसिंह का नाम लालखाँ हुवा, इन्हीं लालखां का पोता इतिमाद्राय थे जिन्हें बादशाह औरंगजेब ने जबर्दस्ती मुसलमान बनालिया तब से राजपूत वंश लालखानी कहा जाने लगा।

इस प्रकार आपत्ति बिपत्ति व धर्म विप्लव काल में लाखों हिन्दु अपना धर्म छोड़ कर जीव रक्षार्थ मुसलमान होगये ऐसा को विद्वानों ने **नौ मुसलिम** संज्ञा करते हुये उनका विवेचन इस प्रकार से किया है:—

२२ बादशाह अलाउद्दीन के शासन में हिन्दुवों के यहां रुपैयेका होना एक अक्षम्य अपराध था, उस समय कुछ लोग मालिक कापूर के साम्हने उपस्थित किये गये, जो हिन्दू ही प्रतीत होते थे पर वे मुसलमान बन चुके थे वे इस परीक्षा के लिये बादशाह के अफसरों के सन्मुख पेश किये गये तब उन्हों ने अफसरों के सन्मुख कल्मा पढ़ सुनाया तब उन बिचारों की जान बची।

२३ तवारीख फिरोजशाही में मुसल्मान फिरोजशाह तुगलक के समय सराज अफीफ लिखता है कि सन १३७५ ई० के

बाद एक दिन फिरोज़तुगलक को रिपोर्ट मिली कि देहली में एक ब्राह्मण ने खुले रूप में मूर्तिपूजा शुरु कियी है। उसने लकड़ी का एक बुत बनाया है। जिस की खूब पूजा होती है आदि २ जब यह रिपोर्ट धर्मान्ध फिरोजशाह को मिली तब वह बड़ा क्रुद्ध हुवा और उस ब्राह्मण को पकड़ मंगवाया नियम के अनुसार उस पर अपराध लगाया गया और उसे उस की मूर्तियों के साथ जीवित जला दिया गाया।

२४ सम्राट अलाउद्दीन ने सन १३११ में मालिक कापूर को दक्षिण भेज दिया वह विजय करता हुवा मालावार पहुंचा वहां का राजा रामदेव डर कर भाग गया मालिक कापूर ने उस का पीछा किया और उसे पराजित किया और वहां कतलेआम की आज्ञा दे दियी। (शु० स० Septr. 27)

सहारनपुर के भूतपूर्व कलक्टर ने New Muslim Muhamadan 'नये मुसलमान' ऐसा अर्थ किया है अर्थात् वे हिन्दू जो किसी दवाव व लोभ लालच के कारण विवश मुसल्मान हो गये थे और जो अब तक अपनी रीत भांति व आचार विचारों द्वारा पक्के हिन्दू ही चले आ रहे हैं और केवल नाम मात्र के मुसल्मान हैं ऐसी जातियों की संज्ञा नौ मुसलिम कहाती है इस नाम का विवेचन करते हुए मिस्टर सी. एस. डब्ल्यू. सी. कलक्टर ने लिखा है A term applied to recent converts to Islam जो पीढ़ी दर पीढी से मुसल्मान नहीं चले आये हैं वरन थोड़े से दिनों से ही जो मुसल्मान हो गए हैं वे नौ मुसलिम कहाते हैं। पुनः—

These however in the list of the last census, are given under the head Rajputs, such as the

Lalkhani and similar tribes who have been separately discussed,

(C. & T. P, 181)

नौ मुसलिम राजपूतों की रीति भांति

भा० ये लोग पिछली मनुष्य गणना रिपोर्ट में राजपूतोंमें लिखे गये हैं। जैसे लालाखानी तथा वे जातियें जो अलग लिखी गई हैं।

अन्वेषण करने से पता चलता है कि बहुत सी नव मुसलिम जातियें यथार्थ में अपनी राजी से मुसलमा नहीं बनी थीं किंतु विपत्तिवश उन्होंने मुसलमान होना स्वीकार किया था यही कारण है कि उन की जन्म, मरण, सगाई विवाह की रिति रिवाजें सम्पूर्ण अब तक हिन्दुवों की सी चली आरही हैं इसकी पुष्टी में Caste and Tribes नामक अंग्रेजी ग्रन्थ भी साक्षी हैं।

Many of them have only inperfectly adopted Islam, and still retain several of their own trible customs in connection with brith, death, marriage, inheritence etc.

नौमुसलिम मीमांसा

नौमुसलिमों में से बहुतेरी जातियों ने इस्लाम मत को अधूरा ही माना और वें अब तक अपनी हिन्दुवानी रितियों के अनुसार जन्म, मरण, विवह तथा वसियत आदि २ करते कराते हैं —

Nau Muslim:—The persons so called are certainly of Hindu origin, but have either forgotten their original caste or are ashamed of it.

(C S R 1901 P 254)

भा०—नौमुसलिम लोग निश्चय पूर्वक आदि से हिन्दु हैं पर या तो ये अपनी जाति भूल गये हैं अथवा ये अपनी जाति बतलाने से शर्माते हैं।

यह लेख ठीक ही है यह हिन्दू धर्म के खोखलेपन का परिणाम है अर्थात् जब तक एक चमार व भंगी श्रीराम व श्रीकृष्ण का मानने वाला है तब तक वह नीच व अस्पर्शनीय है वह उच्च जातियों के सन्मुख खड़ा रहने लायक नहीं, वह सरकारी उच्च नौकरियें नहीं पा सकता, वह अपनी उन्नति नहीं कर सकता पर जहाँ वह हिन्दु धर्म का शत्रु ईसाई मुसलमान हुआ कि उसकी उन्नति के सब दरवाजे खुल जाते हैं यह हमारा अज्ञान नहीं तो क्या है ?

The largest single caste or tribe is the Shaikh which was 1340057 members or a fifth of the total numner of Musalmans, and this is also the tribe to the membership of which converts from Hinduism most easily attain.

(U. P. C. S. R. Page 346)

भा०—सब से बड़ी जाति शेख मुसलमानों की है जिस में १३४००५७ मनुष्य हैं अर्थात् युक्त प्रदेश के मुसलमानों का पांचवां हिस्सा और यह वही जो हिन्दुओं से मुसलमान बनाई गई है अर्थात् इस जाति के सब लोग पहले हिन्दु थे।

Converted Rajputs so recorded number 402922

(Govtt Census Report 1901.)

भा०—राजपूतों से मुसलमान बनाए हुए नवमुसलिमों की संख्या युक्तप्रदेश में ४०२९२२ है।

Deswalis hold two villages in the north of the district, and say that they are Rajputs who

were Converted in the time of Shahabuddin.

(R. Gazetteer P 151)

भा०—देशवाली नाम के मुसलमान पहिले राजपूत थे इनके पास दो गांव जागीर में है ये लोग बादशाह शाहबुद्दीन गोरी द्वारा मुसलमान बनाये गये थे।

The proportion of Muhamaddans in Jaipur is very Small; but in Shekhawati there is a very numerous class termed Kaimkhanis who were originally Chauhan Rajputs, but were converted to Islam. They are said to have formerly owned the tract of country now called Shekhawati.

(R. G. Page 247.)

भा:—राज्यपूताना प्रान्त गंत जैपुर राज्य में मुसलमानों की बसती बहुत कम है परन्तु जैपुर राज्य के शेखावाटी परगने में कायम खानी (नाम मात्र) के मुसलमान बहुत है जो कि पहले चाहान राजपूत थे। परन्तु शाहबुद्दीन गोरी के समय यह जबरदस्ती मुसलमान कर लिये गये। पहले शेखावाटी के मालिक यही थे।

अजमेर मेरवाड़ा में नव मुसलिम ४५--३१० है जिनके विष्यय में अजमेर मेरवाड़ा के कमीशनर बहादुरने लिखा है कि:-Deswalis hold two villages in the north of the districts, and say they are Rajputs who were converted in the time. of Shahhbuddin Gauri, The Bunjara who live in of Ghegul are Musalmans, and where. they say, converted at the same time as the Deswalis

(R, G. 141.)

भा:०--देशवाली मुसलमानों के पास दो गांव हैं और यह कहते हैं कि पहिले हम राजपूत थे परन्तु बादशाह शाहबुद्दीन गोरी ने हमे को मुसलमान कर लिया। बंजारे लोग जो गेहगल में रहते हैं वे भी मुसलेमान बनाये हुए हैं जिनका कथन है कि हमु को भी देसवालीयों की तरह बादशाह गोरी ने मुसलमान कर लिये थे। बनजारे भी क्षत्रियों में से ही हैं। (R. G. 141)

भारत की दशा पर

बिलाप

सलतनत इसलाम में, सबको पड़ी थी जानकी।
सब खो चुकें हैं दीन ईमा. आ पड़ी जब जानकी॥
फरमान जब जारी हुआ, यह बादशाही हुक्म सें।
मुस्लिम बनोए काफ़िरो, जो हो मुहब्त जानकी॥
जान था या धर्म्म था, बस ऐक ही केवल रहा।
होगये सब मिल मुस्लमा, खब्र या फरमान की॥
सैकड़ों हिन्दु किए जाते खड़े, जब पांत में।
तब पूछता गाजी मिआ, खंजर लिये निज हाथमें॥
काफिरो अब सोच लो, अंतिम घड़ी अब जानलो।
बन जा मुसल्मा शीघ्र ही, गरहै मुहब्बत जान की॥
इस भांति ही सब हिन्दुओ की बस्तिया मुस्लिमबनी
जो भक्त जन मुनिकर हुये, वे राह ली समशानकी॥
बस सोचलो ए भाइयो अगणित तुम्हारे भाई बन्धु।

छणभर हुयेथे बिलग वे, जब आपड़ी थी जानकी॥
चक्र दुनिया का गिरा करता, न रुकता है कभी।
अबतो गलेसे लो लगा, बिछड़े हुये निजप्राणको।
बहुत से हैं रस्म उनके, अब तलक जीते हुये।
जो मरचुके हों तो जिलालो ध्यान अपने ज्ञान से॥
ध्यानी होवो ज्ञानी होवो पतित पावन हो चलो॥
अब होगया यह कांत क्या सब विश्वबन्धु दूर क्यों?

नोटः—महाशय कमलाकान्त ने कुशलवाहा महासभा काशी के जल्से पर यह कविता ता० २-१२-२६ को पढ़ी थी, भारत के ऐसे संकटापन्न व धर्म विप्लव तथा यवनात्याचार के कारण यदि हमारे हिन्दु भाइयों ने अपनी प्राण रक्षार्थ मुसलमान धर्म स्वीकार कर लिया तो इसमें इनका क्या दोष है! जैसीबिपत्ति इन नौमुसलिमों पर पड़ी थी वैसी यदि आज सनातधर्मी हिन्दु; वों पर पड़े तो हमारा विश्वास है कि आजकल के हिंदूतत्काल व बड़ी प्रसन्नता से मुसलमान हो जावे गे ऐसी दशा में इन बिछड़े हुये भाइंयों को शास्त्र की आज्ञनुसार शुद्ध कर लेना चाहिये जिन्हे शुद्धि से परहेज हो, व जो 'शुद्धि हो सक्ती हैं या नहीं' इस सन्देह में हो उनके लाभा र्थ शास्त्राज्ञाये कैसी हैं उनका विवर्ण भी हमने इंसही ग्रन्थ में अलग शुद्धि व्यवस्था में दे दिया हैं

इस ग्रन्थ के लिखते समय हमारे यह विचार थे कि यह ग्रन्थ देश के लिये लाभकारी सिद्ध हो तदनुसार ग्रन्थ को तय्यार कर चुकने के उपरान्त लिखित ग्रन्थ को उचित सम्म-त्यर्थ महात्मा मोहनलाल कर्मचन्द गाँधीअहमदाबाद, पूज्यपाद पंडित मदनमोहन मालवी अहावाद, तथा महात्मा श्रद्धनान्दजी

दिल्ली, लाला लाजपतरायजी लाहोर की सेवा में रजिस्टरी शुदा पत्र नम्बर ०८४ ०८५ ०८६ और ०८७ तारीख २८ जनवरी सन १९२६ ईस्वी को भेजकर हमने प्रार्थना कियी कि अब हमारे सम्पूर्ण ग्रन्थों को अथवा उसके किसी भाग को अवलोकन करके उचित सम्मति प्रदान करें जिससे उचित संशोधन करके ग्रन्थ छपवा कर प्रकाशित कर दिया जाय इसके उत्तर में केवल श्रद्धानन्दजी महाराजने यह उत्तर दिया था।

नकल

१७ नयाबाज़ार
देहली
ता० ३०-१-१९२६

श्रोत्रिय पं० छोटेलाल शर्म्मा
महामंत्री हिन्दु धर्म वर्ण व्यवस्था मंडल
फुलेरा

महाशय नमस्ते !

मुझे अवकाश नहीं कि पुस्तक के विषय में आपको सम्मति दे सकूं व उसका कुछ भाग देख सकूं।

श्रद्धानन्द

पाठक ? इस प्रकार हमने इस ग्रन्थ को उपयोगी बनाने में विशेष उद्योग किया सम्भव है कि स्वर्गवासी श्रीस्वामीजी के लेखानुसार उपरोक्त ग्रन्थ देखने का अन्य नेताओं को भी अवकाश न होगा क्योंकि इन्हें देश की बड़ी बड़ी गहन व जटिल समस्यावों के सुलझाने व सुखशान्ति स्थापित कराने में ही अवकाश न था अतएव हमने यथाशक्ति इस ग्रन्थ को प्रमाणाधार तय्यार करके उपयोगी बनाया फिर भी यदि कोई इसमें यदि त्रुटि जान पड़े तो पाठक हमें सूचना दें, क्योंकि किसी को किसी भी प्रकारकी हानि पहुंचाना हमारा उद्देश्य नहीं है।

हमें दुःख के साथ कहना पड़ता है कि प्रेस हम से बहुत दूर होने के कारण कई भद्दी अशुद्धियें रहगयी हैं जिन्हें पाठक सुधार कर पढ़लेने की कृपा दिखावें ग्रन्थ रचना सम्बन्धी लाभाऽलाभ की जिम्मेवारी हमारी है।

निवेदक--

श्रोत्रिय छोटेलाल शर्म्मा M. R.A. S.London.
पुरातत्व विशारद, व्याख्यानभूषण, महामंत्री हिन्दु धर्म वर्ण व्यवस्था मंडल फुलेरा जयपुर

इस सम्बन्ध में अपने शास्त्र सम्मत विचार प्रकट करने के लिये हम से प्रायः देशहितैषी विद्धान लोग कहा करते थे इसलिये आवश्यक है कि हमारी सम्मति शास्त्र से विरुद्ध न हो, तदनुसार हमने वेद वेदांग व उपांगों को बहुत कुछ मनन करके निश्चय किया है कि शुद्धि करना एक वेदानुकूल कर्म है, शुद्धि चाहने वालों की शुद्धि न करना महापाप है, शुद्ध किये जाने पर भी उस शुद्ध किये व्यक्ति से घृणा करने वालों को वेद का अपमान करने का पाप लगता है इस विषय को हम सप्रमाण विस्तृत रूप से लिखना चाहते थे पर स्थान के अभाव से यहां सूक्ष्मरूप से लिख कर विस्तृत रूप से अलग ग्रन्थ में लिखेंगे।

हमारे सनातन धर्म में ५६५६ धर्मशास्त्र हैं जिनमें समय २ को आवश्यक्तानुसार ऋषियों ने सम्पूर्ण बातों का निर्णय कर दिया है ।

हमारे देश के बुड्ढे सुड्ढे और लुड्ढे लोग प्रायः कहा करते हैं कि "हिन्दू से तो मुसलमान, ईसाई हो सक्ता है पर कहीं मुसलमान ईसाई से भी हिन्दू हो सक्ता है?" परन्तु यह उनका भ्रम है क्योंकि वेदों में ईसाई, मुसलमान, यवन, म्लेच्छ, दस्यु आदि आदिकों की शुद्धि की अनेक ऋचायें हैं महापाप से महापाप तक की शुद्धि का विधान धर्मशास्त्रों में वर्णित है तब ईसाई, मुसलमानों की शुद्धि क्या चीज़? यदि कहा जाय कि मुसलमान हो जाने पर उसकी गुप्तेन्द्रिय का जरासा चमड़ा काट दिया जाता है तब वह कटे हुये चमड़े वाला यदि हिन्दू किया जाय तो उसका वह चमड़ा कैसे जुड़ सकेगा? पर यह प्रश्न ठीक नहीं क्योंकि चमड़े के कटने व न कटने से हिन्दू का होना व न होना अवलम्बित नहीं है, ऐसा देखा जाता है कि लोगों के गरमी व सुजाक हो जाने पर इंद्रिय का ज़रासा चमड़ा ही नहीं किन्तु पूरी व आधी इन्द्रिय ही गल जाती है, किन्हीं २ रोगों पर डाक्टर लोग इन्द्रिय को काट देते हैं पर इससे उनका हिन्दुत्व नहीं जाता है युद्ध में सैकड़ों ही नहीं हजारों मनुष्य नाना प्रकार से अंग विहीन तक हो जाते हैं पर वे हिन्दुत्व से गिरते नहीं माने जाते अतएव हिन्दु होने न होने की मीमांसा यह है कि जो वेद वेदांग और उपांगों को माने तद्वत आचरण करने का उद्योग करे वह हिन्दु कहाता है यदि विशेष तर्क वितर्क के साथ कोई यह ही कहे कि मुसलमान ईसाइयों की शुद्धि हो ही नहीं सकती तो थोड़ी देर के लिये आँख मींचकर व शास्त्रीय प्रमाणों को अवहेलना करके हम ऐसा ही मानलें तो हम कह सक्ते हैं कि यथार्थ में हिन्दू भारतवर्ष में एक भी नहीं है यदि किसी विद्वान को इस बात का अभिमान हो कि वह सनातन धर्मी

हिन्दु है तो हमारा उसके प्रति निवेदन है कि वह शास्त्रार्थ के मैदान में आकर अपने को पवित्र हिन्दु सिद्ध करदे अन्यथा हम उसे ईसाई मुसलमान सिद्ध करने को तैयार हैं, जब हमारे भारतबासियों की यह हालत है तो हम नहीं समझते कि वे किस आधार पर अपने को परमपवित्र मानते हुए ईसाई मुसलमानों की शुद्धि से परहेज करते हैं।

हमारे देश के बहुत से बुड्ढे सुड्ढे और लुड्ढे लोग कहा करते हैं कि "हम ने मुसलमान से हिन्दू होते नहीं देखा" यह एक प्रकार से ठीक भीहै क्योंकि इन्होंने अपनी पांच सात पीढ़ियों से याने बादशाह औरंगजेब के समय से अर्थात विक्रम संबत १६१४ से + हमारे हिन्दू भाइयों को मुसलमानादिकों की शुद्धि देखने का अवकाश कम मिला कारण यह कि पूर्वकथित जुल्मों के सन्मुख शुद्धि करना तो दूर था पर नाम लेने में जिह्वा निकलवाली जाती थी अतएव ऐसी घोर विपत्ति के समय शुद्धि कैसे हो सक्ती थी ? परन्तु हिन्दुओं के धार्मिक ग्रन्थों में शुद्धि कूट २ कर भरी हुयी है न्यूनता केवल इतनी ही है कि हम लोगों ने शास्त्रों को अध्ययन नहीं किये अन्यथा इस विषय में शंका नहीं होती।

१ भगवान श्रीकृष्ण का आदेश

मां हि पार्थ ब्यपाश्रित्य ये पिस्युः पापयोनयः।
स्त्रियों वैश्यास्तथाशूद्रास्तेपि यांति परांगतिम् ॥

श्रीमदभगवद्गीता अ० ६ श्लोक ३२.

शब्दार्थः—(हि) निश्चयपूर्वक (पार्थ) हे अर्जुन (स्त्रियः) स्त्रियें (वैश्या) वैश्य (शूद्राः) शूद्रादिक (तथा) तैसे ही (पापयोनमः) पापयोनीवाले (अपि) भी (ये) जो कोई (स्युः) होवें (ते) वे (अपि) भी (माम्) मेरे (ब्यपा-

× मुसलमानी अत्याचार भूमिका प्रकरण में देखो।

श्रित्य) शरण हो कर (पराम्) परम (गतिम्) गति को (ही) निश्चयेन (यान्ति) प्राप्त होते हैं।

भावार्थः—गीता में श्रीकृष्ण भगवान् अर्जुन को उपदेश देते हैं कि हे अर्जुन ! स्त्रियें, वैश्य व शूद्रादि व कोई भी पापी व महापापी हो यदि वह मेरे शरण आ जावे तो निश्चयपूर्वक वह परमगति को प्राप्त हो जाता है अर्थात् कोई भी पापी से पापी मनुष्य श्रीकृष्ण भगवान को अपना इष्टदेव मानले तो उसके सब पाप दूर होकर वह वैकुकुण्ठ को चला जाता है।

समीक्षाः—जब श्रीकृष्ण भगवान की शरण से महापापी की भी गति हो जाती है तब ईसाई, मुसलमान की कहां रही ? अर्थात् भगवान के शरण आने मात्र से ही ईसाई, मुसलमान शुद्ध हो सक्ते हैं। इस विषय में वेद क्या कहते हैं ?

वेदाज्ञायें।

आजकल पुराने ढचरे के लोग प्रायः ईसाई मुसलेमानो की शुद्ध होते देखा बड़ा आश्चर्य्य किया करते हैं और इसे एक नवीन कार्य्य समझते हैं परन्तु हिन्दु समाज की यह बड़ी भारी भूल है अन्वेषण करने से हमें पता चला है कि वेद में अनेकों ऋचायें, मंत्र तथा सूक्त ऐसे हैं जिनमें शुद्धि करनेकी स्पष्ट आज्ञायें हैं हम अपनी बाल्याअवस्था में सुना करते थे कि " वेदका तो अर्थ ही नहीं होता हैं जब देश की ऐसी अज्ञानमयी दशाथी और मुसलीमानी राज्यों के समय लोमहर्षण कांडयुक्त अज्ञानतम दशा थी तब वेदों में शुद्धि है या नहीं इस का ज्ञान कैसे हो सक्ता था ? परन्तु वेदों के प्राचीन भाष्य सायण और महीधर कृत हैं और वर्तमान का भाष्य दयानन्द भाष्य है तथा प्रोफेसर मेक्स मूलर भट्टने लंडनसे भी वेदों का अनुवाद किया है किसका भाष्य अच्छा व किसका कुछ दोष युक्त इसका निर्णय यहां करना प्रसंग-

विरुद्ध है हां केवल भाव यह है कि वेदों का अर्थ होता है परन्तु साधारण विद्वानों की गति उसमें नहीं पहुंच सकती है अतएव लोग कह दिया करते है कि वेदों का अर्थ ही नहीं होता वेदों में शुद्धि प्रकरण बहुत विशेष रूप से वर्णित है यथाः—

१ ॐ इन्द्रं वर्धन्तोऽप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।
अपघ्नन्तोऽराव्णः॥ ऋ० मं० ९ सू० १३ मं० ५॥

हे मनुष्यो! (अप्तुरः) उत्साह पूर्वक (इन्द्रम्) ईश्वर के नाम को (वर्धन्तः) बढ़ाते हुये (अराव्णः) दुष्टों को अनार्यों को (अपघ्नन्तः) मारो और (विश्वम्) समस्त संसार को (आर्यम्) आर्य्य बनाओ-शुद्ध करो पवित्र करो उन्हे श्रेष्ठ बनावो।

भावार्थः—इस मन्त्र में परमेश्वर आज्ञा करते हैं कि जो मनुष्य आर्य वेद विरोधी अनार्य हैं उन सबको शुद्ध करलो आर्य बनाओ अर्थात् प्रायश्चितादि से उनकी अनार्यता को नाश करके समस्त संसार को शुद्ध करो।

२ ॐ वसोः पवित्र मसि शतधारम्,
वसोः पवित्र मसि सहस्रधारम्,
देवस्त्वा सविता पुनातु,
वसोः पवित्रेण शत धारेण,
सुप्वा कामधुक्षः॥ यजुर्वेद अ० १ मं० ३

भावार्थ—इसी मन्त्र से यज्ञादिकों में अबतक भी ताम्रपात्र में १ हजार छेद करा उस में जल भर करके उसके नीचे बैठा कर यजमान को यज्ञ में स्नान कराया जाता है ❋

❋ इसका भावार्थ ऐसा निकलता है कि यजमान यज्ञ में बिठाने के लिये शुद्ध किया जाता है।

इससे वेद मंत्रों द्वारा शुद्धि का विधान बहुत कुछ मिलता है।

अर्थः---जो (वसो) यज्ञ (शतधार) असंख्यात संसार का धारण करने वाला है और पवित्र, करने वाला याने शुद्ध करने वाला कर्म (असि) है फिर वह यज्ञ जो सहस्त्र हजारों ब्रह्माण्डों को धारण करने वाला व पवित्र करने वाला है (देव) प्रकाशस्वरूप भगवान (त्वा) उस यज्ञ को [सविता] परमेश्वर [पुनातु) पवित्र करे, यज्ञ करने वाला पतित शुद्धयर्थ परमात्मा से प्रार्थना करता हैं कि हे भगवन् ! यह जो [वसोः] यज्ञ है (पवित्रेण) शुद्धि के लिये [शत धारेण] वेद और (सुप्वा) यज्ञसे आप हमको [पुनातु] पवित्र की जिये।

भगवान से एक पातति हुवा प्राणीप्रार्थना करता है यथाः—

३ ओ३म् —नन्तु मा देव जनाः पुनन्तु मनसा धियः।
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहिमा ॥
यजु० १९-३

अर्थ—हे (देवजनाः) विद्वान् पुरुषो ! (मा) मुझे (पुनन्तु) शुद्ध करो (मनसा) विज्ञान और प्रीति से हमारी धियः) बुद्धियों को (पुनन्तु)पवित्र करो (बिश्वाभूतानि) समस्त जीव ! (मा) मुझको (पुनन्तु) पवित्र जीवन दो और हे (जातवेदः) वेदों के प्रचारक आचार्यों (मा) मुझको (पुनोहि) पवित्र करो। पुनः—

४ ओ३म् पावकोऽवकस्मभ्य ँशिवो भव।
अग्ने आयूंषि पवसे ॥

भावार्थ--हे पावक पवित्र करने वाले परमेश्वर। हमें पवित्र करके आप हमारे कल्याण के लिये हो। हे अग्ने पूजनीय, सर्वव्यापक, तेजस्वी पिता! आप हमारी आयु अर्थात् जीवन को पवित्र करो।

५ ओं कौत्सं अपनः शोशुचदघ मग्नें! शुशुग्ध्या रयिम् अपनः शोशुचदघम्॥

(ऋ० अ० १ अ० १९ व० ५)

अर्थः--हे अग्ने! तेजस्वरूप परमात्मन्! हमारा पाप हम से दूर हो, हमरा ऐश्वर्य्य बढे पुनः हमारा पाप दूर हो, किसी शब्द को दुबारा एक ही अर्थ में बोलते हैं तब उसका भाव 'अतिशय द्योतक' होजाता है, कहीं कहीं अर्थ में भी एक ही शब्द को दुबारा बोला करते हैं।

६ ओं 'उत देवा अवहितं देवा उन्नयथा पुनः उतागश्चक्रुषं देवा जीवयथा पुनः'--(ऋ० १०।१३७।१)

अर्थः--हे विद्वानों! (अवहितं) पतित याने अशुद्धों को शुद्ध करो अर्थात् उन्हें ऊंचे उठावो, हे देवो। जो अधर्माचरण से अपवित्र होगये हैं उन्हें फिर से पवित्र करो आदि,

७ ओं विजानीह्यार्यान ये च दस्यवो बर्हिष्मते रन्धयाशासदव्रतान्॥

(ऋग० मं० १ अनु० १० सू० ५१ मं० ८

भावार्थः--इस मंत्र द्वारा वेद भगवान स्पष्ट आज्ञा देते हैं कि बर्हिष्मते) सिद्धि के लिये (आर्यान्) श्रेष्ठों को (विजानीहि) जानो और (ये) जो (दस्यवः) अधर्मी हैं अथवा

अशुद्ध हैं व मुसलमानादि हैं उन्हें (रन्धया) शुद्ध करो तथा (अव्रतान्) असत्कर्मियों को (आशासत्) शुद्ध करो।

(८) ओं युष्मा इन्द्रो ....

दैव्याय कर्मणे शुन्धध्वं देव यज्यायै यद्वो ऽ शुद्धाः पराजघ्नुरिदं वस्तच्छुंधामि ॥ १३ ॥

(यजु० अ० १ मंत्र १३)

अर्थः-(दैव्याम कर्मणे) देवकर्मों में पतित को (शुन्धध्वम्) शुद्ध करो (यत्) जिससे (वः) तुम सबकी अशुद्धियें (पराजघ्नुः) दूर हों (इदं) इससे मैं (परमेश्वर) तुम्हारी (शुन्धामि) शुद्धि करता हूं।

भावार्थः-परमेश्वर आज्ञा देता है कि हे मनुष्यो ! देवकर्मों में प्रवृत्त करने के लिये तुम पतितों को शुद्ध करो जिससे उनका तुम्हारा संसर्ग न होने से तुम भी शुद्ध रहोगे क्योंकि मैं भी तुमको उत्तम कर्मों द्वारा शुद्ध करता हूं।

(९) ओं चित्पतिर्मा पुनातु वाक्पतिर्मा पुनातु देवो मा सविता पुनात्वच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्यरश्मभिः। तस्यते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम् ॥

अर्थः-पतित प्रार्थना करता है कि हे चितपते भगवन् ! मुझे पवित्र करो, हे वाणी पति परमेश्वर ! मुझे पवित्र करो, हे देव सब के रक्षक मुझे पवित्र करो, हे परमात्मन् तेजस्वरूप सूर्य के प्रकाश से मुझे पवित्र करो, हे पवित्र पते ! ऐसी कृपा करो कि मैं पवित्र होऊं।

१०) ओं ऋतवः समह दीनता प्रतीपं जगमाशुच मृळा सुक्षत्र मृलय ॥ (ऋ० ७-८९-३)

अर्थ–महापापी प्राथना करता है कि हे पवित्रपते ! मै अपने मुनो ज्ञान की अल्पज्ञता से उलटे मार्ग में चला गया था इस लिये कृपा कर पवित्र कीजिये।

(११) ओं पुनन्तु मा पितरः सोम्यासः पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु मपितामहाः पबित्रेण शतायुषा पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु प्रपितामहा। पविनेण शतायुषा विश्वमायुर्व्यश्नवै ॥ ३७ ॥ (यजु० अ० १९ मं० ३७)

अर्थः–(सोम्यासः) शान्त (पितरः) पितर लोग (पवित्रेण) पवित्रतायुक्त (शतायुषा) सौ वर्ष की आयु वाले (मा) मुझ को (पुनन्तु) पवित्र करें, हमारे पिता के पिता पितामह (बाबा) भी मुझे पतित को (पुनन्तु) पावत्र करें, (प्रपितामह) बाबा के पिता पड़ बाबा (पड़ दादा) मुझे पपित्र करें, जिससे मैं (विश्वम्) सम्पूर्ण (आयुः) जीवन भर (व्यश्नवै) पवित्र बना रहूं ॥ ३७ ॥ फिर पतित शुद्धयर्थ प्रार्थना करता है:--

(१२) ओं अग्ने आयूंष्वं षि पवस आसुवोर्जमिषंचनः। आरे बाधस्व दुच्छुनाम् ॥ ३८ ॥ (यजु० अ० १९ मं० ३८)

अर्थः–(अग्नेः) हे परमात्मन् ! (आयूंषि नः) हमारी आयु को (पवस) पवित्र करो (ऊर्जम्) पराक्रम (च) और (इषम्) इच्छा सिद्धि को (आसुव) प्रदान कीजिये और (आरे) हमारे चौतरफ बसने वाले (दुच्छुनाम्) दुष्टों से (बाधस्व) हमें दूर कर दीजिये। यह दुष्टात्मा पतित व म्लेच्छादिकों से पीड़ित मनुष्य की शुद्धयर्थ प्रार्थना है ॥ ३८ ॥ पुनः--

(१३) ओं यत्त पवित्रमार्चिष्यग्ने विततमन्तरा ।

ब्रह्मतेन पुनातु मा ॥(यजुर्वेद अ० १६-४१)

अर्थः-हे (अग्ने) प्रकाशस्वरूप (ते) तेरे (अर्चिषि सत्कार में (अन्तरा) सब से भिन्न (यत्) जो (विततम्) व्याप्त (पवित्रम्) पवित्र (ब्रह्म) वेद हैं (तेन) उस से (मा) मुझको (पुनातु) पवित्र कीजिये ॥ ४१ ॥

पुनः-

(१४) ॐ पवमानः सो अद्य नः पवित्रेण विचार्षिणः ।

यः पोता स पुनातु मा । (यजु० १९-४२)

अर्थः-(यः) जो जगदीश्वर (नः) हम सबको (पवित्रेण) पवित्रता से (पवमानः) पवित्र (विचर्षणि) विविध विद्याओं का दाता है (स) सो (अद्य) आज (मः) मुझको (पोता , करे ॥ ४३ ॥

ओं उभाभ्यान्देव सवितः पवित्रेण सवेन च ।

मा पुनहि विश्वतः ॥ ४३ ॥

अर्थः-(देव) हे देवतावा ! (सवितः) प्रेरक (पवित्रेण) पवित्रता से (च) और (सवेन) सकलैश्वर्य तथा (उभाभ्यां) विद्या और पुरुषार्थ से (विश्वतः) सब ओर से (माम्) मुझको (पुनहि) पवित्र कीजिये ॥ ४३ ॥

कृष्ण नाम से शुद्धि

किरात हूणान्ध्र पुलिन्द पुल्कसा, आभीर कङ्का यवनाः खसादयः । येऽन्ये च पापा यदुपा श्रयाश्रयाः, शुध्यन्ति तस्मै प्रभाविष्णवे नमः ॥ (श्रीमद्भागवते २-४-१८)

अर्थः—किरात, हूण (यहूदी) आन्ध्र, पुलिन्द पुल्कस, अहीर, कंक, यवन (मुसलमानादि) खस से आदि लेकर वे वे लोग जो धर्म से गिरगये हैं वे सब श्री कृष्ण भगवान की शरण में आने से शुद्ध हो जाते हैं ऐसे प्रभु के लिये हमारा नमस्कार हो।

कृष्ण नाम महिमा

प्रायश्चितानि सर्वाणि तपः कर्मात्मकानिवै ।
यानि तेषामशेषाणां कृष्णानु स्मरणं परम् ॥

अर्थः—तप्त कृच्छादि जितने शुद्धि के व्रतादि हैं उन सब से बढ़ कर कृष्ण नाम स्मण शुद्धि करने वाला है।

नाम स्मर्ण से शुद्धि।

ओं अपवित्रः पवित्रोवा सर्वावस्थां गतोऽपिवा ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचि ॥

अर्थः—चाहे कोई पवित्र हो अथवा अपवित्र हो. चाहे किसी भी अवस्था को प्राप्त होगया हो अर्थात् महान् से महान नीच दशा को प्राप्त होगया है तो भी वह पुण्डरीक भगवान का स्मर्ण करते ही बाहर और भीतर से पवित्र हो जाता है। तब मुसलमान व ईसाई इस मंत्र से क्यों नहीं शुद्ध कर लिये जाते हैं अवश्य करलेने चाहिये और वे अवश्य पवित्र हो सकते हैं।

प्रश्नः—वे पुण्डरीक भगवान कैसे हैं ?

उत्तरः—

यस्य स्मरण मात्रेण जन्म संसार बंधनात ।
विमुच्यते नमस्तस्मै विष्णवे प्रभु विष्णवे ॥

अर्थात् जिस विष्णु भगवान के स्मर्ण मात्र से जन्म बंधन और संसार के दुःख बंधनों से प्राणी मुक्त हो जाता है उस विष्णु भगवान को बारंबार नमस्कार है।

जब विष्णु भगवान के स्मरण मात्र का इतना बड़ा महात्म्य है तब हमारे भाई मुसलेमान व ईसाई भी विष्णु मंत्र से तत्काल शुद्ध किये जा सक्ते हैं।

॥ गायत्री मंत्र से शुद्धि ॥

गायत्री परमा देवी भुक्तिमुक्ति प्रदायताम्।
यो जपेतस्य पापानि विनश्यन्ति महान्त्यपि ॥
(गरुड़० ३५-१)

भा० गायत्री देवी लौकिक और पारलौकिक दोनों सुखों को देने वाली है जो उसका जप करता है उसके सब पाप नष्ट हो जाते हैं। पुनः—

शतं जप्त्वातु सा देवी स्वल्प पाप प्रणाशिनी।
तथा सहस्र जप्त्वातु पातकेभ्यः समुद्धरेत ॥ १ ॥
दश सहस्र जाप्येन सर्व किल्विष नाशनी।
लक्षं जप्त्वातु सादेवी महापातक नाशनी ॥२॥
सुवर्णस्तेय कृद्विप्रो ब्रह्महा गुरुतल्पगः।
सुरापश्च विशुद्धयन्ति लक्षं जप्त्वा न संशय ॥

[शंख अ० १२ श्लो० १५ से १७]

भा० इन श्लोकों में पाठ भेद भी मिलता है, सौ गायत्री जप करलेने से साधारण दैनिक पाप दूर हो जाते हैं तो, हजार

गायत्री जपने से कठिन कठिन उपपातक दूर हो जाते हैं, दशहजी गायत्री जपने से सब पाप दूर हो जाते हैं और लाख गायत्र जपने से महापातक पाप दूर हो जाते हैं, सोने की चोर ब्रह्महत्या, गुरु स्त्री के साथ सम्भोग, और मद्यपान में महापातक लक्ष गायत्री के जपने से निःसन्देह दूर हो जाते हैं।

पुनः—

महापातक संयुक्तो लक्षहोम सदा द्विजः।
मुच्यते सर्व पापेभ्यो गायत्र्याच्चैव पावितः ॥२१६॥
गायत्र्यास्तु परं नास्ति शोधनं पाप कर्मणाम्।
महा व्याहति संयुक्तां प्रणवेन च संजपेत् ॥२२१॥

(संवर्त० २१६-२२१)

भा० महापातकी मनुष्य गायत्री से लक्ष आहुति करें तो वे सम्पूर्ण पापों से दूर हो जाते हैं ॥ २१६ ॥

पापों से निवृत्ति पाने के लिये गायत्री से बढ़कर कोई मंत्र नहीं है ॥ २२१ ॥ पुनः—

अभ्यसच्चतथा पुण्यां गायत्रीं वेद मातरम्।
गत्वारण्ये नदी तीरे सर्व पाप विशुद्धये ॥२१७॥

अर्थः—सर्व पापों की शुद्धि के लिये वेदों की माता पवित्र गायत्री का बन में व नदी के तट पर जप करे।

पुनः—

अयाज्य याजनं कृत्वा भुक्त्वा चान्नं विगर्हितम्।
गायत्र्यष्ट सहस्रं तु जपंकृत्वा विशुध्यति ॥ २२३ ॥

भा० अयोग्य को यज्ञकरा और निन्दित अन्न खाकर आठ हजार गायत्री जप से शुद्धि हो जाती है।

सावित्रीं च जपेन्नित्यं पवित्राणि च शक्तितः।
सर्वेष्वेव व्रतेष्वेवं प्रायश्चित्तार्थ मादितः॥

(मनु० अ० ११ श्लो० २२५)

अर्थः—पवित्रता पूर्वक सदा गायत्री जपे तैसे ही व्रतादिकों में विशेष आदर के साथ गायत्री को जपै तो वह शुद्ध हो जाता है।

परान्ने दशगायत्री श्राद्धे चैव शतद्वयम्।
प्रेतान्ने अयुतंजाप्या अन्न शुद्धं यथा भवेत्॥

भा० पराया अन्न खाय तो दश गायत्री जपे श्राद्ध में किसी के यहाँ जीमे तो २०० गायत्री जपे और १२ वें (मृतक) का अन्न खाय तो दशहजार गायत्री जपे तब अन्न की शुद्धि होती है ऐसे ही अन्न को खाने वाले ब्राह्मण शुद्ध ब्राह्मण माने जाते हैं धर्मशास्त्रों में खाती सुनार बढ़ई

अल्पायु का कारण

और सुनार आदि आदि अनेकों जातियों का अन्न खाना ब्राह्मणादि के लिये मना लिखते हुये अन्तमें भगवान मनु ने लिखा है कि "सर्वेषामेवशौचानां अर्थ शौचं परं स्मृतम्" अर्थात् सम्पूर्ण पवित्रतावों की अपेक्षा धन धान्य ग्रहण करना सब पवित्रतावों से बड़ा है, इस शास्त्रीय तत्व को कतिपय ब्राह्मण लोग न मान कर रंडी मुन्डी, छोडा छीलने वाली जातियें व अन्य अन्य नाई, धोबी, तेली कलाल आदि आदि जातियों के यहाँ जीमते चूठते व उनका

दान पुरय लेते रहते हैं आजकल राजपूताने में विशेष नुअ सन्धान से लोगों ने ऐसा प्रचलित किया है कि काष्टकार लोग पहिले "रगरीकातीखा" कहाते थे पर जब इन्हों ने अपने को 'रगरीकातीखा' कहा जाना अच्छा नहीं समझा तो किसी बुद्धिमान ने इन्हें समझाया कि रगरीकातीखा इन छहों अक्षरों को उलटा लो तो कारीगर खाती ऐसा शब्द बन जायगाऔर वह सार्थक भी होगा तब से यह रगरीकातीखा शब्द खाती कारीगर शब्द में बदल गया इसमें सत्याऽसत्य कुछ भी हो हमारी इसके साथ सहानुभूति नही है पर इन के यहाँ भी केवल भुक्कड़ ब्राह्मण कहीं कहीं जीम आते हैं।

हमने सुना है कि जिस काष्टकर्मी समुदाय की झूंठी नाई पत्तल नहीं उठावे, चमारादि भी जिनका काम करने से इनकार करें सम्पूर्ण हिन्दू पबलिक जिन्हें अपने कुवों तक पर नहीं चढ़ने दे उनके यहां भी कोई कोई भुक्कड़ निरक्षर भाटाचार्य्य ब्राह्मण लोग जोमते हुये बतलाये जाते हु यही नहीं कई जगह भुक्कड़ ब्राह्मण लोग गो भक्षक हत्यारी जातियों के यहां की धन धान्य लेते देते व खाते पीते देखे गये हैं जब ब्राह्मणों का पवित्रता सम्बन्ध में ऐसी दशा है तब वे अल्पायु होकर शीघ्र मरजांय इसमें आश्चर्य ही क्या है लिखा भी हैः---

अनभ्यासेनवेदाना माचारस्य च वर्जनात।
आलस्यादन्न दोषाच्च मृत्युर्विप्रां जिघांसति ॥

अर्थ---वेदों के अनभ्यास से, आचार विचार युक्त न रहने से, आलस्य से और अन्नदोष से याने शास्त्र वाजत जातियों का अन्न खाने से ब्राह्मणों को शीघ मत्यु आ जाती है अतएव

हे ब्राह्मणों ! जीमने के लालच से विवेक बुद्धि रहित होकर अन्धा धुन्ध खाते हुये सदा के लिये अपवित्र न बनो। इस से १श में आपका गौरव और धर्म की रक्षा होगी।

राम नाम से शुद्धि

श्री राम राम रामेति, ये वदन्त्यति पापिनः।
पाप कोटि सहस्रेभ्यो, स्तेषांसन्तरणं ध्रुवम्॥

अर्थः-अति पापी भी तीन वार राम नाम उच्चारण करले तो वह हजार क्रोड़ पापों से छूट कर शुद्ध हो जाता है।

हिन्दी कविता के सूर्य, भगत गोस्वामी तुलसीदास जी रामायण में राम नाम महिमा का वर्णन करते हुए लिखते हैं किः—

श्वपच शवर खल यवन जड़ पामर कोलकिरात।
राम कहत पावन परम, होत भुवन विख्यात॥
तु० रा० अ० का०

अर्थ-चाण्डाल भील म्लेच्छ कोल किरात आदि रामनाम उच्चारण से परम पवित्र होकर संसार में प्रसिद्ध होजाते हैं। इसलिये राम भगवान् ने भीलनी के झूठे बेर खाना स्वीकार किया था।

गोस्वामी तुलसीदासजी ने कहा है:—

(चौपाई)

कहांलों करूं मैं नाम बड़ाई, राम न सके नाम गुण गाई।
बार एक राम कहे जो कोई, होय तरण तारण नर सोई॥

भा० तुलसीदासजी कहते हैं कि मैं:—

राम नाम की कहांतक कितनी बड़ाई करूं ? क्योंकि रानाम के गुणों को तो मैं अच्छे प्रकार समझा भी नहीं सका हूं क्योंकि रामनाम का इतना महात्म्य है कि यदि कोई महापापी राम नाम को एकवार भी बोल ले तो वह नर महान पवित्र होकर दुःख सागर से तर जाता है तब राम नाम को बुलाकर ईसाई मुसलमान शुद्ध करलिये जांय तो क्या वे शुद्ध नहीं हो सक्ते हैं ?

अवश्य ! अवश्य ! ! अवश्य होसक्ते हैं ! ! !

पुनः और देखिये:—

(दोहा)

तुलसी रा के कहहीं, निकसत पाप पहाड़।
पुनि आवन पावत नहीं, मकार देत कवाड़॥

अर्थः—तुलसीदासजी 'रामनाम' का महात्म्य बतलाते हुये कहते हैं कि 'राम' शब्द में दो अक्षर हैं, रा और म अतएव जहां पापी से पापी मनुष्य भी 'राम' को कहने के लिये तय्यार हुवा और जहां मुंह से 'रा' निकला कि पहाड़ के समान भी पाप उस प्राणी के निकल कर शरीर से अलग होजाते हैं

तब उसका शरीर पापरहित हो जाता है तब जहाँ "राम" यह दोनों अक्षर बोले गये कि मकार ने किवाड़ बंद कर दिये और पाप शरीर बाहर रहेगये और "राम" को कहने वाला पवित्र होगया, शुद्ध होगया अतएव क्या राम उस महामंत्र से ईसाई मुसलमानों की शुद्धि नहीं हो सक्ती है?

हो सक्ती है! हो सक्ती है!! जरूर हो सक्ती है!!!

शुचिव्रततमाः शूद्रा धार्मिका द्विज सेवकाः।
स्त्रियः पतिव्रताश्चान्ये प्रतिलोमानुलोमजाः॥ १॥
लोकाश्चाण्डाल पर्यन्तं सर्वेप्यत्राधिकारिणः।
(म्लेछो० पृ० १०)

अर्थः—अत्यन्त शुद्ध व्रत वाले शूद्र, पतिव्रता स्त्रियें, प्रतिलोमज अनुलोमज और चाण्डाल पर्य्यन्त सपूर्ण मनुष्य इस मन्त्र के अधिकारी हैं।

श्रुतिब्रह्माह षड्वर्णं स्मृतिर्वर्णद्वयात्मकम्।
षड्वर्णं ब्राह्मणादीनां त्रयाणां यद् द्विवर्णकम्॥ १॥
तदन्येषां देशिकेन वक्तव्यं तारकं परम्॥

भाष्यम्:-इत्यनेन त्रैवर्णिकानाम् 'ॐ रामायनमः' इति षड्वर्णे पूर्व वाक्यैकवाक्यतया तदन्येषां सर्वेषामपि मनुष्याणां राम नाम मन्त्रे ऽधिकारावगमाच्च। एवं ब्रह्मोत्तर खंडे शिव पञ्चाक्षरं प्रक्रम्य।

भावार्थः—इस ही तरह "ओं रामायनमः" इस षडाक्षरी महा मंत्र का मनुष्य मात्र को अधिकार है जिससे एक शुद्धि ही क्या किन्तु मुक्ति तक हो सकती है।

विष्णुभक्ति समायुक्तो मिथ्याचारोऽप्यनाश्रमी ।
पुनातिसंकलांल्लोकान् सहस्रांशुरिवोदितः ॥ १ ॥

ब्राह्मण क्षत्रियो वैश्य शूद्रो वा यदि वेतरः ।
विष्णुभक्ति समायुक्तो ज्ञेयः सर्वोत्तमोत्तम : ॥ २ ॥

दुराचारोऽपि सर्वाशी कृतघ्नो नास्तिकः पुरा ।
समाश्रयेदादिदेवं श्रद्धया शरणं हि यः ॥ ३ ॥
निर्दोषंविद्धितं जंतु प्रभावात्परमात्मनः ॥

(म्लेच्छी० पृ० ११ स्कान्दे च)

भा०—विष्णु भगवान की भक्तिमें युक्त मनुष्य मिथ्याचारी भी हो,ब्राह्मण,क्षत्रिय,वैश्य, शूद्र व अन्य २ कोई भी लोग जो विष्णु भगवान की शरण अपने को मानलें तो सर्वोत्तम हो जाते हैं, कोई मनुष्य कैसा भी दुराचारी, कृतघ्नी, नास्तिक व हत्यारा आदि हो पर यदि वह श्रद्धावान होकर विष्णु भगवान के आश्रय आना चाहे तो वह आवे और हे मनुष्यो ! तुम उस प्राणी को निर्दोष जानो क्योंकि परमात्मा के प्रभाव से वह भगवान के चरणों में श्रद्धा करते ही पवित्र हो जाता है ।

महापातकदावाग्निः सोऽयं मन्त्र षडक्षरः
प्रणवेन बिना मंत्र सोऽयं पञ्चाक्षरो मतः ॥ १
स्त्रीभिः शूद्रैश्च संकीर्णैः धार्यते मुक्ति कांक्षिभिः ।
नास्य दीक्षा न होमश्च न संस्कारो न तर्पणम् ॥ २
न कालनियमाश्चात्र जप्प:सर्वैरयं मनुः
वैश्यैः शूद्रैर्भक्ति युक्तैः म्लेच्छैरन्यैश्चमानवैः ॥

भाषार्थम्-:इत्यनेन शिव पंचाक्षर मन्त्रे म्लेच्छादीनामप्यधिकार:स्पष्टम् ।

भावार्थः—इस प्रकार से शिवपञ्चाक्षरी मन्त्र ॐ शिवायनम का म्लेच्छादिकों को भी स्पष्ट अधिकार है। क्योंकि ओम्कार बिना पञ्चाक्षरी और ओमकार युक्त षडक्षरी मन्त्र मोक्ष की इच्छा करने वाले स्त्री, शूद्र वर्णसंकर आदि सब के लिये है इस ओं शिवायनमः मंत्र को धारण करने के लिये न दीक्षा न होम न संस्कार और तर्पण न मुहूर्त की आवश्यकता होती है किन्तु इसको प्रेमयुक्त वैश्य शूद्र म्लेच्छादि सम्पूर्ण मनुष्य बिना किसी भेद भाव के जप सकते हैं और मुक्ति तक प्राप्त कर सकते हैं तब विचारे मुसलमानादि की शुद्धि में ही क्या कठिनता ? अर्थात् कुछ नहीं।

ब्राह्मण के चरणामृत से शुद्धि

नश्यन्ति सर्व पापानि द्विजहत्यादिकानिच ।
कणमात्रं भजेद्यस्तु विप्राघ्रि सलिलं नरः ॥

(प० यु० ब० स० ४ अ०)

अर्थः—उसके ब्रह्म हत्यादि तमाम पाप नष्ट होजाते हैं जो ब्राह्मणों के चरणामृत का एक बूंद भी ग्रहण करलेता है।

ब्राह्मणों की कृपा से महापापी भी शुद्ध होजाता है यथाः—

अंगीकारेण बन्धूना ब्राह्मणानुग्रहेण च ।
पूयन्ते तत्र पापिष्ठा, महापातकिनोऽपिये ॥

अत्री स्मृति २७४ ॥

अर्थः— बन्धुगण अर्थात् बिरादरी के लोग अपने में मिलालें और ब्राह्मणों का अनुग्रह (दया) हो तो पापी और महापापी मनुष्य भी शुद्ध होजाते हैं। भाव यह कि बिरादरी की स्वीकृति होने पर विद्वान् ब्राह्मणों की कृपा दृष्टि से महा पतितों की भी शुद्धि हो जाती है।

नौमुसलिमों की शुद्धि

राजान्यैः श्वपचैर्वापि बलाद्विचलतोद्विजः ॥
पुनः कुर्वीत संस्कारं पश्चात्कृच्छ्रत्रयं चरेत् ॥७६॥

(ध० सं० पृ०३७० अत्रि स्मृ० ७६)

भावार्थः—जिसको राजा व अन्य श्वपचादि बलपूर्वक धर्म से चलायमान कर देवें वह अपना फिर से संस्कार कराकर शुद्ध हो सकता है।

अपेयं येन सम्पीत मभक्ष्यं चापि भक्षितम्।
म्लेच्छैर्नीतेन विप्रेण अगम्या गमनं कृतम्॥ ७ ॥
तस्यशुद्धिम्प्रवक्ष्यामि................ ॥ ८ ।

(देव० स्मृ० ७, धर्म सं० पृ० ३७०)

जो ब्राह्मण म्लेच्छ के वश में होकर नहीं पीने योग्य वस्तु पीता है नहीं खाने योग्य वस्तु खाता है तथा नहीं गमन करने योग्य स्त्री से गमन करता है उसकी शुद्धि हम कहते हैं।

अथ संवत्सरादूर्ध्वं म्लेच्छैर्नीतायदो भवेत् ।
प्रायश्चित्तेतु संचीर्णो गंगा स्नानेन शुध्यति ॥ १५ ॥

भा०—जो एक वर्ष से अधिक म्लेच्छ के वश में रहा हो वह संचीर्ण प्रायश्चित करके गंगा स्नानसे शुद्ध हो जाताहै ॥१५॥

बलाद्दासी कृता येच म्लेच्छ चाण्डाल दस्युभिः
अशुभं कारिताः कर्म, गवादि प्राणहिंसनम् ॥ १७ ॥
उच्छिष्ठ मार्जनं चैव, तथा तस्यैव भोजनम् ।
खरोष्ट्र विड्वराहाणां, मामिषस्य च भक्षणम् ।
तत्स्त्रीणां च तथा सङ्गं ताभिश्च सह भोजनम् ।
मासोषिते द्विजातौ तु प्राजापत्यं विशोधनम् ।

धर्म शा० सं० पृ० ३७१ देव० स्मृ० १७ व १९)

भावार्थ—जिन द्विजातियों को म्लेच्छ चांडाल अथवा डाकू जबर्दस्ती पकड़ कर मुसलमान व गुलाम × बनालें वे लोग उनके साथ रह कर अशुभ कर्म गौ आदि प्राणियों की हिंसा, झूंठे बर्तन साफ, उनका झूंठा भोजन, गदहा ऊंट तथा गांव के सूवर तक का भक्षण व उनकी स्त्रियों के साथ मैथुनादि कर लिये हों तो वे घर आकर प्राजापत्य ब्रत करके शुद्ध हो सक्ते हैं। आज कल के मुसलमान इस ही दशा के अन्तर्गत हैं।

म्लेच्छान्नं म्लेच्छ संस्पर्शो म्लेच्छेन सह संस्थितिः ।
वत्सरं वत्सरादूर्ध्वं त्रिरात्रेण विशुध्यति ॥ १ ॥

× हिन्दुवों को कत्ल करने व गुलाम बनाने के उदाहरण भूमिका प्रकरण में देखिये ।

म्लेच्छैः सहोषितो यस्तु पञ्च प्रभृति विंशतिम्।
वर्षाणि शुद्धिरेषोक्ता तस्य चांद्रायण द्वयम् ॥ २॥

(देवल)

भावार्थ--जो एक वर्ष व एक वर्ष से अधिक म्लेच्छों के साथ रहा हो व उनका अन्न खाया हो तो उनकी शुद्धि तीन दिन का व्रत करने से हो जाती है ॥ १ ॥ जो पांच वर्ष से बीस वर्ष तक व उससे ऊपर तक रहा हो उसकी शुद्धि दो चान्द्रायण व्रतों से हो सकी है ॥

बलान्म्लैच्छैस्तु योनीतस्य शुद्धिस्तु कीदृशी।
संवत्सरोषिते विप्रे शुद्धिश्चान्द्रायणेनतु ॥ २६ ॥

पराकं वत्सरार्धे च पराकार्धं त्रिमासिके।
मासिके पाद कृच्छ्रश्च नखरोम विवर्जितः ॥२७॥

भावार्थ—जिनको म्लेच्छ लोग बल से पकड़ कर याने जबर्दस्ती भगा कर व बहकाकर अपने वश में कर लेवें तो उनके फंदे में से किसी तरह छूट कर आने पर उसकी शुद्धि होने का क्रम यह है, एक वर्ष यदि कोई ब्राह्मण ब्राह्मणी इनके वश में रहा हो तो चान्द्रायणव्रत, ६ मास रहने वाला ब्राह्मण पराकव्रत, तीन मास रहने पर आधा पराक और एक मास रहने वाला ब्राह्मण पादकृच्छ्र करने पर शुद्ध हो जाता है आज कल धर्म की व्यवस्था उलट पलट हो रही है अतएव कलिधर्म के अनुसार ऐसे प्राणी साधारण प्रायश्चित से ही शुद्ध हो जाते हैं।

पुनः--

म्लेच्छान्नं म्लेच्छ संस्पर्शो म्लेच्छेन सह संस्थिति ।
वत्सरं वत्सरादूर्ध्वं त्रिरात्रेण विशुध्यति ॥ ४५ ॥
म्लेच्छैर्हतानां चौरैर्वा कान्तारेषु प्रवासिनाम् ।
भुक्त्वा भक्ष्यमभक्ष्यं वा क्षुधार्तेन भयेनवा ॥ ४५ ॥
पुनः प्राप्यस्वकं देशं चातुर्वर्ण्यस्य निष्कृति ।
कृच्छ्रमेकं चरेद्विप्रस्तदर्धं क्षत्रियश्चरेत् ॥ ४६ ॥
पादोनं च चरेद्वैश्यःशूद्रः पादेन शुध्यति ।
(ध० सं० पृ० ३७१ , देवल , तथा प्रायश्चित निर्णय, १७)

भावार्थ--कोई मनुष्य एक वर्ष अथवा उससे अधिक समय तक म्लेच्छ का अन्न भोजन कर लिया हो, म्लेच्छ के साथ संसर्ग और निवास करता रहा हो, तो वह तीन दिन तक निराहार रह कर शुद्ध हो जाता है आज कल कलि धर्मानुसार ऐसे मनुष्य एक दिन के व्रत व होम करके पंच गव्य पीने से ही शुद्ध हो सकते हैं। मुसलमानी राज्यों में रहने वाले सरहदी हिन्दुओं को मुसलमान चोर, डाकू पकड़ ले जाँय और वे यदि भय से अथवा भूख से दुःखी होकर अभक्ष्य पदार्थ भी खालें तो वे अपने घर पर आकर प्रायश्चित से शुद्ध हो जा सकते हैं, ब्राह्मण एक प्राजापत्यव्रत, क्षत्रिय उसका आधा, वैश्य उसका आधा और शूद्र चौथाया प्रायश्चित करे। आज कल जो नौमुसलिम हैं उनमें विशेषता लड़ाकू जातियों की है अतएव उनकी शुद्धि के लिये एक दिन का व्रत, यथाशक्ति हवन, और पंचगव्य का पीनामात्र ही पर्याप्त है।

पञ्च सप्ताष्ट दशवा द्वादशाहोपि विंशतिः ।
म्लेच्छैर्नीतस्य विप्रस्य पञ्चगव्यं विशोधनम् ॥८०॥

(ध० शा० सं० पृ० ३७१)

भावार्थ—पांच, सात, आठ, दस, बारह अथवा बीस दिन व अधिक समय तक म्लेच्छ के वश में रहने वाला ब्राह्मणादि केवल पंचगव्य पिलाने से ही शुद्ध हो जाता है।

यह उपरोक्त जो शुद्धियें कहीं हैं ये सतयुग व द्वापरादि के समय के ऋषिप्रणीत ग्रन्थों की हैं उस समय देश दशा व आज कल की देशदशा में पृथिवी आकाशका सा भेद है अतएव ऋषियों ने जहां प्राजापत्य, चान्द्रायण, पराक कृच्छ, कृच्छ्रसांतपन आदि

देशकालानुसार प्रायश्चित

आदि कठिन २ व्रत लिखे हैं तहां देशकाल के अनुसार पापियों का उद्धार करने को प्रायश्चित में कई तरह की रियायत भी की है यथाः—

अशीतिर्यस्य वर्षाणि बालोवाऽप्यनूनषोडषः ।
प्रायश्चित्तार्द्ध मर्हन्ति स्त्रियो रोगिण एवचः ॥३०॥

भावार्थ—अस्सी वर्ष के बूढ़े, सोलह वर्ष से कम के किशोरावस्था वाले बच्चे, स्त्रियें और रोगी मनुष्य अपने वर्ण से आधा प्रायश्चित करते ही शुद्ध हो जाते हैं ॥ ३० ॥

पुनः ।

ऊनैका दशवर्षस्य पंचवर्षात्परस्य च ।
प्रायश्चित्तं चरेद्भ्राता पिता वाऽन्योऽपिबन्धिता ॥

ध० शा० सं० ३७१)

११ वर्ष से कम और ५ वर्ष से अधिक उमर का लड़का लड़की किसो विधर्मी के फन्देमें फंस जाय तोउसलड़के लड़का की जगह उसके Guardian संरक्षक माता, पिता भाई बन्धु आदि आदि प्रायश्चित करें और वह बालक बालिका केवल वस्त्र प्रक्षालन व स्नान मात्र से शुद्ध हो सकता है

ऋषियों की दयालुता

ऋषि लोग बड़े बड़े दीर्घदर्शी व परम अनुभवि थे और वे पतित पावन भी कहे जा सक्ते हैं क्योंकि दीन हीन मनुष्य उपरोक्त कठिन कठिन व्रतादि कैसे कर सक्ते हैं अतएव लिखा है:-

देशकालं वयंशक्ति पापं चावेक्ष्य यत्नतः ।
प्रायश्चितं प्रकल्प्यंस्यात् अत्रचोक्ता न निष्कृति॥

(याज्ञ प्रायश्चिताध्याय श्लो० २९३ पृ० ६४८)

भा०--विद्वानों को चाहिये कि वे लोभ मोह रहित होकर देशस्थिती राज्यस्थिती, कालस्थिती, ऊमर और प्रायश्चित करने वाले का शारीरिक व धनादि की शक्ति देखकर प्रायश्चित बतलावे ॥ २९४ ॥

अकामतः कृतं पापं वेदाभ्यासेन शुध्यति
कामतस्तु कृतं मोहात्प्रायश्चितैः प्रथग्विधैः॥

(मनु अ० ११ श्लो० ४६)

अर्थः--जो कुछ अनिच्छा से पाप करता है वह वेद पाठ से दूर हो जाता है जो इच्छा से किया जाय उसके लिये भिन्न प्रायश्चित है ।

आजकल के नौमुसलिम और ईसाई इन पापों को बिना जाने करते हैं, इसलिये उनके लिये विशेष प्रायश्चित्त की कोई आवश्यक्ता नहीं है, वे केवल मन्त्र पाठ युक्त साधारण विधि से ही शुद्ध किये जा सक्ते हैं।

दंड निदान

आपद्गतो द्विजोऽश्नीयाद् गृह्णीयाद्वायतस्ततः।
न स लिप्येत् पापेन पद्मपत्र मिवाम्भसा॥३१८॥

बृ० पा० ६-३१८

अर्थ—आपत्ति में पड़ा हुआ द्विज कहीं से भी कुछ ले कर खाले तो वह पाप से लिप्त नहीं होता जैसे जल में स्थित कमल। पुनः :—

देशभंगे प्रवासेच व्याधिषु व्यसनेष्वपि।
रक्षदेव स्वदेहादि पश्चाद्धर्मं समाचरेत्॥ ४१॥

पाराशर अ० ७ श्लो० ५०)

अर्थ—देश में गड़बड़ी के समय, प्रदेश में, रोग और आपत्ति के समय जिस प्रकार हो सके अपने प्राण धन और जनादि की रक्षा करे तत्पश्चात् अर्थात् शांति के समय धर्म व्रतादि करे।

आपत्तिकाल में शुद्धि

अपत्काले तु सम्प्राते शौचा चारं न चिंतयेत्।
शुद्धि समुद्धरेत पश्चात् स्वस्थोधर्म समाचरेत॥

पाराशर स्मृति ७-४३

अर्थ—आपत्तिकाल में (जैसा कि सम्प्रति प्राप्त है शौचाऽशौच का विशेष विचार न कर के शुद्धि कर लेनी चाहिये । पश्चात् स्थिति सुधरने और शांति स्थापित होने पर वैदिक संस्कारादि धर्म का अच्छी तरह से आचरण करे। पुनः—

जीवितात्यय मापन्नो योऽन्नमत्ति यतस्ततः ।
आकाशमिव पंकेन न स पापेन लिप्यते ॥

(मनु० अ० १० श्लो० १०४)

भावार्थ—आपत्तिग्रस्त मनुष्य जो इधर उधर जहाँ कहीं जो कुछ भी मिला खाले तो उसे पाप नहीं लगता है जैसे आकाश में कीचड़ से कुछ विकार नहीं होता तैसे ही मुसलमानादिकों के पजे में फंसा मनुष्य भी यदि उनका खा पीले तो कुछ बात नहीं । पुनः—

आपद्गतः संप्रगृह्णन् भुंजानो वायतस्ततः ।
नलिप्यंतैनसाविप्रो ज्वलनार्क समोहिसः ॥४१॥

(याज्ञ० मिता० प्रायश्चि० आप० २ श्लो ४१ पृ० ४५१

भावार्थ—आपद्ग्रस्त मनुष्य प्राणरक्षार्थ कहीं भी कुछ खाले पीले तो वह पाप से लिप्त नहीं होता। किन्तु सूर्यवत् उस का तेज बना रहता है। पुनः

श्वमांस मिच्छन्नार्तोऽत्तुं धर्माऽधर्म विचक्षणः ।
प्राणानां परिरक्षार्थं वामदेवो न लिप्तवान् ॥

(मनु० अ० १० श्लो० १०६)

भावार्थ धर्म अधर्म का जानने वाला वामदेव नामक ऋषि क्षुधा से पीड़ित हो प्राण रक्षार्थ कुत्ते का मांस खाने को उद्यत हुवा पर वह पाप से लिप्त नहीं हुवा। पुनः—

अजीगर्तः सुतं हन्तुमुपासर्पद्बुभुक्षितः ।
न चालिप्यत पापेन क्षुत्प्रतीकारमाचरन ॥१०५॥
भरद्वाजः क्षुधार्तस्तु सपुत्रो विजने वने ।
बह्वीर्गाः प्रतिजग्राह वृधोस्तक्ष्णो महातपः ॥१०६॥
क्षुधार्तश्चातुमभ्यागाद्विश्वामित्रः श्वजाघनीम् ।
चण्डाल हस्तादादाय धर्माऽधर्म विचक्षणः॥१०८॥

मनु० अ० १० श्लो० १०५, १०६, १०८

भावार्थ—अजीगर्त नामक ऋषि किसी विपत्ति में फंस जाने पर भूख से आतुर हो अपने पुत्र शुनःशेप को बेचने लगा पर पाप से लिप्त नहीं हुवा ॥ १०५ ॥

भारद्वाज मुनि अपने पुत्र सहित निर्जन बन में जावसे वहां भूख से पीड़ित होकर वृधु नामक बढ़ई से गोदान लिये ॥ १०६ ॥

धर्म अधर्म के जानने वाले विश्वामित्र ऋषि म्लेक्षादिकों के वश में हो क्षुधा से पीड़ित हो भंगी के हाथ से कुत्ते की जांघ का मांस खाने को तय्यार हुये पर पाप से लिप्त नहीं हुये

अतएवः—

शरीरं धर्म सर्वस्व रक्षणीयं प्रयत्नतः।
शरीरात्स्रवते धर्मः पर्वतात्सलिलं यथा ॥

शंख अ० १७ श्लो०६५

अर्थः—शरीर की रक्षा होने से ही सब कुछ हो सक्ता है अतएव धर्मसर्वस्व शरीर की प्रयत्न से रक्षा करनी चाहिये क्योंकि शरीर से ही धर्म चलेगा जैसे पर्वत से जल। शाख।

की आज्ञा के अनुसार हमारे भाई लोग नाना प्रकार से सताये जाकर मुसल्मान किये गये व भ्रष्ट पतित होगये इस में उनका क्या दोष अर्थात् वे निर्दोष हैं और साधारण से प्रायश्चित्त से शुद्ध होने योग्य हैं।

पश्चात्ताप से शुद्धि

आचम्यातः परं मौनी ध्यायन दुष्कृत मात्मनः ।
मनः संतापनं तीव्रमुद्वहेच्छोकमन्ततः ॥ ब० स्मृति ॥

अर्थः—जिसने दुष्कर्म किया हो अर्थात् जो पतित हो गया हो वह आचमन करके मौन साधन कर मन में उसका पश्चात्ताप करे तो शुद्ध हो जाता है।

म्लेच्छों के साथ खाने पीने पर शुद्धि

अपेयं येन संपीतमभक्ष्यं चापि भक्षितम् ।
म्लेच्छैर्नीतेन विप्रेण अगम्यागमनं कृतम् ॥ ३ ॥
तस्य शुद्धिं प्रवक्ष्यामि यावदेकं तु वत्सरम् ।
चांद्रायणं तु विप्रस्य सपराकं प्रकीर्तितम् ॥ ४ ॥
देवल स्मृति

अर्थः—जिस किसी हिन्दू ने किसी विधर्मी के चुंगल में फंसकर न पीने योग्य (मदिरा आदि) पी लियी हो, अभक्ष्य पदार्थ (मांसादिक) खालिया हो, अगम्य में गमन भी किया हो अर्थात् यवनी आदि के साथ शादी करली हो और एक वर्ष तक वह उसी धर्म में बना रहा हो उसकी शुद्धि चाहे वह ब्राह्मण भी हो पराक सहित चांद्रायण करने से हो जाती है।

गो भक्षक की शुद्धि

सुरायाः संप्रपानेन गोमांसे भक्षणे कृते ।
तप्त कृच्छ्रं चरेद्विप्रो मौञ्जी होमेन शुद्ध्यति ॥

बृ० यमस्मृति अ० ५-६

अर्थः—मदिरा पीने और गोमांस खाने पर भी तप्त कृच्छ्र व्रत द्वारा होम करने से पतित हुआ ब्राह्मण भी शुद्ध हो जाता है ।

प्रायश्चित्त विधि

गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम् ।
एकरात्रोपवासश्च, कृच्छ्रं सान्तपनं स्मृतम् ॥

अर्थः—उपरोक्त श्लोक में प्रायश्चित करने की साधारण विधि इस प्रकार बतलाई है कि गोमूत्र, गोबर, दूध, दही, घी और कुशाओं से लिया हुआ जल, इन सब को मिलाकर पंचगव्य बनावे और इसे शुद्ध होनेवाले को पिलाने के पश्चात् एक रात्रि उपवास करावे। यही कृच्छ्र सान्तपन व्रत शुद्ध करने वाला है ।

तात्पर्य यह है कि शुद्धि के पहिले पञ्चगव्य पिलाने और एक रात्रि उपवास कराने की आवश्यकता है ।

'मैं फिर ऐसा न करूंगा' कहने मात्र से शुद्धि

कृत्वा पापंहि सन्तप्य तस्मात्पापात्प्रमुच्यते ।

नैवं कुर्या पुनरिति निवृत्या पूयते तु सः ॥

मनु० ११-१३१

अर्थ--अपने धर्म को छोडकर दूसरों के धर्म को ग्रहण करने पर भी तप अर्थात् प्रायश्चित करके इस पाप से छूट जाता है और 'मैं ऐसा फिर न करूगा,' अर्थात् फिर मैं अपने धर्म को न त्यागूंगा इस प्रकार प्रतिज्ञा करने पर वह शुद्ध हो जाता है।

प्रायश्चिते विनीते तु तदा वेषां कलेवरे ।
कर्तव्यः सूत्र संस्कारो मेखला दण्ड वर्जितः ॥

अर्थ--अशुद्धों का प्रायश्चित हो जाने पर उनके शरीरों में मेखला दण्ड से रहित यज्ञोपवीत संस्कार अर्थात् जनेऊ पहनाने का संस्कार करना चाहिये। देवलजी ने कहा है कि शुद्धि के बाद यज्ञोपवित दे देना चाहियेः—

तदासौ स्वकुटुम्बानां पंक्ति प्राप्नोति नान्यथा ॥

अर्थात् शुद्धि और जनेऊ के बाद उसको जाति वाले उसको अपनी पंक्ति (पांत) में मिलालें, खान पानादि में किसी प्रकार का भेद न रक्खें तथा शुद्ध हुआ भी अपने वर्ण धर्म के अनुकूल सब काम करता रहे जैसा कि मनुजी कहते हैं:—

उदाहरण मिलते है कि महात्मा शंकराचार्य जी ने केवल शंख में ओ३म् बोलकर हजारों आदमियों को शुद्धि मिन्टों में करदियी थी यानी उन्होंने शुद्ध्यर्थ हजारों आदमी पंक्तिवार बडी दूरमें बिठाकर शंख का धूंआडा लगाया और जहां तक शंखध्वनी सुन पडी तहाँ तक के लोगों को पञ्च गव्य पिलाकर झटपट जनेऊ देदियी।

(शंकर दिग्विजाय)

श्रोतसूत्रों में लिखा है कि प्रायश्चित विधि उतनी ही होनी

चाहिये जो सहज में की जा सके अतएव इस समय देश में धर्म बिप्लव है सरहदों में से हमारे हिन्दु भाई हिन्दु होने के कारण निकाले जा रहे हैं अच्छे नेता छूरी बन्दूक और तलवार के शिकार किये जारहे है हिन्दू धर्म की नैया डांवा डाल हो रही है हमारे नन्हे नन्हे बालक बालिकायें उडालिये जाते है स्त्री पुरुष धर्म भ्रष्ट किये जाते हैं, हिन्दु यद्यपि मुसलमानों से तिगुने हैं पर संगठन का अभाव होने से नित्य पिटते व लुटते जाते हैं, नाना प्रकार की पीड़ा व यातनायें हिन्दु भोग रहे हैं हिन्दुवो में का क्षत्रिय समुदाय तो मुसलिम बनाया जा चुका है प्रतिवर्ष हिन्दुवो की संख्या घटती जा रही है ऐसी दशा में हमें निश्चय होगया है कि हिन्दु लोग न चेते और गधापूछ के पीछे ही लगे रहे तो हम तो मरही जावेंगे पर सौ वर्ष में हिन्दू रहेंगे ही नहीं यह एक महान दुःख होगा हम ईश्वर से प्रार्थी हैं कि इस जन्म में हम से हिन्दु धर्म की कुछ सेवा बन नहीं आयी पर मरणान्तर में यदि फिर भी हमारा जन्म होतो इस ही भारत वर्ष में वैदिक धर्म्म में हो जिस से हम कुछ सेवा करसकें। भारत के हिन्दुवों की स्थिती से हमारा चित बडा दुःखी है हम सब भारत के भविष्य संबन्ध में विचार करते करते महान दुःखी है, हिन्दु सम्प्रदाय के २३ क्रोड हिन्दुओं में से बहुत कम ऐसे हैं जो हिन्दु जाति के दुःख व क्षीणता से दुःखी हों।

भारत का भविष्य

हां आर्य्य समाजिक भाइयों की कार्य प्रणालि से हमारा विरोध और उनके व हमारे सिद्धान्तों में कुछ अन्तर है, यही कारण है कि समाजी भाई हम से द्वेष करते हैं अस्तु! पर गुणी के गुण को कह देना भी हम अपना कर्त्तव्य समझते हैं, उनकी हमारी सिद्धान्तीय भिन्नता को हम एक ओर रख कर कह सक्ते हैं कि हिन्दुजाति का उद्धार यदि होगा तो आर्य-समाज के द्वारा ही होगा अतएव शिखाधारी मात्र का कर्त्तव्य

है कि विधर्मियों के मुकाबिले में हम सनातनी लोग तन मन धन से देशसेवार्थ उनके सहायक बनें ?

आजकल की स्थिती को देखते हुये व उपरोक्त धर्म वाक्यों के प्रमाणाधारानुसार हमारी सम्मति है कि नौमुसलिमों की शुद्धी पर विचार करते हुये हमने ५६ धर्मशास्त्रों का मनन किया और तिनमें के प्रायश्चित प्रकर्ण को बडे ध्यान के साथ देखा तो एक ही पाप की शुद्धि का प्रायश्चित अलग २ स्मृतियों में एक दूसरे से न्यून व कुछ अधिक मिला इससे यह परिणाम निकलता है कि ऋषियों ने देश स्थिती जैसी जैसी देखी वैसा २ हो न्यून व अधिक प्रायश्चित भी लिख दिया अतएव आजकल की स्थितो के अनुसार नौमुसलिमों की प्रायश्चित विधि इस प्रकार है।

पञ्चगव्य से शुद्धि

पूर्व कथित प्रमाणों में पञ्चगव्य से शुद्धि का विधान आया है अतएव यह जानने की आवश्यका है कि पञ्चगव्य क्या वस्तु है ? और शास्त्रों में इसकी क्या महिमा व गुण हैं ?

शब्द चन्द्रिका में लिखा है "पञ्चगव्यं दधि क्षीरं घृत गोमूत्र गोमयै:" । अर्थात् गौका दूध, गौका दही, गौका घी, गोमूत्र और गोमय (गाय का गोबर) ये पाँचों मिलकर पञ्चगव्य कहाता है।

प्रश्न:—पञ्चगव्य कैसे बनाना चाहिये ?

उत्तरः—

पल मात्रं दुग्ध भागं गोमूत्रं तावदिष्यते।
घृतञ्च पल मात्रं स्यात् गोमयं तोलकत्रयम् ॥
दधि प्रसूतमात्रं स्यात् पञ्चगव्यमिदं स्मृतम् ।
अथवा पञ्चगव्यानां समानो भाग इष्यते ॥

(इति गौतमीय तंत्रम)

॥ पञ्चगव्य विधि ॥

अर्थः—एक पल * गोदुग्ध, गोमूत्र एक पल और गो घृत भी एक पल, (गोमय) गाय का गोबर तीन तोला, गोदधि एक प्रसृत ये सब मिलने से पञ्चगव्य कहाता है। अर्थात् गाय का दूध गोमूत्र और गो घृत ये बराबर बराबर लेकर इन तीनों से १२ गुणा गोदधि और इन सब से तिगुना गोबर लेकर सब को मिला छाण कर उस में तुलसी और शर्करा मिलाने से पञ्चगव्य बन जाता है।

गोतम ऋषि का ऐसा भी मत है कि सब वस्तुयें समान मात्र लेलेने से भी पञ्चगव्य बन सक्ता है।

धर्मशास्त्र में ऐसा भी लिखा है:—

गोशकृद्द्विगुणं मूत्रं पयः स्यात्तच्चतुर्गुणम् ।
घृतं च द्विगुणं प्रोक्तं पञ्चगव्यो तथा दधि ॥

अर्थात् गाय के गोबर से दुगुणा गोमूत्र और गोबर से चौगुणा गो दुग्ध, गो दुग्ध से दुगुणा घृत और दुगुणा ही गोदधि ये पाँचों मिलकर पञ्चगव्य कहाता है।

---

* पल व प्रसृत तोल का नाम है।

गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम् ।
एकरात्रोपवासश्च श्वपाकमपि शोधयेत् ॥ १ ॥

(मनु० अ० ११-२१२ हारीत तथा म्लेच्छो पृ० १२)

भाष्यम्—शुद्धिः सर्वेषामपि भवत्युचितप्रायश्चित्तैरितिशास्त्र विधया बोधयत्येत्र । अनेन म्लेच्छीभूतानामवश्यमेव प्रायश्चित्तैः पापनाशो जायतेति कुतो म्लेच्छादि धर्माङ्गीकृतेष्वपि जन्म जात्या अनपगमात् । सनातन धर्मविदो विप्रादि वर्णेषु जन्मनैव जाति स्वीकुर्वन्ति अतो म्लेच्छीभूतेष्वपि ब्राह्मणत्वादि-त्वमस्त्येव ।

अर्थः—गोमूत्र, गोबर, गोदुग्ध, गोदधि और गो घृत के पांचों समभाग मिलाकर म्लेच्छ को एक रात्रि उपवास कराके पिलावे तो चाण्डाल (भंगी) तक की भी शुद्धि हो जाती है।

भावार्थः—सम्पूर्ण प्रकार के पापियों को भी उचित प्रायश्चित करने से शुद्धि होजाती है क्योंकि ऐसा शास्त्रालोचन से निश्चय होता है अतएव उचित प्रायश्चित्तों द्वारा म्लेच्छ बने हुओं की शुद्धि अवश्य हो सकती है क्योंकि म्लेच्छ बने नौमुस्लिमों में उनकी जन्म जाति विद्यमान है और सनातन धर्म के सिद्धान्तानुसार उन नौमुसलिमों में उनका ब्राह्मणादि वर्णत्व विद्यमान है अतएव वे शुद्ध किये जा सकते हैं।

अप्रदुष्टां स्त्रियं हत्वा शूद्र हत्यां व्रतं चरेत् ।
पञ्चगव्यं पिवेद्गोघ्नो मास मासीत संयतः ॥१३॥

प्रा० नि० पृ० २७ श्लो० १३

अर्थः—निर्दोष स्त्री की हत्या करके शूद्र की हत्या करके तथा गो हत्यारा एक मास संयम से रहकर व्रत करता हुआ

पञ्चगव्य का पान करे तो वह शुद्ध होता है।

पञ्चगव्यं त्रिरात्रयन्ते पीत्वाचान्त्यजलं द्विजः।
मत्स्यकरटक शम्बूक शङ्ख शुक्ति कपर्दकान्॥
प्रा० नि० पृ० २८-२७

अर्थः---अन्त्यज भंगी आदि नीचतम जातियों का जल पीने से तथा मत्स्यादि जलजन्तुओं के भक्षण करने पर तीन रात्रि तक व्रत करके केवल पञ्चगव्य पीने से शुद्धि हो जाती है।

पूर्वकाल में जब वैदिक धर्म का झंडा सर्वत्र फराता था, वेदक क्षत्रिय राजा लोग राज्य करते थे, उस समय इस देश में गो वंश की बड़ी महिमा थी तदनुसार राजाओं की ओर से गोचर भूमि छोड़ दी जाया करती थी जहां स्वच्छन्दता पूर्वक प्रत्येक ग्राम व शहरों के पशु चरा करते थे उस समय के राजाओं में उदार भाव विशेष थे अतएव प्रत्येक गांव व शहरों के साथ साथ कोसों का बोड़ (घास का जंगल) छोड़ा जाता था उस समय सम्पूर्ण पशुओं के पेट अघाये हुये रहते थे और जब उन को जंगल में शुद्ध जड़ी बूटिये व घास पात खाने को खूब मिलते थे तो उस समय के पशु व गौयें भी रुष्ट पुष्ट व निरोग तथा उत्तम २ गुण व रस युक्त दुग्ध देने वाली होती थीं, इस ही के विपरीत आजकल उतना जंगल नहीं, विदेशी राज, कहीं रेल कहीं तार, कहीं कारखाने, कहीं सेनालय आदि २ के कारण बहुत सी जमीन तो इनमें लग जाती है जो कुछ थोड़ी बहुत बची उस का घास भी खुदवाया जाकर इधर उधर हजारों कोस भेज दिया जाता है परिणाम यह होता है कि प्रायः गौवें भूखी मरती फूहड़ करने मैला खाने लगजाती हैं इस

लिये पञ्चगव्य में ऐसी गायों के दुग्धादि पांच पदार्थ नहीं लेने चाहियें, क्योंकि जैसा पदार्थ गौ खावेंगी वैसा ही असर उनके दूध आदि में आजायगा अतएव श्रौत्र सूत्रों में व पद्धतियों में लिखा है कि छोटी बछिया का गोबर व मूत्र लेना चाहिये और शुद्ध अहार करने वाली हृष्ट पुष्ट गौ का दुग्ध घृत और दही लेकर पञ्चगव्य बनाया जाय और वही शुद्धि के काम में लेना चाहिये।

आजकल नयी रोशनी वाले लोग प्रायः पञ्चगव्य के गुण को न जान कर कहा करते हैं Dam Panch Gabya अर्थात् पञ्चगव्य जिसमें गाय का गू व पिशाब पड़ता है यह सब निकम्मी सी बातें व अंधपरंपरा है पर यह उन का आक्षेप ठीक नहीं क्योंकि चरक सुश्रुत में गाय के मूत्र को व गोबर के बडे २ गुण लिखे हैं तथा पञ्चगव्य को अमृत वत् माना हैं जो कई रोगों को दूर करने वाला है।

ऋषियों ने जो शुद्ध्यर्थ पञ्चगव्य लिखा है वह एक प्रकार की जुलाब व शोधन, रेचक औषधि है जिसको शुद्ध्यर्थ प्रथम दिन व्रत रखवाकर खूब पिलादेने का विधान मिलता है अतएव पञ्च गव्य बिना शुद्धि करना नवीन चाल व शास्त्र मत का निरादर कर देना मात्र है।

॥ पंचगव्य पीने का फल ॥

भक्ष्य भोज्यापहरणं, यान शय्या सनस्य च
पुष्प मूलफलानाञ्च, पञ्चगव्य विशोधनम्

मनु० अ० ११ श्लो० १६६

अर्थात् यदि कोई ब्राह्मण मिठाई खीर आदि, सवारी

तथा शय्यासन और पुष्प मूल फल आदि खाने पीने की चीज चुराले तो वह पञ्चगव्य पीने से उस चोरी के पाप से निबट सक्ता है।

पुनः—

पंच गव्येन पतन्तु वाजि मेध फलं लभेत्।
गव्यन्तु परमं मेध्यं गव्या दन्यन्न विद्यतेः॥
सौम्ये मुहूर्ते संयुक्ते पंचगव्यंतु यः पिवेत्।
यावज्जीव कृतात् पापात् ततक्षण देव मुच्यते॥

(शब्द कल्प०)

भावार्थः—पञ्चगव्य को सौम्य मुहूर्त में जो पीवे तो जीवन भर के किये हुए पाप दूर हो जाते हैं।

दध्नाहि त्रिदशः सर्व्वे क्षीरेण च महेश्वरः।
घृतेन पावको नित्यं पायसेन पितामह॥
सकृद्दत्तेन प्रीयन्ते वर्षाणाञ्च त्रयोदश।
तां दत्वा चैव पीत्वा च प्रेतो मेध्यस्तु॥

(इति वराह पुराणम्)

पयः कांचनवर्णयाः श्वेतवर्णोत्यगो मयम्।
गोमूत्र ताम्रवर्णाया नीलवर्ण भवं घृतम्॥
दधि स्यात कृष्णवर्णाया दर्भोदिक समायुतम्।
गोमुत्रमास काण्यष्टौ गोमयस्य चतुष्टयम॥
क्षीरस्य द्वादश पोक्ता दध्नस्तु दश उच्येत।

घृतस्य मासकाः पञ्च पञ्चगव्यं मलापहम ॥

(इति गारुडे प्रायश्चित्त प्रकरणम्)

भावार्थः–इन श्लोकों का भाव यही है कि पञ्च गव्य के पीने से अन्दर में जो खान पान के विकार का मल है वह सब दूर हो जाता हैं अतएह शुद्धि कर्म में पञ्चगव्य लेना व शुद्ध होने वाले को पिलाना आवश्यक है।

यत्वगस्थिगतं पापं, देहेतिष्टति मामुके।
प्राशनं पञ्चगव्यस्य दहत्वग्नि रिवेन्धनम् ॥

(अत्रराज महादधि)

भावावार्थ–पापी मनुष्य पञ्चगव्य लेते समय ऐसा कहता है कि मेरे शरीर के चर्म व अस्थि तक में व्याप्त पापको पञ्चगव्य का प्राशन जैसे काष्ट को अग्नि जलाती है तैसे जलादे।

पुनः—

त्वगस्थि यत्कृतं पापं देहेतिष्ठति मामुके
प्राश्नन्तिपञ्चगव्येन शुध्यन्ति मलिना जनाः ॥

भावार्थ–पञ्चगव्य के लेने से मलिन मनुष्य के चर्म हड्डियें तक में जो पाप हैं पञ्चगव्य से दूर हो जा सक्ते हैं।

Medically Proof ॥ वैद्यकीय प्रमाण ॥

गोशकृद्र सदध्यम्ल क्षीर मूत्रैः समैर्घृतम्।
सिद्धं पिवेदपस्मार कामला ज्वरनाशनम् ॥

चरक सं० चिकित्सित स्थान अ० १५–१५ पृ० १२८२

भावार्थ–गोबर का रस दही दुग्ध गोमूत्र और गोघृत इन पांचों को सम भाग लेकर पकावे घृतमात्र रहने पर छान कर रख लेवे, इस के पीने से अपस्मार (मृगी) रोग, कामला और ज्वर नष्ट होते हैं।

पुनः—

गोशकृद्रसदध्यम्ल क्षीर मूत्रैश्च तत्समैः।
पञ्चगव्य मिति ख्यातं महत्तदमृतोपमम् ॥२०॥
अपस्मारे तथोन्मादेश्व यथाश्चुदरेषु च।
गुल्मार्शः पाण्डुरोगेषु कामलासुभगन्दरे ॥
अलक्ष्मी ग्रहरोगघ्नं चातुर्थिकविनाशनम् ॥२१॥

चरक चिकित्सास्थान अ० १५—श्लो० २०-२१

भावर्था--गो घृत एक प्रस्थ, गोबर का रस एक प्रस्थ गोमूत्र एक प्रस्थ, गोदधि एक प्रस्थ और दूध एक प्रस्थ इन सब को मिलाकर छाणलेने से पञ्चगव्य बन जाता है, इन्ही को औटा लिया जाय तो पानी जलने से केवल घी रह जायगा, इस पञ्चगव्य घी को अमृत के समान गुणकारी माना है इसके सेवन से मृगी, उनमाद सूजन उदर रोग गुल्म रोग, बवासीर पाण्ड, कामला, भगंदर अलक्ष्मी ग्रहदोष और चौथैया ज्वर ये सब नष्ट होते हैं। पुनः—

जान बूझ कर गोघातक की शद्धि विषय लिखा है किः—

'पञ्चगव्यं पिबेद् गोध्नो मास मासीच्च संमतः'

(या० प्रा० अ० ३)

अर्थात् गोघातक मनुष्य जितेन्द्रिय रहकर एक मास तक पञ्च गव्य पीवे तब वह शुद्ध हो जाता है।

सनातन धर्मी सम्प्रदायानुकूल जब मन्दिरों में मूर्ति स्थापित की जाती है तब चोंकि मूर्ति तक्षादि अस्पर्शनीय जातियों द्वार

अतएव शुद्धि करने के लिये मूर्ति को पञ्चगव्य में स्नान कराते हैं। तत्पश्चाद्होम मन्त्रो द्वारा उसका मार्जन, प्रोक्षण और प्राण प्रतिष्ठा कियी जाती है तब उस पाषाण व मृतका तथा धातु की मूर्ति में देवत्व आना माना जाता है अतएव सिद्ध होता है कि जब अस्पर्शनीय जातियों द्वारा बनायी मूर्ति पञ्चगव्य से शुद्ध कियी जाकर उस मे देवत्व आजाता है तो पञ्चगव्य द्वारा ईसाई मुसलमान की शुद्धि हो जाने में सन्देह ही क्या रहा ?

उत्तरः— कुछ नहीं ! कुछ नहीं !! कुछ नहीं !!!

प्रिय हिन्दु भाइयो !!!

जरा भगवान को स्मर्ण करके अपने शास्त्रों को तो उठाकर देखिये कि हमारे सनातन धर्म में नौमुसलिमों की शुद्धि बडे बडे सरल मार्गों से भी लिखी है, पञ्चगव्य के पीने मात्र से बडे बडे पाप दूर हो जाते हैं तथा पञ्चगव्य से बडे बडे रोग भी दूर होते हैं तब पञ्चगव्य पीकर शुद्ध होने वाले नौमुसलिम में मलीन्ता कहाँ रही ?

यदि आप चरक में देखेंगे तो पञ्चगव्य अन्दर की हड्डी व नस खून को फाड़कर उसमें के विकार को बाहर निकाल देता है

पुनः—

गंगानाम उच्चारण से शुद्धि ।

गंगाङ्गेतिर्यैर्नाम योजनानां शतैरपि ।
स्थितैरुच्चारितं हन्ति पापं जन्म त्रयार्जितम् ।

(विष्णु पुराण अ० ८)

अर्थः—जो मनुष्य चार सौ कोस के फासले पर बैठकर श्री गंगा गंगा उच्चारण करता है उसके तीन जन्म के पाप नष्ट हो जाते हैं।

पद्मपुराण भूखण्ड में गंगा स्नान से चार ऐसे मनुष्यों की शुद्धि की कथा आती है जिन में से १ ब्रह्महत्यारा २ गुरु को मारने वाला ३ सुरापीने वाला और ४ गौहत्यारा। पुराण में इनकी कथा विस्तार सेलिखकर अन्त में लिखा है कि:—

तस्मिन्पर्वणि संप्राप्ते स्नाता गङ्गाम्भसि द्विजः।
स्नानमात्रेण मुक्तास्ते गोवधाद्यैश्च किल्विषैः॥

(पद्म पु० भू० खं २ अ० ४२)

अर्थः— अमावस्या के दिन चारों पापी गंगाजी में न्हाये और न्हाते ही गौवध आदि तमाम पापों से छूटकर शुद्ध हो गये।

गङ्गा गंगेति यो ब्रूयात् योजनानां शतैरपि।
मुच्यते सर्व पापेभ्यो विष्णुलोकं सगच्छति॥

अर्थ—कोई भी पापी से पापी मनुष्य सौ योजन (चारसौ कोस) को दूरी से "गंगा गंगा" इतना कहदे तो उसके सब पाप दूर हो जाते हैं और वह विष्णुलोक (बैकुण्ठ) को चला जाता है जब गंगा जी के नाम लेने मात्र से पापी मनुष्य तर जाते हैं तो एक मुसलमान ईसाई इसी जन्म में श्री गंगा जी का नाम लेने से क्या नहीं तरेगा? अवश्य तरेगा और निस्सन्देह रूप से वह शुद्ध होजायगा।

पुनः लिखा है:——

वाङ्मनः कर्मजैर्ग्रस्तः पापैरपि पुमानिह ।
वीक्ष्य गंगा भवत्पूतोऽत्रमे नास्ति तु संशयः ॥

अर्थः—मन वाणी और शरीर के पापों से युक्त मनुष्य भी गंगा जी के दर्शन करके निःसन्देह शुद्ध हो जाता है ।

दृष्टवा वर्ष शतं पापं पीत्वा वर्ष शतद्वयं ।
स्नात्वा वर्ष सहस्राणि हरति गंगा कलौयुगे ॥

अर्थ—गंगाजी के द न से सौ वर्ष, और पीने से दोयसौ जन्म और श्री गंगाजी में स्नान करने से एक हजार वर्ष के पाप नष्ट हो जाते हैं ।

स्नान मात्रेण गंगायाः पापं ब्रह्मवधोद्भवम् ।
दुराधर्षं कथं याति चिन्तयेद्यो वदेदमि ॥ १ ॥
तस्याहं प्रवदः पापं ब्रह्मकोटि वधोद्भवम ।
स्तुतिवादमिमं मत्वा कुम्भीपाकेषु जायते ॥ २ ॥
आकल्पं नरकं भुक्त्वा ततो जायेत गर्दभः ।

(भविष्यपि)

अथ—भविष्य पुराण में लिखा है कि जो मनुष्य ऐसा कहता है कि गंगास्नान से बड़े २ ब्रह्महत्यादि पापों का नाश कैसे हो सकता है ? उसको करोड़ों ब्रह्महत्याओं का पाप होता है और जो, लोग इनको केवल प्रशंसात्मक समझते हैं वे कुम्भी पाक नरक में जाते हैं और कल्प भर नरक में रह कर अन्त में गधा बनते हैं

इत्यादि बचनों से गंगा स्नान व तीर्थ गमन सब प्रकार के पापों को नष्ट करने वाला सिद्ध होता है। पुनः—

भवन्ति निर्विषाः सर्पा यथा तार्क्ष्यस्य दर्शनात् ।
गंगाया दर्शनात्तद्वत्सर्व पापैः प्रमुच्यते ॥ ३ ॥
पुण्यत्तीर्थाभिगमनं सर्व पाप प्रणाशनम् ।
दैवताभ्यर्चनं पुंसामशेषाऽघ विनाशनम् ॥ ४ ॥

भावार्थः--गरुड़ के देखते ही जिस प्रकार सर्प विश रहित होजाता है उस ही तरह गंगाजी के दर्शन से सर्व पाप दूर हो जाते हैं ॥ ३ ॥

पवित्र तीर्थों की यात्रा और देवताओं की पूजा सम्पूर्ण पापों को दूर कर देती हैं ॥ ४ ॥

चान्द्रायण सहस्त्रैस्तु यश्चरेत्काय शोधनम् ।
पिवेद्यश्चापि गंगाम्भः समौ स्यातां न वा समौ ॥ २ ॥

भा० हजारों चान्द्रायणों द्वारा जो शुद्ध हुये हैं वे और जो गंगाजल से शुद्ध होते हैं दोनों ही बराबर हैं।

अग्नौ प्राप्तं प्रधूयेत यथातूलं द्विजोत्तम ।
तथा गंगावगाहस्तु सर्वं पापं प्रधूयते ॥

(भारत अनुशा०)

भा०-जैसे अग्नि में रूई भस्म होजाती है तैसे ही गंगा में सब पाप दूर होजाते हैं ।

ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि भक्त्याभक्त्याऽपित्रा कृतम् ।
गंगास्नानं सर्व विधं सर्व पाप प्रणाशनम् ॥
चान्द्रायण सहस्त्रैस्तु यश्चरेत्कायशोधनम् ॥
पिबेद्यश्चापि गंगाम्भः समौ स्यातां न वा समौ ॥२॥
भवन्ति निर्विषाः सर्पा यथा तार्क्ष्यस्यदर्शनात् ।
गंगाया दर्शनात्पापीसर्वपापै प्रमुच्यते ॥ ३ ॥
पुण्य क्षेत्राभिगमनं सर्व पाप प्रणाशनम् ॥
देवताभ्यर्चनं पुंसामशेषाऽघाविनाशनम् ॥ ४ ॥

अर्थ-ज्ञान से अज्ञान से, भक्ति से या बिना भक्ति किया हुआ गंगास्नान हर प्रकार के पापों को नाश कर देता है ॥ १ ॥

हजारों चान्द्रायणों के द्वारा जो शुद्ध होते हैं और जो गंगा-जल पान से शुद्ध होते हैं दोनों ही बराबर हैं क्योंकि श्री गंगा महारानी पतितपावनी सर्व दुःख संहारनी और भवसागर तारनी है ॥ २ ॥

गरुड़ के देखने से जिस प्रकार सर्प विष रहित हो जाते हैं उसी प्रकार गंगा के दर्शन से तमाम पाप नष्ट होजाते हैं ॥ ३ ॥

पवित्र तीर्थों की यात्रा और देवताओं की पूजा तमाम पापों को नाश कर देती है ॥ ४ ॥

ब्रह्महत्याभि भूतस्तु सहश्राक्षो यदा पुनः ।
गौत्तमीश्र प्रियां संगा दगम्या गमनं कृतम् ॥
संजातं पातकं तस्य त्यक्तो देवैश्च ब्राह्मणैः ।
सहश्राक्षतपस्तेपे निरालम्बो निराश्रयः ॥

(पद्मपुराण भूखंड अ० ६१)

भा० कुंजलक ने कहा जब इन्द्र ने ब्रह्महत्या किया और गौतम की स्त्री के साथ अगम्या गमन किया तब देवता और ब्राह्मणों ने उसे त्याग दिया तब वह निराश्रित होकर तप करने लगा- तब देवतावों ने इन्द्र की शुद्धि के अर्थ उसका अभिषेक मालव देश में लेजाकर किया तत्पश्चात् उन्हें—

स्नापितुं प्रथमं नीता वाराणस्यां च देवताः ।
प्रयागे तु सहस्राक्षं अर्ध तीर्थे ततः पुनः॥ १ ॥

पुनः

पुष्करे च महात्मासौ स्नापितं स्त्वयमेव हि ।
ब्रह्मादिभि सुरै सर्वैर्मुनि वृन्दैर्द्विजोत्तमैः ॥ २ ॥
नागैर्वृन्दै र्नागसर्वै गन्धर्वैस्तुसकिन्नरैः ।
स्नापितो देवराजस्तु वेदमन्त्रै सुसंस्कृतः ॥३॥
मुनिभिः सर्वपापैस्तु तस्मिन् काले द्विजोत्तमः ।
शुद्धे तस्मिन्महाभागे सहसा मेमहात्मभिः ॥४॥

भा० द्विजों में सर्व श्रेष्ठ देवताओं ने इन्द्र को काशी जी की श्री गंगाजी में, फिर अर्धतीर्थ में फिर प्रयाग जी में और फिर पुष्कर जी में लाकर इन्द्र को स्नान कराया, इस प्रकार सम्पूर्ण गन्धर्व आदि देवतावों द्वारा इन्द्र ब्रह्महत्या तथा अगम्यागमन के पाप से मुक्त होकर शुद्ध होगये ।

विशेष द्रष्टव्य

पद्मपुराणादि पुराणों में शुद्धि के अनेकों दृष्टान्त व आख्यायिकायें मिली हैं उन सब को यहां लिखने से ग्रन्थ वढ़ जाने की आशङ्का से वह सब कथायें छोड़ दियी गयी हैं ।

गायत्री से शुद्धि

गायत्री परमा देवी भुक्ति मुक्ति प्रदायिनी ।
यो जपेत्तस्य पापानि विनश्यन्ति महान्त्यपि ॥१॥
गरुड़ पुराण

अर्थः- गायत्री देवी रक्षा करने वाली और मुक्ति देने वाली है जो इसका जप करता है उसके बड़े २ पाप भी नष्ट हो जाते हैं।

गायत्र्यास्तु परं नास्ति शोधनं पाप कर्मणाम् ।
अर्थः--गायत्री से बढ़ कर पापों का नाश करने वाला और कोई साधन नहीं ।

अघमर्षण से शुद्धि

ब्रह्महत्या सुरा पानं स्तेयं गुर्वङ्गनागमः ।
महान्तिपातकान्याहुः संसर्गश्चापितैः सह (११-५४)

ब्राह्मण को मारनेवाला, मद्यपी, चोर औरगुरूस्त्रीसेमैथुनकरने वाला महापातकी है और जो इन चारोंसे संसर्ग करता हो वह भी

यथाश्वमेध : क्रतु राट् सर्व पापप्रणाशकः।
तथाघमर्षणं सूक्तं सर्व पापापनोदनम् (मनु११-२६०)

भावार्थ—जैसे यज्ञो में श्रेष्ठ अश्वमेध यज्ञ सर्व पापों का नाश

क है जैसे ही, अघमर्षण सूक्त भी सर्व पापों को दूरकरने वाला है ।
वह अघमर्षण मंत्र द्विज लोग नित्य सन्धोपासन में पढते रहते हैं ❀

मुसलमान भगिनो से विवाह करते हैं अतः अगम्य में गमन करने वाले हैं और गौ आदि पशुओं के घातक हैं और ईसाई गौ के विषय में मुसलमानों के सम हैं मद्यप हैं । दोष युक्त दोनों हैं मनु अघमर्षण सूक्त से पाप की निवृति मानते हैं अतः इनकी शुद्धी मनुजी के कथनानुसार अघमर्षण सूक्त पाठ से करनी चाहिये ।

प्राणायाम से शुद्धि

मनोवाक् कायजं दोषं प्राणायामैर्दहेद्विजः ।
तस्मात्सर्वेषुकालेषु प्राणायामपरो भवेत ॥ ३६ ॥
(गरु० पु० अ० ३६)

अर्थः-प्राणायामसे मानसिक वाचिक और कायिक ये सब दोष नाश हो जाते हैं । पुनः—

मानसं वाचिकं पापं काये नैवच यत्कृतम् ।
ततसर्वं नाशमायाति प्राणायाम प्रभावतः ॥
(संवर्त स्मृ० २२८)

❀ ओंऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसो ऽध्यजायत ततो रात्र्य जायत तत समुद्रो अर्णवा समुद्रा दर्णवा दधि सम्वतसरो अजायत अहोरात्र्याणि विदध द्विश्वस्य मिषतो वशी सूर्य्या चन्द्रमसौधाता यथापूर्वम कल्पयत दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथोस्व : ।

इस के जाप्य से भी शुद्धि हो सक्ती है ।

भा०--मनबचन और कर्म से किये हुये पाप प्राणायाम सेदूर होजाते हैं। पुनः —

सव्याहृति प्रणवकाः प्राणायामास्तु षोडश।
अपि भ्रूण हणं मासापुनन्त्यहरहः कृता॥

(मनु० अ० ११ श्लो० २४८)

भा० व्याहृति तथा ओम्कार से युक्त नित्य सोलह प्राणायाम करने से एक महीने में भ्रूण हत्या का भी पाप दूर होजाताहै

पुराणों में मुसलमानों की शुद्धि

यन्त्राणि कारयामासुः सप्तेष्वेव पुरीषु च।
तदधो ये गता लोका स्सर्वे ते म्लेच्छतांगताः॥

भविष्य पु० प्र० पर्व०ख० ४ अ० २१ ५२

अर्थः— जिस समय मुसलमानों ने भारत वर्ष पर आक्रमण करके जगन्नाथ, अयोध्या, कांचीपुरी हरिद्वार, काशी आदि सातों पुरियों में मंदिरों को तोड़ कर मसजिदें बनायीं और बहुत से मनुष्य उनके पंजे में फंस कर मुसलमान बनाये गये। तब समस्त आर्य जाति में भारी हल चल मच गइ। उस समयः—

श्रुत्वा ते वैष्णवाः सर्वे कृष्ण चैतन्य सेवकाः।
आदेशं मन्त्र गुरोश्चैव पठित्वा प्रययुः पुरीः॥

भ० पु० प्र० प० ख० ४ अ०—५४

अर्थः-आर्य जाति के कोलाहल को सुनकर और आर्य धर्म के उपर आइ विपति को देख कर कृष्ण चैतन्य के शिष्य अपने गुरू से यथोचित शिक्षा लेकर सातों पुरियों को चलदिये। उनमें सेः—

रामानन्दस्तु शिष्यो वै चायोध्याया मुपागतः ।
कृत्वा विलोमं तं मन्त्रं वैष्णवांस्तान कारयत् ॥
भाले त्रिशूल चिन्हं च,श्वेत रक्तं तदा भवत् ।
कण्ठे च तुलसी माला, जिह्वा राम मयिकृता ॥
म्लेच्छास्ते वैष्णवश्चासन् रामानन्द प्रवतभा :
आर्यश्च वैष्णवा मुख्या अयोध्यायां बभूविरे

भ० पु० प्र० ख० ४—२१ – ५५=५६—५७

अर्थः—महात्मा रामानन्द के शिष्य अयोध्या पुरी में पहुचे, वहां मुसलमानों के सिद्धातों का खंडन करके उनको शुद्ध कर वैष्णव धर्मानुयायी बनाया शुद्धि हुवों के माथे पर त्रिशुलाकार तिलक लगाया 'जो बीच में लाल रंग का दोनों ओर श्वेत होता है, गले में तुलसी की माला पहिना कर-मुह से ' राम ' नाम जपाया ।

इस प्रकार अयोध्या के सम्पूर्ण रामानन्द के प्रभाव से शुद्धि होकर वैष्णव बनाये गये और अयोध्या में आर्य होकर रहने लगे ।

कृष्ण चैतन्य का दूसरा शिष्य :—

निम्बादित्य गतो धर्मान् सशिष्यः काञ्चिकापुरीम् ।
म्लेच्छ यन्त्रं राजमार्गे स्थिततन्त्र ददर्श ह ॥

भ०ख० ४-५८

अर्थ—बुद्धिमान निम्बादित्य काशी पुरी में गये और मुसलमानों की पोल खोल कर लोगों को विष्णु धर्म का उपदेश दिया और सब को। अपने वश में करके वैष्णव बनाया । और उनको शुद्ध करके मस्तक पर वंशपत्र के तुल्य तिलक, कण्ठ मे तुलस माला तथा गोपीबल्लभ का मन्त्र सिखाकर आर्य जाति में शामिल किया इसी प्रकार:—

विष्णु स्वामी हरिद्वारे जगामस्वगणैर्वृतः ।
तत्र स्थित महामन्त्र विलोम तश्चकारह ॥

अर्थः-विष्णु स्वामी अपने गणों के साथ हरिद्वार में गये वहां मुसलमानों के विरुद्ध प्रचार करके सबको शुद्ध कर वैष्णव बनाया । इसी प्रकार से ' वाणी भूषण आदि महात्माओं ने काशी आदि पुरियों में जाकर हजारों मुसलमानों को शद्ध करके जाति में मिलाया ।

पाठक बृन्द ! श्रुति सुधा वर्ग मे शुद्धि करने और संसार का आर्य बनाने के लिये । वेदों के मन्त्र आपके सामने उपस्थित करने के पश्चात्, शास्त्रीय प्रमाणों से यह सिद्ध किया गया है कि आर्य लोग सदा से शद्धि करते आये हैं और शुद्धि से ही कल्याण होगा आर्यजाति के पुजारियों से यह निवेदन है कि यदि वे आर्य जाति को जीवित देखना चाहते हैं, तो बिना किसी ननुनच के शुद्धि करें और शुद्धि करने वालों को हर प्रकार से सहायता दें ।

हयैश्च ताल जंघैश्च तरुष्कैर्यवनैः शकैः ।
उपोषित इहात्रैव ब्रह्मणात्म मीप्सुभिः ॥
(भवि० पु० ब्र० अ० १६-११)

अर्थ—हय, ताल, जंघ, त्रिशक (तुक) यवन तथा शकादि जातियों ने इसी संसार तथा इसी जन्म में ब्राह्मणत्व प्राप्त करने की इच्छा से इसी प्रतिपदा का उपवास किया ।

दश हजार मलेच्छों की शुद्धि

सरस्वत्याज्ञया कण्वो मिश्र देशमुपाययौ ।
म्लेच्छान् संस्कृत्य चा भाष्य तदादश सहस्रकान् ॥

भ० पु० प्रति सर्ग पर्व खण्ड ४ अ० २१ श्लोक० १६

अर्थ—सरस्वती देवी की आज्ञा से कण्व ऋषि ने मिश्र देश को जाकर दश हजार म्लेच्छों को शुद्ध किया । इसी पुराण के अगले श्लोकों में लिखा है कि उन दस हजार शुद्ध हुये म्लेच्छों में से दो हजार मनुष्यों को वैश्य बनाया गया और एक मनुष्य को जिसका नाम 'पृथु' रक्खा गया था वेद वेत्ता कण्व ने उसको राजा बनाया और राजपुत्र नामक नगर दिया जिसका नाम आगे चलकर मगधपुत्र हुआ और जिस से मगध राज्य की नींव डाली गई ।

यन्त्राणि कारयामासु: सप्तेष्वेव पुरीषुच ।
तद धोये गता लोकास्ते सर्वे म्लेच्छतां गता: ॥५२॥
महत् कोलाहलं जात मार्याणां शोक कारिणम् ॥५३॥
रामानन्दस्य शिष्योवै चायोध्याया मुपागत: ।
कृत्वा बिलोमं तं मन्त्रं वैष्णवां स्तान कार्यत् ॥५४॥
भाले त्रिशूल चिन्हं च श्वेत रक्त तदा भवत् ।
कण्ठे च तुलसीमाला जिह्वा राम मयी कृता ॥५५॥
म्लेच्छास्ते वैष्णवाश्चासन् रामानन्द प्रभावत: ।
संयोगिनश्च ते ज्ञेया: रामानन्द मते स्थिता: ॥५६॥

आर्यांश्चा वैष्णवा मुख्या अयोध्यायां च भूविरे ।

भविष्य पु० अ० स० प० ३ खं० ४ अ० २१ श्लो० ५५ से ५७

भा० पूर्वकाल में हिन्दुवों को मुसलमान बनाने के लिये बड़े २ षडयन्त्र रचे गये, बड़े २ जोर जुलम किये गये आजकल भी हिन्दूवों को मुसलमान बनाने के लिये बड़े २ फंदे व दाव घात व Policy पोलिसी चली जारही है तदनुसार १ जगन्नाथ पुरी २ अयोध्यापुरी ३ मथुरापुरी ४ काञ्ची ५ हरद्वार ६ काशी और ७ द्वारका इन सातों पुरियों में मन्दिरों का नाश किया जाकर मसजिदें बनने लगीं तब अन्त को रामानन्द जी के शिष्य अयोध्या पुरी में जाकर मलेच्छों को शुद्ध कर मस्तक पर श्वेत रक्त त्रिशूल का चिन्ह कर ❀ कण्ठ में तुलसी की माला बांध कर कर जिह्वा से राम राम कहा कर उन्हें वैष्णव बनाया, वेही पुराकाल के शुद्ध हुये मुसलमान आजकल अयोध्या जो में वैष्णव हैं। पुनः —

सरवस्त्याज्ञया कण्वो मिश्रदेश मुपाययौ ।
म्लेच्छान् संस्कृत्य चाभाष्य तदादश सहस्रकान् ॥ १६
वशी कृत्य स्वयं प्राप्तो ब्रह्मावर्ते महोत्तमे ।
तेसर्वा तपसादेवी तुष्टुवुश्चसरस्वतीम् ॥ १७ ॥
पञ्चवर्षान्तरेदेवी प्रादुर्भूता सरस्वती ।
सपत्नी कांश्चतान् म्लेच्छान् शूद्रवर्णायचाकरोत् ॥ १८॥

❀ ऐसा चिन्ह-आजकल भी वैष्णव लोग ऐसा तिलक करते हैं उसे श्रीधारण तिलक कहते हैं निन्दक लोग इन्हीं तिलकों को १११ नम्बर का तिलक कहते हैं।

कारवृत्ति करा:सर्वे बभूवुर्बहुपुत्रकाः ।
द्विसहस्रास्तदातेषां मध्ये वैश्याबभूविरे ॥ १६ ॥
तन्मध्ये चाचार्य्य पृथुर्नाम्ना कश्यप सेवकः ।
तपसा च तुष्टाव द्वादशाब्दं महामुनिम् ॥ २० ॥
तदा प्रसन्नो भगवान् कण्वो वेद विदांवरः ।
तेषांचकार राजानं राजपुत्र पुरं ददौ ॥ २१ ॥

(भविष्य० पु० प्रतिसर्ग प्रर्वखंड ४ अ २१)

अर्थः— सरस्वती जी की आज्ञा से कण्व ऋषि मिश्र देश में गये और वहा दश हजार म्लेच्छों को अपने सदुपदेशों से संस्कार कराकर (शुद्धकरके) अपने साथ पवित्र ब्रह्मावर्त *देशमें लाये ।

इसही समय बौद्धधर्म के आचार्य्य गौतम बुद्ध हुये जिन्होंने सर्वत्रम्लेच्छादिकों में हिंसाकण्ड देखकर बौद्ध धर्म चलाया यथा :-

नाना गौतमा चार्य्यो दैत्यपक्ष विवर्द्धकः ।
सर्व तीर्थेषुतेनैव यन्त्राणि स्थापितानिवै ॥ ३३ ॥
तेषांमध्ये गतायेतु बौद्धाश्चासन् समंततः ।
शिखासूत्र विहीनाश्च बभूवुर्वर्णसंकराः ॥ ३४ ॥

---

* सरस्वती दृषद्वत्योर्देवनद्योर्यदन्तरम् ।
तंदेव निर्मितं देश ब्रह्मावर्तं प्रचक्षते ॥ १७ ॥

मनु० अ० २ श्लो० १७

भा०—सरस्वती और दृषद्वती नदियों के बीचका देव निर्मित देश ब्रह्मावर्त कहलाता है ।

दशकोटि स्मृतामार्याः बभूवुर्बौद्ध पन्थिनः ।

पञ्चलक्षास्तदा शेषाः प्रययुर्गिरि मूर्द्धनि ॥ ३५ ॥

आर्यास्तांस्ते तुसंस्कृत्य विन्ध्याद्रे दक्षिणीकृतान्

तत्रैवस्थापयामासु वर्णरूपान् संमतत ॥ ३७ ॥

भावार्थ .- दैत्यपक्ष को बढानेवाला गौतमाचार्य्य हुये जिन्हों ने भिन्न भिन्न तीर्थों पर अपने धर्मस्थान नियत किये और जहाँ इन काप्रभाव बढातहाँतहां के आर्य्य लोग शिखा सूत्र त्यागकर वर्णसंकर ※ होगये

इसतरह गौतम के उपदेश से दसकोड़ आर्य्य ※ बौद्धधर्मा वलम्बि होगये पांचलाख आर्य शेषरहे जो आबूपहाड़ पर जाकर यज्ञ करने लगे तहां से अग्निकुल के क्षत्रिय उत्पन्न हुये जिन्होंने इनपतितों को पुनः शुद्ध करके वर्णश्रमी वैदिकाऽनुयार्या बनाये ।

महात्मा शङ्कराचाय जी ने भी बहुत से बौद्धा को शुद्ध किये थे ※
(शङ्करदिग्विजये)

व्यभिचारेण वर्णाना मवेद्या वेदनेनच ।

स्वकर्मणाञ्च त्यागेन जायन्ते वर्णसङ्करा ।

मनु० अ० १० श्लो० २४

भा व्यभिचार (परस्पर स्त्रियोंके भोग) से शास्त्र विरुद्ध विवाहों की सन्तान उपनयनादि कर्म धर्मों के त्यागने से वर्णसंकर कहे जाते हैं ।

※ आर्य्य हिन्दु को मीमांसा जाति अन्वेषण ग्रन्थ में बड़े बड़े अकाट्य प्रमाणों युक्त लिखआये हैं । इस हिन्दुस्थान देश का प्राचीनतम नाम आर्य्यावत व यहां के निवासियों का नाम आर्य्य था विशेष ग्रन्थ देखिये ।

※आजकल चीन, जापान, स्याम, और लङ्का आदि आदि में

निम्बादित्योगतोधीमान् स शिष्य काञ्चिकांपुरीम् ।
म्लेच्छ यन्त्र राजमार्गे स्थितंतत्र ददर्शह ॥ ५८ ॥
विलोमं स्वगुरोर्मन्त्रं कृत्वातत्र सचावसत् ।
वंशपात्र समारेखा ललाटे कण्ठ मालिका ॥ ५८ ॥
गोपी वल्लभ मंत्रोहि मुखेतेषां रराजसः ।
तदधो ये गता लोका वैष्णवाश्च बभूविरे ॥ ६० ॥
म्लेच्छाः संयोगिनो ज्ञेया आर्यास्तन्मार्ग वैष्णवाः ॥

भा०--निम्बादित्यजी वैश्नवाचार्य ने जब देखा काञ्चीपुरी में भी सब लोग म्लेच्छ होगये हैं तब वहां उन्होंने म्लेच्छ धर्म का खण्डन बड़ो २ प्रबल युक्ति व प्रमाणों द्वारा करके सब को अपने अनुगामी कर लिये उन के ललाट में वंशपत्र के समान तिलक किये और कण्ठ में माला पहिनायी, गोपीबल्लभ मंत्र दिया तब वे सब मुसल्मानादि वैष्णव होगये ।

बौध्द धर्म है जिन की शुद्धि के सम्बन्ध में आजकल कुछ हमारे भाई जो शुद्धि में आगे पैर रखते हैं वे महात्मा शङ्कराचार्य्यजी द्वारा केवल शङ्ख बजाकर बौद्धा की शुद्धि किये जाने के सिद्धान्त को सर्वोपरि रखकर शास्त्रमर्यादाओं को उल्लङ्घन करते हुये कुछ की कुछ रीति से शुद्धि करदेते है जिससे हमारे सनातन धर्मी भाई उस शुद्धि से असहयोग करते हुये देखे गये हैं अतएव इस प्रकार की शुद्धि करनेवालों को विचारना चाहिये कि उन्होंने बौद्धों की शुद्धि कियी थी जो अहिंसक थे अतएव उन के लिये शङ्ख बजाकर शुद्ध कर लेना मात्र पर्य्याप्त था, परन्तु मुसल्मानादि जो बड़े हिंसक व गो भक्षक हैं उनकी शुद्धि बिना पञ्चगव्य पिलाये व उपवास बिना नहीं होसक्ती ।

स्वर्गवासी महामहोपाध्याय पं० रामकृष्ण जी उर्फ तांतिया शास्त्री चितपावन जी ने ब हलफ एक अभियोग में Sub judge की कचहरी में तारीख १२ जुलाई सन १९११ में अपनी साक्षी में यह कहा थाः—

अगरवाले लोग पहिले बौद्ध थे अब हिन्दू होगये (गवाहने अज खुद कहा) फिर कहा कि महाराजा युधिष्ठिर के वक्त में बौध लोग थे या नहीं मैं ठीक नहीं कह सकता बौद्ध लोगों से आजकल बुध से मेरा मतलब है वृहन्नारदीय के अ० १४ श्लोक ६६ व ७२ बुध के मन्दिर में जाना मना लिखा है और बौद्ध लोग महापातकी लिखे हुये हैं जिनके लिये कोई प्रायश्चित नहीं है इन बौद्धों को आस्तिक बना लिया वैष्णव के आचार्य ने मिस्ल बल्लभाचार्य वगैरह के मगर किसी ऋषि ने उन्हें आस्तिक नहीं बनाया ब्राह्मण लोग अगरवाले के यहां सूखा खाना खालेते हैं पहिले वह लोग अगरवाले जनेऊ नहीं पहिनते थे उसमें अबभी पतित से पढ़े लोग हैं जो जनेव नहीं किया है अब तक यह लोग जैनियों में विवाह करते हैं अगरवालों का जैनियों से सम्बन्ध है इस लिये बृहन्नारदीय के श्लोक ६९ अ० १४ से वह लोग पतित हैं मैं खुद ऐसा नहीं कहता मगर किताब में ऐसा लिखा है (see B. S. B. case No. 98)

नोटः—इस के अनुसार अग्रवाल वैश्य बौद्ध धर्म से शुद्ध किये गये प्रमाणित होते हैं।

॥ शुद्धि-विधि ॥

शुद्ध होने वाले मनुष्यों का सब से पहिले दिन नख कटवा व डाढीमूंछ मुंडवा कर श्रीगंगाजल से व गंगाजल युक्त जल से स्नान करा कर नवीन शुद्ध वस्त्र पहिनावे और व्रत रखवावे सांय-काल को सूर्य्यास्त होते होते गोधूलि काल में शुद्ध होने वाले को पाव भर पञ्चगव्य पिलावे फिर दूसरे दिन उसे नैत्तिक शौचादि क्रिया से निवृत करा कर स्नान करावे, तब वह पवित्र वस्त्र धारण करके शुद्ध्यर्थ यज्ञस्थान में लाया जाय, वह आते ही उपस्थित आचार्यादिकों को नमस्ते व प्रणामादि करके नियत स्थान पर यज्ञके समीप बैठजाय, तब आचार्यादि लोग ईश्वर प्रार्थना करें तत्पाश्चात उस यजमान से आचार्य पूछे

"किम् प्रयोजनार्थं अत्राऽगतो भवान्"

आप किस प्रयोजन से यहां आये ह इस के उत्तर में शुद्धी चाहने वाला प्राणी कहें:—

शुद्ध्यर्थं, शुद्ध्यर्थं शुद्ध्यर्थं

शुद्ध होने को; शुद्ध होने को, शुद्ध होने को, !!!

इसके पश्चात् आचार्य यजमान पर कुशाजल से मार्जन करे और यह मंत्र पढ़ता जाय:—

ओं अपवित्रः पवित्रो वासर्वावस्थांगतो पि वा यस्म-रेत्पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तरः शुचिः ।

इसके पश्चात् आचार्य यजमान से तीन आचमन करावे यथा:—

ओं अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ॥ १ ॥

ओं अमृतापिधानमसि स्वाहा ॥ २ ॥

ओं सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा ॥ ३ ॥

इन तीन मंत्रों से तीन आचमन करा उस के हाथ धुला कर इन्द्रियस्पर्श करावे यथाः--

ओं वाङ्मऽआस्येस्तु । इस से मुख

ओं नसोर्मे प्राणोऽस्तु । इस से नासिका

ओं अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु । इस से नेत्र

ओं कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु । इस से कान

ओं बाह्वोर्मे बलमस्तु । इस से दोनों हाथ

ओं ऊर्वोर्मेऽओजोस्तु । इस से दोनों जंघा

ओं अरिष्टानि मेङ्गानि तनूस्तन्वा मे सहसन्तु

इससे सम्पूर्ण अंगो का जल द्वारा मार्जन करे, पतित इस से प्रार्थना करता है कि भगवन् मैं अपनी इन्द्रियों से अब कोई पापाचरण न करू ऐसी कृपा कीजिये, इसके पश्चात अग्न्याधान समिधाधान करा कर स्वस्तीवाचन तथा शान्ती प्रकर्ण दोनों से अथवा रुद्रा ष्टाध्यायी से और यदि हवन सामग्री विशेष न हो तो केवल ४१ आहुतियें गायत्री मंत्र से और 'वेदाज्ञा" प्रकर्ण के लिखे १४ मंत्र मिलाकर कुल ५५ आहुतियें दिलाकर फिर यजमान उपस्थित समुदाय के सन्मुख खड़ा होकर अपने किये पर पश्चात्ताप प्रकट करें तत्पश्चात उसे आचार्य यज्ञोपवील पहिना कर उस के हाथ से पूर्णाहूति करावे तत्पश्चात वह आचार्यादि विद्वानों का चरण स्पर्श करके सम्पूर्ण उपस्थित सज्जनों को वह शुद्धहुवा मनुष्य

योग्य अभिवादन करके सब को प्रसाद बांटे और सब लोग उसके हाथ से प्रसाद लेकर उसे आशीर्वाद देते हुये अपने अपने घर को चले जांय।

आचार्यादिकों के चरणस्पर्श करके उपस्थित समुदाय को अपने हाथों से प्रसाद बांटदे बस इस तरह कृत्य समाप्त करें।

स्त्रियों की शुद्धि के विषय में तो देवल ऋषिय नेबहुत ही सुलभ मार्ग निश्चय किया है कि

"म्लेच्छै र्हृतानां चौरैर्वा कान्तारेषु प्रवासिनाम्।

अर्थात् मुसल्मानादि व चोरों द्वारा किसी की स्त्री हरी जाय और वह दूसरों के वशिभूत होजाने से खान पान से भी भ्रष्ट हो चुकी हो तो वह केवल एक कृच्छ्र व्रत से शुद्ध हो सक्ती है, व्यास जी ने कृच्छ्र का लक्षण ऐसा किया है कि

कपिलायाश्चगोर्दुग्ध्वा धारोष्ण यः पयः पिवेत्।

जो कपिला गाय का धारोष्ण (निकलता निकलता) ताजा दूध पीयेगी वे इससे शुद्ध हो जाँयगी। शुद्ध हुये मनुष्य किसी भेद भाव रहित होकर अपनी जाति व वर्णानुकूल सब काम पूर्व वत् कर सक्ते हैं यथा :—

तदासौ कुटुम्बानां पंक्ति मातेति नान्यथा।
(देवल)

सर्वाणि ज्ञाति कर्माणि यथा पूर्व समाचरेत्
(मनु० ११)

भा० शुद्ध हुवा मनुष्य अपने कुटुम्बियों के साथ रह कर सब कुछ कर सकता है, जैसे सदैव से होता चला आया है वैसे ही वह शुद्ध हुवा मनुष्य करे।

क्यों कि:—

कृत्वा पापं हि सन्तप्य तस्मात्पापात्प्रमुच्यते ।
नैवं कुर्यां पुनरिति निवृत्त्या पूयते तु सः ॥ २३ ॥

(मनु० अ० ११ श्लो० २३०)

भा० जो मनुष्य पाप करके (मुसल्मानादि हो चुकने पर) अपने किये पर पश्चात्ताप प्रकट करता है और उसे न करने को प्रतिज्ञा करके सदा के लिये उस पाप से अलग हो जाने से शुद्ध हो जाता है।

तेषां स्वयमेव शुद्धि मिच्छतां प्रायश्चित्तानन्तर मुपनयनम् ।

आपस्तम्ब गृह्यसूत्र १ । १ । १ । १ ॥

भा० जो विधर्मी अपने आप अपनी भूल को मान कर शुद्ध होने की प्रार्थना करे उस को प्रायश्चित कराकर यज्ञोपवीत पहिना देना चाहिये ।

जब क्षत्रियों पर अत्याचारों की भरमार हुयी तब विपत्तिवश बलपूर्वक वे लोग मुसलमान कर लिये गये इस के सम्बन्ध में प्रमाण मिलता है कि :—

क्षत्रियाश्चैते धर्म परित्यागाद् ब्राह्मणैश्च परित्यक्ता म्लेच्छतां ययुः ।

(विष्णु० पु० प्र०४--३)

भा० अर्थात् क्षत्रिय लोग अपने धर्म के त्याग और ब्राह्मणों के त्याग से मुसलमान बने ।

आर्तानां मार्गमाणानां प्रायश्चित्तानि ये द्विजाः ।
जानन्तो न प्रयच्छन्ति ते वैयान्ति समंतु वै ॥

मनु० अ०

भा० दुखी और शुद्धी चाहने वालों को जो पुरुष द्वेष भय और लज्जा से शुद्धि नहीं करता है, वह पुरुष भी उसही पाप से लिप्त हो जाता है ॥

दिनान्ते नख रोमादीन् प्रवाप्यस्नानमाचरेत् ।
भस्मगोमय मृद्वारि पञ्चगव्यादि कल्पितैः ॥ १ ॥
मलापकर्षणं कार्यं बाह्यशौचोपसिद्धये ।
दन्तधावनपूर्वेण पञ्चगव्येन संयुतम् ॥ २ ॥
व्रतं निशामुखे ग्राह्यं वहिस्तारक दर्शने ।
आचम्यातःपरं मौनी ध्यायन् दुष्कृतमात्मनः ॥ ३ ॥
मनः संतापनं तीव्रमुद्वहेच्छोकमन्ततः ॥

(वसिष्ठस्मृति)

भा० प्रायश्चित्ती मनुष्य के नख व रोमों को दिन के अन्त होते होते कटवादे तत्पश्चात् श्रीगंगा जल युक्त पञ्चगव्यादि से स्नान कराकर नवीन बस्त्र पहिना कर उसकी बाह्य शुद्धि करे और रात्रि को केवल पाव भर पञ्चगव्य शुद्ध होने वाले को पिलादो, फिर दूसरे दिन प्रातःकाल दन्त धावनानन्तर उसे पञ्चगव्य पिलादे और दिन भर उसे व्रती रक्खे और वह मनुष्य अपने मन में सर्वान्तर्यामी परमात्मा को स्मरण करता हुआ पश्चात्ताप करता रहे फिर मध्यानोत्तर उसका प्रायश्चित किया जाय ।

आजकल बहुत से नवशिक्षित विचार वाले मनुष्य शुद्ध होते समय फेशन में मरते हुये मुंडन करवाना एक निकम्मी सी वार्ता मान्ते है पर यह ठीकनहीं लिखाहै :—

राजा वा राजपुत्रो वा ब्राह्मणो वा बहुश्रुतः ।
केशानां वपनं कृत्वा प्रायश्चित्तं समाचरेत् ॥ ५६ ॥
यम स्मृति ५६

अर्थात:— राजा हो व राजपुत्रहो, ब्राह्मण हो व बहुश्रुतहो अर्थात कोई भी हो उनका नख रोम कटाकरही प्रायश्चित कराना चाहिये । परन्तु एक पुस्तक में इस ही श्लोक कापाठ भेद ऐसा मिलता है :—

पाठभेद :—

राजा वा राजपुत्रो वा ब्राह्मणो वा बहुश्रुतः ।
अकृत्वा वपनं तेषां प्रायश्चित्तं विनिर्दिशेत् ॥

भा० राजा,राजपुत्र,ब्राह्मण व बहुश्रुत को उनकी विशेष प्रतिष्ठा के कारण उनका मुडन न करवा कर ही उन्हें प्रायश्चित बता देना चाहिये। परन्तु हमारी सम्मति में मुंडन करादेना ही आवश्क है पर स्त्रियों का वर्जित है उन का सिर धुलवालेना व स्नान करादेना ही पर्य्याप्त है ।

अंगरेजी शिक्षा

आजकल अंग्रेजी शिक्षा के कारण कुछ नवशिक्षित प्रायश्चित का कुछ भी महत्व नसमझ कर जो चाहा करबैठते हैं यहाँतक कि विधर्मिन के साथ विवाह कर बैठतेहैं उदाहरण के लिये अभी

मुम्बई प्रान्तमें एक उच्चकुलात्पन्न हिन्दु सज्जन ने एक मुसल्मा-नी के साथ विवाह किया है जिनका कहना है कि " हम दोनो अपने अपने धम को मान्ते रहते व तद्वत चलते हुये स्त्रीपुरूष रहसक्ते हैं अर्थात पत्नी अपने सिद्धान्त व धर्मके अनुसार गो हत्यामें प्रवृत होगी तो उनके पति भगवान गोरक्षा करेंगे, हिन्दु शास्त्रों में पत्नि को अर्द्धाङ्गिनी लिखीहै पर ऐसे पति व पत्नि यथार्थ में शास्त्रोक्त पति पत्नी नहीं कहे व माने जासक्ते हैं क्यों कि शास्त्र आज्ञा देतेह कि :—

निवर्तेरंश्च तस्मात्तु सम्भाषण सहासने ।
दायाद्यस्य प्रदानञ्ज यात्रा चैव हिलौकिकी ॥

(मनु० अ० ११ श्लो० १८४)

भा० पतित से बोलना, एक आसनपर बैठना व एक शय्यापर सोना, उसे दायभागदेना उस के साथ खानपान आदि सब कुछ का असहयोग करना चाहिये। यथा:—

एनस्विभिर निर्णिक्तैर्नार्थं किंचित्सहाचरेत् ।
कृत निर्णेजनांश्चैव न जुगुप्सेतकर्हिचित् ॥

(मनु ० अ ० ११

अर्थ शुद्धि योग्य मनुष्य से शुद्धि से पहले किसी प्रकार का सम्बन्ध न रक्खै और शुद्धि हो जाने के बाद किसी प्रकार का

भेद भाव न रक्खे अर्थात खानपान आदि में किसी प्रकार का परहेज़ न करे।

पौण्ड्रकाश्चौड़ द्रविड़ाः कम्बोजा यवनाः शकाः।
पारदा पह्लवाश्चीना, किराता दरदा खशाः
शनकैस्तु क्रियालोपादिमाः, क्षत्रिय जातयः।
वृषलत्वं गता लोके, ब्राह्मणाऽदर्शनेन च ॥

मनु० १० । ४३ व ४४ ॥

अर्थः--पौण्ड्र, चौड़, द्रविड कम्बोज, यवन (यूनानी) शक (तिब्बती और तातरी) पारद, पल्हव (फारस देशीय), चीन किरात, दरद और खश ये सम्पूर्ण क्षत्रिय जातियां शनैः शनैः दिक संस्कारों को छोड़ देने और विद्वान् ब्राह्मणों के न मिलने अर्थात् उपदेश न मिलने के कारण वृषलत्व अर्थात् पाखण्डादि नाम से धर्म पतित हो गईं और म्लेच्छ यवनादि नामों से पुकारी जाने लगी। इसी प्रकार महाभारत पूर्वार्द्ध के राज प्रकरण अध्याय ६५ में लिखा है कि :—

पुनः--

मुखबाहूरुपज्जानां या लोके जातयो वहिः।
म्लेच्छ वाचश्चार्य वचः सर्वे ते दस्यवः स्मृताः ॥

भा० ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये जातियें म्लेच्छ

भाषा (भिन्न २ देशों की भिन्न २ भाषा बोलने वाले व आर्यभाष बोलनेवाले ये सब उचित शिक्षा व उपदेश न होने से दस्यु होगये।

यवनाः किराता गान्धाराश्चीनाः शवरा बर्बराः ।
शकास्तुषाराः कङ्काश्च पल्लवाश्चाध्रमद्रकाः ॥
चौड़ापुलिन्दारमथा कम्बोजाश्चैव सर्वशः ।
ब्रह्मक्षत्र प्रसूताश्च वैश्या शूद्राश्च मानवः ॥

(महा० शा० पर्व० राज० प्रकर्ण अ० ६५)

अर्थः--यवन, किरात, (भील) गन्धार (कन्धारी) चीन (चीनी) शवर बर्बर, शक, तुषार, कङ्क, पह्लव अध्रमद्र, चौड़ पुलिन्द और कम्बोज ये समस्त जातियां ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य, और शूद्र इन चार वर्णों से उत्पन्न हुई हैं। अर्थात् उपनयन वैदिक संस्कार रहित होने पर यवन आदि बनी हैं।

यवनान् मुण्डित शिरसोऽर्द्ध मुण्डान् शकान् प्रलम्ब केशान्
पल्हवाश्च श्मश्रुधरान्, निःस्वाध्याय वषट्कारान् ।
एतानन्यान्च क्षत्रियाश्चाकारास्ते चात्मधर्म परित्यागात्
ब्राह्मणैश्च परित्यक्ताः म्लेच्छतां ययुः ॥

(विष्णु पु० अ० ४। अ० ३-२६)

अर्थ—क्षत्रिय जातियों में से किसी का शिर मुड़ा कर यवन नाम रक्खा, किसी के केश रखवा दिये और शक नाम रक्खा और किसी को डाढी रखवा कर उनका पल्हव नाम रक्खा तथा उनको वेदादि के स्वाध्याय से पृथक् करके म्लेच्छ बना दिया। इस प्रकार

के अनेक प्रमाण हैं जिन से सिद्ध होता है कि संसार की समस्त जातियां किसी समय आर्य जाति का एक अग प्रत्यंग था और समय २ पर आर्य उपदेष्टाओं के अभाव से संस्कार हीन होने पर अनार्य बन गईं।

ऋषि मुनियों ने आर्य जाति से च्युत म्लेच्छादि जातियों को शुद्ध करने के अनेक विधान स्मृति आदि धर्म ग्रन्थों में वर्णन किये हैं। जिनमें से कुछ बिधान पाठकों के अवलोकनार्थ नीचे लिखे जाते हैं।

ज्ञातित्युक्तो हि कुरुते, पापं ज्ञाति विवर्जितः।
तत्प यं ज्ञाति बन्धूना, जायते मनुरब्रवीत् ॥

भावार्थ :— जातीच्युत (पतित) होने पर पतित मनुष्य जो पाप कृत्य करताहै उसको यदि प्रायश्चित कराकर शुद्ध नहीं किया जाता – तो उसके द्वारा किया हुआ पाप उसको अपनी बिरादरी में नमिलाने वाला जाती के मनुष्यों को लगताहै। भाव यह कि हरएक जाती के लोगों को चाहिये कि वे अपनी २ बिरादरी के बिछुड़े हुये भाइयों को शुद्ध करके अपनेमें मिलालेवें यदि वे ऐसा नहीं करते तो वे सम्पूर्ण गोबधादि पाप उस बिरादरी केमनुष्य को लगेगा जो उनको शुद्ध करने के लिये तैयार नहीं हैं इसलिये प्रत्येक बिरादरी के मनुष्यों को चाहिये कि वह अपने बिछुड़े हुए

भाइयों को शुद्ध करके शीघ्र अपने में शामिल कर लेवें। अन्यथा ज्ञातिच्युत पतित का पाप पुनः शुद्ध करके अपने में न मिलाने वाले को लगता है।

यवनाः किराता गान्धाराश्चीनाः शबर बर्बराः।
शकास्तुषाराः कंकाश्च पल्हवाश्चान्द्र मद्रकाः॥ १
पौण्ड्राः पुलिन्दारमठाः काम्बोजाश्चैव सर्वशः।
ब्रह्मक्षत्रप्रसूत श्च वैश्याः शूद्राश्च मानवाः २॥
कथं धर्माश्चरिष्यन्ति सर्वे विषय वासिनः।
मद्विधैश्च कथंस्थाप्याः सर्वे वै दस्युजीविनः॥ ३॥
एतदिच्छाम्यहं श्रोतुं भगवंस्तद् ब्रवीहि मे।
त्वं बन्धुभूतोऽस्माकं क्षत्रियाणां सुरेश्वरः॥ ४॥

(महा० शा० अ० १८८ तथा म्लेछी कृ (भू) तानां पृ० ६

अर्थः— इन श्लोकों को म० महो० पं० शिवदत्त जी शास्त्री ने लिखे हैं कि मान्धाता ने इन्द्र से पूछा कि यवन, किरात, गांधार चीनी, शबर, बर्बर (अफिकावाले) शक (शाकद्वीपी) तुषार (तुर्की) कंक, पल्हव, आन्द्र, माद्रक, पौंड़, पुलिन्द रमठ काम्बोज ब्राह्मण क्षत्रिय से उत्पन्नहुये वैश्य और शूद्रादि सम्पूर्ण मनुष्य जो दुष्ट कर्मी हैं वे किस प्रकार धर्माचरण करें। इस को मैं

सुनना चाहता हूं सो कहो? इस का उत्तर भगवान् इन्द्र ऐसा देते हैं कि:—

माता पित्रोर्हि शुश्रूषा कर्तव्या सर्व दस्युभिः ।
आचार्य गुरु शुश्रूषा तथैवाश्रमवासिनाम् ॥ १ ॥
भूमिपानां च शुश्रूषा कर्तव्या सर्व दस्युभिः
वेद धर्म क्रियाश्चैव तेषां धर्मो विधीयते ॥ २ ॥
पितृयज्ञास्तथाकूपाः प्रपाश्च शयनानि च ।
दानानि च यथा कालं द्विजेभ्यो विसृजेत् सदा ॥ ३ ॥
अहिंसा सत्यमक्रोधो वृत्तिदायानुपालनम् ।
अहिंसा सत्यमक्रोधो वृत्तिदायानुपालनम् ।
भरणं पुत्रदाराणां शौचमद्रोह एव च ४ ॥
दक्षिणा सर्व यज्ञानां दातव्या भूति मिच्छता
पाकयज्ञामहार्हाश्च दातव्या सर्वदस्युभिः ॥ ५ ॥
एतान्येवं प्रकाराणि विहितानि पुराऽनघ ।
सर्वलोकस्य कर्माणि कर्तव्यानीह पार्थिव ॥ ६ ॥

अर्थः—इन्द्र ने मान्धाता के उत्तर में कहा कि हे राजन् ? इन सबों को माता पिता आचार्य गुरु, साधू, सन्यासी, राजा आदि की सेवा करना चाहिये और उन्हें वेद, धर्म और आचार

विचार को मानना चाहिये तथा पितुयज्ञ कूव खुदाना प्याऊ लगाना, धर्मशाला बनाना ब्राह्मणों का दानदि से सत्कार, अहिंसा सत्य अक्रोध, गृहस्थ का पालन सम्पूर्ण यज्ञों में दक्षिणा देना ब्रह्मण भोजन कराना आदि सम्पूर्ण कर्म ये कर सक्ते हैं ! तब शुद्धि क्यों रही ?

विष्णु पुराण अंश ४ अध्याय ३ में चक्रवर्ती राजा सगर की कथा जो वर्णित है वह सारांश स्वरूप इस प्रकार से है कि राजा त्रिशंकु के वंश में एक हैहय राजा था जो ताल जंघादि जाति के राजावों से पराजय होकर वह अपनी गर्भवती स्त्री को साथ ले बन को चला गया और वहीं ओर्वा ऋषि जी का आश्रम था जिन को शरणागत वे दोनों प्राणी रहने लगे परन्तु कुछ ही समय पश्चात राजा का देहान्त हो गया रानी निराश्रय होकर ऋषि जी की सेवा में रहती हुयी जपतप युक्त जीवन व्यतीत करने लगी उचित समय पर उसके पुत्र जन्म हुवा जिस के संस्कार ऋषिजी ने कराये और उस पुत्र का नाम सगर रक्खा और ज्यों ज्यों वह बड़ा होता गया ऋषि जी उसे वेद वेदाङ्ग उपाङ्गों की शिक्षा के साथ साथ धनुर्विद्या में निपुण कर दिया तब एक दिन उसने अपनी माता से अपना पूर्व वृत्तान्त पूछा जिसे सुन कर बनवासी राजपुत्र को बड़ा ही दुःख हुवा अन्त को प्रतिज्ञा किया कि 'मेरे शरीर में जीवन रहा तो मैं अपने पिता के बैर का बदला लूंगा"

तदनुसार उस सगर ने अपनी संगठन शक्ति को बढ़ा कर ताल जंघादिकों के साथ युद्ध किया तब वे लोग अपनी प्राणरक्षार्थ सगर के कुलगुरु वसिष्ठ जी के आश्रम में आकर शरणागत हुये तब वसिष्ठ जी ने सगर से कहा "पुत्र शरणागत को क्या मारते हो" तब सगर बोले "इन्होंने हमारे साथ बड़े २ अन्याय किये हैं" ऋषि जी ने कहा कि "लो तुम्हारे सन्तोषार्थ मैं इन्हें धर्म व द्विजत्व से पतित कर देता हूँ तदनुसार तुम इनको व्यवस्था करदो। तब सगर ने

स तथेति तद्गुरु वचनमभिनन्द्य तेषां वेषान्यत्वमकारयत्। यवनान् मुण्डित शिरसोऽर्द्धमुण्डान् शकान् पह्लवांश्च श्मश्रुधरान् निःस्वाध्याय वषट्कारान् एतानन्यांश्च क्षत्रियांश्चकार। तेचात्मधर्म परित्यागात् ब्राह्मणैश्च परित्यक्ताः म्लेच्छतां ययुः ॥ २६ ॥

भा० तब चक्रवर्ती राजा सगर अपने गुरू का बचन मानकर उनके केशों में अदलाव बदलवा कर दिया अर्थात् कुछ लोगों का आधा सिर मुंडा कर उन का नाम यवन रखदिया, किसी के केशरखवाकर शक नाम रखदिया, दाढ़ी रखवाकर उनका नाम पल्हव (दढियल) रखदिया और इन सब समुदायों को वेद वेदाङ्ग उपाङ्गादि के पठन पाठन से तथा कर्मकाण्डादि के लिये ब्राह्मणों के अभाव से कई क्षत्रिय जातियें म्लेच्छ (मुसल्मान) होगयीं

नोटः— दो प्रेसों में ग्रन्थ छपने के कारण पृष्ठ ६३७ से ६६० तक का विषय छपाने से रोक लिया गया है।

ग्रन्थकर्त्ता

क्षत्रिय-वंश प्रदीप
व
नौमुस्लिम जाति निर्णय

१-आज़ाद:—यह एक मुसल्मान फ़क़ीरों की जाति है इनके दो भेद हैं बशर और आज़ाद, ये दोनों ही हिन्दुओं से मुसल्मान हुये थे। बशर वे फ़कीर कहाते हैं जो इसलाम धर्म के अनुसार चलने वाले हैं पर इसके विरुद्ध आज़ाद वे हैं जो यद्यपि अन्य मुसल्मानों के यहां से भीख तो मांगते हैं पर मुसल्मानी धर्म के उसूलों को मानते नहीं, ये स्वतन्त्रता पूर्वक रहते हैं और हिन्दू धर्म के सिद्धान्तों को विशेष मानते हैं, गो-भक्षक भी नहीं हैं इसही से ये आज़ाद कहे जाते हैं। युक्तप्रदेश में इनकी लोक संख्या ४४३० है इनकी विशेषता इलाहाबाद, लखनऊ और जालौन के जिले में है शुद्ध किये जाने योग्य हैं, पहिले ये बैरागी साधु थे। इनके संबन्ध में एक अफसर ने अपने ग्रन्थ में ऐसा लिखा है:—

Though nominally Musalmans, do not accommodate their lives to the principals of any creed.

(C & T. Page 191)

यद्यपि ये नाम मात्र के मुसलमान हैं पर किसी भी एक धार्मिक सिद्धान्त पर स्थित नहीं हैं।

२-इराकी:—इसका दूसरा नाम राकी, व रांकी भी है यह नाम धन्धे के नाम से पड़ा है अर्थात् अर्क का काम करने वाले को अरकी कहते हैं और अरकी कहाते कहाते ईराकी व रांकी कहलाने लगे, यह लोग पहिले कलवार व कलाल थे परन्तु मुसलमानी जमाने में यह ज़बरदस्ती मुसलमान कर लिये गये। बिहार में यह लोग अभी तक अर्क खेंचनें व शराब खेंचने का धन्धा करने वाले मौजूद हैं। इनमें भेद इतना सा ही है कि जो हिन्दू हैं वह हिन्दू ढंग से रहते हैं और जो मुसलमान हैं वे मुसलमानी फैशन में रहते हैं अर्थात् मुसलमान राकी नाम मात्र के मुसलमान हैं जो मुसलमान राकी कहे जाते हैं उनका रहन सहन का बर्ताव मुसलमानों का सा नहीं है जैसे दाढ़ी का रखना, बधने को काम में लेना आदि आदि। परन्तु यह लोग नाम मात्र के मुसलमानी फैशन में रहते हैं पर मुसलमानी धर्म को अच्छी तरह से नहीं मानते हैं इनमें जो हिन्दू रांकी हैं वे हिन्दू फैशन का रहन सहन तथा पीतल आदि के बर्तनों को काम में लेते हैं इनका आदि स्थान प्रतापगढ़ के जिले में बेलखरा है जाति व कौम नामक ग्रन्थ के पृष्ठ १०२ में लिखा है कि:—

Once upon a time, a Mohammadan army passed Belkhara and the soldiers seized a Kalwar and made him a Mohammadan by force. His descendants are the present Rankis.

(Caste and Tribes Page 102)

भा०—एक समय एक मुसलमान बादशाह की फौज़ बेलखरा क़सबे के पास से गुजरी उस फौज के सिपाहियों ने एक कलवार को पकड़ लिया और ज़बरदस्ती उसे मुसलमान कर डाला।

इनकी रीति भांति अन्य अपने भाई कलवारों की सी है परन्तु यह हिन्दू जाति के दुर्भाग्य की बात है कि हिन्दू जाति अपने इनही नवमुसलिम हिन्दू भाइयों को अपने से दूर रख कर उनके हाथों से अपनी गर्दन कटवाना व जूतियें खाना तो मंजूर कर लेती है, परन्तु शास्त्रों की आज्ञा होते हुए भी उन्हें शुद्ध न करके सदैव के लिये अपने कट्टर दुश्मन बनाये रखना यह कहां तक उचित है इस पर पूर्ण विचार होना चाहिये।

इन नवमुसलिमों की लोक संख्या युक्त प्रदेश में जिले वार इस प्रकार से है जौनपुर में ६४१, गाजीपुर में २०७६, बलिया में २५६०, गोरखपुर में २६१०, बसती में १३६, आज़मगढ़ में १००५, खेड़ी में १२५, फ़ैजाबाद में १६१, गोंडा में ३६०, बहराइच में ३३२ और सुलतांपुर में ११४१ हैं जिन जिलों की संख्या सौ से कमती थी उन्हें हमने छोड़ दिया है। युक्तप्रदेश में इनकी कुल आवादी ११६७७ है।

Mr Burn I. C. S. मिस्टर बर्न आई. सी. ऐस. ने लिखा है:—

A large number of these are probably the descendants of converted Kalwars.

(C. S. R. Page 346)

भा०—रांकियों में बहु संख्यक कलवारों से बनाये हुये मुसलमान हैं।

३—उज्जैनी

—यह पँवार वंश की एक शाखा है, ये लोग महाराज विक्रमादित्य के वंश में से हैं, उज्जैन नगरी पर जब युद्ध हुआ तब मुसल्मानों के अत्याचारों से पीड़ित होकर ये लोग भाग निकले थे और युक्तप्रदेश में आकर ये लोग बसे थे तहां इनका नाम उज्जैनी राजपूत हुवा।

इनके विषय में फ़यज़ाबाद के भूतपूर्व कलक्टर ने ऐसा लिखा है:—

A sept of Rajput who take their name from the city of Ujjain. (C. & T. Page 521)

भा०—यह राजपूतों का एक वंश है जिनका यह नाम उज्जैन से निकास के कारण पड़ा है।

इसही वंश ने जब भाड़ जाति पर विजय प्राप्त की, तब इनका दबदबा अवध में सूरसाह बादशाह के समय में खूब जमा, बैस राजपूत वंश भी इसही वंश में से है।

इस वंश के लोग आज़मगढ़ में हैं जिनके पास गोपालपुर का पर्गना था परन्तु फिर वह कौशिकों के पास चला गया। इस जाति की एक शाखा कानपुर नगर में है जो राजा जयचन्द के समय में उज्जैन से आये थे जिन्हें कन्नौज के महाराज जयचन्द ने "उज्जैनी महाराज" के नाम से सम्बोधन किया था, तब से युक्तप्रदेश में ये लोग "उज्जैनी" नाम से प्रसिद्ध हुये। ये लोग बादशाह सूरसाह के समय आये थे।

सुलतानपुर में भी ये लोग बहुत हैं जिन्होंने भाड़ जाति को एक बड़ी पराजय दी थी। फ़र्रुख़ाबाद के ज़िले में भी ये लोग हैं इनका गोत्र गर्ग गोत्र है तहां ये गर्गगोती कहाते हैं, बलिया के ज़िले में शौनक गोत्र के उज्जैनी राजपूत हैं यह वंश युक्त-प्रदेश में प्रतिष्ठित दृष्टि से देखा जाता है।

युक्तप्रदेश में इस वंश की लोक संख्या।

फ़र्रुख़ाबाद	७४०	बस्ती	२५१
इटावा	१२१	आज़मगढ़	५५१
बनारस	१५७	उन्नाव	४८२
ग़ाज़ीपुर	२४२	सीतापुर	१०५

बलिया	७७५	हरदोई	२६६
गोरखपुर	४५७	फ़ैज़ाबाद	७७
		सुलतानपुर	२०७

नोटः—जिन जिलों में पचास से कम की लोक संख्या थी उन्हें हमने छोड़ दिया है। } — जोड़ ४५८६

इस वंश के लोग भी मुसलमानी समय में पीड़ित होकर मुसल्मान बने थे उनकी संख्या पँवार राजपूत प्रकरण में मिलेगी तहां देख लेना।

इनमें से बहुत से राजपूत ज़बर्दस्ती मुसलमान बनाये जाने पर भी उज्जैनी मुसलमान कहाते हैं उनकी रीति भांति विशेष-रूप से हिन्दुवानी हैं अतः ये शुद्ध करने योग्य हैं।

४-कचारा:—यह एक लखारा जाति का ही भेद है परशुरामजी ने जब २१ वार क्षत्रिय संहार किया तब यह लोग खीमसी राजपूत के सन्तान थे सो परशुरामजी के डर से इन्होंने कांच की चूड़ी बनाने का धन्धा स्वीकार करके अपनी जीव रक्षा की थी और फिर सैकड़ों वर्षों तक यह राजपूत होते हुए कांच की चूड़ियों का काम करते रहे इनमें भाटी, चौहाण आदि आदि १२ खांपें हैं परन्तु मुसलमानों के अत्याचार के समय यह जाति भी अपने को न बचा सकी और यह भी लखेरों की तरह से मुसलमान बना लिये गये इनकी रीति रिवाज़ लखेरों की तरह से ही है अन्य हिन्दुओं की तरह इनमें सगाई गुड़ खोपरे से होती है। ये लोग विधवा का नाता भी गोत टालकर करते हैं ये लोग नाम-मात्र के मुसल्मान होते हुये भी अपने मृतकों को जलाते हैं। इनका धर्म वैश्नव है ये दारू मांस नहीं खाते हैं। इस लिये निस्सन्देह रूप से शुद्ध कर लेने योग्य हैं।

५-कम्बोहा:—यह एक क्षत्रिय जाति है -पूर्व काल में ये लोग क्षत्रिय थे, धर्म शास्त्रोक्त "काम्बोजा" शुद्ध शब्द का बिगड़ा हुआ यह रूप है, पूर्वकाल में परशुरामजी के क्षत्रिय संहार से बचकर बौद्धकाल में इस क्षत्रिय जाति को ब्राह्मणादि न मिल सके थे अतएव यज्ञोपवीत रहित रहजाने से लोग इन्हें एक शूद्र जाति समझने लगे यथाः—

शनकस्तु क्रिया लोपा दिमाः क्षत्रिय जातयः ।
वृषलत्वं गता लोके ब्राह्मणा दर्शनेनच ॥ ४३ ॥
पौण्ड्रकाश्चाड्र द्रविड़ाः काम्बोजा यवनाः शकाः ।
पारदा पल्हवाश्चीनाः किराता दरदाः खशाः ॥ ४४ ॥

मनु० अ० १० श्लो० ४३-४४

इस प्रमाणानुसार ये कंबोहा लोग पहिले काम्बोजा कहाते थे और ब्राह्मणादि के अभाव से शूद्र कहे व समझे जाने लगे। इसलिये ब्राह्मणों का न मिलना व संस्कार रहित रहजाना इनका दोष नहीं था अतएव ये क्षन्तव्य हैं।

There can however, be very little doubt that in name at least, they are the representatives of the Kambojas. (Tribes & Castes P. 220)

भा०—इसमें बहुतही कम सन्देह है कि ये लोग पूर्वकाल के काम्बोजा क्षत्रियों में से ही हैं।

इसके अतिरिक्त अन्य अन्य विद्वानों ने ऐसा भी लिखा हैः—

फ़ैज़ाबाद के भूतपूर्व कलक्टर ने इस जाति के विषय में बहुत कुछ अन्वेषण करके अपनी रिपोर्ट में लिखा हैं किः—

In A. D. 1654 the Punjab was devastated by disastrous floods. To restore prosperity Jehangir sent for Shershah a Subah who took

with him from the city of Sunam (Sohna) Rattu and Achhra the ancestor of the Kambo has (C. & T. 218)

भा०—ईस्वी सन् १६५४ में पंजाब में युद्ध विप्लव हुवा अतएव अमन आमान क़ायम रखने व देश की दशा सुधारने को बादशाह जहांगीर ने अपने सूबा शेरशाह को भेजा जिसने कंबोह जाति के पुरुषा क्षत्रिय वीर रत्तू सिंह और अछरसिंह को सुनाम नगर से अपने साथ लेकर चढ़ाई करदी, क्योंकि ये क्षत्रिय वीर थे।

पंजाब प्रदेश के लाहौर जिले के चुवाइन में जाकर रहा और रत्तू सिंह ने कपूर्थला रियासत के सुलतानपुर थाने के पासवाले टीबा गांव में अपना प्रभुत्त्व जमाया, इसही वंश के लोगों ने यहां बाराह गांव अपने क़ब्ज़े में कर लिये जिसका संयुक्त नाम "बाराह" अबतक प्रसिद्ध है।

सिक्ख राज्यकाल में जब मुग़लों की गड़बड़ चली जारही थी उस समय कपूर्थला से कंबोहा लोग पंजाब के जलंधर शहर में आये और वहां अपना दबदबा जमाया इस जाति का आदि निकास-स्थान मथुरा है इस जाति को क्षत्रिय मानते हुये जाति और कौम नामक ग्रन्थ में लिखा है किः-

They originally lived about Muthra and were Kshattriyas.

अर्थात् ये असल में मथुरा के आसपास के रहने वाले हैं और क्षत्रिय हैं।

यह जाति कोई नवीन क्षत्रिय जाति नहीं है वरन् जब परशुरामजी महाराज क्षत्रिय संहार कर रहे थे उस समय भी इनका बुजुर्ग एक भूपराम था जो ऐसा वीर था कि वह सदा

अस्त्र शस्त्रों सहित कटने मरने के लिये तय्यार रहता था इस पर परशुरामजी महाराज उसे मार डालने को तैयार होगये इस पर वह भयभीत होकर बोला कि मैं क्षत्रिय नहीं हूँ। तब परशुरामजी ने कहा कि तुम अस्त्र शस्त्रों द्वारा सुसज्जित हो और फिरभी तुम ऐसा कहते हो तुममें क्षत्रियत्व की महत्त्वता नहीं है इस पर रूपरामजी बोले कि "काइम बू है" अर्थात् मुझमें क्षत्रियत्व तो क़ायम है पर आप राजर्षि हैं अतएव आपके तप-प्रभाव से मैं डरता भी हूँ इसपर परशुरामजी महाराज ने प्रस होकर कहा कि तुम सत्यवक्ता हो अतएव मैं तुम्हें जीवदान देता हूँ तबसे रूपराम के वंशज क्षत्रियों का नाम "काइम्बूह," होकर आजकल का प्रसिद्ध नाम 'कम्बोह, होगया।

इस जाति के दो भेद हैं कलामी और ज़मीन्दार अर्थात् जो लोग पढ़े लिखे हैं और क़लम द्वारा जीविका करते हैं वे 'कलामी, कहाते हैं और जो लोग कृषीकार हैं खेती द्वारा जीविका करते हैं वे 'ज़मीदार' कहाते हैं।

इस जाति के आचार विचारों पर विचार करते हुये जाति अन्वेषण कर्त्ता एक अंग्रेज अफ़सर ने लिखा है कि They have no bad qualities. अर्थात् इनमें कोई अवगुण नहीं हैं।

इस जाति के छोटे मोटे भेदों पर दृष्टि डालने से पता चलता है कि इनके ५२ भेद हैं जिनमें से गोरे, हांडे और मोमी मुख्य हैं, फिल्लौर के आस पास जो कम्बोहे हैं वे सूरजवंशी राजपूत हैं जो कामरूप देश से बादशाह हुमायूं के समय में सन् १५३०-१५५६ के बीच में आये थे इनमें से ठाकुर बोधराजजी लाहौर और ठाकुर दूलेराव जलंधर में जाकर बसे। लिखा है:—

In Montgomery the Kambohas claim descent

from Raja Karan, but one of their ancestors had to fly to Kashmir and married the daughter of the gardner to save his life. (T. & C. Page 219)

भा०—मान्टगोमरी के कम्बोहा राजा करण के वंशज हैं परन्तु (बादशाह हुमायूं से) पीड़ित होकर इनके एक बुज़ुर्ग भागकर कश्मीर चले गये तहां इन्होंने एक बागवान (माली) की लड़की से शादी करके अपनी जीव रक्षा की, इसपर वहां के राजा ने इन्हें उलहना दिया कि तुमने क्षत्रिय होकर माली की लड़की से ब्याह करलिया "तुमको कुछ बू ख़ानदान की नहीं है अर्थात् तुम कम्बू वाले हो" तबसे ये लोगभी कम्बोहा कहे जाने लगे। वहां इनके दो भेद लामावाला और तपावाला हुये।

(Settlement Report)

नौ-मुस्लिम—बादशाही ज़ुल्म के कारण यह क्षत्रिय वंश बड़ा दुखी हुवा था अतएव बादशाह अकबर के जनरल शाहबाज़ख़ाँ ने जो बंगाल में था जिसकी आज्ञा में दस हज़ार घुड़सवार थे उसकी चढ़ाई के समय में इस वंश के सैकड़ों वीर क़तल किये गये और सैकड़ों ही ज़बर्दस्ती मुसलमान बनालिये गये। इनकी रीति भांति वह चाल ढाल कुछ हिन्दुओं से मिलती है।

इनके अन्य उपभेद ये हैं:—

चौरासी, चौरासी गोली, चौरासी कान्ह, बावन गोली, बेल, बेंदपारी, चोड़सी, डांगन, देवासी धामन, धानी, धोलधर, गादी, गनापती, गुढ़रु, हाथी, कहोजी, काकली, कालरो, कराई, करास, कारनी, खत्री, लुरकाजी, मेकामोमज, मूकी मुरली, राज़वानी, सोंकला और थपरी आदि।

इस जाति में क्षत्रियत्व कूट कूट कर भरा हुवा है और इन्होंने कई स्थानों पर मुसलमान बादशाहों के दांत खट्टे कर दिये थे और जिस प्रकार सहारनपुर, गोंडा, मुल्तान, पानीपत, दिल्ली, आगरा, अजमेर आदि आदि स्थानों में मुसलमानों ने हिन्दुओं के साथ सन् १८२३-२५ तक अत्याचार किये थे उससे कुछ कम इस जाति ने भी मुसलमानों को सुख से नहीं बैठने दिया और अपने क्षत्रियत्व का परिचय उनको भली भांति दिया था इससे मुसलमान लोग चिढ़कर कहने लगेः—

एक अफ़गान, दोन कम्बोह, सेम बदज़ात कश्मीरी ।

अर्थात् एक नम्बर बदमाश अफ़गान दोयम नंबर बदमाश कम्बोह और सेम (तीसरा) नंबर बदज़ात कश्मीरी होते हैं।

इस जातिकी उच्चता के विषय में यू० पी० के मनुष्यगणना अफ़सर ने लिखा है कि They hold a fairly good Social position high class, अर्थात् हिन्दूजाति में इस जाति का पद उच्च है। यही कारण है कि यह लोग Good social position उच्चजाति पदके खाने में सरकार की ओरसे लिखे गये हैं।

इन नौमुस्लिम वीरों के आचारविचार रीति भांति अभ तक बहुत कुछ हिन्दुवाना ढँग की ही चली आरही है परन्तु भारतवर्ष की हिन्दू जनता के मन बड़े मलीन और हृदय बड़े संकुचित हैं जो विचारपूर्वक काम नहीं करते, सहनशीलता व उदारभावों का होना देश की जागृति के चिन्ह होते हैं परन्तु भारतवासियों में और विशेष करके हिन्दू जनता में इसका अभाव है, फिरभी भारतमाता के सुपूतों में से इन्हें कौन कौन भगवान श्रीराम और श्रीकृष्ण के भक्त बनाने को तय्यार होते हैं ? क्योंकि इनमें क्षत्रियत्व कई अंशों में ज्यों का त्यों अब तक

विद्यमान है अर्थात् इनमें से अधिकांश लोग गोमांस को देखना तक पाप समझते हैं अन्य मुसल्मानों की झूंठन भी ये लोग नहीं खाते हैं इसलिये शुद्धि के अधिकारी हैं। पंजाब में यह लोग दूकानदारी और हलवाई-गीरी भी करते हैं और हिन्दू जनेऊ भी धारण करते हैं।

६- हार:—यह भारतवर्ष में एक क्षत्रिय जाति थी आदि उत्पत्ति इस जाति की क्षत्रियत्वता लिये हुये हैं ये लोग पहिले बड़े साहसी व बल पौरुषवाले थे इसही लिये यह जाति भारत के विधर्मी शत्रुओं की आँखों में खटकती थी अतएव इस जाति पर बिपत्तियों का बड़ा पहाड़ टूटा जिसके बोझे से दबकर ये लोग अपनी यथार्थता को भूलगये और निरे एक बेगारी से रहगये उच्चता प्राप्त करने के साधन सब जाते रहे किन्तु सब प्रकार की दासता इनमें आगयी और लोग इनको एक शूद्र जाति समझने लगे पर यह ठीक नहीं हुवा, अन्वेषण करने से पता चलता है कि यह बहुसंख्यक जाति भारतवर्ष में है इसमें अनेकों भेद क्षत्रियों के हैं और दूसरे दूसरे उच्चवर्णीय लोगों के भी हैं तथा कलियुग के प्रभाव से इनमें से कुछ समुदाय की उत्पत्ति उलट पुलट क्रम से पैदा हुई भी है यह सब मिश्रित समुदाय एक कहार जाति में हैं इनमें विशेषांश उच्चवर्णीय जातियों का है पर इनमें विद्या बुद्धि व शिक्षा का अभाव होने से ये लोग सबही तरह के उत्तम मध्यम व निकृष्ट कार्य्य करने लगे कहार जाति में अन्य अन्य जातियें भी मिली हैं यथा:—

Mr. Risley Census Commissioner in his book Tribes and Castes Volume I Page 370.

मिष्टर रिसली साहब कमिश्नर मनुष्य गणना विभाग अ-पनी पुस्तक "कौम व जाति" जिल्द पहिली के पृष्ठ ३७० में ऐसा लिखते हैं कि "बंगाल में ब्राह्मण, राजपूत, कायस्थ, कुर्मी आदि जातियें भी कहारों में मिलजाती हैं ऐसा करने के लिये कुछ रसूमात करके तथा जाति के मुखिया को जिमनवार देके वह कहार होजाता है" अतएव भारतवर्ष में ऐसा समुदाय भी बहुत है जो पहिले ब्राह्मण व क्षत्रिय वर्ण में थे परन्तु परशुराम जी के भय तथा मुसलमानों के अत्याचार के कारण हजारों ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य कहारों को शतशूद्र नवशायक संज्ञक उत्तम जाति मानकर उनमें सम्मिलित होगये और बहुत से वर्तमान काल में विद्या के अभाव द्वारा कहारवृति करने के लिये अपने निर्वाहार्थ कहारों में शामिल होकर कहार कहाने लगे जिसका फल यह हुआ कि भारत के अकेले युक्त प्रदेश में सन् १८९१ की मनुष्य गणना के अनुसार ११९१३७९ कहरों की संख्या थी वह ही दस वर्ष पीछे याने सन् १९०१ की मनुष्य गणना में बढ़कर १२३७८८१ होगई। इनमें पुरुष ६३४१२१ और ६०३७६० स्त्रियें हैं इनमें आर्य्य ४९९ हैं जिनमें आर्य्य पुरुष २७३ और आर्य्य स्त्रियें २२६ हैं।

अतएव इस जाति में उच्चवर्णीय समुदाय सम्मिलित होने पर भी ये जाति क्यों उत्तम कर्म करने से वञ्चित रक्खी जांय? कुछ समझ में नहीं आता! क्योंकि यह सरासर अन्याय नहीं तो क्या है? कुविचारों ने देश में चौका लगा दिया इनके संबंध में ऐसा लेख मिलता है कि:—

"वैश्य की स्त्री और तेली के वीर्य्य से दोलवाही कहार जाति उत्पन्न हुई" पृथिवी प्रधानता के नियमानुसार तो यह जाति वैश्य वर्ण में है। पुनः—

ते दोला वाहकाराज्ञां विशेषाद्व्रत ग्रामिनः ॥ ३३९ ॥
छागला वाहकास्तेस्युः कावड़ी वाहकामताः ।
काहारा इति लोकेस्मिन् गर्दभैस्म जीविनः ॥ ३४० ॥
क्रमश्चेदिन्धना नांच तेषां धर्मान् केचनः ।

इति दोलाकारः १ भोई, २ कहार

वर्णा० जा० विं० ३३८, ३३९, ३४०

यद्यपि ये प्रमाण एक नवीन पुस्तिका के हैं और इस पुस्तिका के ऊपर हिन्दू जनता की श्रद्धा भी नहीं है क्योंकि यह कोई ऋषि-प्रणीत पुस्तक नहीं है तथापि यदि इसही प्रमाण को कुछ काल के लिये ठीक मान लिया जाय तब भी इनमें द्विज संसर्ग होने से यह एक छोटी जाति नहीं मानी जानी चाहिये किन्तु हमारे विचार व अन्य अन्य अन्वेषण व विद्वानों के परामर्शानुसार यह जाति उत्तम है और इन्हें द्विजत्व-बोधक कर्म करने का अधिकार है जैसा कि आगे को प्रमाणित किया गया है।

यह द्विजों के यहां पानी भरने वाली जाति है ये लोग आचार में शुद्ध हैं और सम्पूर्ण हिन्दुओं के यहां पानी भरने आदि के कारण इन लोगों ने अपना पूर्व काम मछली पकड़ना आदि छोड़ दिया है इनका धर्म्म वैश्नव व शाक्तिक भी है उच्च ब्राह्मण लोग इनके यहां पूजन पाठ आदि काम कराते हैं इसकी पुष्टि में मिस्टर नेस्फील्ड M. A. अपनी पुस्तक के पृष्ठ ९ में ऐसा लिखते हैं कि:—

Many members of water caste has left their original calling of fisherman & boatman.

पानी भरने का काम करने वाले कहारों ने अपना पुराना धन्दा मछली पकड़ने का छोड़ दिया है।

मा० सेन्सेज रिपोर्ट के पृष्ठ ४९९ में लिखा है कि कहार

"कायर" से बना मालूम होता है और कायर का अर्थ नामर्द का है अर्थात् जब पृथ्वीराज चौहान की शाहबुद्दीन गौरी से हार हुयी उस वक्त जिन २ क्षत्रियों ने डर कर हथियार डाल दिये उनको "कायर" कहा गया और कायर का बिगड़ कर अपभ्रंशरूप कहार होगया।

अतएव कहार लोग आदि से क्षत्रियवंशी हैं इनको क्षत्रिय धर्म्म के अनुसार यज्ञोपवीतादि सम्पूर्ण कर्म्म करने चाहियें।

हम कैवर्त प्रकरण में दिखला चुके हैं वहाँ पुराण व स्मृतियों के आधार पर कैवर्त्त जाति की उत्पत्ति तीन भिन्न भिन्न प्रकार से लिखी है अतएव परस्पर विरुद्ध होने से माननीय नहीं हो सकती वरन ऐसा भाव होता है किसी द्वेषीने मनघड़न्त रचना करके स्मृति पुराणों में मिला दिये हैं अतएव ऐसेही वाक्यों से देश में परस्पर ईर्षा, द्वेष व वैमनस्य की वृद्धि होकर भाई भाई का शत्रु बन बैठा अन्यथा कहार जाति का सम्बन्ध ब्राह्मणादि उच्च जातियों के साथ विशेष है क्योंकि सी० एस० मि० विलियम क्रोक कलेक्टर साहब लिखते हैं:—

According to the Brahmanical genealogists the Kahar is one of the mixed castes desecuded from a Brahman father and a Nishad mother.

(C. T. Page. 92.)

ब्राह्मणों की वंशोत्पत्ति के अनुसार कहार एक मिश्रित जाति है जो ब्राह्मण पिता और निषाद द्वारा पैदा हुई है।

अतएव इस प्रमाणानुसार वीर्य्य प्रधानता के नियम को लेने से यह जाति ब्राह्मण वर्णीय ठहरती है और सदैव उच्चतम जातियों के साथ इनका सहवास रहने के कारण इनका रहन-सहन, चाल ढाल, रीति भांति व आचरण ब्राह्मणों के जैसे ही हैं।

भेद:—इस जाति के भेद व उपभेद ये हैं:—

१ बाथम, २ बोट, ३ धीवर (धीमर), ४ घुरिया, ५ धारुक, ६ जैसवार, ७ कामकर, ८ खावर, ९ माहर, १० मल्लाह, ११-रैकवार, १२ रवानी, १३ सिंघाड़िया, १४ तुरहा आदि, बाथम नाम अवष्टी नामक शहर के कारण नाम पड़ा, गुड़िया पहिले गौड़ ब्राह्मण थे परन्तु विद्या के अभाव से अपने निर्वाहार्थ कहारों में मिलकर कहारों की सी वृत्ति करने से कहार होगये।

कछवाहा-वंशी क्षत्रिय विपत्तिग्रस्त होकर कहारों में मिल गये जो आजकल ललितपुर के ज़िले में हैं और आजतक कछवाहा कहार कहे जाते हैं।

पँवार-क्षत्रिय भी मुसलमानों के अत्याचार के समय कहारपना करने लगे और तबसे आजतक पँवार कहार कहे जारहे हैं जो जौनपुर के जिले में हैं।

बुलन्दशहर के जिले में तोमर चौहाण और गहलोत राजपूत विपत्ति ग्रस्त होकर कहारों में आमिले तबसे आजतक अपने क्षत्रिय नाम को लिये हुए विद्यमान हैं।

अतएव ऐसे उदाहरण बहुत से दिये जासकते हैं परन्तु ग्रन्थ न बढ़े अतएव सूक्ष्मरूप से यहां दर्शाया है। हमारे इन उदाहरणों से पूर्व कथित मिष्टर रिस्ली कमिश्नर मनुष्य गणना विभाग का लेख भी पुष्ट होता है अतएव निःसन्देह रूपसे ब्राह्मण क्षत्रिय जातियें कहारों में मिलगई इसलिये इनको अपनी २ पूर्व स्थिती को याद करके अपनी वर्त्तमान प्रणाली में सुधार करने की आवश्यकता है पाठक! ये प्रमाण हमने मनुष्य-गणना रिपोर्ट, मि० अटकिन्सन, कलेक्टर सी० एस० मिस्टर विलियम क्रूक, हिमालयन गजेटियर Gazettier 111. 540 आदि आदि के आधार पर लिखे हैं।

मनुष्य-गणना विभाग की रिपोर्ट व अन्य सरकारी कागज़ों से इस कहार जाति के ८२३ उपभेद हिन्दू कहारों के हैं अतएव उन सबके विवर्ण को फिर कभी किसी अन्य ग्रन्थ में लिखेंगे।

भेद मीमांसा

१-बाथम:—संस्कृत में अवष्ठी नामक एक नगर आता है उसही को बाथम कहते हैं इस नगर में इनका राज्य था उस प्रभुत्वता के समय दूसरे दूसरे शहरों में यह समुदाय बाथम कहाता था अब सैकड़ों वर्षों का समय होगया इसलिये यह नाम तो इनके संग अब तक चला आरहा है पर उसकी महत्वता इन कहारों को मालूम नहीं। इनकी लोक संख्या युक्त-प्रदेश के फ़रुक्खाबाद, मैनपुरी, इटावाह, बरेली, बदायूं, शाह-जहांपुर, पीलीभीत, हरदोई और खेड़ी आदि जिलों में बहुत अधिक है, युक्तप्रदेश भर में इनकी लोक संख्या २०१७३८ है।

२-बोट:—यह 'भोट' शुद्ध शब्द का बिगड़कर 'बोट' बनगया है नयपाल का राजा भुटवाल नामक एक क्षत्रिय वीर था जो रघुवंशी था उसही के वंशज भोट व भोटिया कहाते २ आजकल के प्रसिद्ध 'बोट' नाम से कहे व माने जाने लगे यह भी समय के हेरफेर से विपत्तिवश कहारों की तरह निर्वाह करने लगे। युक्तप्रदेश में इनकी लोक संख्या २१८८५ है।

३-धीवर:—यह भेद दो शब्दों के संयोग से बना है अर्थात् धी + वरः = धीवरः अर्थात् कहारों में जो समुदाय

बुद्धिमान था वे धीवर कहे जाने लगे, परन्तु मुसल्मानी अत्याचार के समय देश में धर्म विप्लव हुआ और इनकी दशा भी बिगड़ी और ये लोग भी मुसल्मान किये जाने लगे थे बहुत से मुसल्मान होगये और बहुतसे मछली पकड़ने का काम करने लगे जो इनके लिये उपयुक्त कर्म नहीं। परन्तु देशभेद व देशभाषा के कारण ये लोग बुन्देलखण्ड में 'मछमारा' भी कहे जाते हैं आजकल तो ये लोग कहीं खेती कहीं नौकरी कहीं खजूर के टोकरे पंखे बनाना आदि धन्दे करके निर्वाह करते हैं मि० नेस्फील्ड M. A. आदि विद्वान जैसा हम लिख आये हैं लिखते हैं कि ये लोग इस मछली मारने के काम को छोड़ते जाते हैं। युक्तप्रदेश में इनकी जन संख्या ३६८६५ है।

४-धुरिया:—यह कहार जाति का चौथा भेद है इस भेद के विषय का विवेचन करते हुये विद्वानों ने लिखा है कि:-

"Mahadeo & Paravti were returnig from the house of Himachal etc. etc. etc.

एक समय महादेव व पारबती जी हिमाचल के यहां से बिदा होकर चले आरहे थे पारबतीजी के सिरपर अपना सामान था अतएव महादेवजी उसे थकी हुई देखकर धूल की मुट्ठी से दो मनुष्य पैदा किये तब महादेवजी ने पारबतीजी से कहा कि "अपना सामान इन दो मनुष्यों को देदो जो पीछे २ आरहे हैं" चूंकि ये धूल से पैदा किये गये थे अतएव इनका नाम धुलिया हुआ और धुलिया से धुरिया लोक में प्रसिद्ध होगया उसकी सन्तान आजतक धुरिया कहाती है। यह जाति हमारी सम्मति में उच्च क्षत्रिय वर्ण में मानी जानी चाहिये क्योंकि यह लोग संसारिक व्यवहार के अनुसार विषय करने व नौ महीने

पेट में न रहकर तत्काल पैदा किये जाने से महादेवजी की कृपा से अति पवित्र और उच्च वर्णस्थ निःसन्देह हैं।

The Bihar kahars claim descent from jara-sindh king of Magadh. The legend is thus told by General Cunnigham.

(Archieological Report VIII.)

बिहारी कहार मगध के राजा जरासिंध की सन्तान हैं इस की आख्यायिका जेनरल कन्निघाम ने इस तरह पर लिखी है कि "जरासिंध जब कि राजा था उसने गयाजी में गिरियक प-हाड़ी पर एक ऊंचा बैठक बनवाया जहां वह बैठता और उसके पैर पचीना के जल में लटका करते थे परन्तु उसके समीप ही भगवान् का बग़ीचा भी था जो कि एक साल के अकाल में सूखकर नष्ट भ्रष्ट होगया। इसपर जरासिंध ने हताश होकर यह निश्चय किया कि "जो कोई इस बग़ीचे को गंगाजी के जल से एक रात में हरा भरा करदे उसे मैं अपनी कन्या व आधा राज्य दे दूंगा।" इसपर चन्द्रावत नामक कहार जाति का एक मुखिया पुरुष खड़ा होगया और झट-पट बानगंगा के पानी का बंध बांधकर मामूली देशी ढंग से टोकरियें भर २ कर बाग़ को सींचने लगा जब बग़ीचा सिंच चुकते देखा तो भगवान अपनी प्रतिज्ञा पर बड़े शङ्कित हुये और अपनी माया से मुर्गे मुर्गी कौवे चिड़िया आदि बुलवाने लगे जिससे कहारों को रात बीत चु-कने का सन्देह होगया तब भगवान उनपर तकाज़ा करने लगे कि जल्दी करो प्रातःकाल होगया। मुर्गे व कौवे आदिकों की बोली सुनकर कहार गंगा के किनारे मुकामाह को भगवान के डर से भाग गये कि "रात बीत गयी और काम पूरा नहीं हुआ" दूसरे दिन भगवान ने कहारों को बुलाया कि अपनी २ महनत लेजावें परन्तु वहां कोई नहीं मिले। तब भगवान ने उन्हें मोकामाह से

पीछे बुलाकर हरेक को ३½ साढ़े तीन सेर नाज के हिसाब म-जदूरी दियी तवसे कहार की तनख्वाह सदा के लिये ३½ सेर नाज प्रति मनुष्य बँधगया अतएव कानून के अनुसार कहार लोग अपनी तनख्वाह अब भी ३½ साढ़े तीन सेर नाज प्रति म-नुष्य के हिसाब से ले सकते हैं। इसही आख्यायिका को कौम और जाति नामक पुस्तक में ठाकुर महादेवप्रसाद सिंह ने भी लिखी है।

५-धारुक:—यह कहार जाति का पाचवां भेद है परन्तु इनके विषय में ऐसा भी लेख मिलता है कि यह लोग हस्तिनापुर में पांडवों की सन्तान थे और काली दुर्गा को पूजा करते थे।

६-जैसवार:—यह कहारों का छठा भेद है, प्रा-चीन काल में 'जैस' एक बड़ा नगर था जिसको राजा जैसिंह ने बसाया था वहांके वासी जैसवार कहाते थे, मुसलमानी अत्या-चार के समय यह लोग राज-पाट विहीन होकर सेवा चाकरी करने में लग गये। युक्तप्रदेश में इनकी जन संख्या ५०१८६ है जिनमें से २५८६६ एक अकेले गोंडे के जिले में हैं।

७-कामकर:—यह शुद्ध 'कर्मकार' शब्द का विगड़ा हुआ रूप है युक्तप्रदेश के पूर्वी भागों में ये लोग विशेष हैं। लिखा भी है:—

In Basti they claim to be descended from the celebrated Jarasindh king of Magadh.

(C. S. W. C. T. & P. 222.)

भा०—बस्ती के जिले के कामकर लोग मगध के प्रसिद्ध राजा जरासंध के वंशज होने का दावा करते हैं। समय के प्रभाव से इनकी पूर्ववत् दशा नहीं रही अतः लिखा है किः—

Their special occupation is acting as domistic servants in the families of Rajas & rich Hindus & they bear a good reputation for activity & fidelity.

भा०—इनका खास काम राजा महाराजा व प्रतिष्ठित गृहस्थिय के यहां घरेलू कामों की नौकरी करना है और ये लोग अपने काम में तेज और स्वामी भक्ति के लिये प्रसिद्ध हैं, इनमें भक्त लोग भी होते हैं जो मादक द्रव्यों से व अभक्ष्य भक्षण से दूर रहते हैं। इनकी लोक संख्या यू० पी० में ३६६५३ है। ये लोग सबसे अधिक गोरखपुर के जिले में १६५८ हैं।

८—खावर:—यह कहारों का आठवां भेद है इसके विवर्ण का पता नहीं लगा। युक्तप्रदेश में इनकी संख्या ३३०२२ है।

९—माहर:—यह कहार जाति का नवां भेद है 'महाउर' नाम के एक क्षत्रिय राजा हुए हैं जिनका वंश महावर कहाते कहाते माहर व महरा कहाने लगा यह नाम राजपूताना में भी प्रचलित है। इनकी संख्या भारत के एक यू० पी० में १२१०८७ है।

महरा का दूसरा नाम देश भेद के कारण "मेरा" भी है यह कहारों की एक जाति है। एक समय बादशाह शाहबुद्दीन-गौरी का पेट दुखा तो सहज में आराम न हुआ उस समय बहुत से क्षत्रिय जो शाहबुद्दीन की कैद में थे उनमें एक बुद्धिमान क्षत्रिय वैद्यक जानने वाला था उसने बतलाया कि "बादशाह

साहब को बिजोरा खिलाओ" तदनुसार बिजोरा से बादशाह को आराम मालूम हुआ तब बादशाह सलामत ने प्रसन्न होकर उस क्षत्रिय को बुलाकर कहा 'तुम क्या चाहते हो ?' वह बोला हुजूर मेरी जाति के मनुष्य कैद में से छोड़ दिये जायें यह बादशाह ने स्वीकार किया और हुकुम दिया कि "जिस २ को यह अपना बतलावे वे सब छोड़ दिये जाय" तब उसने जेलखाने में जाकर जिनको कहा कि यह मेरा, यह मेरा वे वे सब छोड़दिये गये तबसे मेरे व महरे कहाये। इनकी सन्तति बढ़ने के कारण ये लोग देश देशान्तर में फैलगये और महरा व मेरा की एक जाति अलग बनगई पश्चिमोत्तर प्रान्त में ये लोग बहुत हैं ये जाति पालकी व पिंजस उठाने तथा पत्थर घढ़ने व छत बनाने का भी काम करते हैं तथा मारवाड़ में ये लोग कुछ राज के रसोड़ों में भी काम करते हैं जहां ये लोग मांस व मांस के बने पदार्थ तय्यार करते हैं इसको रजवाड़े में "मेरों की तयारी" कहते हैं।

इसही महरा शब्द से अंग्रेजी के ज्ञाताओं ने बहरा कहना आरम्भ कर दिया जो कि अंग्रेजी शब्द Bearer से बिगड़कर हिन्दी भाषा में महरा के स्थान में बहरा होगया जो कि एक कहार जाति का भेद है।

भोइ भी कहार जाति का एक पर्य्यायवाची शब्द है इस भोइ को अंग्रेजीदां लोग अंग्रेजी भाषा में Boy करलिया। यह अंग्रेजी Boy शब्द तैलंग व मलायाम भाषा से बना है क्योंकि तैलंग भाषा में बोवि का अर्थ लड़का Boy है और मलायाम में Boy को बोयि कहते हैं अतएव प्राकृत भाषा का हमारा भोइ शब्द Boy शब्द का अर्थ बोधक है।

१०—मल्लाह:—विद्वानों ने कहार जाति का

दसवां भेद (केवट) लिखा है पर हमने केवट व मल्लाह जाति इस ग्रन्थ में अलग लिखी है तहां देख लेना।

११-रैकवार:—यह कहारों का ११ वां भेद है, यह भेद क्षत्रिय जाति की सूची में लिखा मिला है इसलिये यह लोग किसी समय क्षत्रिय थे ऐसा प्रतीति होता है इनकी आजकल की स्थिति साधारण है विद्या का इनमें विशेष अभाव है अतएव इनमें कुरीतियों का भी समावेश होगया है इनकी विशेष जन-संख्या हमीरपुर, बांदा, झांसी और ललितपुर आदि जिलों में हैं युक्तप्रदेश में इनकी जन-संख्या २९२३८ है।

१२-रवानी:—यह कहारों का १२ वां भेद है युक्तप्रदेश में इनकी लोक संख्या थोड़ी सी याने ६६७३ है ये लोग यू० पी० के मिर्जापुर और गाजीपुर के जिले में बहुत हैं, ये लोग विशेषरूप से बंगाल बिहार में हैं।

यह कहारों का बारहवां भेद है यह लोग चन्द्रवंशी याने जरासंध वंशी क्षत्रिय थे परन्तु विपत्तिवश छोटे छोटे धन्दों में प्रवृत्त होने से कुछ के कुछ समझे जानेलगे। इनको जाति स्थिति व जाति पद उत्तमहै। इनके विषय में ऐसा लेख मिलता है कि:-

Kahars claimed descent from Jarasindh king of Magadh, and tell an abscured story to count for their name,

Bhagwan it is said, had a beautiful garden on the Giriyak Hill near Rajgir, in Gaya which in a year unusual drought was nearly destroyed. He there fore promised to grant the hand of his daughter and half his kingdom to any one who should water in a

single night. Chandrawat the chief of kahars undertook the task. He built the long embankment called the Asurbandh to bring the water of the Bawanganga to the foot of the hill, and from the reservior thus formed his tribes man watered the Garden with a series of serving lifts (choure). When Bhagwan Saw the work has done he repented of his promise to give his daughter to a man of low degree and cunsed the cock to crow before down, at the same time taunting the kahars with having failed in their under taking. Deceived by this ruse & fearing the Bhagwan would slay them for attempting to win his daughter for their chief, the kahar fled in haste, and when morning broke, not a man was there to claim fulfilment of the promise. Their flight was so hurried that they carried with them the implements used for watering the garden. Those who took the bomboos were called kahars & those who took the ropes were called Maghia Brahman.

अर्थः—कहार अपने को मगध नरेश राजा जरासंध के वंशज होने का दावा करते हैं और कहार कहे जाने के विषय में एक असम्भविक कथा वर्णन करते हैं अर्थात् गयाजी के जिले में राजगृह के निकट गिर्यक पर्वत पर भगवान (मगधदेश का राजा) की एक सुन्दर वाटिका थी जो एक साल अनावृष्टि के कारण नष्ट होगयी थी इसलिये उसने यह प्रतिज्ञा कियी कि जो कोई एक रात में इस वाटिका को गंगाजल से भर देगा उसको यह अपनी कन्या और आधा राज देगा। चन्द्रावत जो

कहारों का मुखिया था उसने इस कार्य्य को पूरा करनेका भार अपने ऊपर लिया, बावनगंगा का जल पर्वत के नीचे तक लाने के लिये उसने एक बड़ा भारी बांध जिसका कि नाम "असुर-बध" था बनाया† इस प्रकार यह एक बड़ा तलाब बनाकर उसकी जाति के लोगों ने जलचौरी द्वारा बानगंगा का जल बाटिका में भर दिया, जब भगवान ने देखा कि कार्य्य पूर्ण हो गया तब अपनी प्रतिज्ञा पर पछताने लगे कि अपनी कन्या नीच श्रेणी के मनुष्य को देना अनुचित है इसलिये भगवान (जरासिंध) ने कृत्रिम मुर्गे से बांग दिवायी और उधर उन कहारों को कार्य्य पूरा न कर सकने की धमकी दी इस धोके में वे डर गये कि भगवान कदाचित मरवा न डालें क्योंकि उन्होंने राज कन्या की प्राप्ति के लिये व्यर्थ प्रयत्न किया इससे डरकर वे सबके सब भागगये और एक भी वहां नहीं रहा और जिसके हाथ में जो सामान था ले भगे अतएव जो बांसों को लेकर भगे थे वे कहार कहाये और जो रस्सी लेकर भगे थे वे मगहिया ब्राह्मण कहाये।

इस कथा को अनेकों विद्वानों ने लिखी है यथाः—

१—मिस्टर विलियम कूक बी० ए० कलक्टर फयजाबाद

२—मेजर जनरल कनिंघाम, आर्चिलाजीकल सर्वे आफ इन्डिया

तथा मिस्टर बकलर ने Antiquiry of Bengal Journal of Royal Asiatic Society.

ऊपर जो कुछ कहा जाचुका है उसके सम्बन्ध में किसी विद्वान् ने यह विवेचन नहीं किया कि रवानी व रमाणी नाम कैसे पड़ा ? इसके विषय में शास्त्रों में 'रमणहार' क्षत्रियों का विवर्ण मिलता है जो जरासंध वंशी थे ये लोग परशुराम जी के

†यह अभी तक विद्यमान हैं जिसे देखना हो गयाजी जाकर देख आवें।

भय से राज्य-बिलासिता को हार चुके थे अर्थात् 'रमण' का अर्थ राज्यसुख भोग तथा 'हार' का अर्थ हारना, अलग रहना आदि होता है अतएव रमण + हार = रमणहार ऐसा रूप हुआ। यह ही रमणहार शब्द 'परसा, परसी और परशुराम' की लोकोक्ति के अनुसार 'रमणी' कहे जाने लगे और फिर यह ही 'रमणी' शब्द रमाणी व रवानी लोक में प्रसिद्ध हुआ।

इस जाति के पास प्रभुत्वता कुछ रही नहीं और ये लोग मुख मलीन दीन हीन निराश्रय होजाने के कारण मुसल्मानी अत्याचार के समय अति पीड़ित हुये उस समय इनके पास बादशाही फौजों में दासता करने के अतिरिक्त कोई दूसरा उपाय नहीं था इसलिये लोग भी इन्हें व ये भी अपने को कहारों का ही एक भेद समझने व मानने लगे तदनुसार ही विद्वानों ने इन्हें भी कहारों का ही एक भेद लिख मारा है अन्यथा यथार्थ में ये कहार नहीं हैं।

कहारों में विशेषांश क्षत्रियों का ही है पर उनमें कई अन्य जातियों का भी संसर्ग है।

रवानी जाति का गोत्र रमणक ऋषि है वेद यजुर्वेद शाखा माध्यन्दिनी और प्रवर त्रिप्रवर है इन्हें द्विजत्व के अनुसार कर्म करने का अधिकार है। शेष फिर कभी।

१३-सिंघाड़िया:—यह कहार जाति का तेरहवां भेद है यह नाम सिंघाड़े की खेती करने से पड़ गया है हिन्दू जाति में व्रत व उपवासादि में सिंघाड़ों की बड़ी महिमा है अतएव पवित्र वस्तु के व्यवसायी भी पवित्र ही समझे जाते हैं, इस जाति में भगत लोग विशेष हैं, युक्त प्रदेश में इनकी लोक संख्या ३१५७ है।

१४-तुरही:—कहारों के इस भेद के सम्बन्ध में विशेष सम्मतियें क्षत्रियत्व बोधक मिली हैं, इस भेद का आदि पुरुष मच्छुरनाथ व मत्स्येन्द्रनाथ था और इनकी माता का नाम तुल्सी था, ऐसा आगरे वालों के सम्बन्ध में एक सिविलियन अफसर ने भी लिखा है, अन्वेषण से पता चलता है कि यह शब्द तोमर से बिगड़कर बना है अर्थात् तोमर से 'तमराहा' भी कहेजाने लगे और तमराहा से तुरही कहाने लगे, इसके गोत्र इमलिया, अटेलिया, मुंडेरिया, धाड़िया और उमरोनिया।

इनकी युक्तप्रदेश में जन संख्या १०७०७५ है, युक्तप्रदेश के अन्य जिलों की अपेक्षा अकेले एक मुरादाबाद के जिले में बे लोग २४७५९ हैं और बदायूं के जिले में १६५५५ हैं और एटा में १४२६३ हैं।

मा० की जातियों के इतिहास में क्षत्रिय कहारों की खांपें ये हैं:—

१ चौहान	७ साहलोत	१३ अमेराजोत
२ दहिया	८ पावेचा	१४ खेवर
३ हाड़ा	९ मादरेचा	१५ भोर
४ खीची	१० सरखेला	१६ बागड़ेचा
५ देवड़ा	११ सांचोरा	१७ मोयल
६ सोनगरा	१२ पूरबिया	१८ चाहल
१९ चत्ता	२० चाबा	२१ निर्वाण

२२ मोपल और २३ क्यामखानी।

इन खांपों से विदित होता है कि यह जाति क्षत्रियवंश है क्योंकि बिपत्तिवश मुसलमानों के अत्याचार से सताये जाकर कदाचित इन्होंने अपने को कहार महरों में मिला दिया होगा।

इन खांपों में क्यामखानी मुसलमान हैं बाकी सम्पूर्ण शैवी

तथा शाक्तिक भी हैं दारू मांस खाते हैं इनकी स्त्रियें अन्य मज-दूरियें भी करती हैं।

राजपूताने में इस जाति को जब तक राज से हाथी दांत का चूड़ा पहिनने का अधिकार न मिले तबतक इनकी स्त्रियें हाथी दांत का चूड़ा नहीं पहिन सकती हैं और ऐसा अधिकार प्राप्त करलेना मानों एक प्रतिष्ठा है जिस प्रकार से सेठानियों के लिये पैर में सोना पहिनना एक बड़ी प्रतिष्ठा का चिन्ह है वैसेही इस जाति के लिये हाथी दांत का चूड़ा है। इस प्रतिष्ठित प्राचीन लेख से प्रमाणित होता है कि कहार जाति निःसन्देहरूप से क्षत्रिय वर्ण में हैं।

राजपूताने में कहारों के तीन मुख्य भेद ये हैं।

१ पूरविये २ ढूंढाड़े और मारवाड़ी

इन तीनों में परस्पर शादी व्यवहार होते हैं पर कोई छोटी मोटी बातों में तनिक सा भेद भी है यथाः—

पूरविये और ढूंढाड़े कहार तो झूंठे बर्तन मांज लेते हैं और धोती भी धोते हैं परन्तु घोड़े की सईसी नहीं करते इसके विरुद्ध मारवाड़ी ऐसा करते भी हैं और नहीं भी करते हैं परन्तु मछली आदि नहीं पकड़ते।

पूर्व के कहारों का एक भेद 'भोई' भी है ये लोग पालकी उठाने में बड़े प्रवीण व बहादुर समझे जाते हैं ये लोग पालकी पीनस तो उठा लेते हैं पर नाज उठाना बुरा समझते हैं मारवाड़ी महरों की स्त्रियें हाथी दांत का चूड़ा पहिनती हैं परन्तु पूरबिये व ढूंढाड़ो की नहीं पहिनती।

पूरविये कहार महरा तथा मारवाड़ी कहार मेरा कहाते हैं। सन् १६०१ की मनुष्यगणना के अनुसार युक्त प्रदेश में कहारों की संख्या १२३७८८१ है जिसमें पुरुष ६३४१२१ और स्त्रियें ६०३७६० हैं।

आर्य्य समाजी कुल कहार ४९९ हैं जिसमें पुरुष २७३ और और स्त्रियें २२६ हैं।

मारवाड़ में कुल कहार ३०९५ हैं जिसमें पुरुष १७६० और स्त्रियें १३३१ हैं।

कहारों के अधिकार सम्बन्ध में ऐसे बचन मिलते हैं कि:-

शूद्र कन्या समुत्पन्नो ब्राह्मणेनतु संस्कृतः।
संस्कृतस्तु भवेद्दासो ह्यसंस्कारैस्तु नापितः॥

प॰ धर्मशा॰ ११-२३

इस धर्मशास्त्र की आज्ञानुसार कहार जाति वह जाति है जो ब्राह्मणों द्वारा संस्कार युक्त थी अतएव सिद्ध होता है कि कहार जाति को १६ संस्कार कर सकने का अधिकार है और इसलिये यह जाति द्विज संज्ञक है।

देश भेद व इनके कामों के कारण इनकी जाति स्थिति व जातिपद सर्वत्र एकसा नहीं हैं कहीं उत्तम, कहीं उत्तमतम और कही निकृष्ट तथा कहीं निकृष्टतम समझा जाता है, इस जाति के हाथ का प्राचीन काल में जलभी नहीं पीया जाता था परन्तु जैसा हम कैवर्त प्रकरण में पुराणों की आख्यायिका लिख आये हैं तदनुसार महाराज बल्लालसैन ने इस जाति का स्पर्श-दोष दूर करके इसको पवित्र किया और श्रीरामचन्द्रजी महाराज ने अपने चरणारविन्द छुवाकर इस जाति को स्वर्गधाम में पहुंचा दिया तबसे भारतवर्ष की उत्तमोत्तम कोटि की उच्च जातियों ने इनके साथ स्पर्श ही नहीं किया वरन् इनके हाथ का जल व पक्की रसोई ग्रहण करने की पृथा सर्वत्र देश व्यापी होगयी अतएव निष्पक्ष भाव से विचार करने से यह जाति पवित्र जाति मानी जानी चाहिये।

इस जाति की उच्चता विषय तो इतना कहना ही पर्याप्त है कि कान्यकुब्ज ब्राह्मण तक इनके हाथ का जल पीते व रसोई का आटा तक गुँदवा लेते हैं।

धन्दा

इस जाति के धन्दे की स्थिति सर्वत्र एकसी नहीं है किन्तु कहीं कहीं तो ये लोग डोली व पालकी उठाते हैं, कहीं सिंघाड़ा, खरबूजा और तरबूज तथा ककड़ी की खेती करते हैं, कहीं नाव चलाते हैं और मल्लाह कहाते हैं, कहीं मच्छी पकड़कर बेचते हैं, कहीं उच्च घरों में चौका बर्त्तन व पानी भरने आदि का काम करते हैं, कहीं बँगी उठाते हैं, कहीं हलवाईगीरी करते हैं, कहीं गृहस्थियों के यहां बाहिर भीतर के कामों के लिये नौकरी करते हैं, कहीं चपड़ासी गिरी व कहीं बाबूगीरी भी करते हैं तात्पर्य यह कि कहीं कुछ और कहीं कुछ करते रहते हैं हमने कानपुर आदि अनेकों शहरों में देखा है कि यह जाति अपने २ घरों पर भी बड़ी पवित्रता से रहती है टट्टी जाकर स्नान करती है अपनी धोती आदि हरेक किसी से नहीं छुआती है ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यों के अतिरिक्त किसी की कच्ची रसोई नहीं जीमते हैं।

दक्षिण में इस जाति की स्थिति अच्छी नहीं मानी जाती है वहां की प्रथा के अनुकूल मिष्टर स्टील अपनी पुस्तक के पृष्ठ ११२ में इस जाति को शूद्रों से नीचे लिखी है।

इस जाति की लोक संख्या सहारनपुर, मुजफ्फ़रनगर, मेरठ, बदायूं, बस्ती आज़मगढ़ और गोंडा आदि जिलों में अनुमान ५० हजार के है और युक्त प्रदेश के सम्पूर्ण जिलों से अधिक गोरखपुर के जिले में है जहां अनुमान ७५ हजार लोक संख्या है।

जिलेवार भेद

मिर्जापुरः—१ तुराह २ बथवा ३ धुरिया ४ धीमर ५ रवानी व रमानी ६ खारवार व खारवाड़ा ७ जैसवार, मल्लाह व रैकवार राजपूतों के उपभेद हैं।

बिजनौरः—धनोर कहार हैं इनके ५ उपभेदः—

१ नराई २ पछाये ३ गोले ४ खागी और ५ धनोर।

झांसी के जिले में रैकवार, बथमा, धुरिया, गुड़िया, गोरिया, मल्लाह और तुराई, इनके गोत्र इमिलिया, अटेरिया, मुंडेरिया, दहाड़िया और दमरौनिया।

ललितपुर के जिले में गुड़िया, धुरिया, मलावी और गोठिया वा गोतिया।

बरेली के जिले में तुरई व तुरैया, बथमा, गोड़िया वा गुड़िया, धुरिया, थानेसरा, महावर, बोत, कीर, खद्वाड़ा और चांदेड़।

देहरादून के जिले में जालिया आदि आदि।

सहारनपुर के जिले में देसवाली, धानचक, गुड़वाल और मखनपुरिया व मकनपुरिया।

बुलन्दशहर के जिले में बल्लाई, चौहाण, गहलौत, मकनपुरिया, नोईवान, रोनीडा, सरमोढना और तोमर इनमें चौहाण गहलोत और तोमर ये तो प्रत्यक्ष रूप से ही राजपूत हैं परन्तु देश में अशान्ति के समय कहारों में मिलकर अपनी जीव रक्षा कियी थी।

अलीगढ़ के जिले में भीरगुडी और रावत

आगरे के जिले में मथुरिया।

फरुक्खाबाद के जिले में भरसिया आदि।

मैनपुरी के जिले में खागी, मथुरिया, मटियाबाड़ और पछारे
बरेली के जिले में बोडले और खागी आदि
मुरादाबाद के जिले में खागी, पछारे आदि
शाहजहांपुर के जिले में सनौटिया आदि
कानपुर के जिले में निखाद व निषाद आदि
झांसी के जिले में जुड़िया और खरे आदि
ललितपुर के जिले में कछवाहा आदि
बनारस के जिले में कन्नौजिया आदि
जौनपुर के जिले में पँवार और सकत आदि
गाजीपुर के जिले में हरदीहा आदि
बस्ती जिले में दखिनाहा और सरोरिहा आदि
आज़मगढ़ के जिले में गोंड व कन्नौजिया आदि
लखनेउ के जिले में भोन्ड, निखाद व निषाद आदि

रायबरेली के जिले में भोन्ड, दीन, वटवाड़िया, जेठवंत, निखाद, रौतिया आदि

हरदोई के जिले में गुरुनाथ और जेठवंत

बहराइच के जिले में जेठवंत खारमोढ़ा, लूनिया, मेढ़, निखाद और तुरकिया आदि

सुलतानपुर के जिले में दतिया व दूतिया, लखौना, निखाद और परकौता आदि

पर्ताबगढ़ के जिले में पासी केवट आदि आदि

बाराहबंकी में भौउ, खारमोना, मोढ़, नाथू और निखाद आदि ।

युक्तप्रदेश में कहारों की लोक संख्या.

(सन १८९१ के अनुसार)

नाम जिला	हिन्दूकहार	नौमुस्लिमकहार	जोड़
देहरादून	३५६८	८	३५७६
सहारनपुर	४५४४२	०	४५४४२
मुज़फ्फ़र नगर	४६९५६	३७	४६९९३
मेरठ	४२९६१	०	४२९६१
बुलन्दशहर	१८२७२	४	१८२७६
अलीगढ़	२६२१२	०	२६२१२
मथुरा	५५२८	०	५५२८
आगरा	१०१४३	०	१०१४३
फरुख़ाबाद	२९३५१	०	२९३५१
मैनपुरी	२३५२१	०	२३५२१
इटावा	१६०६९	०	१६०६९
एटा	२१३७९	०	२१३७९
बरेली	५१७२२	०	५१७२२
बिजनौर	१७४४७	२८४१	२०२८८
बदायूं	४०१९९	०	४०१९९
मुरादाबाद	३३९१७	६०१	३४५१८
शाहजहांपुर	४००४४	०	४००४४
पीलीभीत	१६३३४	०	१६३३४
कानपुर	२०८२२	०	२०८२२
फतेपुर	३८७४	०	३८०४
बांदा	११४०८	०	११४०८
हमीरपुर	११६२०	०	११६२०
इलाहाबाद	७१६०९	७५	१७६८४
झांसी	१०७३४	०	१०७३४
जालोन	३७२२	०	३७२२
ललितपुर	६८६६	०	६८६६
बनारस	१४४२१	१००	१५५२१

युक्तप्रदेश में कहारोंकी लोकसंख्या ई० सन् १८९१

नाम जिला	हिन्दू कहार	नौमुस्लिमकहार	जोड़
मिर्जापुर	२००९०	०	२००९०
जौनपुर	२७१४४	३७८	२७५५२
गाजीपुर	२१८८०	०	२१८८०
बलिया	२१२२६	०	२१२२६
गोरखपुर	७२५१७	५	७२५२२
बस्ती	४६३२५	७०५	४७०३०
आजमगढ़	४१०१२	३५८	४१३७०
गढ़वाल	२०९५	०	२०९५
तराई	५४७३	४१४	५८८७
लखनऊ	१७६७५	५१८	१८१९३
उन्नाव	११७०३	०	११७०३
रायबरेला	११८८८	२२	११९१०
सीतापुर	३३०३६	४६	३३०८२
हरदोई	२८८०१	०	२८८०१
खेड़ी	३४४७७	०	३४४७७
फैजाबाद	३७३७२	२८	३७४००
गोंडा	५५३८८	७२	५५४६०
बहराइच	४७७१७	१२१	४७८३८
सुलतानपुर	२८२१८	४६०	२८६७८
प्रतापगढ़	१०८६१	१२३	१०९८४
बाराबंकी	२२६७०	१०	२२६८०
जोड़—	११८४४५१	६९२८	११९१३७९

नोट.—जिन जिलों में १०० से कम की लोक संख्या थी उन्हें हमने छोड़ दिये हैं।

ईस्वी सन १९०१ के अनुसार युक्तप्रदेश में कहारों की लोक संख्या १२३७८८१ है।

राजपूताना प्रान्तगत जोधपुर राज्य इनकीसंख्या २०६५ है

युक्तप्रदेश में इन नौमुस्लिम कहारों के आचार विचार व रहन सहन के ढंग को देखने से निश्चय होता है कि इनमें कई रीतियें हिन्दुवानी हैं यदि देशहितैषी हिन्दू समुदाय इनकी स्थिती व सुधार का उद्योग करे तो देश को बड़ा लाभ हो।

इस ज्ञाति में दो एक मनुष्य बड़े चालाक व अपने नामों के आगे पीछे बड़े बड़े Titles पदवियें लगाये हुये इस भोली-भाली जाति को ठगते फिरते हैं क्योंकि इस जाति में विद्या का अभाव है अतएव वे चलते पुरजे लोग अपने को महात्मा, आचार्य व पंडित आदि आदि बतलाकर अपना उल्लू सीधा करते हैं उनसे सावधान रहने की आवश्यकता है।

१५—कीर:—यह एक हिन्दू कहारों की ही जाति का भेद है। ये लोग राजपूताना व मध्यप्रदेश में विशेष हैं जिस प्रकार कहारों में क्षत्रियत्व दर्शाता है तैसेही इस जाति में भी कई चिन्ह क्षत्रियत्व बोधक विद्यमान हैं। अजमेर मेरवाड़ा के नसीराबाद तथा जोधपुर राज्य के जैतारण, मारोढ नावां और बीलाड़ा के पर्गने में ये विशेष हैं।

ये पहिले राजपूत थे परन्तु जब बादशाही जुल्म बढ़े और बादशाह अलाउद्दीन खिलजी के समय जब राजपूत जबर्दस्ती मुसल्मान किये जाते थे और जो मुसल्मान न होते थे उनके मुंह में थूका जाता था, मैला भरवा दिया जाता था और यहही नहीं गोमांस तक उनके मुंह में ठूंस दिया जाता था तिसपर भी जो मुसल्मान होने को राजी न होते थे कतल कर दिये जाते थे ऐसी दशा में हजारों राजपूत कतल होगये और हजारों इधर उधर भागकर टोकरी, पंखे, चटाई, चौके आदि आदि बनाने लगे और खरबूजे, ककड़ी, सिंघाड़ा, तरबूज, मतीरे आदि आदि

की खेती करने लगे और इस प्रकार के धन्धों में प्रवृत होकर इस जाति ने अपने धर्म व प्राण रक्षा किथी थी।

इनमें कन्नोजिया, आक, सारकाग्गा, नमचोलिया, राठौर, सीसोदिया, चौहाण, भाटी और सोलंकी आदि आदि हैं जिनके होने से स्पष्टतया ये क्षत्रिय निश्चित होते हैं।

राजपूताने में इस जाति की लोक संख्या २१६४८ है उक्त जाति के ब्राह्मण लोग इनके यहां की मिश्राई करते देखे गये हैं। इनमें नौमुस्लिम ११७७ हैं इनकी व अन्य कहारों की खांपें एकसी मिलती हैं।

७ क्यामखानी:—यह लोग यथार्थमें पहिले चौहाण राजपूत थे। तंवरों के राज्य के पश्चात् जब इन चौहान राजपूतों के दौर दौरे दिल्ली आदि आदि स्थाना में हुए तब वीर शिरोमणि पृथिवीराज चौहान सरीखे सम्राट मुसल- मान बादशाहों की आंखों में खटकने लगे और इसही कारण से चौहानवंश व अन्य राजपूतगण लाखों की संख्या में ज़बरदस्ती मुसलमान कर लिये गये।

क्यामखानियों का आदि पुरुष मारवाड़ प्रदेशस्थ ददरेरे गांव के चौहान ठाकुर करमसिंह का बेटा मोटीराव था, उस समय दिल्ली के तख़्त पर तुगलक़ खानदान का राज्य था संवत् १४४० में बादशाह फीरोज़शाह तुगलक का एक उच्च पदस्थ ओहदेदार सैयद नीसिर था उसके कोई सन्तान नहीं थी, उसने मोटीराव को एक होनहार लड़का समझ कर उसके माता पिताओं पर दबाव डालकर उसको अपने पास रखलिया और

अन्त को उसे व उसके माता पिताओं को साम, दाम, दण्ड, भेद दिखाकर कुल सहित मुसलमान कर लिया और उसका नाम क्यामखां रखा और उसे बेटे के समान पाला। औहदेदार सैयद ने प्रसन्न होकर उसे बेटे की तरह पाला और उस पर कई तरह की महरबानी करके उसे हिसार में अपने माल का मालिक कर दिया। उसके सबब से चौहाण मोटेराव (क्यामखां) के दो भाई मुसलमान बनाये गये जिनके नाम जेनुद्दीन और जबरुद्दीन रक्खे गये जिनकी औलादें बढ़कर क्यामखानी हुए और जैनुद्दीन के वंश वाले जैनदानी और जबरुद्दीन के वंशवाले ज़बवानी कहलाये। इसके पश्चात् इन लोगों के ज़रिये से व उक्त प्रकार से नाना अत्याचार करके लाखों चौहान धीरे धीरे मुसलमान करलिये गये उपरोक्त तीनों प्रकार के चौहान मुसलमान एक क्यामखानी नाम से ही प्रसिद्ध हैं।

क्यामखां और उसके भाई बन्धु राजी से मुसलमान नहीं हुए थे। अतएव नाम मात्र के लिये उन्होंने मुसलमानी धर्म स्वीकार किया था। उनमें क्षत्रियत्त्व का खून संचार कर रहा था। अतएव उन्होंने सैयद निसिर से यह प्रतिज्ञा करली थी कि हम गौ का मांस और हर एक मुसलमान का झूंठा नहीं खांयगे इसही प्रतिज्ञा के अनुसार सैयद निसिर ने उनसे कह दिया था कि इस्लाम धर्म की बुनियाद खान पान पर नहीं है किन्तु कुरानशरीफ़ के उसूलों को मानने पर है तदनुसार यह क्यामखानी राजपूत लोग अपना आचार विचार हिन्दुओं का सा रखते हुए नाम मात्र के मुसलमान बने रहे। जब सैयद निसिर मर गया तब क्यामखाँ बादशाह के यहां एक बड़ा ओहदेदार हुवा और हिसार उसे जागीर में इस कारण से दी गई कि उसके जरिये से बहुत से चौहान राजपूत मुसलमान

बने। परन्तु क्यामखां एक सच्चा क्षत्रिय था अतएव भीतर ही भीतर अपनी जाति वालों को अन्य मुसलमानों से अलग रख कर अपनी तरफ़दारी में करता रहा। उस समय दिल्ली के तख्त पर बादशाह खिजिरखां का राज्य था। जो क्यामखां के संगठन से घबराकर मनही मन में बहुत डरा इसलिये उसने धोखे से क्यामखां को दिल्ली के किले पर चढ़ाकर उसे जमनाजी में ढकेलवा दिया, जिससे वह मर गया। क्यामखां के दो बेटे ताजखां व महम्मदखां थे उन्हें भी बादशाह ने नाम मात्र के मुसलमान समझकर हिसार से बाहर निकाल दिया जो जैसल-मेर और नागौर में आकर बसे हिसार को बादशाह ने अपने कब्जे में कर लिया। यह उपरोक्त विवेचन प्रसिद्ध ऐतिहासिज्ञों की सम्मति है। अर्थात् उन्होंने जैसा लिखा था वही आधार हमने भी लिया है पर एक विद्वान ने अपने ग्रन्थ रा० रि० में ऐसा भी लिखा है कि एक काइमसिंह राजपूत राजा था जो युद्ध में पराजित होजाने पर खिजिरखां द्वारा कैद किया गया जिसे बादशाह ने आज्ञा दिथी थी कि "या तो काइमसिंह अपने कुल सहित मुसल्मान होजावे नहीं तो सब कतल करदिये जावें" तब विवश प्राण-रक्षार्थ कायमसिंह कुल सहित मुसल्मान हो गया तबसे उस क्षत्रिय वंश का नाम कायमखानी मुसल्मान प्रसिद्ध हुवा कायमखानी शुद्ध शब्द आजकल क्यामखानी प्रसिद्ध हुवा, शेष प्रतिज्ञा सम्बन्धी विवर्ण उपरोक्त लेखानुसार जानना।

ताजखां और मोहम्मदखां मारवाड़ में आकर चुप नहीं बैठे रहे किन्तु अपनी जीत का बड़ा भारी संगठन किया और फिर इन्होंने हिसार पर चढ़ाई करदी! जहां जाकर इन दोनों ने फतेहपुर झूंजनूं में अपने राज्य का हेड कार्टर (प्रधानासन) स्थापित किया और नवाब कहलाने लगे।

संवत् १७८८ में इन दोनों स्थानों पर क्यामखां के वंशज कामयाबखां और रुहल्लाखां नवाब थे जिनसे शेखावत कछ-वाहों ने वे दोनों ठिकाने इनसे छीन लिये तबसे झूंझनू और फतेहपुर यह दोनों स्थान जैपुर रियासत में अबतक मौजूद हैं जहां दोनों ही जगह जैपुर राज्य की निजामतें (मजिस्ट्रेटी) हैं फतेहपुर की मजिस्ट्रेटी जयपुर राज्यान्तर्गत सीकर ठिकाने में है सीकर राज्य के शेखावाटी में क्यामखानी राजपूत बहुत हैं।

इन दोनों इलाकों से कामयाबखां और रुहल्लाखां भागकर जोधपुर रियासत में आ बसे और कामयाबखां फतेहपुर वाले के वंशज ठिकाने कुचामण में अबतक हैं। क्यामखानियों की बसती शेखाबाटी हांसी हिसार और नारनोल, रिवाड़ी में बहुत हैं। क्यामखां का तीसरा बेटा अखतयारखां जब बादशाही जुल्म कम होगया तब नारनोल में जा बसा था, हैदराबाद राज्य में भी क्यामखानी बहुत हैं जो वहां कई तरह की नौकरियें करते हैं जोधपुर राज्य के डीडवाना, मेड़ता, नागौर और जोधपुर, करोली आदि स्थानों में सब क्यामखानी राजपूत विशेषरूप से शेखावाटी से आये हुए हैं एक समय सीकर राज्य के कुछ क्यामखानी मुसलमान अचानक हमको यहां फुलेरे में मिले थे। जिनसे पूंछताछ करने पर हमको विश्वास हुवा कि यथार्थ में यह सच्चे क्षत्रिय हैं। परन्तु वे लोग हिन्दू जनता की ओर से दुख प्रगट करते थे कि हमारा व्यवहार आप आकर देख लेवें बिलकुल क्षत्रियों का सा ही है फिरभी हिन्दू जाति में हमारी पूछ पूछनेवाला व हमको अपनाने वाला कोई नहीं।

इनकी रीति भांति के सम्बन्ध में हमें पता लगा है व राज-पूताना के सरकारी रिपोर्ट व इतिहासों में लिखा है कि यह लोग अबतक भी नवाज़ रोज़े और कुरान से पूरे पूरे वाकिफ़

नहीं हैं। इनमें बहुतसी रीतियें व आचार विचार क्षत्रियों के से हैं जैसेः—

(१) यह लोग व्याह में तोरण बांधते हैं।

(२) निकाह के पीछे ब्राह्मण से फेरे भी करवाते हैं और भूरसी दक्षिणा की तरह मीरासी वगैरों को त्याग बांटते हैं।

(३) राजपूतों की तरह यह लोग गले में सोने के फूल और कानों में मुरकियां पहिनते हैं।

(४) परदेशी मुसलमान व और दूसरे मुसलमानों के साथ खाने पीने से परहेज करते हैं।

(५) मारवाड़ और सेखावाटी में कई जगह इनका और राजपूतों का एकहीं हुक्का है केवल भेद इतना है कि राजपूत लोग नै उतार कर हुक्का इनको दे देते हैं।

(६) कहीं कहीं एकही चूल्हे पर हिन्दू राजपूत और क्यामखानी राजपूत अपनी अपनी रोटी कर लेते हैं।

(७) शेखावत राजपूतों का इन क्यामखानी राजपूतों के साथ मेल जोल होने से वे सूअर नहीं खाते।

(८) क्यामखानी लोग गौ को माता मानते हैं और उसकी पूजा करते हैं।

(९) क्यामखानी मुसलमान राजपूतों का हिन्दू राजपूतों के साथ मेल जोल होने से बहुत से क्यामखानी मुसलमान मुसलमानी नहीं कराते।

(१०) क्यामखानी पुरुष अधिकतर धोतियें पहिनते हैं।

(११) क्यामखानी लोग अपनी अँगरखियों का परदा भी हिन्दू राजपूतों की तरह दाहिनी ओर रखते हैं।

(१२) राजपूतिनियों की तरह से इनके यहां की स्त्रियें घाघरा और हाथी दांत का चूड़ा पहनती हैं।

(१३) क्यामखानी लोग शीलसतमी और होली दिवाली का त्यौहार भी मानते हैं।

(१४) मुसलमानों की तरह यह मामू और चाचा की बेटी से व्याह नहीं करते।

(१५) यह लोग सूरत शकल बोलचाल और पोशाक में राजपूतों की तरह एकसे हैं।

क्यामखानी लोग सभी तरह का धन्धा राजपूतों की तरह करते हैं। अर्थात् खेती, नौकरी, चाकरी आदि आदि। यह सब अन्वेषण हमने जो लिखा है अपनी वर्ण व्यवस्था कमीशन के २५१ प्रश्नों के उत्तराधार पर तथा राजपूताना के प्रसिद्ध इतिहास व सरकारी रिपोर्टों के अनुसार ही यह सब कुछ लिखा है ऐसी दशा में भारतवासी हिन्दू समुदाय का कर्त्तव्य है कि इन शुद्धि के पीपासों को वैदिक धर्म का सन्मार्ग दिखला कर उदारता का परिचय देना चाहिये।

इनकी लोक संख्या राजपूताना में २८३४० हैं और अजमेर मेरवाड़ा में ५४२ है।

The proportion of Muhammadans in Jaipur is very small; but in Shekhawati there is a very numerous class termed Kaimkhanis, who were Originally Chohan Rajputs, but were converted to Islam. They are said to have formerly owned the tract of country now called Shekhawati. (R. G. Vol II P. 246)

भा०—यह राजपूताने के कमिश्नर साहब बहादुर की सम्मति है कि जयपुर में मुसलमानों की जन संख्या बहुत कम है परन्तु जयपुर राज्यान्तर्गत शेखावाटी में एक (नौमुसलिम) जाति है जिसे काइमखानी कहते हैं वे बहुत हैं जो आदि में

चौहाण राजपूत थे पर वे मुसल्मान कर लिये गये। पुनः—

The Kaimkhanis are a class of similar origin in the same neighbour hood.

भा०—यह एक सरकारी अफसर की सम्मति है कि जिस प्रकार कही हुयी खानज़ादा नौमुसलिम जाति है वह सन् १५२८ में पराजित होकर बाबर द्वारा मुसल्मान् बनायी गयी थी तैसीही दशा क्यामखानियों की जाननी चाहिये।

Some of the communities which went over to Islam from Hinduism in this part of the country still remain grouped under their tribal names, or are known by special denominations. Of these latter, the Kaimkhanis and Malkhanis may be mentioned but the Principal tribal group of converts is the meos.

भा०—यह मिस्टर लाट्रश साहब कमिश्नर के अन्वेषण का फल है कि कुछ हिन्दू जातियें जयपुर भरतपुर के आस पास मुसल्मान बनायीं गयीं वे काइमखानी और मलखानी हैं जो मुख्यतया मेव (राजपूतों) में से हैं।

ठाकुर काइमसिंह की सन्तान काइमखानी कहाये-मेव जादों वंशी क्षत्रिय हैं।

अतएव हिन्दू धर्माचार्य्यों का कर्त्तव्य है कि इन नौ-मुसलिम राजपूतों की शुद्धि शीघ्रतर होजानी चाहिये क्योंकि ये लोग अभीतक मुसल्मानों के से भ्रष्टाचार से बचे हुये हैं यहां तक कि अपना रहन खान पान भी राजपूतों का सा ही बनाये हुये हैं।

८ **कि**वस्तः—यह दक्षिण प्रान्तीय जाति है इसका काम नाव खेना व मछली पकड़ना है ये लोग अथाह जल में गोते लगाकर जीविका करते हैं द्विज लोग इनके हाथ का जल वहां कोई कोई लोग पीते हैं मिस्टर स्टील साहब ने इस जाति को शूद्रों से नीच व चांडाल से अच्छा माना है इनकी स्थिति व युक्तप्रदेश के केवट तथा बंगाल के कैवर्त आदि की स्थिती में पृथिवी आकाश का सा भेद है।

जिस तरह पश्चिमोत्तर प्रान्त में केवट नाम प्रसिद्ध है वैसेही बंगाल में कैवर्त नाम की प्रसिद्धी है अतएव पूर्व कथित आख्यायिकों व प्रमाणों के अनुसार यह जाति क्षत्रियवर्ण में है।

---

९ **कुम्हारः**—यहएक हिन्दू व नौमुसलिम दोनोंही तरहकी जाति है इसको संस्कृतमें "कुम्भकार" कहते हैं, कुम्भ = घड़ा, मटका और 'कार' = करनेवाला, बनानेवाला अर्थात् मिट्टी के वर्तन बनाने वाला ऐसा अर्थ होता है जिसे हिन्दी भाषा में कुम्हार कहते हैं।

हिन्दू शास्त्रों में जहां इनकी उत्पत्ति लिखी मिलती है तहांकी दशा जानकर हमें दुःख होता है अर्थात् पुराण स्मृतियें और पद्धतियों में इस जाति की उत्पत्ति परस्पर विरुद्ध लिखी मिलती है अतएव उसकी सत्यता में सन्देह होना भी स्वाभाविक

बात है, सम्भव है कि इसमें द्वेष-बुद्धि का समावेश हो अस्तु !
लिखा हैः—

वैश्यायां विप्रतश्चौर्यात् कुम्भकारः स उच्यते ।

अर्थात् वैश्य माता और ब्राह्मण पिता द्वारा जो सन्तान हुयी वह कुम्हार कहायी। धर्मशास्त्रों में ऐसे प्रमाण मिलते हैं कि ब्राह्मणादि लोग अपने से नीचे के वर्ण की स्त्रियों के साथ सम्बन्ध करते थे अतएव इस प्रमाण से इस जाति में द्विजत्व है ऐसा माना जा सकता है।

According to the Brahambh Vaivarta Puran they are born of a Vaishya woman by a Brahmin father. (C & T. 435)

यह लेख एक उच्च पदस्थ सरकारी अफसर का है इसका भाव व उपरोक्त श्लोक का भाव एकसा है।

Sir Monier William सर मानियर विलियम ने लिखा है कि 'They are the offspring of a Kshattriya woman by a Brahmin अर्थात् क्षत्रिय मा व ब्राह्मण पिता की सन्तान कुम्हार कहाते हैं।

उपरोक्त दोनों प्रमाणों में परस्पर विरुद्धता तो है पर फिर भी ये दोनों ही प्रमाण इस जाति के द्विजत्व बोधक अवश्य हैं। शेष प्रमाण परस्पर विरुद्ध होने से अमाननीय हैं।

परन्तु इस जाति की स्थिति व हिन्दू जातियों में इनका जातिपद उत्तम है क्योंकि जहां हिन्दू समुदाय इनके हाथ का जल व पकान ग्रहण करता है तहां इनके हाथ के मिट्टी के बने बर्तन भी सम्पूर्ण कामों में लिये जाते हैं जिस प्रकार सृष्टि के रचने से भगवान का नाम प्रजापति है तैसे ही मिट्टी के बर्तनों व खिलौने आदिकों की रचना करने के कारण विद्वानों ने

कुम्हारों के लिये 'प्रजापति' नाम बतलाया है अर्थात् मृतका के पात्रों द्वारा संसार का उपकार इन्हीं से होता है, वेद में तो लिखा है कि 'ओं कुलालेभ्यो नमो नमः' अर्थात् कुम्हारों का सत्कार करो, इसही वेद की आज्ञानुसार कुम्हारों का हिन्दूमात्र के प्रत्येक शुभ व अशुभ अवसर पर सत्कार किये जाने की पृथा रक्खी गयी थी उसने आजकल दूसरा रूप धारण करलिया है, जिस प्रकार विद्या के अभाव से सम्पूर्ण द्विजातियों में अनेकों कुरीतियें हैं उनका सुधार होना आवश्यक है। पुनः—

ओं चतुरः कुम्भांश्चतुर्धा ददामि क्षीरेण पूर्णा उदकेन दध्ना ॥ अ० ४। २४। ७ ॥

भावार्थः—इस ऋचा में कुम्हार के बनाये कुम्भ की महिमा का वर्णन है इससे कुम्भ के बनाने वाली जाति निकृष्ट नहीं कही जा सकती है ।

युक्तप्रदेश में कुम्हारों के दो भेद होते हैं बलधिया और गधैया। जो लोग अपने बैलों पर मिट्टी आदि बोझ लेजाते (ढोहते) थे वे बलधिया कहाये और जो गधों पर इधर उधर बोझा ढोहते थे वे गधैया कहाये। राजपूताना में भी इस जाति के दो मुख्य भेद हैं मटेड़े और खेतैड़े जो गधों पर मिट्टी लाकर मिट्टी के बर्तन बनाते हैं वे मटेड़े कुम्हार कहाते हैं और जो केवल खेती द्वारा अपना निर्वाह करते हैं वे खेतैड़ कुम्हार कहाते हैं।

राजपूताना में एक समुदाय ऐसा भी है जो किसी समय 'कुमार' कहाता था परन्तु ये कुमार कहाते कहाते विद्या के अभाव से कुम्हार कहे जाने लगे। 'कुमार' शब्द राजकुमार का वाचक है अर्थात् जो लोग क्षत्रिय वंशज थे वे कुमार कहे

जाते थे यह समुदाय विशेषरूप से नाना भांति की शिल्पकारी करता है जैसे चुनाई, उस्तागीरी, शिलावटी, फोटोग्राफ़ी, नकशानवीसी आदि आदि, इस जाति समुदाय की अलग पुस्तक 'राजकुमार वंश-निर्णय' छपकर एक रुपये में हमारे यहां मिलती है।

मुं० दे० प्र० ने अपने इतिहास में लिखा है कि सृष्टि के आदि में जब मनुष्यों के लिये मृतिका के पात्रों की आवश्यक्ता हुयी तब प्रजापति (ब्रह्मा) ने चार मनुष्यों को शिल्पशास्त्र की शिक्षा दियी और उन्होंने मिट्टी के बर्तन व सृष्टि के सम्पूर्ण पदार्थ मिट्टी द्वारा बनाना इन्हें सिखलाया सबसे प्रथम जिन चार मनुष्यों ने इस काम को किया उन्हीं चारों के नामों से कुम्हारों के चार भेद हुये अर्थात् १-जालंधरा, २-गोला, ३-हथोरिया और ४-माहार। जिसने जल पकड़ाया वह जलंधरा, जिसने चाक जो गोल होता है उसे बनाया वह गोला, जिसने चाक में हत्था लगाया वह हथोरिया कहाया और जिसने डोरे से बनते हुये बर्तन को काटा वह माहार कहाया इन चारों की सन्तान चार प्रकार के कुम्हार हुये।

प्रजापति के पुत्र दक्ष ने इन सबको सम्पूर्ण प्रकार के खिलौने बनाना सिखाया जिससे प्रसन्न होकर इन्हें प्रजापति कहा तबसे आजतक कुम्हार लोग "प्रजापति" कहे जारहे हैं जिससे यह जाति प्रसन्न होती है। कुम्हारों की उत्पत्ति के विषय में हमें कई तरह की आख्यायिकें व कहानियें भी मिलीं पर वे सन्तोषजनक न होने से हमें नहीं जँचीं अतएव उन सबको निरर्थक समझकर हमने छोड़ दियो हैं।

हमें अन्वेषण करते समय कई विद्वानों ने ऐसी निष्पक्ष सम्मति दियी है कि दक्ष प्रजापति के वंश का कुलनाम कुमार

है जैसे सनतकुमार आदि और यही कुमार संज्ञक वंश कुमार कहाते कहाते कुम्हार कहा जाने लगा।

कुम्हारों के ५ भेद और हैं:—

१–बांडा, २–मारू, ३–पूरबिया, ४–मोयला (नौ मुसलिम) और ५ जांवड़ा।

१–बांडा:—ये राजपूताने में गुजरात से आये हुये हैं ये लोग विवाह शादियों में स्त्री पुरुष नंगे होकर नाचते और कुराग गाते हैं जिससे ये "नागे" भी कहाते हैं और गुजराती भाषा में 'बांडा' बेशरम को कहते हैं, अतएव कुम्हारों का एक भेद बांडा हुवा। इनके उपभेद:—१ रणिया, २ कवाड़िया, ३ कालवाड़, ४ कुड़लवा, ५ गोड़ेला, ६ जलवाणिया, ७ जादव, ८ मनोरिया, ९ बराजणा और १० हटवा आदि।

२–मारू:—ये लोग मारवाड़ देश में विशेष और साधारणतया तो सर्वत्र हैं बर्तन बनाते हैं पर प्रतिष्ठित हैं इनमें ८४ उपभेदों के राजपूत भी शामिल हैं। जब राजा सिद्धराज जयसिंह बांडा कुम्हारों पर नाराज हुवा तब बुधला सोलंखी पर चारणों को धक्के देने के अपराध पर नाराज हुवा था तब राजा ने बुधला सोलंकी को भी अपने राज से निकाल दिया था तब उसके साथ चौरासी उपभेदों के राजपूत भी निकल कर चले गये और मारुवों में जा मिले और कुम्हार कहे जाने लगे। (देखो मा० से० रि० ६२३)

मुसलमानों से सताये जाने पर भी बहुत से राजपूत मारू कुम्हारों में मिलगये थे इनकी खांपें व उपभेद इस प्रकार से हैं।

उपभेद

१ अकलेचा २ गहलोत ३ ईहाणा ४ उठबोल ५ एलोदिया ६ कपूरपुरा ७ करसवाल ८ काछा ६ ओबकोबा १० ओस्तवाल ११ कसूंबीवाल १२ राठोड़ १३ कालवाल १४ किरोड़ीवाल १५ कुंड़लिया १६ सोलंकी १७ कुकड़वाल १८ कुचेरिया १६ खेड़ा २० गढ़वाल २१ गेंधर २२ गुजराती २३ मूगणया २४ लोहाना २५ गेदर २६ गोड़ेला २७ चौहाण २८ गोयल २६ गोरिया ३०-गोला ३१ परिहारिया ३२ घानारिया ३३ घोड़ावड़ ३४ घोड़ेला ३५ चांदूरा ३६ चारोड़ा ३७ चेंटी ३८ छापरवाल ३६ छापोला ४० जगन्नाथा ४१ जलंधरा ४२ जाघड़वाल ४३ परमार ४४ जालवाड़ा ४५ जौहाणा ४६ जालोरा ४७ बावलवाल ४८ जोजा-वरा ४६ टांक ५० डावी ५१ तिलाइचा ५२ भाटी ५३ तुनगरा कहगवां ५५ दादरवाल ५६ दुबलिइया ५७ देतेडिपार८ ५६ धनारिया ६० धारोला ६१ धूमा ६२ धूंवा ६३ नागा ६४-नागोरी ६५ नाडोला ६६ नादीवाल ६७ नानेचा ६८ नारणा ६६ नाराणियां ७० नींबीवाल ७१ पछेरीवाल ७२ पीपलोदिया ७३ पालड़ावाल ७४ पूला ७५ बतराणिया ७६ बला ७७ बाग-ड़िया ७८ परिहार ७६ बागरेचा ८० बागोरिया ८१ बाबदरा ८२ बावलेचा ८३ सिंगलोरा ८४ बेथेड़िया ८५ बोराबड़ा ८६-भड़कोलिया ८७ मंडेचा ८८ भलिकया ८६ भाटोदरी ६० भांख ६१ भीवाय ६२ भीवाना ६३ भूरवाल ६४ मंडोवरा ६५ महार ६६ मावर ६७ मारोठिया ६८ माल्खिया ६६ परमार १०० माल-वाल १०१ मूरवाल १०२ मूलेवा १०३ मेराणिया १०४ मेवाड़ा १०५ राजोरिया १०६ रांलिया १०७ रामणिया १०८ राहोरिया

१०६ रोटागण ११० राहोरिया १११ रेनवाल ११२ लेखा ११३-लोदरीवाला ११४ बड़वाल ११५ बड़सीवाच ११६ बड़वरा ११७ बराणना ११८ वागरी ११६ वागोरिया १२० वाघेरा १२१ वाढ़िया १२२ विदुधल १२३ विरांजणा १२४ बोवरिया १२५ सं-खवाया १२६ सवाल १२७ सहेचा १२८ साखलेचा १२६ साडी वाल १३० सारड़ीवाल १३१ सालेचा १३२ सिवांचा १३३ ही-काहा १३४ हेलकिया १३५ सीदड़ा १३६ सींपोटा १३७ सीहो-रिया १३८ सूकलीवाल १३६ सूजवाड़ेचा १४० हीरानिया १४१ सूजरिया १४२ सुनोरा १४३ सोखला १४४ हातोरिया १४५ हा-ड़वा १४६ होदकारिया।

३—पुरबिया:— ये कुम्हार बर्तन बनाते और घास लकड़ी बेचते हैं राजपूताने में पूरब से आये हुये हैं इनके उपभेद राज-पूताने में १ उचेणिया, २ पेणिया, ३ औडिया ४ कबिया ५ ख-टोड, ६ खटनावरिया, ७ गोडेला, ८ छकेणिया, ६ गजरवाल, १० जाड़वाल, ११ जोड़िया, १२ डीलवाड़ी, १३ तेवगरिया, १४ दिलवाड़ी, १५ पिगोरिया, १६ बटाणिया, १७ वरटिया, १८ बाजोलिया, १६ मठाणिया, २० मलड़िया, २१ मोरवाल, २२ राजोरिया, २३ रूप गुतिया, २४ लिलोया, २५ लोदवाल, २६ बनावड़िया, २७ सनावड़िया, २८ खिगरवाल, २६ हिडकिया।

४—मोयला:— राजपूताना प्रान्तर्गत मारवाड़ राज्य के जालोर, सांचार, सिवाना और मालाणी पर्गनों में विशेष हैं ये लोग पहिले सभी राजपूत थे, अब नौमुस्लिम राजपूत हैं ये बादशाही ज़ोर व ज़ुल्मों से पीड़ित होकर मुसलमान बने और निर्वाहार्थ कुम्हारों का धन्दा करने लगे तबसे इन्हें 'मुसल्ला' कुम्हार कहने लगे इसही मुसल्ले शब्द का बिगड़कर प्रचलित

मोयला होजाना सम्भव है इनके उपभेद १ मराड़िया,२ हसीना ३ मरिया ४ लोलर ५ कंडिया ६ जोखया ७ कड़या और ८ मईन आदि हैं, इनकी रीत भांति रहन सहन कुछ मुसल्मानी व कुछ हिन्दुवानी है।

५—जांगिड़ाः—इसको जांगड़ा भी कहते हैं ये राजपूतों से कुम्हार हुये हैं राजपूताना में कम व युक्तप्रदेश में विशेष हैं।

राजपूताना में कुम्हारों के दो भेद और भी हैं मेवाड़ा और जटिया, राजपूताने में जांगिड़ा भेद के खाती भी होते हैं।

मेवाड़ा मारू कुम्हारों की एक शाखा है ये लोग फैलते फैलते मेवाड़ में जा बसे थे फिर कुछकाल पश्चात् वहां ये लोग दूसरे स्थानों में जाकर मेवाड़ा नाम से प्रसिद्ध हुये।

राजपूताने में कुछ कुम्हार ऐसे हैं जो ऊंटों और बकरियों के बालों के बोरे और गद्दे बुनते हैं वे जटिया कहाते हैं इसके अतिरिक्त ये लोग चुनाई व खेती का काम भी करते हैं।

जटिया कुम्हारों के उपभेदः—एवड़िया, किरोड़ीवाल, घोडेला, छापरवाल, जालंधरा जिजरोदिया, टांक, ढूंढाड़ा, बेहरा, भौंवरिया, मटियां, मुवारा, लारूणा, लीवा, सारड़ीवाल और सिबोटा।

अन्वेषण करने से पता चलता है कि कई कई कारण विशेषों से कुम्हारों के अनेकों भेद और भी हैं यथाः—

१—कन्नौजियाः—कन्नौज से इनका निकास होकर दूर दूर फैलाव होने से कन्नौजिया कुम्हार कहाने लगे।

२—कूंजागरः—कुञ्जे (सुराही) बनाने वाले कुम्हार जो मुसल्मान करलिये गये थे। शास्त्र धारानुसार मिट्टी के बने बर्तन इनके हाथ के हिन्दुओं को नहीं लेने चाहिये हां इनके शुद्ध होकर हिन्दू हो जाने पर कुछ दोष नहीं।

३—माहोर व मथुरियाः—ब्रजभूमि से इनका निकास दूर दूर होजाने से ये वहां मथुरिया कहाये। ये महाउरु की सन्तान हैं।

४—सुरैयाः—युक्तप्रदेश के मिर्जापुर की ओर कुछ कुम्हार समुदाय सूर रखने वाले हैं उनका जाति पद नीचा है।

५—चुड़ियाः—इस भेद के कुम्हारों की स्त्रियें पीतल की चूड़ियों की जगह कांच की चूड़ियें पहिनती हैं।

६—अठरिहाः—इनके बर्तन आदि मुसल्मानों के से होते हैं।

७—हथेलियाँ:—यह चाक की हथेली से नाम पड़ा है।

८—कस्तोराः—इसको कासगर भी कहते हैं, यह लोग सुराही, प्याले, हुक्का आदि बनाया करते हैं।

९—चौहान राजपूतः—यह लोग भी कुम्हारों में मिल गये हैं और कुम्हारपने का धन्दा करने लग गये हैं। चौहानों पर विपत्ति के बादल टूटे थे उसही का यह फल है।

१०—परोडियाः—यह लोग मिट्टी के खिलौने बनाते हैं।

११—अग्रवालाः—राजा अग्र के वंशी जो कुम्हारों में मिल गये वे अग्रवाल प्रसिद्ध हुये।

१२—टिकुलियाः—यह लोग स्त्रियों के माथे में लगाने की टिकलियां बनाते हैं।

१३ बदलना १४ मेहरा १५ बहेलिया १६ बरेसरा ७ भरतद्वारी ८ देशी बिदानिया ९ चकरी २० दिल्लीवाल २ गौड़ २२ बखरी २३ पुन्डीर २४ कसौंधा २५ अयोध्यावासी २६ बेलखरिया २७ दखिनहा २८ सरवरिया २९ बिरहरिया ३० बहराइचिया ३१ दरियाबादी ३२ रामपुरिया।

हिन्दू जनता में यह जाति पवित्रता की दृष्टि से देखी जाती है इनके बनाये हुये मिट्टी के बर्तन छोटे से छोटे और ऊंचे से

ऊंचे सभी हिन्दू लोग काम में लेते हैं शीतला देवी के पुजारी भी यही होते हैं और देवी का पुजापा (चढ़ावा) भी यही लेते हैं। और सम्पूर्ण उच्च जातियों के यहां इनका आना जाना बिना रोक टोक के होता रहता है उच्च हिन्दू समुदाय इनके हाथ का जल व पकवान खाते रहते हैं। इसीलिये मिस्टर सी० ऐस० डबल्यू० सी कलक्टर ने लिखा है कि They are a quiet, respectable industrious people अर्थात् यह लोग सीधे साधे और प्रतिष्ठित परिश्रमी होते हैं।

लोक संख्या.

राजपूताने में सन् १८९१ में कुम्हारों की लोक संख्या ३०८८३९ थी वही सन् १९०१ में घटकर २६५३४३ रहगई अर्थात् दस वर्ष में ४३४९६ कुम्हार घटगये वह घटत ईसाई व मुसलमान होजाने से हुई क्योंकि इन दिनों में राजपूताने में हिन्दू धर्म प्रचार की बहुतही कुछ शिथिलता थी इसके पश्चात् राजपूताने में आर्य समाज द्वारा बहुत ही कुछ हिन्दूधर्म का प्रचार बढ़ा और सन् १९११ में कुम्हारों की लोक संख्या ३०६५४४ होगई अजमेर मेरवाड़े में सन् १८९१ में कुम्हारों की लोक संख्या १६७३२ थी इस जाति में विद्या का अधिक अभाव है अतएव सन् १९०१ तक के १० वर्ष में यह लोग ईसाई और मुसलमानों के फंदे में फंसजाने के कारण घटकर ११२६७ रहगये फिर १० वर्ष के पश्चात् सन् १९११ में १४१२० होगये इस बढ़ोतरी का कारण भी केवल आर्यसमाज का प्रचार है। इनमें हजारों ही नौमुसलिम भी हैं।

जोधपुर राज्य में हिन्दू कुम्हारों की संख्या २६४१९ है और नौमुसलिम कुम्हारों की लोक संख्या ५४०७ है हिन्दू और मुसलमान कुम्हार मिलकर जोधपुर राज्य में सब ३१८२६ हैं।

यू॰ पी॰ के कुम्हारों की लोक संख्या।

नाम जिला	हिन्दू कुम्हार	नौ मुसलिम	जोड़
देहरादून	१३२४	०	१३२४
सहारनपुर	१४५०९	९३६	१५४४५
मुज़फ्फ़र नगर	१३८९२	११४८	१५०४०
मैरठ	२६६१७	११११	२७७२८
बुलन्दशहर	१६२८७	५९१	१६८७८
अलीगढ़	१६४७७	४२	१६५१९
मथुरा	१०८०१	५	१०८०६
आगरा	१६१३८	०	१६१३८
फ़रुखाबाद	८०३३	०	८०३३
मैनपुरी	१०४५१	१८	१०४६९
इटावा	१०८८७	१२१	११००८
एटा	१०४८९	३७	१०५२६
बरेली	१०५७६	५७	१०६३३
बिजनौर	११६२०	२५५०	१४१७०
बदायूं	११४२७	४०	११४६७
मुरादाबाद	२३२०६	४६७	२३६७३
शाहजहांपुर	९९८२	१	९९८३
पीलीभीत	५४६७	११५	५५८२
कानपुर	१५०७३	०	१५०७३
फतेपुर	९९७२	५०	१००२२
बांदा	१९०९७	०	१९०९७
हमीरपुर	१६४८१	०	१६४८१
इलाहाबाद	२५९२५	११७	२६०४२
झांसी	६८१०	०	६८१०
जालौन	८२१३	०	८२१३
तराई	२८०९	२५४	२०६३
लखनऊ	७९८५	६५५	८६४०

यू० पी० के कुम्हारों की लोक संख्या।

नाम जिला	हिन्दू कुम्हार	नौ मु० कुम्हार	जोड़
रायबरेली	१३०६५	३३०	१३३९५
सीतापुर	६७८८	१०४	६८९२
गोंडा	१७८२७	२४४	१८०७१
बहराइच	१०५५३	२३८	१०७९१
सुलतानपुर	१७४९२	१३८	१७६३०
बाराबंकी	११०१०	५०५	११५१५
फैजाबाद	२२८८९	९७	२२९८६
गोरखपुर	५६२७१	७६	५६३४७
जोड़ः—	७०२८०५	१०१८९	७१२९९४

नोटः—जिन जिलों में ५० से कम नौ मुस्लिम थे उन जिलों की लोक संख्या हमनेछोड़ दी है।

पाठक! भारतवर्ष के एक युक्तप्रदेश में १०१८९ मुसलमान कुम्हार हैं जो राजपूत कुम्हारों से जबर्दस्ती मुसलमान बनाये गये हैं।

हमने यू० पी० व राजपूताने में भ्रमण करके देखा है कि इन नौ मुस्लिम और हिन्दू कुम्हारों में केवल नाम मात्र का भेद है यहां तक कि इनमें से हजारों मनुष्य हिंसा के बड़े विरोधी हैं और गोरक्षक हैं अतएव शुद्ध करने योग्य हैं।

केवट कैवर्ति मल्लाह यह जाति युक्तप्रदेश, बंगाल और दक्षिण आदि भारतवर्ष के सम्पूर्ण भागों में है केवल राजपूताना में इस जाति की न्यूनता है, तहां इनका नाम कहार व कीर है।

संस्कृत, अंग्रेजी व फारसी भाषाओं के इतिहास रचयताओं की भिन्न २ सम्मतियें जान पड़ती हैं, कैव त शुद्ध शब्द से भाषा में कैवर्त, कैबर्त कहा जाने लगा। एक ग्रन्थकार इस जाति को पेशे के कारण, केवट, कैवर्त, धीमर, धीवर, कहार, महरा और मल्लाह आदि जातियों को मिली जुली सी एकही बतलाते हैं। दूसरा विद्वान केवट व कैवर्त को अलग लिखते हैं। तीसरा विद्वान गुड़िया आदि जातियों को इनमें सम्मिलित बतलाता हुआ कहार व कीर आदिकों को एकही बतलाता है, कोई विद्वान इन सबको एक और कोई अलग २ बतलाते हैं परन्तु हमारी समझ में यह सब नहीं आया, हाँ देश भेद के कारण कहीं २ ये सब जातियें एकसाही धन्दा करने लग गयीं जिसका फल यह हुआ कि परस्पर के छोटे २ अन्तरों को छोड़कर इनके नाम देश-भाषानुकूल भिन्न २ होजाना सम्भव है जैसे दक्षिण में इस जाति का नाम "किवस्त" है तो पश्चिमोत्तर प्रान्तमें ये लोग केवट कहाते हैं इसही तरह बंगाल प्रान्त में यह जाति कैवर्त कहाती है तैसेही कैवर्त का सा धन्दा राजपूताने में कहार व कीर जाति भी करती है इसही तरह युक्तप्रदेश के कुछ जिलों में यह जाति "मल्लाह" के नाम से प्रसिद्ध है।

जाति अन्वेषण करने वाले विद्वानों ने व सिविलियन अफ़सरों ने इस जाति के पर्य्यायवाची शब्द ये माने हैं:—

मल्लाह	धीमर (धीवर)	निषाद (निखाद)
केवट (खेवट)	करवक	कछुवाहा
मांझी	भील	कुम्भीलक
जालक।		

१ अग्रवाल २ कुलवन्त ३ किवस्त ४ खरोत ५ खारविन्द

६ खरोतिया ७ गुड़िया ८ गोनरिया ६ घोघ १० चौधरिया ११-घाय १२ चैन १३ जड़िया १४ जैसवार १५ जलछत्री १६ ढेल-फोड़ा १७ तुरीहा १८ नाथू १६ बलिया २० बाथवा, (बाथम) २१ भोक २२ भारमारे २३ भोमतिहा २४ भदरिया २५ मुड़िया २६ मुरमाड़ी २७ महोहर २८ मच्छर २६ राछघाटिया ३० सुर-हिया, ३२ श्रीवस्तवा और ३३ सोहर।

कैवर्त्त शब्द संस्कृत शुद्ध शब्द "कावृत्ति" से बिगड़कर बना है क्योंकि "का" का अर्थ जल और वृत्ति का अर्थ आ-जीविका अतएव जो जल पर नाव चलाने वाले, जल द्वारा कृषी करनेवाले हैं वे कैवर्त कहाये, यहही शब्द प्राकृत भाषा में के-वट कहाने लगा और केवट जिसका अर्थ 'खेनेवाला' ऐसा होता है, नाव के खेनेवाले केवट लोग भाषा में खेवट भी कहे जाने लगे।

प्रोफेसर लेसन इस शब्द की व्युत्पत्ति ऐसी करते हैं कि यह कैवर्त्त शब्द पहिले 'किंवर्त्ति' था जो 'किम्व्रत' का अप-भ्रंश रूप है जिसका अर्थ Degrading occupation नीचवृति काम कहा जा सकता है परन्तु यह अर्थ व युक्ति कुछ प्रचलित संस्कृत से विरुद्ध प्रतीति होती है कदाचित प्रोफेसर साहब के अर्थ का भाव तो उत्तम प्रतीति होता है क्योंकि कैवर्त्त शब्द की उत्पत्ति जो पुराण व स्मृतियों में मिलती है उस आशय के अ-नुसार प्रोफेसर साहब का कहना युक्ति संगत है यथा:—

निषादो मार्गवंसूते दासं नौ कर्म जीविनम्।
कैवर्ति मितियं प्राहुः आर्य्यावर्त निवासिनः॥

मनु संहिता।

अर्थः—निषाद के वीर्य से और आयोगव जाति की स्त्री

के पेट से नौ कर्मजीवी याने नाव चलाकर जीविका करनेवाला मार्गव याने दास जाति उत्पन्न हुयी आर्य्यावर्त्त वाली इसको कैवर्ति याने मल्लाह कहते हैं इनके विषय में ऐसा भी लेख मिलता है किः—

कैवट, कैवर्त, मल्लाह, कहार, महरा, मयरा, भोई, धीमर, धीवर, कीर ये सब नाम पर्य्यायवाची शब्द हैं और नवशायक संज्ञक हैं। नदिया शान्तिपुर की कालेज के President पं० जोगेन्द्रनाथ भट्टाचार्य्य ने भी इस जाति की शतशूद्र व नवशायक संज्ञा मानी है और शतशूद्र व नवशायक जातियें वैश्यों के बराबर मानी गयी हैं अतएव इन जातियों को वैश्य-धर्मानुसार सम्पूर्ण कर्म्म कराने चाहिये. उत्पत्ति के विचार से वीर्य्य प्रधानता के नियमानुसार ये जातियें क्षत्रिय वर्ण में हैं। शतशूद्र व नवशायक संज्ञक जातियों को पंडित भट्टाचार्य्यजी ने वैश्य वर्ण में लिखी हैं अतएव कहार जाति वैश्य वर्ण हो सकती है पर शूद्र कदापि नहीं। भट्टाचार्य्यजी ने यहभी लिखा है कि शतशूद्र जाति द्विजों की कच्ची रसोई में बहुत कुछ सहायता पहुंचा सकती है तब पक्की रसोई का तो कथन ही क्या रहा? कहारों के हाथ की पक्की रसोई तो सब कोई जीमते हैं

परन्तु शोक! भारत के "हम ऊंच दूसरा नीच" इस जाति दम्भ ने देश का सत्यानाश कर डाला अतएव देश के कल्याण के लिये हम परस्पर न लड़कर सबको एक प्रीति सूत्र में बांधे यहही आवश्यकता है शतशूद्र व नवशायक संज्ञक जातियों को उत्तम कर्म करने की उत्तेजना देने का सु-अवसर है।

शिविका याप्ययानं स्याद्दोला प्रेङ्खादिका स्त्रियाम्।

(अ० को० कां० २ श्लो० २३

शिविका याप्यमान ये दो नाम पालकी के हैं, दोला प्रेंखा ये दो नाम डोली के हैं। और दोला+वाही मिलकर दोलावाही हुआ जिसको पं० अमरसिंह ने क्षात्रवर्ग में लिखा है अतएव यह जाति क्षत्रिय वर्ण में है। इस शब्द का अर्थ ऐसा होता है कि, दोला कहिये डोली और "वाही" कहिये लेजानेवाला अतएव डोली का लेजानेवाला दोलावाही कहाया। इसके विषय में लिखा है किः—

वैश्यायांऽथ तैलकाराद्दोलवाही बभूवह ।

—वृहद्धर्मपुराणम्

क्षत्र वीर्येण वैश्यायां कैवर्तः परिकीर्तितः।

कलौ धीवर संसर्गात् धीवरः कथितोभुविः॥

—शब्दे ब्रह्मवैवर्त पुराणे

क्षत्रिय के वीर्य्य से वैश्या में जो सन्तान पैदा हुयी वह कैवर्त कहायी और कलियुग में धींवर का सत्संग करने से मत्स्य पकड़कर जीविका करने वाले धीमर या धींवर कहाये।

वीर्य्य प्रधानता के नियमानुसार तो यह जाति क्षत्रियवर्ण में होनी चाहिये पुनः और भी लिखा है किः—

कैवर्ता द्विविधाः प्रोक्ता हालिका जालिकामुने।

हलवाहा हालिकाश्च जालिका मत्स्य जीविनः॥

—वृहद् व्यास संहिते

अर्थः-हल द्वारा खेती करके निर्बाह करनेवाले' हालिक' और

जल में नाव चलाकर जीविका करनेवाले 'जालिक' कहाते हैं किसी किसी विद्वान की यह भी सम्मति है कि जाल डालकर जो मछलियें पकड़ते हैं व तत्सम्बन्धी व्यवसाय करते हैं वे 'जालिक' कैवर्त कहाते हैं यह कर्म निषिद्ध है। नाव से जीविका करनेवाले पवित्र होते हैं यथाः—

ओं अश्मन्वती रीयते सं रभध्वमुत्तिष्ठत प्रतरता सखायाः। अत्रा जहाम ये असन्न शेवाः शिवान् वयमुत्तरेमाभिवाजान् ॥ १०–५३–८

ओं सुत्रामाणं पृथिवींद्यामनेहसं सुशर्माण मदितिं सुप्रणीतिम्। दैवीं नावं स्वरित्रा मनागसमस्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये ॥ यजुर्वेद

भा०—वेद भगवान् आज्ञा देते हैं कि हे मनुष्यो! नदी चल रही है तुम उठो कार्य्य आरम्भ करो और नदी में तैरो और इस नदी में जो दुःखदायक वस्तु हैं उन्हें छोड़दो और जो सुखदायक पदार्थ उन्हें लाने के लिये तुम सब पार उतरो ॥८॥ तुम लोग कल्याणार्थ दिव्य नौका पर चढ़ो क्योंकि नौका रक्षा करनेहारी और प्रकाश अवकाश युक्त है तथा सम्पूर्ण प्रकार का लाभ पहुंचाने वाली है। अतएव ऐसे उपयोगी वेदोक्त-कर्म करनेवाली नौका चलानेवाली जाति नीच व छोटी मानी जाय यह भारत में कुभावों का फल है हम इस जाति को द्विज संज्ञा में मानते हैं इन्हें वेदोक्तकर्म्म करने का अधिकार है।

जब श्रीरामचन्द्रजी महाराज को १४ वर्ष का बनोवास हुआ तब श्रीराम लक्ष्मण और सीताजी को कुछ दूर पहुंचाने को सुमन्त्र मन्त्री गये थे तब श्रीरामचन्द्रजी सुमन्त को लौटाकर

आप तीनों गंगाजी से पार होने के निमित्त वहां पहुंचे यथाः—

चौपाई—बरबस राम सुमन्त पठाये।
सुरसरि तीर आप चलि आये॥

श्रीरघुनाथजी ने सुमन्त को बरजोरी से भेजा और आप श्रीगंगाजी के तटपर आये।

चौपाई—मांगी नाव न केवट आना।
कहै तुम्हार मर्म मैं जाना॥
चरण कमलरज कह सब कहई।
मानुष करन मूरि कछु अहई॥

तब श्री रघुनाथजी ने केवट से नाव मांगी तब वह नाव तो नहीं लाया किन्तु यों बोला कि भगवन्! मैं आपका भेद जानता हूँ कि आप बड़े करामाती हैं अर्थात् सब कोई कहते हैं कि आपके चरणारविन्द की धूरि ही मनुष्य करने की जड़ी है और बोला कि:—

चौपाई—छुअत शिला भई नारि सुहाई।
पाहनते न काठ कठिनाई॥
तरणिउ मुनिवरनी होइ जाई।
बाट परै मेरि नाव उड़ाई॥

हे मराराज जब शिला आपके चरणरज को छूते ही नारी होगयी थी तो मेरी नाव तो लकड़ी की है और लकड़ी तो पत्थर से कम कठोर होती है अतएव नाव मुनि की स्त्री होजाय तो इसमें सन्देह ही क्या है? और नाव के उड़ते ही मार्ग बन्द हो जायगा।

चौपाई—याहि प्रतिपालहुं सब परिवारु ।
नाहिं जानूं कुछ और कबारू ॥
जो प्रभु अवशि पारगा चहहू ।
मोहिं पदपद्म पखारन कहहू ॥

हे भगवन् ! इस नौका से ही मैं अपने परिवार की पालना करता हूँ और दूसरा कोई कबाड़ा मुझे नहीं आता है । अतएव हे प्रभो ! यदि आप पार उतारना चाहते हैं तो कृपया मुझे आपके चरण धो लेने दीजिये कि जिससे आपकी चरणरज न लगकर मेरी नाव मनुष्य होने से बचजाय, इसमें केवट का भक्ति का भाव यह था कि इस बहाने से भगवान के चरण धोने का सौभाग्य मुझे प्राप्त होजायगा । फिर वह केवट हाथ जोड़कर श्री रामचन्द्रजी से बिन्ती करता है कि:—

छन्द ।

पदपद्म धोय चढ़ायशीश न नाथ उतराई चहौं ।
मोहिं राम राउरि आन दशरथ शपथ सब सांची कहौं ॥
वरु तीर मारहिं लखणपै जबलग न पांव पखारिहौं ।
तबलग न तुलसीदास नाथ कृपालु पार उतारिहौं ॥

हे करुणासागर ! मैं आपके चरणारविन्द धोके वह जल शिरपर चढ़ाऊंगा और मैं आपसे उतराई भी नहीं चाहता हूँ क्योंकि आप भवसागर के मल्लाह हैं और मैं जलका मल्लाह हूँ इसलिये हे प्रभो ! आप और मैं एक जाति हैं अतएव स्वजाति से मजूरी नहीं लिया करते हैं और हे दयासागर ! जब कभी मैं आपके घाट पर आऊं याने जब कभी मेरा देहान्त हो तब

आप मुझे पार लगा देना अर्थात् मुझे सद्गति देना और आज तो आप मेरे घाट पर आये हैं अतएव मैं भी आपसे मजूरी नहीं लेना चाहता हूँ। हे कृपालो ! मुझे दशरथजी की आन है मैं शपथ पूर्वक सच्ची कहता हूँ कि यदि लक्ष्मणजी मुझे तीर भी मारें परन्तु जबतक मैं आपके चरणों को नहीं धोलूं तब तक आपको पार नहीं लगाऊंगा। ऐसा कहने का सच्चा अभिप्राय येन प्रकार से भगवान की भक्ति करना था। इसमें आन लेने का अभिप्राय यह है कि जिस प्रकार से राजा दशरथ अपने बचन के सच्चे थे उसही प्रकार से हे कृपानाथ मैं भी उनको आन व शपथ लेकर कहता हूँ कि चाहे कुछ भी हो बिना चरण धोये पार न उतारूंगा यह मेरा भी प्रण है।

सोरठा—सुन केवट के बैन, प्रेम लपेटे अटपटे
बिहँसे करुणा ऐन, चितै जानकी लखण तन।

केवट के प्रेम भरे अटपटे भक्तिरस से सने हुये वाक्य सुनकर करुणासागर रामचन्द्रजी सीता की ओर देखकर हँसे, हँसने का भाव यह था कि तुम्हारे पिता ने हमारे व लक्ष्मण के पैर कन्या देके धोये थे (१) परन्तु यह सेंतमेंत में ही धोना चाहता है (२) अथवा यह तुम्हारी सेवामें हिस्सेदार होना चाहता है (३) अथवा हमतो निषाद को ही चतुर जानते थे परन्तु उसके नौकर चाकर भी ऐसे चतुर हैं (४) अथवा यह कि देखो हमारे चरण कैसी बुद्धिमत्ता से यह पकड़ना चाहता है (५) अथवा कि तुम दोनों तो एक २ चरण के उपासक हो तब यह पद प्राप्त किया है तब यह दोनों चरणों की उपासना से किस गति को प्राप्त होगा ?

चौपाई--कृपासिंधु बोले मुसकाई ।
सोई करहु जेहि नाव न जाई ॥
बेगि आनजल पांव पखारू ।
होत बिलम्ब उतारहु पारू ॥

कृपासागर भगवान हँसकर बोले अच्छा भाई तुम्हारी नाव न जाय ऐसाही करो और जल्दी जल लाकर पांव धोकर पार उतारो विलम्ब होती है। इसपर महात्मा तुलसीदासजी कहते हैं किः—

चौपाई--जासु नाम सुमिरत इकवारा ।
उतरहिं नर भवसिंधु अपारा ॥
सो कृपालु केवटहि निहोरा ।
जेहि जग किय तिहुं पगति थोरा ॥

जिसका नाम स्मरण करने से नर भवसागर से पार उतर जाता है ऐसे शक्तिशाली कृपालु उतरने के लिये केवट का निहोरा करते हैं।

चौपाई--केवट राम रजायुस पावा ।
पानि कठौता भर ले आवा ॥

केवट राम की आज्ञा पाते ही कठौते में जल ले आया और पांव धोने लगा तबः—

चौपाई--बर्षि सुमन सुर सकल सिहांही ।
यहि सम पुण्य पुंज कोउ नाहीं ॥
अति आनन्द उमगि अनुरागा ।
चरण सरोज पखारन लागा ॥

देवता लोग फूल बरसा कर बधाई देने लगे कि इससे बढ़-कर कौन पुण्यात्मा होगा जो साक्षात् भगवान के चरणारविन्द में प्राप्त होगया और वह केवट अति आनन्द व बड़ी २ उमंगों के साथ भगवान के चरण धोने लगा तत्पश्चात्:—

दोहा-पद पखार जलपान करि आप सहित परिवार।
पितर पारकर प्रभुहि पुनि मुदित गयेउ ले पार॥

वह केवट चरण धो व उसका आचमन ले कुटुम्ब सहित पवित्र होकर पितरों को पारकर या भवसागर से मुक्त करके फिर आप भगवान को पार उतारने लेगया।

(रामायण अयोध्याकांड)

अतएव इस आशय को लेते हुये कौन कह सकता है कि "केवट जाति एक उत्तम जाति नहीं है" भला कहां श्रीरामचन्द्रजी के चरणारविंन्द और कहां केवट ? अतएव हमतो इस जाति को उत्तम मानते हैं क्योंकि श्रीरामचन्द्रजी ने इस जाति को पवित्र कर दिया।

इस जाति का जातिपद लोग छोटा समझते हैं और इस जाति को एक बहुत छोटी निगाह से देखते हैं पर यह उचित नहीं क्योंकि कहार जाति व उसके आवान्तर भेद जिनका वर्णन 'कहार' स्थम्भ में किया जारहा है वे सब वैदिक काल की जातियें हैं जिनका वर्णन आर्य ग्रन्थों में मिलता है, लोग इस जाति के यहां का अन्नादि ग्रहण करने व इन्हें उत्तम कर्मों की दीक्षा देने में बड़ी आपत्ति प्रकट करते हैं पर यह उनका अज्ञान है क्योंकि वेदशास्त्रों से यह जाति उत्तम सिद्ध होती है और इनके यहां का पक्कान्न भोजनादि ग्रहण करने की द्विजातियों के लिये आज्ञा है।

जब श्रीरामचन्द्रजी शृङ्गवेरपुर पधारे थे निषाधाऽधिपति गुह के पास ठहरे थे तब की कथा इस प्रकार से है।

स्वागतं ते महाबाहो तवेयमखिला मही।
वयं प्रेष्या भवान्भर्ता साधुराज्यं प्रशाधिनः॥ ७॥

भा०—निषाधों के राजा गुह ने भगवान् श्रीरामचन्द्रजी से कहा कि हे महाबाहो! आपका आना शुभ Well-come हो यह सारी पृथिवी आपकी ही है अर्थात् मेरे व मेरे राज्य के स्वामी भी आपही हैं अतएव अयोध्याजी को आप छोड़ आये हैं तो यहां का राज्य कीजिये और फिर गुह ने यह भी कहाः—

भक्ष्यं भोज्यंच पेयंच लेह्यं चैतदुपस्थितम्।
शयनानि च मुख्यानि वाजिनां खादनं च ते॥८॥

भा०—स्वागत करने के उपरान्त गुहराज भगवान श्री रामचन्द्रजी के लिये सब तरह के भोजन जैसे रोटी, दाल, चावल, कढ़ी, पूरी, कचौरी, हलवा और तस्मै तथा सब तरह की मिठाइयें, पीने के पदार्थ जैसे, दूध, दही, छाछ, ठंडाई, शर्बत आदि और चटनी आदि अर्थात् चाटने के सब पदार्थ और घोड़ों के लिये चारा दाणा और भोजनानन्तर महाराज के आराम करने के लिये सुन्दर पलंग व बिस्तरे आदि तय्यार करके महाराज से भोजन करने की प्रार्थना की इसपर भगवान् श्री रामचन्द्रजी ने गुहराज को उत्तर दियाः—

गुहमेवं ब्रुवाणंतु, राघवः प्रत्युवाचह।
अर्चिताश्चैव हृष्टाश्च भवता सर्वदा वयम्॥ ९॥

भा०—कि आप मुझे लेने के लिये पैदल आये और आपने जो यह कहा "यह राज्य आपका ही है" इससे हमारा पूरा सत्कार हुवा अतः हमने आपका सत्कार मान लिया और श्री

रामचन्द्रजी महाराज गुहराज के गले में अपने दोनों हाथ डाल कर बोले कि हे सखा! राज्य के सुख व छप्पन प्रकार के भोजनों का आनन्द ही हमें लेना होता तो हम अयोध्याजी छोड़कर क्यों आते तिसपर भी आपकी प्रसन्नता के लिये और अपने उदरपूर्णार्थ आपके लाये हुये पदार्थों में से बहुत किंचित् सा कुछ ले लेते हैं क्योंकि हे मित्र! अबतो तुम मुझे वनवासियों की तरह कन्दमूल फल खाने पीने वाला और वलकल ओढ़ने बिछाने वाला जानो।

इससे प्रमाणित होता है कि पूर्वकाल में कहारादि जातियें पवित्र और सदाचारिणियें थीं और उस समय के ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य लोग इनके यहां की सखरी निखरी सबही प्रकार की कच्ची पक्की रसोइयें खाते पीते थे परन्तु ज्यों ज्यों इन जातियों में विद्या का अभाव व कुरीतियों का समावेश हुवा त्यों २ द्विजातियों ने इनके साथ घृणा करना आरम्भ कर दिया यहां तक कि वे लोग इन्हें नीच जाति तक समझने लगे अतएव यदि ये जातियें अबभी अपनी यथार्थ दशा पर आना चाहें तो आ सकती हैं।

इसी प्रकार जब भरतजी महाराज शृङ्गवेरपुर पहुंचे तब गुहराज ने अपने जाति वालों से कहाः—

भर्ता चैव सखा चैव, रामो दशरथिर्मम।
तस्यार्थ कामाः सन्नद्धा, गङ्गानुपेऽत्र तिष्टत॥ ९॥
नावां शतानां पञ्चानां, कैवर्तानां शतं शतम्।
सन्नद्धानां तथा यूनां तिष्ठन्त्वित्यभ्य चोदयत॥१०॥

भा०—कि दशरथ के पुत्र राम मेरे स्वामी और सखा हैं उनके हित के लिये तुम सब तरह से तय्यार होकर गंगा के

किनारे किनारे खड़े रहो ॥९॥ और गुहराज ने यह भी आज्ञा दियी कि पांचसौ नावों में सौ सौ जवान भील मल्लाह आदि सजधज कर अस्त्रशस्त्रों सहित ठहरे रहें ॥१०॥ गुहराज का अपनी फौजों को इस प्रकार सुसज्जित करने और ऐसी आज्ञा देने का भाव यह था कि भरतजी जो अपने साथ इतनी सेना लाये हैं यदि वे रामचन्द्रजी के प्रति शुभ विचार वाले होंगे तबतो नौकायें भरतजी को गङ्गा के उसपार सही सलामत पहुंचा देंगे अन्यथा युद्ध करेंगे परन्तु जब गुहराज को निश्चय होगया कि भरतजी सद्भाव से आये हैं तब वह अपनी फौज और नावों सहित भरतजी को पहुंचाने के लिये भरद्वाज के आश्रम को भरतजी के साथ गया।

किसी किसी विद्वान् ने इस जाति का नीचत्व प्रकट करने के लिये कुछ हेतु ऐसे लिखे हैं जिनसे निश्चय होता है कि ये लोग मछलियों की हत्यायें करते रहने के कारण व अन्य अधर्माचरणों में प्रवृत्ति रखने से कहीं कहीं नीच माने जाते होंगे पर सर्वत्र नहीं इनकी वर्तमान स्थिति के बारे में ऐसा लेख मिलता है किः—

एक समय महाराज बल्लालसैन ने अपने पुत्र लक्ष्मणसैन को उसके असत् आचार से दुःखी होकर उसे निकाल दिया लक्ष्मणसैन ने कुछ अनुचरों को साथ लेकर नौकारोहण पूर्वक जलमार्ग से यात्रा की इस कृत्य से लक्ष्मणसैन की स्त्री पतिवियोग से बहुत पीड़ित हुयी और उसने विचारा कि बिना राजा (श्वसुरजी) साहब को प्रसन्न किये बिना पति की प्राप्ति न होगी अतएव उस विदुषी ने महाराज के भोजनालय में भोजन स्थान के सन्मुख दिवाल पर ऐसा लिख दियाः—

पतत्य विरतं वारि नृत्यन्ति शिखिनो मुदा ।
अद्य कान्तः कृतान्तोवा दुःखस्यान्तं करिष्यति ॥

भगवन्! जल निरन्तर वर्ष रहा है मयूर आनन्द से नाच रहे हैं परन्तु आज (पति वियोग से) मेरा शरीर ही कदाचित न रहेगा।

यह बचन दिवाल पर देखते ही राजा ने कामिन के मनका भाव जानकर कैबर्त्त मल्लाहों को पुत्र के ढूंढकर लाने कीआज्ञा दियी और कहा कि जो कोई शीघ्र लेकर आवेगा पुरस्कार पावेगा अतएव कैवर्त्तों ने यत्र तत्र गमन कर लक्ष्मणसैनको ढूंढा और राजा के सन्मुख ला उपस्थित किया तब राजा ने प्रसन्न होकर धीमरों से कहा क्या चाहते हो? तब सबों ने कहा महाराज हमारा स्पर्श दोष दूर होजावे तब राजा ने पण्डित सभा एकत्रित कर उनका प्रायश्चित कराकर सर्व सम्मति से उनका स्पर्श दोष दूर किया और तिसी दिन से उनके हाथ का जल सबों ने ग्रहण किया वही पृथा उसही दिन से आजतक सर्वत्र प्रचलित है। यह कथा भारतवर्ष के सनातन धर्म्म महामंडल के महामहोपदेशक पं० ज्वालाप्रसादजी ने भी अपने ग्रन्थ में लिखी है।

आजकल इस जाति में विवाह प्रणाली एक अनौखी भांति से होती है अर्थात् पांच व सात वर्ष की उमरमें ये लोग विवाह कर देते हैं परन्तु ऐसी दशा बंगाल के पठित कैवर्त्त समाज की नहीं है। इस जाति में यह शकुन माना जाता है कि अगर लड़के लड़की याने बींद बींदनी दोनों ऊंचाई में बराबर हों या लड़का लड़की से छोटा हो तो उनका बिबाह सम्बन्ध न होगा क्योंकि यह एक बदशकुन माना जाता है और बाकी बिवाह की रीतियें

साधारण है। विधवा का नाता छोटे भाई की स्त्री के साथ हो जाता है यदि वह विवाह योग्य युवती हो। यदि स्त्री व्यभिचार करे तो उसका पति उसे त्याग सकता है अगर कोई स्त्री विजातीय किसी पुरुष से व्यभिचार करे तो वह जाति पतित करदी जाती है। यदि किसी का पति अपनी स्त्री का पालन पोषण करने में असमर्थ हो तो वह स्त्री अपनी पंचायत की आज्ञा लेकर पति से अलग हो सकती है। (C & T)

इस जाति का धन्दा नाव चलाना है परन्तु ये लोग जलके बड़े तैराक होते और गहरे २ पानी में गोते लगाते हैं इनमें बहुत से खेती करते हैं और कोई २ मछली पकड़कर भी बेचते हैं ये पक्के हिन्दू होते हैं कालीभवानी, महाबीर आदि के उपासक होते हैं।

भक्ष्याऽभक्ष्य विषय में जो भगत हैं वे तो मांसादि नहीं खाते हैं अन्यथा ये लोग कछुवे व मगरमच्छ तक को खा जाते हैं परन्तु गोमांस से बिलकुल अलग रहते है, ये लोग कच्चा भोजन अपनी जाति के अतिरिक्त किसी के यहां नहीं खाते हैं ये लोग अपनी जाति वाले को दूर से ही झटपट पहिचान लेते हैं और मिस्टर क्रूक ने अपनी पुस्तक के पृष्ठ २२९ में लिखा है कि:—

"नउवा केवट चीन्हेजात बड़के लोग की चिकन बात"

अर्थात् नाई व केवट लोग अपनी जात वाले को तत्काल पहिचान लेते हैं परन्तु उच्चजाति के लोग केवल बातों का जमा खरच कर जानते हैं।

युक्तप्रदेश में सन् १८८१ के अनुसार १२९३१३ केवट संख्या है परन्तु इनके पूर्व कथित सम्पूर्ण उपभेदों को मिलाने से ३४५१९५ लोक संख्या है।

प्राचीनकाल में कैवर्त जाति कैसी भी हो तथा भिन्न २ प्रान्त व प्रदेशों में होने के कारण उनके आचरणों में कुछ भेद भी हो परन्तु बंगाल के कैवर्त्त उच्च व प्रतिष्ठित माने जाते हैं और वे वहां:—

चासा कैवर्त्त

कहाते हैं। मिदनापुर में ये लोग अमीर उमरावों में गिने जाते हैं वहां इस जाति का बड़ा मान्य है और मिदनापुर के अतिरिक्त अन्य जिलों में ये लोग कायस्थों के बराबर से ही माने जाते हैं। कैवर्त्तों के चार भेद हैं।

१ चासा २ लखीनरायन ३ जालिया और ४ तूतिया। इनमें मिदनापुर के चासा और लखीनरायन तो सबसे उत्तम हैं।

जालिया लोग मछली पकड़ने वाले मल्लुवे हैं।

तूतिया कैवर्त शहतूत उगाने वाले हैं जो अपवित्र माने जाते हैं।

मिदनापुर के तुमलक और कन्टाई जिले के कैवर्त बड़े ऊंचे ऊंचे दर्जों पर हैं याने बहुतसे बड़े २ ज़मीन्दार हैं।

नदिया के कैवर्तों ने विद्या में बड़ी उन्नति किया और अपनी विद्या बुद्धि के कारण से सर्वोच्च जातियों में गणना कराने लगे उदाहरण के लिये कलकत्ता जान बाजार के माढ़कुल के लखपति कैवर्त्तों को लीजिये कि जिनके यहां लाखों का धन व बहूमूल महल आदि हैं।

भारतवर्ष में कैवर्तों की आबादी ३० लाख है मिदनापुर के कैवर्त्तों के सरनेम ये हैं:—

१ मिती २ बेड़ा ३ जाना ४ गिरी ५ भूमया ६ घोलूई ७ पत्र ८ पंडित ९ दास १० माजो ११ कयाल।

नदिया के कैवर्त्तों का सरनेम यह हैं:—

१ दास २ बिस्वास और ३ भाउमिक।

सरकारी मनुष्य गणना रिपोर्ट से पता चलता है कि युक्त-प्रदेश में ३६६००८ मल्लाह लोग हैं तब सम्पूर्ण भारत में कितने होंगे यह फिर कभी दिखायेंगे इनमें से ३६२६ नौमुसल्लिम हैं जिनकी जिलेवार संख्या इस प्रकार से है। सहारनपुर में ७१८ मुजफ्फर नगर में ४८६ मेरठ में १२१२ और मथुरा में १३४ फरुक्खाबाद में २५३ शाहजहांपुर में ३७८ और गोरखपुर में २०४ हैं जहां सौ से कम नौ मुसलिम थे उनकी संख्या हमने नहीं दी अन्वेषण से पता चला है कि इनके आचार विचार और रहन सहन के ढंग हिन्दू मल्लाहों के से हैं अतएव शुद्ध कर लेने में शास्त्रोक्त कोई आपत्ति नहीं हैं।

यू० पी० में हिन्दू मल्लाहों की लोक संख्या ३६५३७६ है।

१० कोरी:—यह एक द्विज समुदायान्तर्गत जाति है इसको अंग्रेजी में Weaver कोली व कोरी कहते हैं, प्राकृत व्याकरण के नियमानुसार 'र' प्रायः 'ल' में बदल भी जाता है अतएन यह जाति कहीं पर कोरी व कहीं कोली कहाती है।

संस्कृत कोष में इस जाति के लिये लिखा है कि:—

"तन्तुवायः कुविन्दः स्यात्तुन्नवायस्तु सौचिक"

अर्थात् तन्तुवाय और कुविन्द ये दो नाम कोरी के हैं जो कपड़ा बुनने व बेचने का व्यवसाय करते हैं।

इस जाति की उत्पत्ति के विषय में अनुसन्धान से कई

प्रमाण ऐसे मिलते हैं जिनसे यह जाति उत्पत्ति क्रम से ब्राह्मण वर्ण में ठहरती है यथाः—

माणि बन्धान्माणिकायां तन्तुवायाश्च जज्ञिरे (२)

अर्थात् माणिबन्ध ब्राह्मण द्वारा मणिकार की स्त्री से तन्तु-वाय पैदा हुवा जिसे कोरी कहते हैं।

इसही से मिलती जुलती सम्मति व्यासजी महाराज ने पुराण में लिखी है यथाः—

(३)

ततो वभूवः पुत्राश्च नवैते शिल्पकारिणः ॥ १९ ॥
मालाकारः कर्म्मकारः शङ्खकार कुविन्दकाः ॥
कुर्म्भकारः कंसकारः षड़ेते शिल्पिनां वरः ॥२०॥

अर्थात् विश्वकर्मा ब्राह्मण ऋषि द्वारा नौ शिल्पकार पैदा हुये जिनमें से माली, कर्मकार, शंखकार और कोरी (तन्तुवाय) ये श्रेष्ठ शिल्पी हैं अर्थात् ये पवित्र दस्तकार हैं।

शास्त्र व्यवस्थानुसार यह जाति जन्म से ब्राह्मण वर्ण में ठह-रती है, इस जाति की उच्चता विषय में एक सिविलियन अंग्रेज अफसर ने ऐसा लिखा हैः—(४)

The Joriya or joriya of Fyzabad claim to be Brahmins and immigrants from a place called Katvi in the Jaunpur District. (4)

अर्थात् जुरिया या जोड़िया भेद के कोरी लोग अपने को ब्राह्मण मानते हैं जिनका निकास जौनपुर जिले के कतवी स्थान से है।

यद्यपि ये लोग जन्म से ब्राह्मणवर्ण में हैं पर शिल्प कर्म और अविद्या के कारण इनमें शूद्रता आगयी, जिस प्रकार कोई

ब्राह्मण कोई शूद्रत्वबोधक कोई नीच कर्म में प्रवृत होजाय तो लोग उसे शूद्र कहने लगेंगे तैसेही इस जाति की शिल्पकर्म में प्रवृति होने से ये भी सत शूद्र माने जाने लगे।

यद्यपि इस जाति में ब्राह्मणत्व का अंश है तथापि ये लोग शिल्पकर्म में ऐसे मग्न होगये कि अपने असली कर्म धर्मों को छोड़ बैठे। ऐसी ही दशा में यवन अत्याचार इनके सिर पर बढ़ा और इन्हें ब्राह्मणादि के मिलने का अभाव होजाने से ये स्वकर्मधर्मों को एकदम छोड़ बैठे और इनमें मलीनता काप्रसार होगया अतः सम्पूर्ण प्रकार से ये शूद्र ही नहीं किन्तु शूद्रों से भी नीच जचने लगे। परन्तु इनका व्यवसाय रूई सूत और कपड़े का है जो पवित्र माना जाता है यही कारण है कि शास्त्रकारों ने इन कोरियों को श्रेष्ठ शिलिपयों की गणना में लिखा है और श्रेष्ठ शिलिपयों का वैश्यवर्ण होता है अतएव कोरी (तन्तुवाय) लोग वैश्यवर्ण में हैं ऐसा निश्चय होता है।

यदि कोई कहे कि कपड़े का बुनना ब्राह्मणत्व बोधक व वैश्यत्व बोधक कर्म नहीं है तो यह ठीक नहीं क्योंकि आजकल हजारों ब्राह्मण वैश्य (Mill and Workshops) मिल व कारखानों में नौकर होकर कपड़े बुनते हैं पर वे अपने वर्ण से गिरे नहीं समझे जाते अतएव कोरी लोग जन्म से ब्राह्मण व कर्म से वैश्य हैं ऐसा सिद्ध होता है।

इस जाति में संस्कारों की हीनता है और कई प्रबल कुरीतियें भी इनमें प्रचलित हैं इसलिये इनमें सुधार होने की आवश्यक्ता है।

इस जाति की उत्पत्ति के विषय में अनुसन्धान करते हुए एक विद्वान ने लिखा है कि:—

Tne Saint Kabir was one day going to bathe

in the Ganges, and met a Brahman girl who saluted him. He said in reply "May god give you a son." She objected that she was a virgin and unmarried, but he answered that his word could not fail. So she immediately got a blister on her hand, out of which a boy was born. She was ashamed and left the child on the bank of the River, where a heifer that had never calved gave him milk, and he was adopted by a weaver who taught him his trade. He got his name because he was born of a virgin (Kuari) or of a girl untouched by man (Kori). (5)

भा०—एक दिन महात्मा कबीरजी गंगास्नान करने को जारहे थे जिन्हें एक ब्राह्मण की लड़की मिली जिसने महात्माजी से प्रणाम किया इसके उत्तर में महात्माजी ने उसे आशीर्वाद दिया कि 'भगवद् कृपा से तुम पुत्रवती होवो' इस पर उस कन्या ने कहा कि भगवन् ! मैं तो कुआंरी याने बिना व्याही कन्या हुं इस पर महात्माजी ने कहा मेरे बचन खाली नहीं जावेंगे। इसके पश्चात् तत्काल उस कन्या के हाथमें एक छाला हुवा जिससे एक लड़का उत्पन्न हुआ, इससे वह कन्या बड़ी लज्जित हुयी और उस लड़के को नदी के किनारे छोड़कर चली गई जहां एक कलोर बछिया के दूध उतर आया जिससे उस बच्चे का पालन हुवा, एक तन्तुवाय निपुत्र था उसने उस लड़के को अपने गोद बिठालिया और उसका नाम 'कुआरी' हुवा जब वह बड़ा हुवा तब उसने तप किया तब उस लड़के का नाम 'करुणामय' प्रसिद्ध हुवा क्योंकि वह महात्मा कबीरजी ने कन्या पर करुणा कियी जिसके प्रभाव से कुआरी कन्या के हाथ के छाले से पैदा होने से वे 'करुणामय ऋषि' कहे जाने

लगे फिर इन्हीं करुणामय ऋषि जी की सन्तान आजकल 'कोरी' कहाते हैं जिन्हें लोग कोली भी कहते हैं।

तबसे इस जाति के सम्बन्ध में एक दोहा प्रचलित है:—

कोरी कोरी कैलाश के, निर्गुण का जाया।
काया ढांपे आपनी भवसागर आया ॥

पाठ भेद ऐसा भी मिलता है:—

कोरी कोरी कैलाश के, निर्गुण का जाया।
काया ढांपे जगकी, भवसागर आया ॥

इसका भाव यह है कि कोरी लोग कैलाश में निर्गुणरूप से याने शिव कृपाद्वारा पवित्र क्रमसे पैदा हुये हैं जो कपड़े बुनकर जगत को ढांपते हैं।

इसही आख्यायिका से मिलती जुलती सी एक वार्ता मु० दे० प्र० जी ने अपने ग्रन्थ में लिखी है कि 'महादेवजी ने अपनी सेवा के वास्ते एक सेवक पैदा किया था उसका नाम कोली रक्खा उसके दो बेटे तलपदा और बारिया हुये जिनके वंशज इन्हीं नामों से अबतक राजपूताने में प्रसिद्ध हैं। लिखा है:—

नृपायां वैश्य संसर्गा दायोगव इति स्मृतः ॥११॥

(धर्मशास्त्रे)

भा०—क्षत्रिय की कन्या में वैश्य द्वारा पैदा हुयी सन्तान आयोगव (कोरी) कहाती है। इस बचन के अनुसार कोरी जाति का वैश्यवर्ण ठहरता है।

कोरियों के भेद उपभेदों की ओर दृष्टि डालने से पता चलता है कि इनमें १०४० भेद हैं जिनमें से मुख्य भेद ये हैं।

१ अहरवार २ बैस ३ बलाई ४ भदौरिया ५ भैंहर ६ बंकर-

(बंकड़) ७ धामन ८ जैसवार ६ कुष्टा १० जुरिया ११ कबीरबंसी १२ कायथिया १३ कमरिहा १४ कन्नौजिया १५ कतवा १६ कुरचमरा १७ भांडोरिया १८ माहुर १६ औढ २० परसुतिया २१ सकरवारे २२ संखवार २३ बनौधिया २४ जतवा।

भेद विवर्ण:—बुलन्दशहर के जिले में अहर एक कसवा है तहांसे प्रसार होने के कारण ये लोग अहरवारे कहाते कहाते कहरवार कहे जाने लगे।

बैस:—राजपूत वंश का यह एक प्रसिद्ध भेद है बिपत्तिवश व अन्य किसी कारण विशेष से जिन्होंने कपड़े बुनने का कार्य लेलिया वे बैस कोरी कहे जाने लगे।

बलाई:—यह भी क्षत्रियों का एक भेद है, जो लोग शत्रुओं के सामने बल दिखाते थे वे 'बलआई' कहे जाने लगे अन्त में कपड़े बुनने का धन्दा करने लगे राजपूताना में भी ये लोग वहुत हैं।

भदौरिया:—युक्तप्रदेश में भदावर एक कसवा है तहां से निकास होने से कोलियों का एक भेद भदोरिया प्रसिद्ध हुवा।

जैस:—रायबरेली के जिले में जैस राजपूतों का राज्य था उन्हीं राजपूतों की वस्त्रव्यवसाय द्वारा सेवा करनेसे 'जैसवार' कोरियों का भी एक भेद प्रसिद्ध हुवा।

कुष्टा:—यह जाति दक्षिण देश में विशेष व युक्तप्रदेश में कुछ कम है श्रीरामचन्द्रजी महाराज के पुत्र कुश के वंशज कुष्टा कहाये, इनके गुरुकुल गुरू 'बाल्मीकिजी' थे ये लोग बाल्मीकिआश्रम में ही शिक्षा दीक्षा लेते थे अतएव इनका एक भेद बाल्मीकि नाम से प्रसिद्ध हुवा, वेदों की आज्ञा के अनुसार वस्त्र बुनना एक उत्तम कर्म है तदनुसार प्राचीनकाल में सबही

अपने अपने लिये वस्त्र बुन लेते थे तैसेही ये लोग भी विचक्षण व साहसी शिल्पी थे रेशम, कोसा, सूत, सन और पाट आदि के वस्त्र जैसे रेशमी धोती, जरीदार साड़ियें पीताम्बर आदि अबभी बनाते हैं, इनमें विद्या का अभाव होने से लोग इन्हें कुछ का कुछ मानने लग गये हैं, इनमें बहुत से लोग खेती दुकान्दारी व नौकरी आदि भी करते हैं।

इनके गोत्र कुलहाड़िया, लिखार, निपझा, नरिहा, बुकरिया, ठुलहा, पट्टा, गरकटा, ढकेता, बाल्मीकि, परेता, भुर्रा, बनरा, छुवारीबाग आदि आदि।

पहिले ये लोग 'कष्टहा' कहाते थे अर्थात् कष्ट को हरनेवाले, फिर कष्टहा से बदल कर कष्टा हुये और कष्टा से आजकल का प्रचलित नाम कोष्टा व कुष्टा होगया।

ये लोग द्विजत्व के कर्म करने के अधिकारी हैं विवाह के समय इनमें जनेऊ होताहै पर प्रायः विवाह पश्चात् उतार दिया जायाकरता है ये लोग महादेव व देवी के उपासक होते हैं।

युक्तप्रदेश के झांसी, महोवा, दतिया, ग्वालियर, लश्कर, इटावाह, फफूंद, औरैया आदि आदि स्थानों के अतिरिक्त मध्य-प्रदेश व मुम्बई प्रान्त में विशेष हैं। इस जाति का विशेष विवर्ण अलग स्तम्भ में इस जाति से आगे ही मिलेगा।

जुरिया:—युक्तप्रदेश में मिर्जापुर आदि की ओर यह लोग उच्च जातियों के यहां घरेलू कामों के लिए नौकर रहते हैं। इनके लिए सिविलियन अफसरों ने लिखा है कि यह ब्राह्मणवत् रहते हैं।

कबीर वंशी:—वे कोरी जो महात्मा कबीरजी के अनुयायी हैं

अथवा जो कबीरजी के आशीर्वाद से पैदा हुये हैं वे कबीरवंशी कहलाते हैं।

कायथिया:—जो पहले कायथ थे और कपड़े बुनने का धन्दा करने लगे वे कायथिया कहाये।

कन्नौजिया:—हिन्दू राजाओं के समय में कन्नौज एक बड़ा भारी प्रान्त था वहां के कोरी लोग जो दूर देशों में जाकर बसे वे कन्नौजिये कहे जाने लगे।

कतवा:--वे कोरी जो केवल सूत ही काता करते थे कतवे के नाम से पुकारे जाने लगे।

ओढ़:--ओढ़ राजपूत जो कपड़े बुनने का काम करने लगे वे ओढ़ कोरी कहे जाने लगे।

सकरवार:--यह "शाक्यवारे" शुद्ध शब्द का विगड़ा हुवा रूप है। जो शाक्य ऋषि के अनुयायी थे वे शाक्यवारे कहाते २ सकरवारे कहे जाने लगे।

बनौधिया:--यह "वरौधिया" शुद्ध शब्द का विगड़ा हुवा रूप है अर्थात् वर का अर्थ श्रेष्ठ और औधिया का अर्थ अवध के अर्थात् जो अवध के श्रेष्ठ कोरी थे वे "वरौधिया" कहलाते थे। यही "वरौधिया" शब्द बदलकर आजकल का प्रसिद्ध नाम "बनौधिया" होगया।

कोरियों में सकरवारे बनौधिया परसुतिया और कुष्टा भेद वाले कोरी अपने आचार विचार के कारण उत्तम माने जाते हैं।

इसही तरह भारत के युक्तप्रदेश में जैसवार, कनोजिया, मनवार, गंगापारी, बासवार, कीटयार, पंतरा, गुजराती, खातिया, चौपार, कुतार, सखत्रार, सुनवानो, जोंकियार, माहोर, चन्दोलिया, कहारिया आदि आदि भेद पाये जाते हैं।

कोरी जाति का पद हिन्दू जातियों में कहीं कहीं छोटा माना जाता है और कहीं कहीं मध्य श्रेणी का। गवर्नमेंट की रिपोर्ट में ऐसा लिखा है (६) कि मिरजापुर के जिले में इनके हाथ का जल ग्रहण किया जाता है इनके आचार विचार व रहन सहन में विद्या के अभाव से बहुत कुछ भिन्नता आगई है इससे लोग इनसे कुछ घृणा करने लगे हैं परन्तु अनुसन्धान के अनुसार निश्चय होता है कि यह लोग वैश्य धर्मानुसार चल सकते हैं इनकी लोक संख्या एक युक्तप्रदेश में ९९००२७ है तिसमें से ३००९९९ कोरी जबरदस्ती मुसलमान किये जाकर जुलाहे कहे जाने लगे हैं जिनकी रीति भांति अभी तक कोरियों की सी ही चली आरही है। और वे कोरी जुलाहे इस संयुक्त नामसे प्रसिद्ध है।

अतएव श्रुति स्मृतियों में ऐसे मनुष्यों के लिये प्रायश्चित लिखे हुवे हैं। इसलिये यह नौमुस्लिम लोग शुद्ध कर लेने के योग्य हैं।

प्राय: कोरी लोग बड़े सरल व सीधे साधे मनुष्य होते हैं, बहुतसे अनसमज लोग इस जाति को अछूत समझते हैं पर यह नितान्त भूल है क्योंकि आजकल कोई भी वर्ण अपनी असली स्थिति पर नहीं है तैसेही इस जाति की दशा भी जाननी चाहिये इस जाति में जहां कई कुरीतियें हैं तहां सुरीतिमें प्रचार का उद्योग भी किया जारहा है हमारे अन्वेषण धारानुसार इस जाति के साथ घृणा नहीं करनी चाहिये क्योंकि यह जाति राष्ट्र के लिये बड़ी उपयोगी मानी गयी है, मनुष्य जीवन की रक्षा के लिये अन्न जल व वस्त्र की विशेष आवश्यकता है जिसमें से जलतो स्वतः सिद्ध प्राप्त होजाता है रहा अन्न व वस्त्र इन्हें मनुष्यों को पैदा करने पड़ते हैं अतएव कोरी जाति दोनों ही वस्तु पैदा

करती है, अन्न की अपेक्षा वस्त्र की उपयोगिता एक अंश में बड़ी है अर्थात् मरणान्तिर समय भी कफन के लिये वस्त्र की आवश्यक्ता होती है जो कोरियों का पैदा किया हुवा याने तैयार किया हुवा है।

अतएव ऐसा उपकारक जाति समुदाय नीच माना जाय कुछ समझ में नहीं आता यदि मैन्चेस्टर व लंकेशायर का विलायती कपड़ा व अन्य अन्य विदेशों का कपड़ा यहां न आने पावे और यहां की मिलें भी कपड़ा तय्यार न करें और कोरी लोग भी यह समझकर कि हिन्दू लोग हमसे घृणा करते हैं कपड़ा बुनना छोड़दें तो हिन्दुओं के मृतकों के लिये कफन भी न मिल सकेगा अतएव हिन्दु पबलिक को विचार से काम लेना चाहिये।

बिलायती कपड़े के प्रचार के कारण इस जाति के व्यवसाय को बड़ा धक्का पहुंचा और परिणाम स्वरूप यह जाति बड़ी गरीब दीन हीन होगयी और दरिद्रता के कारण नीच जचने लगी—यदि इन्हीं में अभी कोई भी क्रोड़पति आसामी हो तो हजारों उच्च हिन्दू इनकी सेवा करने लगेंगे।

इस जाति के पढ़े लिखे लोग अपना रहन सहन आचार विचार उच्च जातियों का सा ही करते चले जारहे हैं क्योंकि लोगों का कहना है कि कुछ पीढ़ियों पूर्व इनका आचार विचार वैश्यवत् था। वेदों में मनुष्य मात्र के लिये वस्त्र बुनने की आज्ञा है पूर्वकाल में ऋषि लोग व वाचक्नु जैसे विद्वान लोग अनेक धातु व काष्ठादि के यन्त्रों द्वारा स्वयं वस्त्र बनाकर अपने कुटुम्ब का पालन करते रहे हैं तदनुसार अबतक ऐसी प्रथा चली आरही है कि प्रत्येक द्विजों की सद्गृहस्थिनें कोई कातती कोई पीनती, कोई रूई लोढती व कोई बस्त्र बनातीं व कोई वस्त्र सीतीं

हैं। यह सबही तरह का व्यवसाय पहिले सबही कोई करते थे परन्तु ज्यों ज्यों अविद्या बढ़ी त्यों त्यों प्रत्येक स्थानों से शिल्प कला भी उठने लगी इसलिये वस्त्र वयन (बुनने) का धन्दा कोई बुरा कर्म नहीं है और सबके लिये वेद की ऐसी आज्ञा है:-

ओं सीसेन तन्त्रं मनसा मनीषिणं ऊर्णासूत्रेण कवयो वयन्ति । अश्विना यज्ञ ँ सविता सरस्वतीन्द्रस्य रूपं वरुणो भिषज्यन् ॥ ८० ॥ वेद नं० ७

पदार्थः—हे मनुष्यो जैसे (कवयः) विद्वान (मनीषिणः) बुद्धिमान लोग (सीसेन) सीसे के पात्र के समान कोमल (ऊर्णा-सूत्रेण) ऊनके सूत्र से कम्बल के तुल्य प्रयोजन साधकर (मनसः) अन्तःकरण से (तन्त्रम्) कुटुम्ब के धारण के समान यन्त्र कलाओं को (वयन्ति) रचते हैं जैसे (सविता) अनेक विद्या व्यवहारों में प्रेरणा करने हारा पुरुष और (सरस्वती) उत्तम विद्यायुक्त स्त्री तथा (अश्विना) विद्याओं में व्याप्त पढ़ाने और उपदेश करनेहारे दो पुरुष (यज्ञम) संगति मेल करने योग्य व्यवहार को करते हैं जैसे (भिषज्यन्) चिकित्सा की इच्छा करता हुवा (वरुणः) श्रेष्ठ पुरुष (इन्द्रस्य) पर ऐश्वर्य के (रूपम्) स्वरूप का विधान करता है वैसे तुम भी किया करो।

इस मंत्र से सिद्ध होता है कि वाचकलु जैसे विद्वान लोग अनेक धातु व काष्ठादि के यन्त्रों द्वारा स्वयम् वस्त्र बनाकर अपने कुटुम्ब का पालन करते रहे हैं तैसेही हिन्दूमात्र को वस्त्र बनाकर अपने को व दूसरों को लाभ पहुंचाने में कोई दोष नहीं है। पुनः—

ओं तन्तुं तन्वन् रजसो भानुमन्विहि ज्योतिष्मतः पथोरक्षाधिया कृतान्। अनुल्वणं वयत जोगुवामपो मनुर्भव जनया दैव्यं जनम् ॥ १०-५३-६

हे मनुष्यो ! (रजसः-भानुम्) अनेक रंग के प्रकाश किरण के समान देदीप्यमान (तन्तुम्-तन्वन्) सूत को बनाते हुए आप (अनुइहि) पूर्वजों का अनुकरण किया करें और इस प्रकार (धिया कृतान्) ज्ञान के द्वारा निर्मित (ज्योतिष्मत ! पथः) उत्तम पथ अर्थात् वस्त्रादिक निर्म्माण कर्म्म की (रक्ष) रक्षा कीजिये। और (अनुल्वणम्) शान्ती पूर्वक (जोगुवाम) जोगू जुलाहों के (अपः) कार्य्य को (वयत) करो इस प्रकार (मनुर्भवः) मनशील मनुष्य बनो और सदा (दैव्यम्-जनम् उत्तम स्वभाव के मनुष्य को (जनय) उत्पन्न करो।

"अप" नाम कर्म का है (नि० २-१-) 'धी' यह नाम भी कर्म्म का है। 'वयत' 'वेञ तन्तु सन्ताने'। 'वे' धातु का प्रयोग बुनाने अर्थ में सदा आता है। इस हेतु जुलाहे को 'तन्तुवाय। कहते हैं (तन्तुमवयतीति) यहां जोगू नाम जुलाहे का है इसही शब्द से जुलाहा पद निकला है। और देखियेः—

तन्त्रं राष्ट्रे च सिद्धान्ते परच्छन्दा प्रधानयोः।
अंगदे कटम्बकृत तन्तुवाने परिच्छदे ॥

इस प्रमाण से तन्त्र शब्द अनेकार्थवाची सिद्ध होता है।

विवाह के समय द्विज विवाह पद्धति में जिस समय कन्या को वस्त्र दिये जाते हैं तब एक मन्त्र पढ़ा जाता है यथाः—

या अकृन्तवयन् याश्च तत्निरे या देवी रन्ताँ

अभितो ददन्त । तास्त्वा जरसे संव्ययन्त्वा युष्मतीदं परिधत्स्व वासः ॥ (अथर्ववेदे नं० ८)

अर्थः—(यः देवीः) जिन देवियों ने (अकृन्तन्) प्रथम रूई को चरखे पर काता है (अवयन) पीछे उस सूत से वस्त्र बुने हैं और (याश्च) जिन देवियों ने (तत्निरे) उस वस्त्र में अन्यान्य सूत लगाकर बेल बूंटों से सुन्दर किया है और (याः) जिन्होंने (अभितः अन्तान् अददन्त) वस्त्रों के किनारों पर झालर आदि लगाये हैं (ताः) वे सब देवियें (जरसे) पूर्णायु प्राप्त्यर्थ (त्वासंव्ययन्तु) तुमको कपड़े से ढांपे (आयुष्मति) हे आयुष्मती कन्ये ! इदंवासः) यह वस्त्र (परिधत्स्व) पहिनो ।

पाठक ! वेद में देवी शब्द आया है जिसका अर्थ शुभ गुणों युक्त, धीरा, विदुषी और कुलीन स्त्री का होता है और जब इन्हें वस्त्र बुनने की आज्ञा है तब साधारण घरों की स्त्रियें कहां रहीं ? अतएव इन प्रमाणों से वस्त्र बुनना श्रेष्ठ कर्म व मनुष्य-मात्र का मुख्य कर्तव्य है अतएव कोरी जाति जो अबतक अपने कर्म पर स्थित है वह नीच क्यों मानी जाय ? क्या यह पक्षपात व उनके साथ अन्याय नहीं है अवश्य है । पुनः—

नाहं तन्तुं न विजानाम्योतुं न यं वयन्ति समरेऽतमानः कस्यास्वित्पुत्र इहवक्त्वानि परो वदात्य वरेण पित्रा ॥ (६) ६ । ९ । २

अर्थात् कोई श्रमजीवी अपने पिता द्वारा पूरी शिक्षा न पाकर कहता है कि "मैं वस्त्र निर्माण विद्या भी नहीं जानता जीवकोपाय कैसे करूं ?" इस ऋचा से यह भाव निकलता है कि वस्त्र निर्माण कार्य्य वेद विहित कर्म है और वेद विहित

कर्म के करनेवाले कोरी लोग नीच व अस्पर्शनीय कदापि नहीं कहे जा सकते हैं।

आजकल देश में राज्यस्थिति हिन्दू जाति के अनुकूल नहीं होने से प्रत्येक वर्ण की दशा कुछ न कुछ अस्तव्यस्त होरही है कहने का भाव यह कि चारों ही वर्ण आजकल श्रुति स्मृत्याऽनुकुल चलने वाले नहीं है तब बेचारी कोरी जाति के साथही कड़ाई नहीं होनी चाहिये। गुण कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था का मानना आर्य्यसमाज का सिद्धान्त है तथा जन्म व गुण कर्म स्वभावानुसार वर्ण व्यवस्था का मानना सनातन धर्म का सिद्धान्त है तिसपर भी कोरी जाति जन्म से ब्राह्मण के वीर्य्य से तथा कर्म से कृषी व वाणिज्य कर्म में स्थित वेदानुकूल वस्त्र निर्माण कर्म को करती हुयी ब्राह्मणवर्ण में नहीं तो वैश्यवर्ण में अवश्य है।

यह जाति खान पान से भी शुद्ध है अर्थात् ये लोग गौ ब्राह्मण के भक्त व वेद शास्त्रों को मानने वाले हैं ये लोग अंडा मुर्गी आदि भी नहीं खाते हैं। आजकल हिन्दूजाति अज्ञानमयी दशा में है अर्थात् राम कृष्ण के कट्टर शत्रु व गौमाता का गला काटने वाले मुसलमान अछूत नहीं समझे जांय पर वेद शास्त्र के अनुसार चलनेवाली जाति अछूत मानी जाय यह अज्ञान नहीं तो क्या है?

हमारी जाति यात्रा के समय कई लोगों ने इस जाति के बारे में इनमें मैलापन होने की त्रुटि के सम्बन्ध में हमें बहुत कुछ कहा था अतएव यदि यह सत्य है तो इस जाति में पवित्रता का संचार होना चाहिये और हम भी इन्हें पवित्र रहने सहने का संदेसा देते हैं।

यू० पी० की सरकारी रिपोर्ट में कोरी जाति के लिये लिखा

है कि They do not eat beef. (I0) अर्थात् ये कोरी लोग गोमांस नहीं खाते हैं। जब मुसल्मानों से हम छूते हैं तो गो-रक्षक कोरी लोग अछूत क्यों समझे जाने चाहिये कदापि नहीं।

गवर्नमेन्ट सरकारी गजट के अफसर ने लिखा है कि,

"The koris call themselves the descendants of Vishuakarma and Ganesh the maker of things and the God of wisdom. (B. G, P 268)

भा०—कोरी लोग अपने को विश्वकर्मा व गनेश की सन्तान बताते हैं इससे भी कोरी लोग उच्च जाति सिद्ध होते हैं।

११ कोष्टा कुष्टा कुश्ता कुश्ती

यह एक क्षत्रिय वंशज जाति है परन्तु कोलियों की तरह से कपड़ा बुनने के कारण किसी किसी विद्वान् ने इस जाति को कोलियों की ही एक जाति मानकर तदनुसार लिख मारा है पर यह ठीक नहीं सनातन धर्म के सिद्धान्तानुसार जन्म से जाति मानी जाती है धन्दा वह चाहे जो करे पर जाति उसकी बदल नहीं सक्ती है इसही तरह इस वंश ने उदर पूर्णार्थ सूती कपड़ा बुनने की अपेक्षा रेशम, पाट, ऊन, कोसा और सन के वस्त्र बुनना आरम्भ किया, आज कल ये लोग पीताम्बर शाल दुशाले, लोई कम्बल, साड़ियें और रेशमी धोतियें आदि बनाते हुये पाये जाते हैं इनके बनाये हुये वस्त्रों की खपत दक्षिण व गुजरात में विशेषरूप से है अतएव

यह जाति भी विशेषरूप से दक्षिण व मध्य प्रदेश में तथा साधारणतया युक्त प्रदेश में है।

जा० भा० नि० के पृष्ठ २०१ में ग्रन्थकार ने लिखा है कि "यह रेशम कातने और तय्यार करने वाली एक दक्षिण की शूद्र जाति है" पर यह ग्रन्थकार की भूल है क्योंकि केवल इतने से शब्दों से इस जाति को शूद्र मान लेने को कोई भी तय्यार नहीं हो सकता उचित तो यह था कि इनकी उत्पत्ति आदि प्रमाण युक्त लिखकर इस जाति को शूद्र कहना चाहिये था पर ऐसा नहीं किया गया इसलिये प्रमाण शून्य लेख माननीय नहीं हो सकता।

नदिया कालेज के भट्टाचार्यजी ने अपने ग्रन्थ H. C. and S के पृष्ठ ३३३ में ऐसा लिखा है कि:—

The weavers of the Central Provinces are called koshti. They are a semi-cleam caste.

अर्थात् मध्यप्रदेश में जो वस्त्रादि बुनते हैं वे कुश्ती कहाते हैं ये लोग कुछ पवित्र जाति हैं इन्होंने भी इनको शूद्र जाति तो नहीं लिखा।

यदि वस्त्र बुनने के कारण से ये लोग शूद्र समझे जांय तो यह भी उचित नहीं क्योंकि कोरी जाति प्रकरण में हम वेदों की ऋचायें लिखकर प्रमाणित कर आये हैं कि वस्त्र बुनना कोई नीच कर्म नहीं है वरन् पूर्वकाल में ऋषि व ऋषिपत्नियें कपड़े बुना करती थीं तिसपर भी ये लोग तो कोसा, रेशम, ऊन और पाट आदि पवित्र वस्त्रों के बुनने वाले हैं ये शूद्र कदापि नहीं हो सकते।

इस जाति में वस्त्र व सूत का व्यवसाय, खेती, दुकानदारी तथा नौकरी आदि सबही तरह के धन्दे होते हैं, ऐसी रहीहते

दशा अन्य जातियों को भी है कोई भी जाति किसी एकही धन्दे को करती हुयी नहीं पायी जाती है। पूर्वकाल की तरह आजकल भी सबही सद्गृहस्थिनें कोई काततीं कोई सीतीं और कोई कपड़े बुन लेती हैं।

इस जाति की उत्पत्ति के विषय में पता चलता है कि यह जाति यथार्थ में यदुवंश की एक शाखा है आपत्ति धर्मानुसार जैसे ब्राह्मणादि उच्च जातियें नाना प्रकार के धन्दे करती रहती हैं तैसेही ये यदुवंशी लोग भी भिन्न भिन्न धन्दे करके निर्वाह करते हैं। कोलियों की जाति में इनकी गणना नहीं होनी चाहिये।

इनमें गोत्र प्रणाली भी है इनके मुख्य मुख्य गोत्र निम्न लिखित हैं:—

कुलहड़िया' लिखार, नियझा, नरिहा, बुकरिया, डुलहा, पट्ठा, गरकटा, ढकैता, परेता, भुर्रा, वनरा, छगरीवाग, बाल्मीकिया, कुशवा।

एक विद्वान् ने हमें यह भी कहा था कि ये लोग श्री रामचन्द्रजी के पुत्र कुश की सन्तान हैं जिन्होंने बाल्मीकि आश्रम में शिक्षा दीक्षा प्राप्त कियी थी तिससे इनका एक गोत्र बाल्मीकि कुशवा भी प्रसिद्ध हुवा सम्भव है कि इसमें भी कुछ सत्यता हो पर वे महाशय कोई प्रमाण न बताकर इसे दन्तकथा बतलाते थे।

जो लोग शहरों में रहते हैं उनके आचार विचार भी नीच जातियों के से नहीं हैं।

युक्तप्रदेश में इस जाति की लोक संख्या बहुत थोड़ी है अर्थात् केवल ढाई तीन हजार के करीब हैं।

झांसी जी० पी० ३६७ में कुष्टा जाति का समीपस्थ सम्बन्ध

कछवाहा वंश से लिखा मिलता है, ये लोग क़रीब ६०० वर्ष पूर्व चन्देरी में बनारस से आये थे और इनकी उत्तमता के विषय में लिखा है किः—

'The koris make Kharwa and other cotton goods, while the Kushtas make silk goods only.

भा०—कोरी लोग खारवा और दूसरे सूती कपड़े बुनते हैं तो कोष्टा लोग केवल रेशम के वस्त्र ही बनाते हैं।

हिं० वि० को० के अनुसार यह जाति छोटा नागपुर की ओर भी है करघे से कपड़ा बुनना व खेती बारी करना ही इसकी उपजीविका है ये लोग छत्तीसगढ़, रायजा और संबलपुर की ओर विशेष हैं उस देश में इनकी अनेक श्रेणियें हैं यथाः-

१ बागल २ बगुटिया ३ भात ४ भतपहाड़या ५ चौधरो ६ चोर ७ गोही ८ खंडा ९ कूरम १० मानक ११ नाग १२ सना आदि आदि।

इनमें दास 'उपाधि' होती है, उस प्रान्त में किसी 'श का एक एक प्राणी गृह देवता स्वरूप रहता है, इनमें अति बाल्यावस्था में बालक बालिका का विवाह कर देने की कुप्रथा है, सीमन्त में सिंदूर दान ही विवाह का प्रधान अंग है इनमें विधवा विवाह प्रणाली है, इनमें विवाह बिच्छेद भी पंचों की अनुमति से किया जा सकता है।

इनके उपास्यदेव का नाम 'दुल्लादेव' है, दुल्ला इनमें एक महान पुरुष हुवा है जो विवाह के समय बीरता प्रदर्शन करता हुवा सत्य धर्म के लिये मरा था तबसे वह महान आत्मा देव श्रेणी में मानी जाकर पूजी जाने लगी।

इस जाति में एक समुदाय कबीरपंथी हैं जो मरणान्तर

में गाड़े जाते हैं, यह जाति ब्राह्मण व राजपूत आदि का ही अन्न आहार करते हैं अन्य का नहीं।

मुम्बई प्रदेश में इनकी लोक संख्या करीब पचास हजार के है इनका श्रेणी भेद स्थान भेद के कारण से भी पड़गया है जैसे मराठा कोष्टी, कनाड़ा कोष्टी, और लिंगायत कोष्टी।

पूने के मराठी कोष्टी अपने को पूर्व से ब्राह्मण बतलाते हैं और कहते हैं कि 'किसी समय जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथ स्वामी ने हमसे वस्त्र मांगे थे परन्तु हमने नहीं दिये' इससे पार्श्वनाथ स्वामी ने इन्हें श्राप दिया था कि तुम जुलाहे का काम करोगे और कभी उन्नत नही हो सकोगे।

मराठे कोष्टियों की शाखायें देवंगहलवे, हाटगर, जूनरे और खतावन आदि आदि हैं, उस देश में इनकी उपाधियें ये हैं:—ऐकाड़े, कलसे, कलटावने, काँबले, कुन्दल, कुकुंटे, कुहर्कर खाड़गे, खाने, खारवे, गलांदे, गुरसले, गुलबने, गोदसे, घाटे, घोड़के, चकरे, चिपाड़े, चारने, जवरे, झाड़े, ढोले, तरके, तरलकर, तरबदे, तत्परुक, तवरे, तांबे, तिपरे, दंडवते, दुहरे, दिंगे, दिदे, दिवते, दुगम, दोईकोर्ड, धगे, धवलसांख, धीमते, सीमाने, पदे, पंदारे, पाखले, पांदकर, पारखे, भालकर, बड़दे, बहिरात बावत, बिदे, बोतरे, बांबदे, भाकरे, भागवत, भालेसिंग भंडारे, भिकरे, मकवते, मनारकर, मालने, मालबंदे, मनाल, सुखवते, बंगारे, रहातड़े, रासिकर, सकारे, सड़, बरादे, बाहस, बेंदोंदे, शीलवंत, सेवाले, सोपाडे, महदे और हरके सुलें।

केनाडा में कुरनावल और पतनावल दो भेद हैं तिनकी बोली कर्नाटकी हैं। लिंगायत व नीलकंठ कोष्टी बिलेजादर और पडसल मीजादर दो भेद वाले हैं परन्तु दोनों में परस्पर आदान प्रदान वा आदर व्यवहार नहीं चलता इनके गोत्र ये हैं:—

जिरानी, बन्नी, बसरी, मैनसाईस, हिंग, सर, कदिका, बंकी, धर्म और गुन्ड आदि २ साठ हैं, इनमें गौत्र प्रणाली है अर्थात् ये लोग गौत्र कि गोत्र में शादी नहीं करते हैं कोष्टी लोगों का आचार विचार उच्च हिन्दुओं का सा है।

इस जाती में संस्कार भी होते हैं, विद्वानों ने इस जाति को धर्मानुरागी और स्वजातिय प्रिय लिखी है ऐसे २ कारणों से यह जाति उच्च वर्णी जान पड़ती है यह लोग क्षत्रियवर्ण धर्म के अनुसार चल सकते हैं।

गरः—यह युक्तप्रदेशान्तर्गत बुन्देलखंड की एक क्षत्रिय जाति है आज कल थोड़ी व बहुत यह जाति सर्बत्र फैली हुयी है, पूर्वकाल में यह जाति राज्याधिकारिणी थी तो आजकल केवल कृषी व अन्य भिन्न भिन्न धन्दे करके जीविका करने वाली है, नौकरी द्वारा निर्बाह करना भी इनका एक काम है अबतक ये लोग 'रावखांगर' कहाते हैं क्योंकि अबतक इनका विवाह सम्बन्ध रावत राजपूतों से चला आरहा है।

पहिले ये लोग प्रत्येक समय खंग को धारण किया करते थे उस समय से ये लोग 'खंगधार' कहाते थे जिसका अर्थ खंग का धारण करनेवाला ऐसा होता है जैसे आज कल अकाली सिक्ख प्रत्येक समय कृपाण अपने शरीर के साथ रखते हैं तैसेही ये लोग भी शत्रुवों को दमन करने व स्वधर्म रक्षा के लिये सदैव कृपाण याने तलवार रखते थे परन्तु शत्रुवों के प्रबल संगठन व शत्रुवों के धोखेबाज़ी युक्त दाव घात में फंस-

कर ये लोग राज्य सत्ता विहीन होने से तित्तिर बित्तिर होगये, ये ही लोग खंगधार कहाते कहाते खंगहार कहे जाने लगे अर्थात् 'तलवार को हार जाने वाले' ऐसे भावयुक्त बदलाव हुवा, यही खंगहार नाम आजकल का प्रसिद्ध नाम 'खांगर' ऐसा होगया। हमारे अन्वेषण में एक योग्य विद्वान ने हमें यह सम्मति दिया है कि पहिले ये लोग "खंगढ़" कहाते थे जो दो शब्दों से बना है 'खं' एकाक्षरी कोष के आदेशानुसार खड्ग- का बोधक अक्षर है और गढ़ का अर्थ मुख्याधार ऐसा होता है अतएव जिनका जीवनाधार मुख्यतया तलवार का बल था वे लोग खंगढ़ कहे जाते थे, इसही खंगढ़ शब्द को जब अंग्रेज विद्वानों ने अंग्रेजी भाषा में सबसे प्रथम लिखा तब इन्होंने ऐसा लिखा Khangar यह शब्द खांगढ़ व खंगढ़ दोनों ही तरह से पढ़ा जा सक्ता है असल में यह शब्द खंगढ़ था, खांगर व खांगढ़ ये दोनों ही रूप ठीक हैं क्योंकि व्याकरणानुसार र, व, ड, परस्पर बदल जाते हैं। देशकाल की स्थिति के बदलाव के साथ साथ इस जाति के नाम भी बदल गये हैं अर्थात् कहीं ये लोग खेंगार, खंगार, खेंगर, रायखेंगार, खगर, खंगढ़, खांगर व खांगढ़ कहे जाते हैं।

हमारे अन्वेषण की यात्रा में विद्वानों ने हमें बतलाया कि अनुमान ७०० वर्ष पूर्व चन्देलों के अधःपतन के साथ साथ यह जाति बुन्देलखंड में राज्य करती थी।

जाति और कौम नामक ग्रन्थ में लिखा है कि:—

Throughout the western Part of Bundelkhand the Chandels were Succeeded, according to local tradition, by the khangars or kangars, who had once been their servants, and who made the fort of karar,

now belonging to Orchha, and lying about twenty miles from Jhansi, their head-quarters until their expulsion by the Bundelas in the fourteenth century. These khangars are now the village servants and watchmen of the Bundelkhand districts, and are in a position similar to that of the Bhars and Pasis of the Duab and the Benares Division.

अर्थात्ः—बुन्देलखंड के पश्चिमी हिस्से में चंदेले राजपूत लोग खांगर या काँगर लोगों से हारते चले आते थे। चंदेले लोग कभी खांगर जाति के राजाओं के नौकर भी थे। खांगर राजाने एक किला "कराड़" नाम का बनाया था। जो ओरछा राज्य में झांसी से २० मील की दूरी पर बसायस था। उसेही इन लोगों ने अपनी राजधानी बनाई थी। चौदहवीं सदी तक इन लोगों ने राज्य किया और बाद में ये किला इन लोगों से छीन लिया गया। आज कल इस जाति के लोग बुन्देलखंड के जिले के गांवों में मज़दूरी व चौकीदारी, बनारस व द्वाब की तरफ के भार व पासियों की भांति करते हैं।

'Mister Jemkinsons' साहब ने भी अपनी रिपोर्ट के पृष्ठ ५८ में उपरोक्त कथन का समर्थन किया है।

बंगाल के मिस्टर एटकिन्सन साहब अपनी रिपोर्ट के पृष्ठ १२० में इनकी उत्पत्ति ऐसे लिखते हैं किः—

Hardeo, one of the Gaharwar family came with a slave-girl from Khairagarh and took up his residance near Orchha. He was there invited to give his daughter in marriage to the Khangar Raja of kerar, which he at first refused to do but at length consented to on condition that the

Raja should come with all his bretheren and feasts with him, in order to thoroughly obliterate all distinctions of caste. The Raja consented and at the feast was treacherously poisoned with all his family; and the Gaharwars took possession of the country between the Betwa and Dhasan, which had hitherto been occupied by the Khangars. (B. G. P 120)

भावार्थः—गहरवार कुल में से एक हरदेव नामक व्यक्ति बांदी के साथ ओरछा के निकट खैरागढ़ से आकर बसा था। कराड़ के खांगर राजा ने हरदेव से अपनी लड़की को व्याह देने का प्रस्ताव किया पर हरदेव राज़ी नहीं हुवा। बहुत कुछ कहने सुनने पर किसी प्रकार राजी होगया। लेकिन हरदेव ने यह शर्त की कि राजा अपने सब भाइयों के साथ आकर पहले हरदेव के साथ भोजन करले। राजा ने इस शर्त को मान लिया। परन्तु हरदेव ने भोज में राजा को मय साथियों के भोजन में विष मिलाकर खिला दिया। और इसके बाद गहरवारों ने बेतवा और धसान के बीच का मुल्क (जा खंगार राजा का था) पर अपना कब्ज़ा कर लिया। इसी कथन से मिलती हुई एक ऐसो कथा भी है किः—

One tradition tells that they entered Bundelkhand from some-where to the North of Kalpi and took service with the Bundela Rajputs. Their chief settlement was at Kurargarh in the Bhikamgarh State.

They failed to pay their revenue, and by the orders of the Emperor Akbar, the Bundela Raja with the help of some Gaharwar Rajputs

from kashi or Benares, destroyed them by giving them drugged wine to drink, and then massacred them.................

Their Raja at the time was Naga Raja, and, after the massacre of his followers, he and his Rani escaped. He cut off half of his mustache, and she took off half her Jewelry which they swore not to wear again until they wreaked their revenge on the Bundeles.

ये लग काल्पी के उत्तर की ओर से बुन्देलखंड में आये और बुन्देला राजपूतों में रहने लगे। उनका खास निवास-स्थान कुरारगढ़ था। जो रियासत ओकमगढ़ में था। उन्होंने अपनी मालगुज़ारी अदा नहीं की थी। इसलिये बादशाह अकबर के हुकुम से बुन्देला राजा ने बनारस के गहरवार राजपूतों की मदद से उनको इस तरह बर्बाद कर दिया कि कुछ दवा मिली हुई शराब उनको पिलाई और खूब नशे में करके बड़ी निर्दयता के साथ मय जनबच्चे के उनको क़तल कर डाला। प्राचीन काल में खंगारों का एक राजा नाग नाम का हुवा था। जो अपने साथियों के इस प्रकार क़तल होजाने के बाद अपनी रानी सहित भाग गया था और उसने अपनी आधी मूंछ काट ढाली थी और जनेऊ भी तोड़ डाला था। इसी प्रकार रानी ने अपना आधा जवाहरात का जेवर उतार डाला था और दोनों ने यह शपथ खाई थी कि जब तक हम बुन्देला राजा से अपना बदला न लेलेंगे ये आभूषण नहीं पहिनेंगे। इसही तरह की शपथ आजकल महाराना उदयपुर भी मानते हैं कि "जबतक हम दिल्ली फतह न करलेंगे दिल्ली न जायेंगे" यह शपथ महारानाजी के यहां कुछ शताब्दियों से अबतक चली

आरही है इसही से खांगर राजपूतों की स्त्रियें अबतक पांव में सोना नहीं पहिनती हैं।

फयजाबाद के भूतपूर्व कलेक्टर ने अपने बड़े अनुसन्धान के पश्चात् पता लगाकर अपनी सरकारी रिपोर्ट में लिखा है:—

Another legend only the Rani escaped the massacre of the tribe. She took refuge in a field of saffron (Kusum), whence she was rescued by some Parihar Rajputs, and bore a son, who was the ancestor of the present Khangars.

अर्थः—दूसरी कहावत यह है कि इस जाति की कतल होने के बाद केवल रानी ही भागी थी। उसने एक कुसुम के खेत में जाकर अपने प्राण बचाये थे। वहां पर परिहार राजपूतों ने रानी की सहायता की थी। रानी सगर्भा थी और वहीं उसके एक लड़का पैदा हुवा। उसी लड़के की सन्तान खांगर लोग हैं.........

पुनः—

It is said that no Khangar is, even to the Present day, allowed to enter the fort of Kurar, and that, in memory of the birth of their ancestor in the saffron field, no Khangar will wear cloth dyed with saffron

अर्थात्:—ऐसा कहा गया है कि कोई खंगार अब तक 'कुरोड़' के प्रसिद्ध किले में नहीं घुसने दिये जाते हैं और खंगार लोग भी कसूमल रंग से रंगे कपड़े पुरुषा के कुसुम के खेत में जन्म लेने के कारण नहीं पहनते हैं। यह भी गवर्नमेंट के अफसर की राय है इसका अभी तक ऐसाही बर्ताव होते रहना सम्भव जान पड़ता है।

पुनः—

बुन्देला राजा के एक खंगार स्त्री से लड़का पैदा हुवा जो बघेल कहलाया जिसे कुरारगढ़ बतौर मौरूसी जायदाद के दिया गया था और उस लड़के को औलाद 'बिमहर' के नाम से प्रसिद्ध है। जिसको खंगार लोग अपने में नहीं मानते थे पर जब उन्होंने प्रमाणों द्वारा सिद्ध कर दिया तब उन्हें अपनी जाति में ही मानने लगे।

यह खांगार लोग गुरनाल के राजा विजयसिंह के वंशज हैं जिन्हें काशी के गहरवार राजपूतों ने बरबाद कर दिया था। क्योंकि खांगर जाति का एक राजा एक गहरवार लड़की के साथ विवाह करना चाहता था।

भदौरिया राजपूतों में से इनके यहां एक लड़की व्याही गई। आजकल भी भदौरिया जाति में विवाह के समय खांगर राजपूत को बुलाया जाता है और उसकी पीठ पर अपने हल्दी भरे हाथ के पांच थप्पे लगाता है और तब अपने मान के (रिश्तेदार के) थप्पे लगाता है (अर्थात् प्रसिद्ध राजपूत कुल भदौरिया इनका इतना सन्मान क्षत्रिय होने के कारण करता है) इससे खांगर लोग शुद्ध क्षत्रिय सिद्ध होते हैं।

तथाः—

जब खंगार राजपूतों में लड़के या लड़की का विवाह होता है तब चौहानादिक अन्य राजपूत सर्दार विवाह वाले के घर जाकर जिसका विवाह होता है उसके चावल हल्दी का टीका करते हैं और श्रद्धानुसार भेंट भी देते हैं। पुत्र के विवाह में ये लोग वर को पाल्की में बिठाकर अन्य राजपूतों के यहां ले जाते हैं तहां वे (अन्य राजपूत) लोग वर के टीका करते हैं तथा अपनी २ श्रद्धानुसार भेंट भी देते हैं। टीके में बतौर वि-

वाह के फलदान के एक तलवार भी वर को दी जाती है। यही नहीं किन्तुः—

जब कभी दतिया राज्य की गद्दी पर कोई बुन्देला राजा बैठता है तो कुरारगढ़ के किले और खंगार राजा की तस्वीर मिट्टी की बनाई जाती है और बुन्देला राजा उसे (अन्य रस्मों की तरह) तोड़ता है।

किसी समय में एक खँगार राजा ने एक वार भक्ति के आवेश में आकर अपने सिर को अपने हाथ से काटकर अपनी इष्ट देवी पर चढ़ा दिया। उसका ऐसा साहस देखकर देवी बड़ी प्रसन्न हुई और देवी ने आज्ञा दी कि इसे खंगार डाल (अर्थात् धो डाल) इसी कारण से ये लोग खँगार कहलाते २ 'खंगार' कहाने लगगये। बर्तमान काल में श्री० काठियावाड़ नरेश भी इसी जाति के हैं। उनके गोत्रादि इनसे बिल्कुल मिलते हैं। पृथ्वीराज के संकट के समय में कईवार इस जाति के राजावों ने अपनी असीम वीरता का परिचय दिया था। पृथ्वीराज के समय में इस जाति के राजा बुन्देलखंड का राज्य करते थे।

The higher class Khangars will eat only the food which is permitted to Rajputs. (C and T P 332)

भा०—उच्चश्रेणी के खंगार लोगों का खान पान राजपूतों के सदृश है। इनके खानपान सम्बन्ध में हमने अन्वेषण किया तो निश्चय हुवा कि इनके खानपानादि की अधिकांश रीतियें उच्च राजपूतों की सी हैं, वर्णसंकर व शूद्र जातियों के साथ इनका खान पान नहीं है नाई आदिकों के साथ भूलवश किसी ने लिखा लेख वह अमाननीय है।

जालोन G. P 308 में सरकारी अफसर ने खांगर जाति को Landowning जागीरदारों की जातियों की सूची में खांगर जाति को लिखी है।

Hamirpur G. P. 260 में सरकारी अफसर ने बड़े अनुसन्धान के पश्चात् क्षत्रियों की सूची में खांगर राजपूतों को भी लिखा है।

१३ गोत्रः—इस जाति में नीचे लिखे गोत्रों का पता लगता है जिनमें से अनेकों गोत्र अन्य उच्च क्षत्रिय समुदाय के गोत्रों से मिलते हैं। यथाः—

(१) काश्यप (२) भरता (३) मकर (४) हनुमन्त (५) स्वार (६) साण्डिल्य (७) नाग (८) सारदू (९) परसनिया (१०) बिसौरा (११) हथगोतिया (१२) मालतिया (१३) कुरडिया (१४) वर्ग गोतिया (१५) बिलगोतिया (१६) सुनगोतिया (१७) बिजनियार (१८) भरद्वा (१९) नाहर गोतिया (२०) नाग गोतिया (२१) कुसुम गोतिया (२२) बड़गोतिया (२३) खड़ग गोतिया (२४) ब्रह्मगोतिया [२५] पीपल गोतिया [२६] घोड़ गोतिया [२७] गजगोतिया [२८] खरगोतिया [२९] सुनगोतिया [३०] नीम गोतिया [३१] गोहिया [३२] हिरन गोतिया।

प्राचीन राजपूत इतिहास के सम्बन्ध में महाकवि चन्द्र बरदायी द्वारा विरचित पृथ्वीराज रासा में लिखा है किः—

सजे संग बुधराय पँवार
सजे बिड़गज सुखेत खँगार

सजे संग बग्गर सार्दूल सोई
सजे संग भाल चंदेल सुजोई ।

—पृथिवी० पृ० २५२० छन्द १०२

भा०—सम्राट पृथिवीराज चौहाण की फौजों में सैनिक अफसर वीर राजपूत मणि कौन कौन थे ठाकुर बुधराय पंवार ने अपनी फौज की टुकड़ी को सजाकर तय्यार कियी, बिड़राज सुखेतसिंह [सुकेतसिंह] खंगार ने, बग्गर राजपूत सरदार शार्दूलसिंह ने और चन्देल सरदार भालसिंह ने अपनी अपनी फौजों को सजा धजा कर पृथिवीराज के साथ चढ़ाई कियी।

पुनः पृष्ठ २५६० में छन्द ३६८ इस प्रकार हैः—

कयमास कमध्वज विक्रमयं
तहँ यक सुचारु सुविक्रमयं ।
जहां गौड़ सपत्तिय मोरदयं
तहां खेता खंगार सुचारुभयं ॥

भावार्थः—इसमें खेता खंगार ने सुचारुरूप से जो युद्ध किया उसके बल पौरुष का आभास दिखाया है।

पुनः—पृष्ठ २६०४, छन्द ७४८, इस प्रकार हैः—

खड़ खंड त्रित्राण सामंत सार
खीची सुगौड़ खेता खंगार ।
सावंत दूत क्रोधतं तह
बजरंग बीर तज जंग राह ॥

पुनः पृष्ठ २६१४ छन्द ८२२ इस प्रकार हैः—

तौंवर पहार पुंडीर चंद
धावर सुवीर वह पड़े द्वंद ।
खेता खंगार झाडा हमीर
हाहुलि राय धरि परि गवीर ॥

भावार्थः—ऊपर के दोनों छन्दों से खेतसिंह खंगार की वीरता का परिचय मिलते हुये सिद्ध होता है कि खेतसिंह खंगार पृथिवीराज के सामन्तों में से एक थे । पुनः—

खेता खंगार द्वै भ्रातराय, परयो दुकाल देसं सुभाइ ।
दिल्लाय देश गुट्ठा सुमंड, रखे सुत्रास भट सुभट झुंड ॥
(पृ० २६१४ छं० ८२६)

भा०—उपरोक्त छन्द का तात्पर्य्य यह है कि "पज्जूनराय को महोबा का थानापति नियत किया था और खेता खंगार को महोबा के दूसरे जो प्रान्त थे उसमें इनको सूबेदार किया था—"

नर्सिंहपुर तथा कानपुर जिले के छापीवाड़ा ग्राम में बसने वाले खांगर राजपूतों का अन्य उच्च राजपूतों के साथ सम्बन्ध है । नर्सिंहपुर जिले के अतिरिक्त ये लोग सागर, जबलपुर, दमोह आदि २ स्थानों में भी पाये जाते हैं । तहां के अन्य उच्च क्षत्रिय लोग इनके साथ क्षत्रियवत् व्यवहार करते हैं । कइयों को तो वीरता के उपलक्ष्य में जमीनें माफी में इनाम के तौर पर मिली हैं ।

मुसलमानी राज्य में वीर क्षत्रिय होने के कारण इस क्षत्रिय जाति के वीरों को सेना में बडे २ पद दिये जाते थे तथा कहीं पर शासनभार इन्हीं को सौंपा गया था । वर्तमान काल

का बुन्देलखंड जो पहले गढ़ कुड़ार करके प्रसिद्ध था खांगर के जाति अधिकार में सन् ११५६ से १३१६ ईसवी तक रहा। राजा खेतसिंह ब खीची ने उस समय राज्य किया था। यह लोग इतने शक्तिशाली वीरराजा थे कि अन्य देशों के राजा आ आ कर इनकी शरण में रहा करते थे। एकवार काशी नरेश के भाई ने भी इन्हीं की शरणमें अपना कालक्षेप किया था। व्यौना की जागीर पर भी इसी जाति के लोग राज्य करते थे। यदि किसी खंगार वर के यज्ञोपवीत नहीं हो तो उसे पतित समझ कर ये लोग उसके फेरे नहीं पड़ने देते।

श्री भारतधर्म महामंडल के महा महोपदेशक स्वर्गवासी पं० ज्वालाप्रसादजी मिश्र लिख गये हैं कि 'ये बुन्देलखंड में पाये जाते हैं इनमें कोई कोई अपने को ठाकुर कहते हैं पर संस्कार इस जाति में नहीं पाये जाते हैं, काल्पी के जिलेकी भीषमगढ़ रियासत के कुरारगढ़ से इनका निकास है।"

समी०—इस लेख में बहुत कुछ सत्यता है अर्थात् ठाकुर अपने को वही कहेगा जो यथार्थ में राजपूतवंशी होगा इस पर भी जो पढ़ा लिखा होगा अपनी आदि बुनयाद ग्रन्थों में पढ़ी होगी, वृद्ध सज्जनों से श्रवण किया होगा, वही अपने को ठाकुर कह सक्ता है पर जो निरा अज्ञानी, दीन हीन, मुखमलीन अति दुखित दशा में आपत्ति ग्रस्त होगा वह केवल येन केन प्रकार से अपने पेट की ज्वाला को पूर्ण करने के अतिरिक्त सब राग रंग भूल जायगा, क्योंकि 'बुभुक्षितं किन्न करोतिपापं, भूखा क्या न करता के अनुसार "भूलगये राग रंग भूल गये जकड़ी, तीन चीज याद रहगयी तेल लूण लकड़ी" इस लोकोक्ति के अनुसार बिचारी यह जाति भी अपनी असलियत

को भूल बैठी, दूसरे लोगों ने तो इस जाति को चोर तक कह डाला है पर यह उचित नहीं।

संस्कारों की शून्यता जो इनमें बतलायी जाती है इसके कई सुलभ साधन किसी समय फिर वर्णन करेंगे।

क्षत्रियवंश की सूची नामक ग्रन्थ में खांगारोह राजपूतों की एक खांप लिखी है, खंगारजी एक राजपूत हुये हैं जिनके नाम से खांगारोत एक खांप राजपूतों की चली है। इन्हीं खंगार से बुन्देलखंड व मध्य प्रदेशादि के खांगर राजपूत फैले माने जांय तो भी कोई हानि नहीं है। क्योंकि राजपूताने में भी खांगारोतों के ठिकाने कई हैं।

लोक संख्या:—युक्तप्रदेश में इस जाति की लोक संख्या करीब ४० हजार है जिनमें से २७६३२ नौमुस्लिम खांगर राजपूत हैं जो शुद्ध कर लेने के योग्य हैं क्योंकि इनकी रीति रिवाज व रहन सहन इनके अन्य हिन्दू भाइयों से मिलता जुलता सा है।

१४ खानजादा:—

ऐतिहासिक अन्वेषणकर्त्ता विद्वानों की दृढ़तर सम्मति इस जाति के लिये क्षत्रियत्व की है इतिहास सुपरिन्टेन्डेन्ट मुं० देवीप्रसादजी ने इस जाति को क्षत्रियों से बनी लिखी है विद्वानों ने

इस जाति के दो भेद लिखे है पश्चिमी खानज़ादे और अवधिये खानज़ादे ।

मिस्टर चेनिंग साहब कलक्टर ने अपनी गुड़गांव S. Report एस रिपोर्ट में लिखा है कि "खानज़ादे अबकी अपेक्षा पहिले बड़े प्रभावोत्पादक व उच्च पदस्थ थे !

They claim to have been formerly Jadon Rajputs, and that their ancestors, Lakhanpal and Sumitra Pal, who dwelt at Tahangarh in Bharatpur were converted to Islam in the reign of Firozeshah (Ad 1315 to 1338).

भा०—ये अपने तईं जादों राजपूत होने का दावा करते हैं इनके पूर्वज लखनपाल और सुमित्रपाल थे जो भरतपुर रियासत के ताहनगढ़ में रहे जिन्हें बादशाह फिरोजशाह तुग़लक ने सन् १३३८ से १३५१ के बीच में मुसल्मान बनायो ।

ये लोग मुसल्मान नहीं होते थे अतएव ये बड़े कष्ट युक्त दशाओं में असहनीय दुखों से पीड़ित किये गये थे तब अन्त को जीव रक्षार्थ ये विवशरूप से मुसल्मान बने तब ठा० लखनपाल का नाम नाहरखां और ठाकुर सुमित्रपाल का नाम बहादुरखां रक्खा गयाः—

And in recognition of their high descent, called them Khanzada. (C. and T P. 333)

और इनके उच्च वर्ण होने की यादगार में इनका नाम खानज़ादा रक्खा गया । इनको राजकुली युद्ध विद्या में निपुण समझकर बादशाह ने इन्हें मेवात का सरदार राजा बनादिया । बादशाह बाबर के समय तक मेवात में खानज़ादों का राज्य रहा और अब भी किसी किसी के पास गांव व ज़मीनें उसही समय की चली आरही हैं ।

मेवात का देश आजकल अलवर, नाभा पटियाला और भरतपुर तथा विशेषरूप से गुड़गावां के ज़िले में बटा हुआ है यहां के रहने वाले सब मेवाती कहाते हैं पर आजकल इस शब्द का जब जब प्रयोग किया जाता है तब मेवाती व मेव के कहने से उन क्षत्रिय कुरों (कुलों) का ग्रहण होता है जिनको मुसल्मान लोग मुसल्मान नहीं मानते और हिन्दू लोग हिन्दू नहीं मानते कारण यह है कि मुसल्मान लोग इन पर दोषारोपण करते हैं कि 'ये लोग नाम मात्र के मुसल्मान हैं इनमें हिन्दूपन कूट कूट कर भरा है" और हिन्दू लोग तो अपने अज्ञान से छूआ छूत में ही मरे जाते हैं और कहते हैं कि "चाहे ये कैसी भी पवित्रता व हिन्दूपन से क्यों नहीं रहते हों फिर भी अन्ततः ये हैं तो मुसल्मान ही अतएव हमारे काम के नहीं" इस तरह ये लोग अधर धार (बीचमें) लटके हुये हैं। हमें विशेष दुःख मेवात के हिन्दुओं पर है कि वे लोग विचार-शक्ति से काम नहीं लेते इसका कारण उनमें विद्या का अभाव है।

ये खानज़ादे लोग भूलते भूलते जहां अपने जादों वंश के महत्व को भूले तहां अपने को खानज़ादा न कहकर केवल मेवात के रहने से अपने को मेव कहने लग गये मेव जाति यद्यपि खानजादों में से ही है पर उसका विवर्ण इसही ग्रन्थ में अलग भी मिलेगा।

General Cunningham जनरल कनिंघाम ने अपनी रिपोर्ट में लिखा है:—The khanzadas, who for several centuries were the Rulers of Mewat claim descent from the Jadon Raja Tahan Pal etc etc.

भा०—खानज़ादा जो कुछ शताब्दियों तक मेवात के राजा

रहे हैं वे जादों राजा तहलपाल के वंश के अपने को बतलाते हैं आदि आदि। जब बादशाह मुहम्मदग़ोरी ने तहनगढ़ पर क़ब्ज़ा करलिया तब बहुत जादों वंशी क्षत्रिय इधर उधर भागकर जहां जिसको शरण मिली जा बसे इनमें से एक जादों सरदार तेजपाल ने अपने नाम पर अलवर रियासत में तिजारा बसाया इन्हीं में से लखनपाल के वंशज खानज़ादा कहाये। पुनः—

During the last two centuries, since the teraitoray of Mewat has fallen into the hands of the Hindus of Alwar and Bharatpur, It has become the fashion to doubt the Jadon descent of the Khanzadas.

भा०—गत दो शताब्दियों से अर्थात् जबसे मेवात देश अलवर, और भरतपुर की हिन्दू रियासतों की तहत में आया है खानज़ादों की जादों वंश परम्परा पर नाना प्रकार के संदेह पैदा होने लगे हैं।

परन्तु यह ठीक नहीं क्योंकि यह मिथ्या कल्पना 'हम ऊंच और सम्पूर्ण संसार नीच' इन भावों के कारण से उत्पन्न हुई है। कारण यह कि खानज़ादा वंश जादो वंशज क्षत्रिय हैं और उनकी रीति भांति और चाल ढाल अभी तक हिन्दुओं से मिलती जुलती सी चली आरही है और बहुत से ऐतिहासिक विद्वानों ने खानज़ादों को जादों वंशज लिखा है। अतएव ये एक क्षत्रिय वंशज नाम मात्र के मुसलमान निर्विवाद रूप से सिद्ध है।

अवधिये खानज़ादों के सम्बन्ध में सरकारी रिपोर्ट पृष्ट १४२ में लिखा है कि जैचन्दसिंह जूड़ासिंह का लड़का था जो बछ गोती बरियारसाह के पुत्र राजसाह के वंश में से थे।

उसका लड़का तिलोकचन्द जो बाबर के समय में हुवा है उस समय बाबर ने पूर्व में चढ़ाई की उसका सामना तिलोकचन्द ने बड़ी बहादुरी से किया परन्तु युद्ध में वह हार गया और बादशाह बाबर ने उसे क़ैद करलिया:—

He was allowed to choose between the adoption of the faith of Islam with immidiate liberty, or adherence to his own religion with incarceration for indefinite period. With many respectable precedents to guide him, he selected the former alternative, was received into Imperial favour, and called Tatarkhan His sons. Buridkhan, and Jalalkhan adopted the title of Khanzada from their father (C and T Page 335)

भा०—इस हार पर बादशाह बाबर ने तिलोकचन्द को यह फतवा सुनाया कि तुम या तो इस्लाम धर्म स्वीकार करलो अन्यथा सदा के लिये कैदी रक्खे जाओगे, वह बड़ी प्रतिष्ठा के साथ मुसल्मान बनाया गया, उसने यह देखकर कि बादशाह साहब संगठन के महत्व को खूब जानते हैं और उनकी दिली मनशा मेरे मुसल्मान होजाने में ही है अतएव उसने मुसल्मान होजाना स्वीकार किया तब उसका नाम तातारखां रक्खा गया उसके पुत्र बुरीदसिंह और जयलाल सिंह के नाम बदले जाकर बुरीदखां और जलालखां रक्खे गये जिन्होंने अपने वंश व समुदाय का नाम खानज़ादा रक्खा यह वंश ईस्वी सन् १३५१ से चला है अतएव आज सन १९२६ में वह नौमुस्लिम जाति ५७५ वर्ष की है अतः संघठन के महत्व को यदि क्षत्रियगण व हिन्दू समुदाय समझते हों तो इन्हें शुद्ध करके सब व्यवहार इनके साथ कर लेना चाहिये अन्यथा हिन्दू जाति ! तेरे दुर्दिन

समीप आरहे हैं जो कुछ आपकी, आपके भाइयों की, आपके पुत्र पुत्रियों की व आपके देव मन्दिरों की दशा होरही है इससे बुरी दशा होगो और सदा के लिये तुझे पछताना पड़ेगा। तेरे शास्त्रों में शुद्धि व प्रायश्चित विधि भरी हुयी है फिर वह कब काम आवेगी ?

जाति और कौम नामक ग्रन्थ में लिखा है कि प्रतावगढ़ के खानज़ादा लोग कई प्रकार के क्षत्रियवंशों का समुदाय है अर्थात् विशन, राजकुमार, बछगोती, भाले सुलतान, सोमवंशी, बैस, कानपुरिया, चौहान, बिल खरिया, हरसयां, मंडारकिया आदि आदि प्रकार के क्षत्रियगण जो युद्ध में बादशाहों से हार गये वे सब ख़ानज़ादा बना दिये जाते थे। बादशाही जमाने में मुसलमान बादशाहों का ऐसा नियम था कि वे युद्ध में लड़नेवाली जातियों को सुदृष्टि से नहीं देखते थे क्योंकि उनको प्राय: यह डर रहा करता था कि कभी न कभी भारतवर्ष के क्षत्रियगण व अन्य वीर हिन्दू जातियं हमको यहां से निकाल भगायेंगी। इसलिये उनके यह नियम था कि क्षत्रियगण व अन्य वीर हिन्दू जातियों का या तो सर्व नाश कर दिया जाय या अपनी संगठन शक्ति उन सबको मुसलमान बनाकर सुदृढ़ करली जाय। तदनुसार उस समय जहां कहीं क्षत्रिय राजा लोग हिन्दू संगठन के अभाव से पराजित होजाते थे तहां ही वे सबके सब कच्चे बच्चे बाल बच्चों सहित गिरफ़्तार कर लिये जाते थे। और नाना प्रकार के उनको कष्ट दिये जाते थे।

खानज़ादों में एक गोतवाल गोत है, जादोंवंश के अन्तर्गत ही ये लोग हैं, इनके विषय में मा० स० रिपोर्ट के पृष्ठ २१० में लिखा है कि "जब दिल्ली में तुर्कों का क़ब्ज़ा हुआ तब तक

मेव सब हिन्दू थे और प्रायः लूट मार किया करते थे, इससे बादशाह गयासुद्दीन बलबन ने संवत १३२३ में इनपर चढ़ाई करके एक लाख आदमियों को कतल करवाया और बाकी को मुसल्मान किया* गोतवालों में कुछ सरदार हिन्दू किसी तरह बाकी रह गये थे उन्हें फिरोज़शाह तुग़लक ने संवत १४१३ में कैद करके गर्दन मारने का हुकुम दिया, तब उनमें से दो भाई सांभरपाल और सोपरपाल ने मुसल्मान होकर अपने प्राण बचाये, बादशाह ने सांभरपाल का नाम नाहर बहादुर और सोपरपाल का नाम छज्जूखां रखकर इन्हें खानजादों का खिताब दिया। ये बयाने के राजा धनपाल (थन पाल) जादोंवंश में से अपने को बतलाते हैं।

नाहर बहादुर को बादशाह फिरोजशाह तुग़लक ने मेवात का इलाका देदिया जिसके पीछे इसके नौ बेटों ने अलवर, तिजारा झज्झर, रिवाड़ी और बहरोड़ आदि में अपनी अलग अलग गद्दियें नियत कियीं।

हम ऐसे स्थान के रहने वाले हैं जहां अलवर व जयपुर राज्य की सीमायें मिलती हैं तहां इन लोगों के आचार विचार व रहन सहन के ढंग से हम कह सकते हैं कि इनमें अभी तक भी हिन्दुत्व विशेषरूप से भरा हुवा है ऐसी दशा में कमी के-

*अबही सन १९२५ में फ्रान्स ने Demascus दमिश्क के जेलखाने में केवल १२००० बारह हजार मुसल्मान कतल किये गये थे जिसपर भारत के मुसल्मानों ने बड़ा कोलाहल मचाया था, इन्हें अल्लाताला को याद करके अपने सहधर्मी बादशाहों के जुल्मों को नहीं नहीं अपने खुद के किये हुये अजमेर, आगरा, गोंडा, मुलतान, पानीपत, सहारनपुर,कोहाट आदि आदि स्थानों के हत्याकाँडों को याद करना चाहिये कि इनके अत्याचारों को देखते हुये फ्रान्स ने कुछ भी नहीं किया।

बल इस बात की है हिन्दू लोग भगवान श्रीकृष्ण और श्रीराम को घट में रखते हुये इन लोगों को शुद्ध करके अपनालें क्योंकि प्रेम और संगठन से संसार में सब कुछ हो सका है।

क्षत्राणियों का सतीत्व नष्ट किया जाता था। तबही से पतिव्रता क्षत्राणियें जीते जी अपने पति के साथ जलकर सती हो जाया करती थीं। अन्यथा आत्म हत्या करना धर्मशास्त्र की आज्ञानुसार महा पाप लिखा है। इस प्रकार सतियों का होना भारतवर्ष में करीब हजार बारह सौ वर्ष से चला था। जिसको बृटिश गवरमेंट ने अपने राज्य में रोक दिया।

इस तरह जब गिरफ़ार किये हुए क्षत्रिय आदि लोग असहय पीड़ा भोगते भोगते आतुर होजाते थे तब उन्हें फ़तवा सुनाया जाता था कि 'या तो वे लोग मुसल्मान धर्म को स्वीकार करें अन्यथा क़त्ल कर दिये जायं' इस तरह बहुत से क्षत्रियगण जिनमें आत्मिक बल होता था वे धर्म के हेतु तलवार के नीचे अपनी गरदन झुका देते थे परन्तु इस्लाम धर्म को स्वीकार नहीं करते थे परन्तु जो निर्बल और भीरू होते थे वह बादशाही साम, दाम, दण्ड भेद की नीति में फँस जाते थे वे लाचार इस्लाम धर्म को मंजूर कर लेते थे। वे ऊपर से दिखावटी मुसल्मान बने रहते थे परन्तु अन्तरात्मा से वे हिन्दू ही रहते थे।

इसही तरह से उपरोक्त भिन्न भिन्न प्रकार के क्षत्रिय वंशज खानज़ादों की दशा जाननी चाहिये इनमें अबतक कई बातें हिन्दूपन की विद्यमान हैं और यह शुद्ध होने योग्य हैं।

एक बार हम अलवर में व्याख्यान देने के लिये गये थे तहां सनातन धर्म सभा की ओर से पंडित चन्द्रदत्तजी शास्त्री राज पंडित की प्राधान्यता में सनातन धर्म सभा की ओरसे हमारा

व्याख्यान बड़े मन्दिर में हुवा था जिसके अनन्तर दो खानज़ादा सज्जन हमारे पास आये और अपनी जाति के उच्चत्व के विषय में निवेदन करते हुए अपने को शुद्ध किये जाने के विषय में हमारी सम्मति पूछने लगे इसके उत्तर में हमने उनसे कहा कि आप लोग शुद्ध किये जा सकते हैं परन्तु यह बात हमारे अ-केले की शक्ति में नहीं है क्योंकि हिन्दू समुदाय में संकीर्णता के भाव घुसे हुए हैं अतएव यदि हम प्रत्यक्ष रूप से आप लोगों की शुद्धि के लिये कह भी दें तो हिन्दू समुदाय हमसे कोसों दूर भागने लगेगा और हमको आर्य्य समाजी कहकर हमारी निन्दा करने लगेगा यह वृतान्त विक्रम सम्वत् १६६२ के आस-पास का है उस समय शुद्धि के नाम से लोग चौंकते थे ऐसी स्थिति में अब भी समय है कि हिन्दूजाति हिन्दूधर्म को समुद्र के तुल्य बनावे अर्थात् जिस प्रकार से समुद्र में कूड़ा, करकट, मैला कुचैला सब कुछ जाकर के मिल जाता है और समुद्र मीठे से मीठे जल को भी अपने में मिलाकर अपने समान खारी करके अपने में समा लेता है अथवा जिस प्रकार श्री गंगाजी में सब तरह की छोटी मोटी नदियों का जल जाकर के पड़ता है और सब शुद्ध होजाता है तैसेही हिन्दू धर्म में जो आवे आने दो आते हुए का Wel-Come शुभागमन करो और मु-सलमान बादशाहों से संगठन शक्ति का सबक सीखो अन्यथा ऐ हिन्दू सन्तानो ! यदि आप लोग न जगे तो एक शताब्दि में सब हिन्दू मुसलमान ईसाई हो जायेंगे। क्या आप नहीं देखते हैं कि संगठन शक्ति के बदौलत पृथिवी पर मुसलमान अड़ता-लीस करोड़ हैं दूसरी ओर करीब इतने ही से ईसाई होंगे अब इन सब धर्मावलम्बियों के मुकाबिले में आप केवल इक्कीस करोड़ हिन्दू हैं। जो चटनी के बराबर हैं जिसमें भी करीब

सात करोड़ तो अछूत भाई हैं जिनको तो आपने अछूत समझ कर ही अपने से दूर मान रक्खे हैं विचार का स्थल है कि आप लोग कुत्ते और कव्वे का आदर करें, कुत्ते को अपने पास बिठावें, गोदी में लें, अपने बराबर सुलावें, और कव्वों को श्राद्धादि में जिमावें और यह दोनों हों बुरी से बुरी चीज को खा आवें व सूंघ आवें पर आपको इनसे परहेज नहीं। आपके अछूत भाई जब तक हिन्दू हैं, चोटी रखाते हैं, ब्राह्मणों के चरणों में मत्था टेकते हैं, श्री गंगा स्नान करते हैं, गौमाता की पूजा करते हैं, श्रीराम और कृष्ण को मानते हैं तब तक विचारे हिन्दू धर्म में कुत्ते और कव्वे के बराबर भी नहीं समझे जाते परन्तु जहां उन्होंने चोटी कटाकर और गौमाता को भक्षण करने की प्रतिज्ञा करके हिन्दूधर्म को तिलांजली देकर जहां मियाँ व मिस्टर बन बैठे कि वे झटपट आपके बराबर बैठने के व आपके साथ सब प्रकार का सहयोग करने के व आपके कुओं पर चढ़ने के व आपकी दुकान व घरों में आने जाने व नौकरी चाकरी करने योग्य होजाते हैं और आप खुशी से मुसलमान दर्जियों से कपड़े सिलवाने व उनके हाथों से सोडावाटर व लेमनेड लेने लगजाते हैं यह आपके अछूतों की महिमा गौ भक्षक व आपके कट्टरशत्रू होजाने पर बढ़जाती है और आप कहने लगते हैं आइये खां साहब आइये मियांजी साहब तशरीफ़ रखिये ऊंचे की ओर सरक आइये। परन्तु यदि वही अछूत हिन्दू आपके मकान व दुकान पर आता है तो वह दुरदुराया व डाटा जाता है और कभी कभी अबे तबे के शब्दों द्वारा व थप्पड़ लात घूंसे से भी पूजा कर दिया जाता है। ऐसी दशा में मंदिरों में भगवान की मूर्ति के दर्शन करना तो दूर रहा बेचारे मन्दिरों के आस पास,

नहीं नहीं, मन्दिरों में आने जाने की सड़कों पर बिचारों की साया तक भी नहीं फटकने पाती है, यह है हिन्दू धर्म की दशा देखें ! भारत का हिन्दू समुदाय देश की करुणा जनक अवस्था पर क्या करता है ?

१५ गद्दी यह एक राजपूत जाति है, युद्ध करने में बिचक्षण थी अतएव मुसलमान बना लियी गयी थी, विपत्तिवश गाय भैंस चराना इनका धन्दा है, असल में यह घोसी जाति का एक उपभेद है आदि में ये लोग यदुवंशी क्षत्रिय थे जो जबर्दस्ती मुसल्मान बना लिये गये थे मिस्टर C. S. W. C. कलक्टर ने लिखा है किः—

They are probaby closely allied to the Ahirs; in fact many of them are almost certainly Ahirs who have embraced Islam.

भा०—ये लोग अहीरों से बहुत ही मिले जुले से हैं यथार्थ में बहुतेरे इनमें से अहीर ही हैं जिन्होंने विवश इस्लाम धर्म स्वीकार करलिया है।

पंजाब में इनके दो भेद पाये जाते हैं एक तो करनाल के आस पास पाये जाते हैं, दूसरे वागरा और चम्बा के पहाड़ों के बीच के देशों में बसते हैं। (P. Ethnography 498)

युक्त प्रदेश के अवध प्रदेश में यह जाति विशेषरूप से है किसी समय ये लोग अवध में शक्तिशाली थे और राजपूतों का सामना करते थे, अवध (C. S. Report) सी० एस० रिपोर्ट में तथा उन्नाव क्रानिकल्स नामक ग्रन्थ में लिखा हैः—

They were old occupiers of Oudh and they

were powerful enough to make invasions costly to the advancing Rajputs.

भा०—ये लोग अवध के प्राचीन मालिक थे और राजपूतों पर चढ़ाई कर सकने को शक्तिशाली थे।

म० ग० रिपोर्ट में इनके २५५ भेद लिखे हैं जिन पर दृष्टि देने से निश्चय होता है कि इस जाति के अन्तर्गत कुछ हिन्दू जातियें भी मिली हुयी हैं जो एकसा धन्दा करने और मुसलमान करलिये जाने के कारण एक गादो व गद्दी नाम से पुकारी जाती हैं, कुछ भेद शहरों के निकास के कारण से भी पड़े जान पड़ते हैं जैसेः—

१ अहीर २ बाछर ३ बैस ४ भदोरिया ५ भट्टी ६ बिशन ७ चमरवंशी ८ चन्देल ९ चौहाण १० छत्री, डोमर, घोषी, गूजर, हुड़किया, ११ जाट १२ कम्बोह, कोरी, मैवाती, पठान १३ राठौड़, सय्यद, शेख, १४ ढांक, तेली, १५ तोमर और बुरकिया। इनमें से एक से लेकर १५ नम्बर वाले भेद तो शुद्ध क्षत्रियों के हैं जिनसे प्रकट होता है कि इन पन्द्रह वंशों के प्रसिद्ध क्षत्रिय जबर्दस्ती मुसल्मान कर लिये गये थे इसही लिये वे नाम के मुसल्मान होने पर भी इनमें बने हुये हैं। बाकी भेद जातियों से सम्बन्ध रखते हैं जिनसे निश्चय होता है कि ये जातियें मुसल्मान होने पर गादियों का सा धन्दा करने से वे के वे बने रहे।

कुछ भेद निकास के कारण से पड़े हैं यथाः—

अहरवार, अवधिया, बहराइची, गोरखपुरी, कनोजिया, मथुरिया, पूरबिया, सकसेना, सरवरिया और शाहपुरी।

इनकी रीति भांति में कुछ अधिक अन्तर नहीं हुआ है क्योंकि बहुतसी बातें हिन्दुओं की सी इनमें चली आरही है

हैं इनकी लोक संख्या युक्तप्रदेश में ५१६७० है जिलेवार संख्या इस प्रकार है।

सहारनपुर में ३६०, मेरठ में ३२२१, बुलन्दशहर में १२०१ अलीगढ़ में १२०२, एटा ३८६, बरेली में १३५४, बदायूं में ४३८१, मुरादाबाद में २३७, शाहजहांपुर में १०७६, पीलीभीत में ४४६, गाजीपुर में १७८, गोरखपुर २३६४, वस्ती में ३४२४, आज़मगढ़ में ४७६ तराई में ३६३, लखनऊ में ३५८१, उन्नाव में ११६८, रायबरेली में ३५३, सीतापुर में ४१६४, हरदोई में १०५६८, खेड़ो में ७३४७, बहराइच में २०६८ और बारांबंकी में १३४० हैं* ।

इस जाति की विशेष लोक संख्या बंगाल व बिहार में है अकेले चम्पारन जिले में बीस सहस्र हैं, इनके आचार बिचार के सम्बन्ध में क्षत्रिय मित्र भा० १६ मार्च सन् १९२४ के पृष्ठ १६ में लिखा है कि "गद्दी नामधारी बीस सहस्र नौमुसलिम हैं जो ग्वाले का काम करते हैं इनका अधिकांश आचार व्यवहार हिन्दुओं का सा है।

१६ गाड़ाः—यह युक्त प्रदेश की एक नवमुसलिम जाति है पहिले ये लोग राजपूत थे बादशाही समय में ये लोग जबर्दस्ती मुसल्मान बना लिये गये थे, मिस्टर बर्न साहब ने लिखा हैः—

It is not certain whether these are Musalman Rajputs or Connverted slaves (C. S. Report.)

नोटः—सौ से कमकी लोक संख्या वाले जिले हमने छोड़ दिये हैं।

भा०—यह निश्चय नहीं है कि ये लोग मुसल्मान राजपूत हैं या गुलाम बनाये हुये मुसलमान हैं ।

इस जाति की लोक संख्या युक्तप्रदेश के मेरठ के इलाके में है और अच्छे कृषीकार हैं इन लोगों की रीति भांति उच्च हिन्दुओं की सी है केवल ये लोग अपने मुरदों को गाड़ते हैं इसही कारण से ये लोग 'गाड़ा' कहे जाते हैं ये लोग अपनी लड़कियों का विवाह सहारनपुर की ओर हर किसी मुसलमान के साथ न करके केवल सय्यदों के साथ करते हैं इससे इनका उच्चत्व प्रकट होता है और शुद्ध कर लेने योग्य है ।
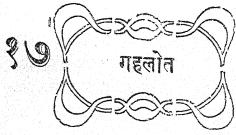
यह सूर्य्यवंशी क्षत्रियों का एक प्रसिद्ध भेद है इस का शुद्धनाम 'गुहलोट' था जिसका अर्थ गुह=गुफा और लोट का अर्थ लेटना, रहना अर्थात् जिस वंश ने गुफा में रहकर अपने वंश की रक्षा कियी वह 'गुहलोट' कहाते कहाते गहलोत कहा जाने लगा यह वंश श्री रामचन्द्रजी के बेटे लव के वंशज हैं आजकल इसही वंश की गद्दी पर महाराना उदयपुर हैं पहिले इनके पूर्वजों का राज्य लाहौर में था वहां से इनका राज्य गुजरात तक बढ़ा और वल्लभीपुर के राजा हुये तहां बहुत समय तक राज्य करते रहे, इस वंश का अन्तिम राजा सिलादित्य था जो युद्ध में मारा गया, उसकी रानी का नाम पुष्पावती था जो गर्भवती थी रानी निराश्रय होकर आबू

के पहाड़ में आछिपी जहां उसके लड़का उत्पन्न हुवा और जिसका नाम 'गुह' रक्खा गया वह वड़ा हुवा और भगवान की कृपा से फिर उसने ईडर का राज्य प्राप्त करलिया अतएव उसकी याद में उसके वंश का नाम गुहलोत व गहलोत हुवा।

करनल टाड ने अपने ग्रन्थ में लिखा है कि श्रीरामचन्द्रजी की कई पीढ़ी पीछे अनुमान् विक्रम संवत २०० वा ईस्वी सन् १०४ में कनकसेन नामक एक सूर्यवंशी राजा ने अयोध्याजी को छोड़कर स्वराष्ट्र देश में आकर अपना राज्य जमाया उसी कनकसेन के वंश में कई पीढ़ियों पीछे विजैसेन नामक राजा हुवा जिसने अपने नाम पर बिजैपुर बसाया जो सम्भवतः आजकल बीजापुर कहाता है।

कनकसेन के वंशजों ने बल्लभीपुर में अपना राज्य जमाया जिसकी यादगार में उन राजाओं का कुल नाम बालकराय प्रसिद्ध हुवा यह वंश नाम अनुमान १००० वर्ष तक चलता रहा सन् ५०० ईस्वी में सूर्यवंश का अन्तिम राजा शिलादित्य हुवा म्लेच्छों द्वारा घिर कर मारा गया उसके वंशजों ने भग करके अपना राज्य ईडर में जमाया शिलादित्य के वंशजों में एक ग्रहादित्य नामक राजा हुवा जो ईडर को छोड़कर अहाड़ नामक स्थान में चला गया जो आजकल के उदैपुर के नज़दीक रेलवे स्टेशन से एक मील की दूरी पर हैं। यहांपर ही राणावंश का दग्ध स्थान भी है। जिसे लोग ग्राम तीर्थ भी मानते हैं। इस स्थान के निवास के कारण इस वंश का नाम गहलोत से बदल कर अहड़िया भी पड़ा।

इस स्थान पर करनल टाड़ के मत में और अन्य इतिहास-वेत्ता के मत में कुछ अन्तर आता है।

सम्भवतः शिलादित्य को किसी ने ग्रिहादित्य लिखा हो

और उसही की रानी भागकर पहाड़ों में छिपी हो और वहां उसके पुत्र होने से इन वंश का नाम गुहलोट व महलोत पड़ा जान पड़ता है यह 'अहड़िया' गहलोतों का नाम बारहवीं शताब्दी तक चलता रहा और इसही नाम के अन्तर्गत एक 'अहर' नामकी भी राजपूत जाति है।

जो राज्य विहीन हो जाने से भागकर इधर उधर चले गये युक्तप्रदेश में इनकी लोक संख्या २४४१६८ है जो वहां विशेष-रूप से रुहेलखंड के आसपास जमना के किनारे बसते हैं और खेती द्वारा अपना निर्वाह करते हैं।

बारहवी शताब्दी के समीप डूंगरपुर में मोरीवंश का राज्य था जिसको अहदित्य के भाई रकूप ने मोरीवंश वालों से लड़-कर अपने कब्जेमें कर लिया रकूप के छोटे भाई महूप सी-सोधा में चले गये और वहां पर अपना राज्य जमाया जिससे इस गहलोत वंश का नाम सीसोदिया पड़ा यह सीसोद गांव उदैपुर के राज्य में अभी भी है, इसही क्रमानुसार सूर्य वंशज राजाओं के नाम पहिले गहलोत पड़ा फिर उससे सैकड़ों वर्षों पीछे अहड़िया नाम हुवा और अहड़िया नाम सैकड़ों वर्षों तक चलते रहने के पश्चात् इस वंश का सिसोदिया हुवा आज-कल के महाराना उदयपुर सीसोदिया राजपूत नाम से प्रसिद्ध हैं।

. मोरीवंश वाले इसही कुलकी शाखा हैं जो अपनी दीनावस्था के कारण से आजकल 'मुराव' कहलाते हैं इनही के बड़ेरों में राजा चन्द्रगुप्त हुवे हैं जो चक्रवर्ती राज राजेश्वर थे।

जिस समय कुमार बप्पारावल ने चित्तौड़ पर कब्जा किया उस समय चित्तौड़ में मोर्य शाखा के राजा मान राज्य करते

थे संवत् ७७१ में मोर्यवंशी राजा मान को मारकर बप्पारावल ने चित्तौड़ अपने कब्जे में करलिया और अपने राज्य को खुरासान, और अन्य म्लेच्छ राज्यों में फैलाया, और वहां के मुसलमान राजाओं को परास्त करके महाराज बप्पा ने इसफहान, कन्धार, काश्मीर, ईराख, ईरान, तूरान और काफ़रिस्तान, के राजाओं को पराजित करके अपना राज्य वहां जमाया और वहां के मुसलमान बादशाहों को शुद्ध करके उनकी लड़कियों के साथ विवाह किया जिससे महाराज बप्पा के हिन्दू और शुद्ध कियी हुई मुसलमान रानियों के द्वारा १३० पुत्र उत्पन्न हुए जो नोशेरा, पठान आदि के नामों से विख्यात हुए हिन्दू रानियों से ६८ पुत्र और ३२ शुद्ध किये हुए मुसलान रानियों से* ।

इस प्रकार की शुद्धि व विवाह सम्बन्धी विवर्ण पुराणादिकों में बहुत मिलता है परन्तु दुख के साथ कहना पड़ता है कि हिन्दूजाति विचारशक्ति से काम नहीं लेती और न अपने शास्त्रा को देखती है किन्तु नव मुसलिमों की भी शुद्धी करने व शुद्ध किये हुवों के साथ खान पान व बेटी व्यवहार करने से ऐसी दूर भागती है जैसे सिंह को देखकर बकरी, ऐसी दशा में हिन्दू जाति का पतन हो, हिन्दू जाति जूतों से पिटे, हिन्दूजाति को स्त्रियों का सतीत्व नष्ट हो, हिन्दू गाजर मूली की तरह काटे व घनारे जांय तो इसमें सन्देह ही क्या है। और हमारा विश्वास है कि जब तक हिन्दूजाति के कुविचारी अज्ञ बुड्ढे सुड्ढे खुड्ढे और लुड्ढों की ठीक ठीक मरम्मत न होगी तब तक इनकी आंखें न खुलेंगी क्योंकि यह लोग हिन्दू संगठन के मरम को नहीं समझते तब देश का भला कैसे हो ?

---

*देखो टाड राजस्थान द्वितीय खंड अध्याय २ पृष्ट १०६

गहलोतों के उपभेद इस प्रकार से हैं:—

१ अहरिया, २ मंगुलिया, ३ सोसोदिया, ४ पीपरा ५ कलुम ६ गहोर, ७ धोरनिया, ८ आसायच, ६ हुल, १० गोहिल ११ गोराह, १२ मुग्रसाह, १३ भीमला, १४ कामकोट, १५ कोटेचा १६ सोढा, १७ ऊहर, १८ उसेबा, १६ निररूप, २० नदोरिया, २१ नदहोटा, २२ ओजाकड़ा, २३ कूटचरा, २४ दोसौद, २५ बटेवरा, २६ पहा, और २७ पुरोत।

गहलोत वंश का महामंत्र यह है:—

"जेहि राखे प्रण धर्मको,
तेहि राखे करतार ॥"

अर्थात् जिन का धर्म प्रण पर विश्वास है भगवान उस के प्रण की अवश्य रक्षा करते हैं।

युक्त प्रदेश और अवध में गहलोतों का एक भेद चिराड़ राजपूतों का भी है जो चित्तौड़ राजपूत कहाते कहाते चिराड़ राजपूत कहाने लग गये चिराड़ों का पूर्वज सरदार गोविंदराव दिल्ली के महा प्रतापी पृथिवीराज चौहान के साथ राजा जयचन्द राठौड़ के साथ कन्नौज में लड़ने आया था और इनाम में १८० गांव जो कानपुर के आस पास थे उन्हें मिले थे। उन्नाव में जो गहलोत हैं वे औरंगज़ेब के समय में गये हुए हैं मिस्टर ग्रोस ने अपने ग्रन्थ में लिखा है कि यह बंश बृजमंडल में विशेष है और बृज में यह लोग साह, चौधरी, राव इन पदवीयों से कहे जाते हैं। राजा लछमनसिंह ने लिखा है कि बुलन्दशहर के ज़िले में इन की याद में एक गुलहोटी स्थान है

कानपुर में यही लोग गौड़ राजपूत भी कहलाते हैं बिल्लौर के परगने में यह लोग बहुत हैं।

कानपुर सेट्ल रिपोर्ट में लिखा है कि That Pertap Chand Gahlot the conqueror of Chittor was married to a daughter or grand daughter of the famous Nausherwan,

भाः—प्रतापचन्द्र गहलोत कि जिस ने चित्तौड़ को फतह किया था उस ने नौशेरवाँ बादशाह की लड़की व पोती को शुद्ध कर के विवाह कर लिया।

इस से भी निश्चय होता है कि कुछ शताब्दियों पूर्व भी क्षत्रिय राजा लोग मुसलमान राजाओं को पराजय कर के उन की लड़कियों थो शुद्ध करके उनके साथ विवाह कर लेते थे।

इस प्रकार गहलोत वंश वाले क्षत्रियों का दौर दौरा दूर दूर तक होने से और रात दिन की लड़ाइयां होने से विशेष स्थानों में यह विजयी हुए और कहीं इन्हों ने मुसलमान बादशाहों से हार भी खाई जिसके फलस्वरूप हजारों गहलोत राजपूत क़त्ल कर दिये गये और बचे बचाये थोड़े से मुसलमान करलिये गये जिनमें से युक्तप्रदेश में गहलोत नौमुसलिम राजपूत सन् १८९१ की मनुष्यगणना के अनुसार १९७३ है हिन्दू और मुसलमान दोनों मिलाकर ३८२१८ है। अकेले बुलन्दशहर के जिले में १२०० तथा जौनपुर में ११५ है। इन गहलोत भाइयों से मिलती जुलती है अतएव इनके साथ प्रेम और भाई चारा स्थापित होना चाहिये।

हिन्दू गहलोत राजपूत युक्तप्रदेश में ३६२४५ हैं, इनकी जन संख्या वैसे तो सम्पूर्ण जिलों में ही है पर मेरठ के जिले मे १०१८९, बुलन्दशहर में ३१४०, अलीगढ़ के जिले में २८२७,

मथुरा के जिले में २१७७, आगरे के जिले में ३०५६, एटाह व कानपुर के जिले में ढाई ढाई हजार आदि आदि।

राजपूताना में गहलोत राजपूत ६३९६४ हैं जिनमें से पुरुष ३५४२४ और स्त्रियें २८५४० हैं।

१८-गूजर

यह एक क्षत्रिय जाति है परन्तु इसकी वर्त्तमान स्थिति को देखते हुये लोग इनके क्षत्रियत्व पर शंका करते हैं पर इनकी दीनावस्था व राजबिहीनता के कारण ऐसी शंका होना स्वाभाविक ही है।

इस नामकी मीमांसा करते हुए विद्वानोंमें से किसी विदेशी विद्वान ने इस जाति को रूस और तुर्किस्तान की सरहदी गुर्जी जाति से बनी लिखी है किसी ने अटकल पंजू कुछ तो किसी ने इन्हें 'गोचोर' अर्थात् गौओं के चुराने वाली जाति लिख मारी इस ही तरह किसी ने कुछ तो किसी ने कुछ लिख मारा है ऐसी ऐसी मन गढ़ंत अटकल पंजू बातों का खंडन फिर किसी समय करेंगे।

नाम विवर्ण

हमने अपने अनुसन्धान से पता लगाया है कि ये लोग यथार्थ में क्षत्रिय वंशज हैं, पूर्व ये लोग राज्याधिकारी थे जब ये लोग राज्य विहीन होगये तब गउवें चराने आदि का धन्दा करने लगे ऐसा देख

कर किसी विद्वान ने ऐसा भी लिखा है कि ये लोग गोचर थे, गो + चर = गोचर अर्थात् गायों को जहां ये लोग चराते थे उस स्थान को गोचर कहते हैं उस ही से इन को 'गोचर' कहा है। इस का अर्थ ऐसा होता है कि 'गाव इन्द्रियाणि चर त्यस्मिन्' अर्थात् इन्द्रियें जहां चरती हैं वह स्थान 'गोचर' कहाता है जिसे गोचरण स्थान भी कहते हैं यथाः—

अब्रवीत् प्राञ्जलिर्भूत्वा गुहो गहन गोचरः।

वा० रा० २। ८५। ५

पुनः—

अखण्डं सच्चिदानन्दमवाङ्मनस गोचरम्।

वेदान्तसारे

अर्थ तो ऊपर के भाव से मिलता जुलता ही है।

२-एक दूसरे विद्वान ने ऐसा लिखा है कि गौचार शब्द से इस जाति का नाम पड़ा है यह गौचार शब्द गौ + चार = गौचार जिस का अर्थ गायों को चराने वाला ऐसा होता है इस से बिगड़ कर बना लिखा है।

३-एक तीसरे विद्वान का ऐसा कहना है कि "गुर्जर देशोद्भवा गुर्जरा" अर्थात् गुर्जर देश के रहने वाले गुर्जर कहाते हैं और यही गुर्जर शब्द बिगड़ कर भाषा में गूजर होगया। इस पर शंका होती है कि गुर्जर देश में तो सबही जातियें रहती हैं तब जिस जाति का यहां प्रसंग है वह जाति ही गुर्जर हो और अन्य नहीं यह असम्भव है। फिर भी द्वितीय शंका यह होती है कि देश का नाम गुर्जर भी कैसे पड़ा? तो इस गुर्जर शब्द का अर्थ ऐसा होता है किः—

गर शत्रुकृत ताड़न बधोद्यमादिकं वा उज्जरयति यो देशः कलिंगाःसाहसिका इति वद्देशस्य जने लक्षणेति ज्ञेयम्

ये भिन्न भिन्न विद्वानों के भिन्न २ मत पाठकों की विज्ञप्ति के लिये लिखे हैं उन की उत्तरदायित्वता उन पर है, हमने अपनी जाति यात्रा के भ्रमण में बड़े २ विद्वानों से इस 'गूजर' शब्द की व्युत्पत्ति पूछी तिस के उत्तर में किन्हीं किन्हीं विद्वानों ने हमें बतलाया कि यह शब्द 'गुरुतर' शब्द से बिगड़ कर बना है अर्थात् पूर्व काल में यह राज्याधिकारी क्षत्रिय वंश था और इन का राज्य पंजाब व दक्षिण के आस पास बरार प्रान्त में व अहमदाबाद के समीप प्रदेश में था तब उन दिनों में विदेशी व विधर्मी राजाओं की दूर २ से इस देश पर चढ़ाइयां होती थीं, अनुमान दो हजार वर्ष पूर्व यह जाति यहां राज्याधिकारिणी थी परन्तु अपनी वीरता व बल पराक्रम के कारण उस समय यह पूर्ण ऐश्वर्य्य सम्पन्न थी और शत्रुओं से बड़ी कड़ी मुठभेड़ लेती थी अतएव शत्रुओं ने इस जाति को गुरुतर कहा था जिस का अर्थ अधिक बलवान, अधिक शक्तिशाली का होता है, सैकड़ों वर्षों के पश्चात् मुसलमानी अत्याचार इस देश में बढ़ा संस्कृत विद्या का लोप हुवा फारसी अर्बी का प्रचार बढ़ा और यह गुरुतर शब्द बदल कर गूजर होगया, इस तरह जब यह जाति राज्यसत्ता विहीन हो गयीं तब "भूल गये राग रंग भूल गये जकड़ी, तीन बात याद रहीं तेल लूण लकड़ी" इस के अनु-सार यह जाति भी अपने शुद्ध नाम को भूल कर केवल गूजर ही कहने सुनने व मानने लगी। शास्त्रों में गुरुतर शब्द का प्रयोग भी कई स्थानों में आया है यथाः—

गतो दशरथः स्वर्गं यो नो गुरुतरो गुरुः ।

(वा० रा० २-७६-२)

इसका भावार्थ तो ऊपर कहा जा चुका है इन्हीं गूजरों ने

अपने राजस्थान का नाम गुजरात रक्खा जो संस्कृतज्ञों द्वारा गुर्जर देश कहाता है।

अब प्रश्न यह होता है कि जब उपरोक्त सबही लेख असंगत

प्राचीन नाम

से हैं तब यथार्थ में इस जाति का प्राचीनतम नाम क्या था ? इसका उत्तर यह है कि जिस समय में अर्थात् अनुमान दो सहस्रवर्ष पूर्व यह जाति सब प्रकार से विद्या व ऐश्वर्य्य सम्पन्न बृहत् राज्य सत्ताधारी थी उस समय ये लोग संस्कृतज्ञों द्वारा 'गुरुजन, कहाते थे अर्थात् ये लोग महाबली व पौरुष शक्तिशाली तथा युद्ध विद्या में दक्ष थे अतएव विद्वानों ने इन्हें 'गुरुजन' कहा था इसही गुरुजन शुद्ध शब्द का बिगड़कर 'गुरुजर' हुवा जो संस्कृतज्ञों द्वारा 'गर्जर, ऐसा शुद्ध रूप लिखा व बोला जाता है इसही गुर्जर जाति वाचक शब्द से आजकल का नाम गूजर प्रचलित होगया यह इस जाति की युद्ध परायणता का सूचक है।

इस जाति के वर्ण निर्णय सम्बन्ध में अनुसन्धान करने से

वर्ण-निर्णय

विशेष विद्वानों की सम्मतियें क्षत्रियत्व की निश्चित होती हैं यथाः—

In the Panjab and in the western districts of these provinces at least the tribe is fairly free from intermixture with the lower races. (C. & T. Page 442)

पंजाब और युक्तप्रदेश के पश्चिमी भागों में इस जाति की उत्पत्ति में किसी नीच जाति के पुरुष व स्त्री का संसर्ग नहीं है किन्तु जैसा कि सवर्णी रज व वीर्य्य से उत्तम जाति पैदा होती है तैसेही ये लोग नन्दवंशी क्षत्रिय हैं।

They are descended from a Rajput father and a woman of some low cast.

(C. & T. P. 442)

भा०—ये लोग राजपूत पिता व अपने वर्ण से नीचे की किसी स्त्री के पेट से पैदा हुये हैं। राजपूत के वीर्य्य से जो लोग पैदा होते हैं वे राजपूत ही कहाते हैं क्योंकि इस विषय को हम अपने 'ब्राह्मण निर्णय' ग्रन्थ में भले प्रकार प्रमाणित करचुके हैं। धर्मशास्त्रों में ऐसे प्रमाण मिलते हैं कि एक उच्च-वर्ण अपने से नीचे वर्ण की स्त्री को ग्रहण कर सक्ता है और ऐसा सदा से होता आया है। इसलिये यदि यह प्रमाण सत्य हैं तौ भी ठीक है। अन्यथा उपरोक्त प्रमाण से सिद्ध है कि इनमें नीच जातियों में से किसी का मिलाव नहीं है।

३-हिन्दू जाति व पंथ नामक ग्रन्थ के विद्वान लिखते हैं कि यह जाति अन्तिम मनुष्य गणना रिपोर्ट में क्षत्रिय वर्गीय कृषी करनेवाली जातियों के साथ लिखी गयी है।

४-इस जाति के भेद उपभेदों पर दृष्टि डालने से प्रमाणित होता है कि इनमें तुवर, चंदेल, चौहाण, रावल, खक्कड़, कल्सा, तोमर, भट्टी आदि प्रसिद्ध क्षत्रिय वंश भेद हैं।

५-प्रसिद्ध ऐतिहासिक विद्वान बाबू देवीप्रसादजी रिटायर्ड जज अपनी रिपोर्ट के पृष्ठ ४४ में इस जाति को क्षत्रिय मानी है।

६-मान्यवर मुंशी किशोरीलालजी रईस व मुंसिफ दर्जे दोयम अपने ग्रन्थ में लिखते हैं कि:—

"गूजर:—ये लोग भी अपने को क्षत्रिय समझते हैं।"

७-जनरल कनिंघाम अपनी रिपोर्ट के पृष्ठ ६१ में लिखते हैं कि:—

About a Century before Christ the Gujars

chief conquered Kabul and the Peshawar country and extended his sway over the whole of the upper Panjab, and the banks of the jamuna as far down as Mathura and Vindhyas.

(C. & T. Page 440)

भा०—गूजर सर्दार ने काबुल व पेशावर का मुल्क विजय करके अपने आधीन करलिया और यह ही नहीं किन्तु अपना राज्य सम्पूर्ण अपर पंजाब में तथा जमुना के किनारे किनारे के देशों में व विंध्याचल के सम्पूर्ण भागों में अपना स्वत्व स्थापित करलिया था।

Indian caste नामक ग्रन्थ में मि० धिल्सन लिखते हैं कि 'The Gujars and the Bargujars tribe of Rajput are often found together.

(C. & T. P. 442)

भा०—गूजर और बड़ गूजर राजपूतों की जातियें प्रायः एकहीं स्थान पर मिलती हैं।

By one legend current in the Punjab they claim descent from a certain Nandmihar who is perhaps Nand the foster father of Krishna.

भा०—पंजाब में एक लोकोक्ति प्रसिद्ध है जिसके आधारानुसार गूजर लोग कृष्ण को दूध पिलाकर पालने वाले पिता नन्दमिहर की सन्तान माने जाते हैं। इस जाति का मान्य पंजाब में विशेष है तहां इन के रहन सहन व रीति रिवाज़ के कारण ये लोग वहां ठाकुर माने जाते हैं इस ही से पंजाब में एक प्राचीन कहनावट चली आ रही है कि ये लोग नन्द की सन्तान हैं जो कृष्ण के पालक पिता थे जो अलेकज़ेन्डर दी ग्रेट (सिकन्दर) की कृपा से राज्याधिकारी हुये क्यों कि

इन्हों ने भैंस के दूध की बूंद पिला कर सिकन्दर की प्यास बुझायी थी।

१०-ईसा से एक शताब्दि पूर्व।काबुल और पेशावर में इन्हीं लोगों का राज्य था इनका आदि पुरुष एक हीना हुआ है कि जिसने:—

Extended his sway over whole of the upper Punjab and the banks of the Jamuna as fardown as mathura and the Vindhyas.

अपना राज्य सम्पूर्ण अपर पंजाब और जमुना के किनारे किनारे के देश व मथुरा से विन्ध्याचल पर्वत तक फैलाया।

पुनः—

Before the end of the third century a portion of the Gujars had begin to move southward down the Indus, and were shortly afterwards separated by another Indo Scythian wave from the north.

भा०—तीसरी शताब्दि के अन्त होने के पूर्व हिन्दुस्तान-वासी शकों की चढ़ाई उत्तर की ओरसे होने के कारण गूजर लोग सिन्धु नदी के दक्खिनी भागों में हटने लगे थे।

In the middle of the fifth century there was a Gujar Kingdom in south Western Rajputana, whence they were driven by the Balas into Gujrat of the Bombay Presidency; and about the end of the ninth century, Ala khan, the Gujar king of jammu ceded the Present Gujardesha, Correspondig very nearly with the Gujrat District to the king of Kashmir. The Town of Gujrat is said to have been built or restored by Ala khan Gujar in the time of Akbar.

आ०—पांचवीं शताब्दि के मध्य में राजपुताना के दक्षिणी भाग में गूजरों का राज्य था जहां से बालाजी ने इन्हें मुम्बई प्रान्तस्थ गुजरात की ओर भगा दिया और नवीं शताब्दि के अन्त में जम्बू के अलाखां गूजर राजा ने पंजाब के गूजर देश को काश्मीर के बादशाह को देदिया—गुजरात शहर को बादशाह अकबर के समय में आलाखां ने बसाया था।

आजकल ईस्वी सन् १९२६ है और यह सन् प्रभु ईसू मसीह की मृत्यु से चला है जनरल कनिंघाम की रिपोर्ट के अनुसार गूजर जाति को यह विजय ईस्वी सन से एक सौ वर्ष पहिले का पता लगता है अतएव आज से २०१३ वर्ष पहिले गूजर जाति ने काबुल व पेशावर का देश जीतकर अपने आधीन कर लिया था ऐसा प्रतिफल निकलता है अतएव जैसा अहीर प्रकरण में प्रमाणित किया जा चुका है कि आजसे १९७३ वर्ष पहिले पालवंशी महाराजों का राज्य था अतएव जनरल कनिंघाम की व हमारी सम्मति में केवल ३७ वर्ष का फर्क जो निकलता है वह साहब बहादुर के अनुमानिक लेख के कारण से है पर हमने उस काल के राजाओं के राज्यकाल के वर्ष, मास तथा दिन तक दिये हैं अतएव यहही कहना उचित होगा कि आजसे १९७३ वर्ष पहिले गूजरों ने काबुल व पेशावर का देश विजयकर के अपने आधीन करलिया था। और बढ़ाते बढ़ाते सम्पूर्ण राजपूताना आदि प्रान्तों में ९ वीं शताब्दी के अन्त तक भारत के विशेष भागों में इनका राज्य होगया।

जातिपद व स्थिति

हिन्दू जाति में इस जाति की मान मर्य्यादा व जातिपद तथा स्थिति कैसी है इस विषय में बड़े बड़े विद्वानों ने कई मत लिखे हैं उनमें से क्षत्रि-

यत्व सूचक कुछ प्रमाण तो आरम्भ में लिखे जाचुके हैं शेष यहां लिखते हैं:—

पी० एथनोग्राफी नामक ग्रन्थ में लिखा है कि Jats and Gujars and perhaps Ahir also are all of one ethnic stock; and this becanse there is a close connection between them.

भा०—जाट और गूजर और कदाचित अहीर भी यह सब एकही वंश के हैं क्योंकि इन सबका परस्पर बहुत समीप सम्बन्ध है।

जाट जाति को करनल टाड़ ने अपने इतिहास में छत्तीस राजकुलों में से एक लिखा है अतएव निश्चय हुवा कि जाट, अहीर और गूजर यह शुद्ध क्षत्रिय जाति हैं इसकी पुष्टी में उपरोक्त ग्रन्थकार लिखते हैं कि

And my reason for thinking so is precisely because they eat ahd smoke together.

अर्थात् ग्रन्थकार कहते हैं कि मेरा इन तीनों को एक बतलाने का कारण यह है कि इन सबका खान पान लेन देन आदि व्यवहार सब एकसा है।

पुनः—

१५ They can in most places, eat drink with Ahirs and Jats. (C. & T. P 548)

भा०—गूजर लोग सर्वत्र अहीर और जाटों के साथ खा पी सकते हैं। जामेटरी में एक रूल है कि:—

Things which are equal to the same thing are equal to one another.

अर्थात् जो चीज किसी दूसरी चीजों (वस्तुओं) के बराबर है वे सब आपस में बराबर हैं इस नियम के अनुसार जब

जाट जाति क्षत्रिय वर्ण में है और भारत के प्रसिद्ध ३६ राज-वंशों में इसकी गणना है और जब जाट व गूजरों का खाना पीना एक है तब जाट, गूजर और अहीर ये सबही क्षत्रिय सिद्ध हुये ऐसा निर्विवाद रूप से मानना पड़ेगा।

१६ The Gujars claim to be included in the category of kshatriyas.

(R. G. P. 261 vol 1)

भा०—गूजर लोग क्षत्रिय वर्ग में लिखे जाने का दावा करते हैं।

पुनः—

१७ The Jats and Gujars as well as the Ahirs smoke together and eat out of the same pot, but not out of the some dish.

(R. G. P. 261 vol 1)

भा०—जाट गूजर और अहीर ये सब परस्पर हुक्का पीलेते और एकही बर्तनों को काम में ले लेते हैं, परन्तु एकही थाली में एक साथ बैठकर नहीं खाते। यथाः—

हुक्का, सुक्का, हुड़क्नी, गूजर और जाट।
इनमें अटक कहां, जैसे जगन्नाथ का भात॥

अर्थात् गूजर और जाट के हुक्का तमाखू व खान पान सब एकसे ही हैं इनमें किसी तरह की रुकावट नहीं है जैसे कि जगन्नाथजी के भात में अर्थात् जगन्नाथजी की यात्रा को जाकर वहां का बनाया हुवा भात बिना रोक टोक के सभी वहीं खा लेते हैं फिर वहां से आजाने के बाद फिर वही तेर मेर व ऊंच नीच व छुआछूत का किस्सा सब हिन्दुओं के सामने आजाता है

जब यह निश्चय होता है कि जाट अहीर गूजर यह तीनों

एकही क्षत्रियवंश में से हैं तब इनके अलग अलग नाम पड़ने का कारण क्या है ? इस प्रश्न पर विचार करने से विद्वानों का ऐसा मत है कि जिन राजपूतों के पास ऊंटों की (शुतरसवारों) अनगिनित फौजें थीं उनकी जाट संज्ञा हुई। जो राजपूत पहाड़ों में रह करके गोवंश का पालन पोषण व रक्षण करते थे वे गूजर कहाये, और जो लोग बस्तियों में रहकर समीपी जंगलों में रह कर गौवंश का रक्षण व पालन करते थे वे अहीर कहलाये।

पुनः—

The Gujars ara derived from Rajputs and are divided into two sections called Khari and Laur.

(R. Gazetteer)

भा०—गूजर लोग राजपूतों से ही निकले हैं जिनके दो भेद खारी और लौर हैं।

भारत के उत्तरी पश्चिमी भागों में गूजर सर्वत्र मिलते हैं हझारा पहाड़ के आसपास तथा जमुना के किनारे के सम्पूर्ण शहर गूजरों से भरे हुये हैं पूर्व में बुन्देलखंडस्थ समथर राज्य अभी तक गूजरों का ही है, राजपूताना व ग्वालियर स्टेट में भी यह जाति बहुतायत से है तथा गुजरात में तो इस जाति की विशेषता ही है।

जिस तरह इन्होंने अपने नाम पर गुजरात बसाया जैसेः—

The Gujars Possessed at one time great importance as appears from the fact that they gave their name to peninsula of gujarat.

(H. C. S. 298)

भावार्थ तो ऊपर आही गया है कि गुजरात के नामसे

इनका नाम गुर्जर कहाते २ गूजर हुवा। तैसेही पंजाब में भी कई शहर बसाये, गुजरान वाला, गूजरखां और पंजाब प्रदेशान्तर्गत गुजरात ये सब गूजरों के बसाये हुये शहर हैं। इनको लोक संख्या युक्तप्रदेशान्तर्गत सहारनपुर तथा पंजाब प्रदेशान्तर्गत जेहलम व हसन अबदाल में बहुत है इसके अतिरिक्त सिंधनदी के पूर्वी भागों के जिले दर्रु आदिकों में भी इस जाति की बहुतायत है।

२१–मा० से० रिपोर्ट पृष्ठ ४४ में यह जाति भारत की राज्याधिकारिणी मानी गयी है। रूस व तुर्किस्तान की हद पर एक मुल्क है जो आजकल गुर्जिस्तान कहाता है किसी किसी अंगरेज ऐतिहासिक विद्वान् ने ऐसा भी लिखा है कि आज कल का गुर्जिस्थान भी गूजरों का बसाया हुवा है।

२१ The cultivatlng tribes belonging to pure Rajput. clans, the principal are the Jats and the Gujars. (Raj G. P. 170)

भा०—कृषि का धन्धा करनेवाली जातियों में जो राजपूत वंश में से हैं वे जाट और गूजर हैं।

२२–सहारनपुर के भूतपूर्व कलेक्टर ने लिखा है किः–

२२ It includes the names of many well-known Rajput septs, such as Bagri, Bais, Chandel, Chouhan and Tomar,

अर्थात् गूजरों में राजपूतों के प्रसिद्ध भेद बागड़ी, बैस, चंडेल, चौहाण और तोमर हैं।

इन सब प्रमाणों के आधार पर ऐसा निश्चय होता है कि इनमें वर्ण संकरता का दोष जरा भी नहीं है।

२३ मुं० किशोरीलालजी ने लिखा है कि "गूजर लोग भी अपने को क्षत्रिय समझते हैं। (देखो अक़वाम उलहिन्द)

२४–गूजरों के भेद उपभेदों पर दृष्टि डालने से पता चलता है कि भट्टी गूजर जैसलमेर के भट्टी राजपूत वंश में से हैं जिन्हें देहली के बादशाह शाहआलम ने चोरमार कहा था अर्थात् इन्होंने फौज पर चोरी से छापा मारा था युद्ध नीति के अनुसार सदैव साम दाम दंड भेद की नीति व इस प्रकार का बर्ताव प्रायः होता ही रहता है।

नगारी गूजर राजा नागराज की संतान में से हैं जो देहली के तोमरवंशी महाराज अनिकपाल की चौथी पीड़ी में हुवा है यह लोग देहली से ७६६ ईसवी में निकल पड़े थे।

नंदवासिया गूजर पंवार राजपूतों में से हैं जो बादला से निकलकर काली नदी के आसपास आ बसे थे गूजरों का एक भेद चेर्चा भी है जो एक समय राजपूताने के अजमेर पुष्कर आदि स्थानों के अधिकारी थे।

२५–मिस्टर जे० डी० लोटूश ने लिखा है किः–

Pushker after this appers to have come into the possession of Chechi Gujars, for there is a legend that some seven hundred years ago a large body of Sanyasis come to bathe in Pushker; they disapproved of the Gujars being in possession of the Ghats, killed them all on the night of the dewali, and turning out the kanphata Jogies, who had become, priests of the temples, themselves left a representative at each Temple.

भा०–यह सरकारी ग्रन्थ का लेख है कि पुष्कर में एक समय चेची गूजरों का अधिकार था क्योंकि (सन ११०० के करीब) करीब ७०० वर्ष बीते होंगे कि सन्यासियों का एक दल स्नान करने को पुष्कर में आया उस समय वहां के घाट

वगैरा के मालिक गूजर लोग थे और यही वहां का चढ़ावा इत्यादि लिया करते होंगे। अतएव सन्यासियों को इनका यह अधिकार सहन न हुवा। इसलिये दिवाली की रात को वहां के सब गूजरों को सन्यासियों ने मार डाला और कनफटा जोगियों का जो वहां के मन्दिरों के पुजारी बन बैठे थे निकाल कर अपनी ओरसे अपने आदमियों को वहां मन्दिरों के पुजारी बना दिये।

I have noticed in the early historians a connection between the migrations and location of Gujars and Rajputs, which has struck me so.

भा०–मैंने प्राचीन इतिहासों में देखा है कि गूजर और राजपूतों के एक स्थान में रहन सहन व दूर देशों में गमनागमन का एक ही सम्बन्ध है।

मिस्टर वेलसन ने लिखा है किः–

The Gujars and Bargujar tribe of Rajputs are often found together.

भा०–गूजर और बड़गूजर जो राजपूतों की जाति हैं दोनोंही एक पाई जाती हैं। गूजरों में एक सांकल नामक भेद होता है जो मुजफ्फरनगर की तरफ़ विशेष हैं वे कलसा नामक राजपूत के वंशज होने से सांकल गूजर कहाये जो जैसलमेर के भट्टी खानदान का एक सरदार था। पंजाब में करनाल पानीपत की तरफ़ रावल खांप के गूजर होते हैं जो राजपूतों के खोखर वंश में से हैं।

छोखर गूजरों का वंश भेद जादों है चमैयां का तोमर कुलसिया का करैना और मावी का चौहान अधाना का बड़गूजर और कांसल गूजर भट्टी राजा कांसल के वंश में से है।

दोष व कुरीतियें

यह जाति भारतवर्ष में बहुत अधिक संख्या में है और आजकल दोष व कुरीतियें तो सबही जाति में हैं और होती हैं पर छिद्रा-न्वेषण भाव से नहीं किन्तु उनमें सुरीति प्रचार हो ऐसा उद्देश्य सन्मुख रखकर जो कुछ दूसरे दूसरे विद्वानों ने लिखा है उसका सूक्षम रूप में सारांश मात्र हम लिखते हैं यदि ये सब कुरीतियें इस जाति में हों तो इस का सुधार होना चाहिये अन्यथा न सही।

लिखा है:--

The Gujars as a tribe have always been noted for their turbulence and hahit of cattle stealing.

(C. S. W. C. & T. 447)

भा०--ऐसा देखा जाता है कि गूजर जाति प्रायः झगड़ालु और पशु चुराने वाली होती है। ऐसी दशा सर्वत्र तो नहीं दीखती तथापि ऐसी भी कहावत मिलती है कि:--

उसही समय से ऐसी कहावतें चली हैं जैसे:-

कुत्ता बिल्ली दो, गूजर रंघड़ दो।
ये चार ना हों, तो खुले किवाड़े सो॥

(C. &. T. P. 548)

भा०-कुत्ता बिल्ली, गूजर और रंघड़ ये चारों न हों तो मकान के किवाड़ खुले छोड़कर सो जावो कुछ डर नहीं इसही से मिलती जुलती कहावत ऐसी भी मिली है कि:--

कुत्ता बिल्ली बंदर, सांसी मीना कंजर।
जो ये जातियें न हो, तो खोल किवाड़े सो॥

भा०-कुत्ता, बिल्ली, बन्दर, सांसी, मीणा कंजर जो ये न हों तो खुले किवाड़े रखकर भी सो सकते हो। पुनः—

यार डूम ने कीना गूजर।
चुरा चुरा घर कर दिया ऊजड़॥

अर्थात् किसी डूम ने किसी गूजर को मित्र करलिया सो उस गूजर ने उसके माल को चुरा चुराकर उसके घरको ऊजड़ कर दिया। ये सब कहावतें मुसल्मानी राज्य से पीछे की चली हुयी हैं और ये सब साम दाम दंड भेद की नीति के अन्तर्गत Political trick था इस तरह के Tricks आजकल करीब सबही गूजर लोग बात के पक्के व जुवान के सच्चे (दृढ़चित्त) नहीं होते हैं इनकी मति तत्काल पलटती रहती है अतएव इस ही की पुष्टि में मा० जाति० रिपोर्ट पृ० ४५ में लिखा है किः—

"नाजर गूजर मेर कुता, साये पीछे सातमता"

याने हिजड़े, गूजर, मेर और कुत्ता इन चारों की बुद्धी तत्काल ही पलट जाती है अर्थात् विचार करके, जहां जरा सोये, कि सातमते होगये।

पुनः—

They have a curious custom of making a cow of cowdung, covering it with cotton and going through the Process of killing it, a custom which seems to show that the reverence for the cow which they now profess may be of compartively modern growth.

Rajputana Gazettier 162

इनके यहां एक विचित्र रीति गोबर की गऊ बनाने की है जिस पर रूई लपेट कर ये लोग उसे मारते हैं, यह रस्म कुछ

थोड़े दिन से चली हुयी जान पड़ती है-सम्भव है कि उपरोक्त अफसर का भाव गोर्धन पूजा के सम्बन्ध में यह संकेत मात्र हो जिसका भाव ठीक ठीक न समझा जाकर उपरोक्त अफसर ने ऐसा लिख मारा जान पड़ता है।

I was asured on the spot that almost in every Gujar Village in the Vicinity of Jamuna in the Buland shahar District polyandry is a fact. The custom was mainly due to the scarcity on woman in the tribe, and this scarcity was the result of female infanticide, which several sections of the caste practised very largely before the passing of the infanticide act of 1870- polyandry was not recognised as an acknowledged on a legal custom; but if adopted in a Village the neighbourers made no objection to it, nor was it considered a serious scandal, it was the benifit of the married brother and his wife that all the brothers should live together and that Joint earnings should be enjoyed by the single wife & her children.

भा०—मैं विश्वास पूर्वक तथा दृढ़ता के साथ कह सकता हूँ कि बुलन्दशहर के जिलों में तथा जमुना नदी के आस पास के गूजरों के गांवों में एक स्त्री के एकही समय में कई खसम (पति) होते हैं इसका कारण इस जाति में स्त्रियों का अभाव है अर्थात् विवाहार्थ पुरुषों को स्त्रियें मिलती नहीं हैं स्त्रियों को कमी का कारण "कन्या हत्या" कही जा सकती है परन्तु जबसे याने Infanticide act of 1870 कन्याहत्या एक्ट सन् १८७० का

पास हुआ है तबसे कुछ किञ्चित्सा घटाव हुवा है। मिस्टर क्रूक लिखते हैं कि युक्तप्रदेश में हिन्दू गूजर पुरुषों की संख्या १६०५७३ थी और स्त्रियों की संख्या ११९५४० थी अर्थात् पुरुषों की अपेक्षा ४१०३३ स्त्रियें कम थीं। बीस वर्ष के बाद याने सन् १९०१ की मनुष्य गणना में १५७५६६ हिन्दू गूजर पुरुषों की अपेक्षा १२६३८६ स्त्रियें निकलीं अर्थात् पुरुषों से ३११८० स्त्रियें कम रहीं अतएव ऐसी दशा में इस गूजर जाति में "एक स्त्री के कई खसम" की पृथा प्रचलित होगयी और ऐसी पृथा का होना कोई कर्त्तव्य तो नहीं माना जाता है तथापि जो ऐसा करते हैं उन्हें कोई रूकावट भी नहीं है, ऐसा देखकर जाति वाले व पड़ोसी भी इसे रोकते नहीं हैं। अतएव ऐसी दशा में ब्याया हुवा भाई अपनी एक स्त्री सहित अपने अन्य भाइयों के साथ शामिल रहकर सबकी आय के स्वामी व स्वामिनी एक-मात्र वह स्त्री तथा उसके बच्चे रहते हैं।

नोटः—यह पृथा हमारे देखने में तो कहीं नहीं आई परन्तु विदेशी विद्वान ने ऐसा लिखकर सम्भव है कि किसी प्रकार की भूल व Mis-guidance से उसने ऐसा किया हो। हम जाति अन्वेषणार्थ भिन्न भिन्न स्थानों में भ्रमण किया और गूजर जाति के मित्र व शत्रुपक्ष वालों से बहुत कुछ पूछताछ किया पर ऐसी पृथा के लिए हमें किसी ने नहीं कहा अतएव उपरोक्त लेख के सत्य होने में सन्देह है।

हमारा गूजर जाति के साथ बड़ा निकटस्थ सम्बन्ध रहा है अतएव इस जाति में बहुतसी रीतियें ऐसी मिली हैं जो अन्य द्विजों की रीतियों से मिलती जुलती सी हैं अर्थात् इनमें विवाह व संस्कार प्रणाली क्षत्रियों की जैसी ही है इस जाति में विशेष-रूप से क्षत्रियत्व भरा हुवा है। और इनका धर्म भी वैष्णव है। इससे भी निश्चय होता है कि उपरोक्त लेख में भी कुछ भूल अवश्य है।

इन सब कुप्रथाओं के अतिरिक्त इस जाति में प्रचलित अनेकों ऐसो कुरोतियें हैं कि जिनको देखकर कोइ भी विद्वान इस जाति का क्षत्रियवर्ण में नहीं लिख सकता अतएव आशा है कि गूजर लोग अपनी आत्युद्धार के निमित्त प्रयत्न करके उपरोक्त कुप्रथाओं के साथ २ निम्न लिखित बातों को भी दूर करेंगे यथाः—

१—मांस व शराब का प्रचार इस जाति में विशेष है अतएव रोकना चाहिये ।

२—पशु पक्षियों की बलिदान आदि हिंसा कर्म रुकना चाहिये

३—गाय भैंस बछड़े व बछड़ी तथा पाड़े पाड़ी, बकरे बकरी आदि कसाइयों को न बेचना ।

४—गूजरियें जो दूध दही बेचने जाती हैं वे नीच जातियों को दूध दही बेचकर उच्च जातियों का भी धर्म भ्रष्ट करती हैं ।

५—इस जाति में युवा बैल को बधिया करते हैं अर्थात् उसके हाथ पैर आदि बांधकर उसके अण्डकोष को फोड़ डालते हैं ।

६—भैरूं जी के बकरा व शराब इस जाति में विशेषरूप से चढ़ाये जाते हैं ।

७—बछ बारस के दिन उच्च हिन्दू लोग गौ आदि का पूजन करते हैं और दूध न दुहकर उसके बच्चे को चूखने देते हैं पर गूजरों में इसका अभाव है ।

• ऐसो कुरीति सम्बन्धी मेटर को संग्रह करते हुए यह सब कुछ हमने निष्पक्ष भाव से संग्रह किया है क्योंकि जहां हमें अन्वेषण करते हुए कई अच्छे प्रमाण मिले तहां बुरे भी मिले अतएव संग्रहकर्ता का यह कर्त्तव्य होता है कि अच्छी औरबुरी बातें सब जो कुछ मिले लिखदें किसीको बुरा कहने से हमारा कोई लाभ नहीं है । (ग्रन्थकर्ता)

८—राजा लछमनदास अपने District memoir के पृष्ठ १७५ में ऐसा लिखते हैं

गूजरों के भेद 'उपभेद'

१ खरे २ लौर

खरे गूजरों के उपभेद ।

१ सोलनिया, २ ठउवाड़िया, ३ डोरालिया, ४ सिपवार, ५ निस्करिया, ६ सूत्रा, ७ खरिया ।

ये सातों दूध दही व छाछ आदि बेचने का काम करते हैं इसलिये इनका जातिपद लौर गूजरों से छोटा समझा जाता है।

लौर गूजरों के उपभेद ।

१ कुम्हार २ मादी ३ किसान ४ सिरांडे ५ चादरी ६ कसान ७ चन्दीजा ८ रावत ९ चन्देला १० नेवर ११ भेदी ।

खरे गूजरों के साथ लौर गूजर न बिबाह सम्बन्ध करते हैं न खान पान ।

गूजरों की कुलदेवी देवकी है जिसका मन्दिर वेअर के पर्गने के झाझ ग्राम में है भरतपुर की रियासत के गजर लोग आचार विचार से श्रेष्ठ हैं ।

१ अनबौत २ अधान ३ अकिया ४ अमोठा ५ अवाना ६ मागड़ी ७ बाजर ८ बनया ९ बरकत १० बोकन ११ भदोरे

१२ बहला १३ बहराना १४ बैसाहो १५ बैसलो १६ बासक्क १७ अरैला १८ भट्टी १९ बूकर २० बड़काना २१ चौहाण २२ छांछी २३ छोकर २४ चन्देला २५ नपड़ाना २६ छाछी २७ छाअरे २८ छोकर २९ बैसले ३० बालेसर ३१ बरसोई ३२ सतार ३३ चमैयां ३४ चेची ३५ चोटकानी ३६ देदी ३७ दतरेवा ३८ छोला ३९ दोरोटा ४० घोररूप ४१ गुर्सी ४२ हुन ४३ जौहर ४४ जबारा ४५ जंगड़ ४६ जहंघा ४७ जोया ४८ कहारी ४९ कारस ५० कतरिया ५१ घोरसी ५२ जाटली ५३ जिंधर ५४ कदाहन ५५ कलसियान ५६ लोहमारे ५७ कनाना ५८ कलौनी ५९ खरे ६० खटाना ६१ कुसाने ६२ कूबर ६३ कोरी ६४ मेवाती ६५ मुग़ल ६६ मावी ६७ मोदर ६८ मुदहन ६९ मुनरेरा ७० नगारे ७१ महंसी ७२ मोते ७३ मुंडन ७४ पसुआर ७५ पटावो ७६ पिल्वान ७७ फगना ७८ फुलर ७९ पुसवार ८० पुरबार ८१ राठी ८२ रौसे ८३ रावल ८४ रोसों ८५ सकरवार ८६ सरदवा ८७ सरवन ८८ सरधिन ८९ सुकुल ९० सुरादने ९१ तौहर ९२ तोमर ९३ तुंगर ९४ उतवार।

नोटः—ये भेद युक्तप्रदेश के अन्तर्गत विशेषरूप से बुलन्दशहर, सुलतानपुर, मुजफ्फ़रनगर तथा सहारनपुर में है इनमें बहुतसे नाम गोत्रों के भी हैं।

इस जाति के गोत्रों के विषय अनुसन्धान से पता लगा है

गोत्र

कि इनके ८४ गोत्र हैं जिनमें बहुतसे गोत्र उच्चतम क्षत्रियों से मिलते हुये हैं जिनसे भी प्रमाणित है कि यह जाति क्षत्रिय वर्ण में है यद्यपि बिस्तारपूर्वक देखा जाय तो इस जाति के ११७८ गोत्र हैं परन्तु बिस्तार भय से यहां सूक्ष्म प्रकार से वर्णन किये जाते हैं यथाः—

१ बागड़ी २ बतर ३ बचर ४ छोटकाना ५ हमर ६ कनास ७ खटाना ८ खूबर ९ नदवासिया (नन्दवंसिया) १० ओकर ११ चौहाण १२ राठी १३ रावल १४ कलसियान १५ अधान १६ भट्टी १७ चन्देला १८ धन्दल १९ हेला २० दिवेरू २१ तोमर २२ वैस २३ चंदेल २४ रोसे २५ खपराय २६ कसाना २७ खरे २८ मरसी २९ नगारी ३० तोमर ३१ दलेल ३२ पमार ३३ लोहार ३४ चोरमारी ३५ दापू ।

इनमें से सहारनपुर के जिले में बतर, बूचर, छोटकाना, हमर, कनास, खटाना, खूबर, खाटी रावल और रोसे ये सहारनपुर के जिले में विशेष हैं इनके बारे में एक जगह सहारनपुर के कलक्टर मिस्टर C. S. We ने ऐसा लिखा है कि:—

"In Saharanpore the Kalsiyan Khapre Rathi, Rawal and Rose sections holds the highest rank."

अर्थात् सहारनपुर के जिले में कलसिया, खपरे, राठी, रावल और रोस ये सम्पूर्ण गूजरों में सर्वोच्च हैं।

मुजफ्फर नगर के जिले में कलसियां और खूबर गोत्र वाले गूजर अधिक हैं मान प्रतिष्ठा भी अच्छी रखते हैं।

मेरठ के जिले में अधान भट्टी कसाना नगा।

राजस्थानीय गूजरों के भेद

१ खिरादा २ थामड़ा ३ खटाणा ४ फगरमा ५ तंवर ६ खाटरा ७ सेची ८ टीकरा ९ चांदेला १० पोसवाल ११ खिडमाल १२ गडमल १३ ओना १४ चामड़ा १५ कसाणा १६ नेतरड़ा १७ जरीया १८ फारंग १९ मुडन २० कोरवालिया २१ बागड़ी २२ गूगला २३ लाडी २४ बोकण २५ बढ़ाणा २६ डोई २७ चाड़ २८ चवाणा २९ लीलू ३० हाकला ३१ मौठसर ३२ गडी ३३-

गौरेचाणा ३४ गिड ३५ जांदा ३६ रलीदा ३७ नारण ३८ पुसवाडा ३६ लीतरिया ४० बसाला ४१ हाकडा ४२ नेकाडी ४३-लोड़ा ४४ बारवाल ४५ बुग ४६ चोहाण ४७ नकीड़ी

उपभेद

अकिया, अमोटा, अवन, अधान, अनबौत, अना, अबीद, कहरो, गोरसी, गोरेचाणा, गिढ़, चौहान, छांछो, छोकर, चंदेल चपराना, तौहर, नगारे, नारण, नेकाड़ी, नेतरड़ा, पटाव, पसवार, पंडेपूत, कुसाने, करस, कटरिया, कहाड़े कैथेरिया कपसिया, कड़हीना, छावड़े, चंवाया, चैची, छोटकाने, जांगड़, जौहर, जवार, जाटली, जादा, पिलवान, पुसवर पूरबर, पूसवाड़ा, पोसवाल, फागना, फुलड़, फगणा, कसान, कसौनी, कसाना, कदाहन, कोरी, कोरवानिया, खटाना, खोखर, जिंधर, जोया, जैया, झहंगा, टोकरा, ठंडर, दहाड़िया, दंग्ध, ढेढे, फारंग, बागड़ी, बदूरें, बदकाना, बाजर, बहला, बहराना, बैसाहो, खोगड़, खरे, खूबर, खरसान, खाटरा, गड़मल, गूगला, गड्डी, डोहला, दोरोता, डोहो, ढटरेवा, ढोहारूप, तंवर, तोमर तूंगर, वैसले, वैसलो, बसाक्त, बरकत, बालेसर, बरसोई, बासला, वींद ।

नौमुस्लिम

जैसा कि हम ऊपर दिखला आये हैं अन्य राजपूत जातियों की तरह इस गूजर जाति पर भी मुसलमान बादशाहों के अत्याचारों की कमी न रही यही कारण है कि लाखों गूजर जबरदस्ती मुसलमान बना लिये गये अवधप्रदेश और मेरठ कमिश्नरी में मुसलमान गूजरों की विशेषता है देहली के तैमूर

बादशाह ने जब देहली पर चढ़ाई की तब Converted all the people in the neighbourhood by force. उसने वहां के राजपूतों को और आस पास के हिन्दुओं को जबरदस्त मुसलमान कर लिया इन नौ मुस्लिम गूजर राजपूतों के सम्बन्ध में मिस्टर C. S. W C. ने लिखा है Some of them still maintain their hindu sections and regulate their marriages by them as their Hindu brotheren do,

भा०—अर्थात् इन नौमुस्लिम गूजरों में अभी तक हिन्दुत्व प्रदर्शक भेद है तथा विवाह आदियों की रीति भांति राजपूतों की सी है।

Inspite of their conversion they retain a number of their old tribe practices.

यद्यपि यह लोग मुसल्मान करलिये गये हैं।तथापि इनमें बहुतसी परम्परागत हिन्दुत्व की रीतियें हैं:—

Betro thal is done on lucky day fixed by the Pundit.

अर्थात् सगाई विवाह आदि अन्य राजपूतों की तरह पंडित से मुहूर्त दिखलाकर करते हैं:—

They bury their dead, when the burial is over they make a fire offeringe (अगयारी) by burning incense, the name of the dead, and after waiting a short time they upset a pither of water near the grave

भा०—यह अपने मुर्दों को गाढ़ते हैं और गाढ़ चुकने के बाद कबर पर लोबान जलाकर अगयारी करते हैं* और तीन

---

* हिन्दू लोग अपने मृतक का दाह कम सुगन्धित पदार्थों का जला कर करते हैं तो इसही के चिन्ह स्वरूप में यह लोग भी कब्र पर लोबान जलाते हैं

दिनके बाद एक पानी का घड़ा भरकर कब्र पर रख आते हैं† इन लोगों में ज्योतिष की बात बहुत मानी जाती है इसलिये सरवरिये और सनाढ्य ब्राह्मणों से ज्योतिष सम्बन्धी कार्य्य लेते रहते हैं।

पुनः—

They so far observe the Holi and Nagpanchmi Festivals that on those days. they do not work. They observe the ordinary Mohammadan rules about food and will eat with any Musalman aceept a Dhoby, Dhunia or Mehtar.

भा०—यह लोग होली और नागपंचमी के त्यौहार को भी मानते हैं और इस रोज अपने (हिन्दुओं की तरह) सब काम बन्द रखते हैं यह लोग उच्च जातीय नोमुस्लिमों के साथ खा लेते हैं परन्तु धोबी, धुनिया या मेहतर आदि नौमुस्लिमों के साथ नहीं।

About the end of the ninth century Alakhan the Gnjar King of Jammu ceded the Gujardesa corresponding very nearly with the Gujrat District to the king of Kashmir. The town of Gujrat is said to have been built or restored by Alakhan Gujar in the time of Akbar.

(C. & T. Page 440)

भा०—नौ वीं शताब्दी के अन्त में जम्बू का महाराज आलाखां नामक गूजर ने गुजरात का देश कश्मीर महाराज के आधीन कर दिया और ऐसा कहा जाता है कि अकबर बादशाह के समय से यह गुर्जर देश है।

†जैसे हिन्दू लोग तिया करते हैं और टिकटी पर पानी की मटकी भरकर श्मसानों में रख आते हैं तैसेही यह लोग भी उसकी नकल करते है।

लोक संख्या

गूजरों की आवादी वैसे तो सर्वत्र ही है तथापि भारतवर्ष में जमुना के किनारे किनारे व पंजाब गुजरात में विशेष रूप से है, पहिले जमुना के ऊपर के भाग का देश व सहारनपुर,जगाधरी आदि २ भाग गुर्जरदेश कहाता था। आज कल भी इस जाति का राज्य बुन्देलखंड में सम्पतर और गवालियर राज्य में गूजरगढ़ में है। राजपूताना में इन की आवादी विशेष गहरी नहीं किन्तु छीदी छीदी है परन्तु गुजरात जहां के ये लोग राजा रह चुके हैं वहां इनकी जन संख्या बहुत अधिक है General Cnnningham writes. That the Rajas of Rewari to the south of Delhi are Gujars. जनरल कनिंग्राम ने लिखा है कि दिल्ली के दक्षिण में रिवाड़ी के राजा गूजर हैं। आज कल गुजरात भी दो हैं एक मुम्बई प्रान्त का तथा दूसरा पंजाब प्रान्त का, ये दोनों ही गुजरात इन गूजरों के बसाये हुये व नाम करण किये देश हैं जहां अभी तक ये लोग बहुत अधिक हैं पंजाब में गूजरों के बसाये हुये दो शहर हैं जो आज कल गूजरखां और गुजरानवाला नाम से प्रसिद्ध हैं इन की लोक संख्या सिंधु नदी के आस पास भी विशेष है मारवाड़ में इन की लोक संख्या २५,४४४ है राजपूताना भर में ५०००४६ हैं अजमेर मेरवाड़ा में ३५०५६ और युक्त प्रदेश में सब हिन्दू गूजर २८३६५२ हैं, मुसल्मान बने गूजर सन् १८९१ में ६४४२४ थे वही सन् १९०१ में याने दस वर्ष बाद बढ़ कर ७६७३८ होगये अर्थात् युक्त प्रदेश में हिन्दु जाति में संगठन का अभाव होने के कारण

१० वर्ष में १३३१० गूजर मुसल्मान बढ़े यह हिन्दू धर्म को महिमा की मर्यादा है। सन् १८६१ के अनुसार युक्तप्रदेश में हिन्दू गूजर व नौमुसलिम गूजरों की जिलेवार संख्या इस प्रकार से है।

नाम जिला	हिन्दू गूजर	नौमुस्लिम गूजर
देहरादून	५२७	४३६
सहारनपुर	५७०५३	१८४५४
मुज़फ़्फ़रनगर	२७८५६	१३२३६
मेरठ	६६३८७	६५
बुलन्दशहर	४६६३२	०
अलीगढ़	११३६७	११
मथुरा	७४३०	२३
आगरा	१३२३८	१
फरुक्खाबाद	८३	२८
मैनपुरी	१११	०
इटावा	३११२	०
एटा	६	२२
बरेली	७३६१	०
बिजनौर	६२६५	३६०
बदायूं	२८२१	३८
मुरादाबाद	११४६६	३३६
शाहजहांपुर	३२५५	०
पीलीभीत	३४६०	०
कानपुर	२७८	१०
बांदा	१३५	०
झांसी	७४७	४
जालौन	५६६६	८
ललितपुर	२२६	०
मिर्जापुर	२६८	०

नाम जिला	हिन्दू गूजर	नौ-मुस्लिम गूजर
गोरखपुर	२४	२२४८
बस्ती	०	७०५
आजमगढ़	२	६७५
गढ़वाल	०	१४५
तराई	६७३	२२
लखनऊ	७	२८०
राय बरेली	०	११६५६
फैजाबाद	०	२२६
बहराइच	२३	१६६४
सुलतांपुर	०	६१०८
परताबगढ़	०	३४४
बाराबंकी	०	४६३६
जोड़—	२८०११३	६४४२४

कुल जोड़—३४४५३७

नोटः—पचास से नीचे की आबादी के जिले हमने छोड़ दिये हैं।

अजमेर मेरवाड़ा में गूजरों की संख्या २६३६५ है इनमें मुख्य मानता देवजी की है गूजरों के मुखिया को मीहर कहते हैं।

एक अंग्रेजी ग्रन्थकार इस जाति की संख्या इस प्रकार से प्रकट करते हैं जो कदाचित् सन् १८६१ की मनुष्य गणना के अनुसार हैः—

पंजाब	... ...	७११८००
यू० पी० व पश्चिमोत्तर	...	३४५६७८
राजपूताना	... ...	५७३००३
कश्मीर	... ...	२४८७८६
मध्य भारत	... ...	२०४५११

सन् १६०१ की पश्चिमोत्तर प्रान्त की मनुष्य गणना के अनुसार पश्चिमोत्तर प्रान्त में कुल गूजर २८३६५२ जिस में पुरुष १५७५६६ और स्त्रियें १२६३८६ हैं आर्य्य गूजर स्त्री पुरुष २६१ हैं जिस में १२६ पुरुष और १३२ स्त्रियें हैं।

यू० पी० में यह ही दस वर्ष पहिले याने सन् १८६१ की मनुष्य गणना में २८०११३ इन के अतिरिक्त ६४४२४ मुसलमान गूजर राजपुताने में विद्यमान हैं। हिन्दु व मुसलमान सब मिल कर सहारनपुर में ७५५०७ मुजफ्फ़रनगर में ४१०६५ मेरठ में ६६४५२, बुलन्दशहर में ४६६३२ बाकी अलीगढ़, आगरा, राय-बरेली, मुरादाबाद आदि ज़िलों में अनुमान बारह हज़ार के गूजरों की संख्या है। मारवाड़ में इस जाति की संख्या अनुमान तीस हज़ार है।

१९ गौतमः—इस नाम की ब्राह्मण व क्षत्रिय दोनों ही जातियें हैं मथुरा के जिले में ब्रज के आस पास गौतम ब्राह्मण भी बहुत हैं पर इस ग्रन्थ में हमें गौतम क्षत्रियों का विवरण लिखना है।

पूर्वकाल से जो गोत्र प्रणाली चली आरही है उस से निश्चय होता है कि सृष्टि के आदि में जिस ऋषि से जिस वंश की उत्पत्ति हुयी वही उस वंश का गोत नियत हुवा दूसरा क्रम यह भी था कि जिस गुरुकुल में जिन्हों ने शिक्षा पायी वही ऋषि उस वंश का कुलगुरू कहाया जाकर उस वंश का नाम वही पड़ गया तदनुसार महात्मा गौतम के आश्रम में जिस क्षत्रिय वर्ग ने गुरुदीक्षा लियी वे गौतम क्षत्रिय प्रसिद्ध हुये। दूसरा हेतु इस की पुष्टि में यह भी है कि चन्द्रवंश में शाक्य मुनि हुये हैं

जिन्हें गौतम बुद्ध भी कहते हैं उन्हीं गौतम की सन्तति गौतम क्षत्रिय कहायी । लिखा है कि:—

Their original home in Fatehpur, and they Claim to have been originally Brahmins the discendants of the Rishi Gautam.

(C. & T. P. 504)

भा०—इन का आदि स्थान फतेहपुर है और यह अपने को ब्राह्मण बतलाते हुये गौतमऋषि की सन्तान मानते हैं।

एक सिविलियन अफ़सर मि० सी० ऐस० डब्ल्यु० सी० ने अपने ग्रन्थ में ऐसा भी लिखा है कि:—

By another account they are descended of the Rishi Sringi. The discendants in the sixth decree from Gautam is said to have married the daughter of Ajaypal, the Gaharwar Raja of Kanauj, and to have received as her dowry the whole extent of the country from Prayag to Hardwar. From this event the sept ceased to be Brahmans & became Rajputs; the issue of the marriage took the title of Raja of Argal in Fatehpur District.

(Growse Indian Antiquary 360)

भा०—शृङ्गी ऋषि को कन्नौज के गहरवार वंशी अजयपाल की कन्या व्याही गयी थी प्रयाग से हरद्वार पर्यन्त का देश इन को दायजे में मिला था इन की सन्तान क्षत्रिय धर्मावलम्बी कहायी फतेहपुर के समीप अर्गल के ये राजा कहे जाने लगे तब से यह वंश ब्राह्मण से क्षत्रिय हो गया।

इस ही भावार्थ से मिलता जुलता सा लेख जा० भा० ग्रन्थ के रचयिता विद्वान ने भी लिखा है परन्तु यह लेख हमारी समझ में नहीं आता क्योंकि गौतम ऋषि जिन का नाम शाक्य

मुनि है वे सूर्य्यवंशी श्री रामचन्द्रजी से ९८ वीं पीढ़ी में हुए हैं इन्हीं को गौतम भी कहते हैं अतएव इन्हीं क्षत्रिय वंशज गौतम की सन्तान गौतम क्षत्रिय हुये ऐसा प्रमाणित होता है।

गौतम ही नाम के सप्तर्षियों में एक ब्राह्मण ऋषि भी हुये हैं उन्हे गौतम ब्राह्मणों का पूर्वज जानना चाहिये, हां ऐसा हो सकता है कि यह राजपूत वंश ने गौतममुनि के आश्रम में शिक्षा दीक्षा लियी होगी इस लिये विद्वानों ने इस वंश को ब्राह्मण लिख मारा होगा। लिखा भी है:—

अत्रिर्वशिष्ठो भगवान् कश्यपश्चमहानृषिः।
गौतमश्च भरद्वाजो विश्वामित्ररतथैवच॥
तथैव पुत्रो भगवान् ऋचीकस्य महात्मनः।
सप्तमो जमदग्निश्च ऋषयः साम्प्रतं दिवि॥

हरिवंश ७—३४—३५

इस प्रमाण से गौतमजी का नाम सप्तर्षियों में वर्णित है।

कपिलवस्तु में भी ये राजपूत विशेष हैं जहां ये गौतमिया राजपूत भी कहाते हैं इन गौतमवंशी राजपूतों का अन्वेषण करते हुए फयजाबाद के कलक्टर ने लिखा है कि The Gaütam holds a respectable rank among Rajputs. गौतम ठाकुरों का पद राजपूतों में प्रतिष्ठित दृष्टि से देखा जाता है। इन का बेटी व्यवहार राजपूत वंशों के साथ है। इस वंश के लोग कानपुर में भी हैं जो अरगल से आये हुये हैं।

ये लोग बुन्देलखंड में भी हैं जहाँ ये गजपति राय दुर्गा को पूजते हैं जहाँ कुवार के न्योरतों में बड़ा हत्याकांड होता है अर्थात् देवी के नाम पर भैंसे और बकरे खूब मारे जाते हैं जिन के मुण्ड तो जमीन में गाड़ दिये जाते हैं बाकी मांसादि को वे

लोग प्रसाद समझ कर चट (खा) कर जाते हैं ये कुप्रथा है इस ही कारण इन के क्षत्रियत्व पर ऐसा सन्देह किया गया है कि These Gautmiyas are the inferior branch.

(C. & T. P. 505)

अर्थात् गौतमिया राजपूत लोग छोटी श्रेणी के राजपूत हैं यह हत्याकांड स्वार्थी वाममार्गियों का चलाया हुआ है अतएव अमाननीय है।

लखनऊ में ये राजपूत होते हुये मुसल्मानी देवताओं को पूजते हैं और निगोहान के बाबा नाहुक के यहाँ चिराग़ जलाते हैं।

हिन्दू गौतम राजपूतों की बस्ती युक्त प्रदेश में ७६६२५ है और मुसल्मान बनाये गौतमों की संख्या ५१६८ है कुल ८२१२३ हैं। ज़िलेवार लोक संख्या इस प्रकार हैः—

जिला	गौतम हिन्दू	गौतम नौमुसलिम
फरुक्खाबाद	७५	०
मैनपुरी	२१७	५
बरेली	७५५	४
बदायूं	७७३०	२
मुरादाबाद	१३७७	१२
शाहजहांपुर	८४३	०
कानपुर	४६६४	१
फतेहपुर	११५१३	१८३३
बनारस	२२६३	६२
गाजीपुर	७७५७	२३८
गोरखपुर	२२१०	४११
बस्ती	५२०४	७७८
आज़मगढ़	६२४८	२२३
लखनऊ	१७८५	८

जिला	गौतम हिन्दू	गौतम नौमुसलिम
उन्नाव	२६६१	७
रायबरेली	३३४८	२३
सीतापुर	१५१	३६१
खेड़ी	५३४	७१४
गोंडा	५३०	१२६
बहराइच	८४०	२०
सुलतानपुर	११६२	८४
परतावगढ़	६६०	१०
बाराबंकी	४३०	५
जोड़—	७६६२५	५१६८
	कुल जोड़—	८२१२३

इन नौमुस्लिम राजपूतों की रीति भांति अपने भाइयों से मिलती जुलती हैं पर हिन्दू जाति में सङ्कीर्णता फैली हुयी है यही कारण है कि ये अलग हैं, ये अपने क्षत्रिय भाइयों से मिलना चाहें तो शुद्ध करके मिलाये जा सकते हैं।

हिन्दू गौतम राजपूतों में जहां हत्याकांड की रीतियें प्रचलित हैं तहां ये लोग मुसल्मानी देवी देवता, पीर व सय्यद आदि को मानने व पूजने वाले भी हैं।

२०—घोषी

यह एक हिन्दु व मुसलमान दोनों ही प्रकार की जाति है यह नाम 'घुष' धातु से घोषी शब्द बना है और इस ही 'घुष' से 'घोषः' शब्द बनता है जिस का अर्थ ऐसा होता है कि 'घोषन्ति शब्दायन्ते गावो यस्मिन्' अर्थात् जहां गायें रांभती हैं, शब्द करती हैं उसे 'घोष' कहते हैं इस ही घोष शब्द से घोषी शब्द बना है जिस का भाव यह निकलता है कि जो जाति गौशालाओं में व गोचर भूमि में निवास कर गो दुग्ध पदार्थों का प्रसार करती थी वह घोषी प्रसिद्ध हुयी किसी किसी ग्रन्थकार ने घोषी को आभीर शब्द का पर्य्यायवाची शब्द भी माना है अतएव घोषी जाति को विद्वानों ने अहीर जाति का ही एक अंग माना है। लिखा भी है:—

There can be little doubt that like the Gaddi most them are Ahirs; who have been converted to Islam. (T and C. P. 519)

भा०—गद्दी † जाति को तरह इस जाति में विशेषता अहीरों की है ये ही लोग मुसलमान भी बना लिये गये हैं।

---

† इस जाति का विवर्ण ग्रन्थ में अलग मिलेगा।

कई स्थानों में हमने हिन्दू घोषो भी बहुत देखे हैं जो दूध दही, रबड़ी, मलाई आदि का व्यवसाय करते हैं।

पुनः—

Ghosi & Gaddi:-There are both branches of the Muhammedan Ahirs and are chiefly occupied in pasturing Cattle.

U. P. C. S. Report of 1901 P. 245

भा०—घोषी और गादी ये अहीरों से बने हुये मुसल्मान हैं जो प्रायः गौवों का पालन पोषण किया करते हैं।

मा० म० रिपोर्ट के ५६१ में लिखा है कि 'बादशाह शाह बुद्दीन गोरी ने जब दिल्ली फतह कियी तब उस समय की क्षत्रिय फौजों को कतल किये जाने व मुसल्मान होजाने का फतवा सुनाया गया तबसे जो लोग राजी खुशी मुसल्मान होगये वे बचे, बाकी कतल कर दिये गये।

राजपूताने में हिन्दू घोषियों क गोरसी भी कहीं कहीं कहते हैं अर्थात् ये लोग गोरस का ही व्यापार करते हैं अतएव गोरसी गोरसी कहाते कहाते घोषी कहा जाना भी सम्भव है।

युक्तप्रदेश के पूर्वी भागों में इनके तीन भेद पाये जाते हैं लीलर, चोपड़ और गद्दी गूजर !

मु० दे० प्र० जी ने अपने अन्वेषण में इस जाति में क्षत्रियत्व बोधक नीचे लिखी खांपें लिखी हैं:—

१ भाटी २ तंबर ३ चौहान ४ मोयल ५ सोलंखी और कालेरी। इन प्रसिद्ध राजपूत भेदों के क्षत्रिय जो मुसल्मान बनाये गये उस समय बादशाह शाहबुद्दीन के यहां घोषरुद्दीन नामक एक फौज का अफसर था इसही के प्रबन्ध से जो जो क्षत्रिय

समुदाय मुसल्मान बने वे घोषरुद्दीन की यादगार में घोषी कहाये पर उनमें पूर्व के समान वे की वे ही खांपें क्षत्रियत्व सूचक बनी रहीं जैसा कि ऊपर दिखलाया जा चुका है।

Mr. Croke साहब गवर्नमेन्ट अफसर ने लिखा है कि:-

In the north Oudh they have three endogamous sub Castes Pradhan, Gaddi and Lala.

भा०—अवध प्रदेश के घोषियों में तीन भेद प्रधान, गादी और लाला पाये जाते हैं।

इनके भेद उपभेदों में कुछ भेद निकास व निवास स्थान के कारण से भी पड़े जान पड़ते हैं जैसे देशवाली, कन्नौजिया, मघहैया और पूर्विया आदि इस जाति में विशेषांश क्षत्रिय वंशों का पाकर मिस्टर C S. W. C. कलेक्टर ने अपनी C & T रिपोर्ट के पृष्ठ ५२० में इनके भेद तोमर, राजपूत, पठान, यदुवंशी ग्वालवंशी, ग्वाल, गौड़, गहलौत, गद्दी, चौहाण, चौधरी, बेहना बघेला आदि आदि क्षत्रिय जातिके भेद बतलाये हैं जिनसे स्पष्ट निश्चित होता है कि घोषरुद्दीन द्वारा उपरोक्त क्षत्रियवंश मुसलमान किये जाकर घोषी कहाये, मुसल्मान रहते हुये भी ये भेद अभी तक घोषियों में मौजूद हैं इनमें कुछ अल्ल तुर्क, सादिकी, शेख सय्यद भी हैं जो केवल पेशा मात्र करने से घोषी कहाये हैं।

बादशाही समय में दयाराम गूजर बादशाह का बड़ा खैरख्वाह व खुशामदी था जो कर्रा मानिकपुर में रहता था उसके प्रभाव से हजारों अहीर व गूजर मुसल्मान कर लिये गये, उस समय के बादशाह आजकल के हिन्दू राजाओं के से नहीं थे वरन राजपूतों की प्रबलशक्ति के सामने हिन्दुओं को मुसलमान कर के अपना बल संगठन द्वारा बढ़ाते जाते थे।

इनकी रीति भांति और चाल ढाल अभी तक बहुत कुछ हिन्दुओं से मिलती जुलती है। ये लोग पुनः हिन्दू धर्म की छाया में आने के प्यासे हैं पर हिन्दुओं में ऐसी बुद्धि कहां जो देश काल और शास्त्र के अनुसार काम करें।

लिखा भी है:——

They employ Brahmins to fix the auspicious times for marriage and other observances. To the east of the province they will not eat beef, nor will they eat with any Mohammandans who consume it.

भा०—ये लोग ब्राह्मणों से बिवाह शादी का शुभ मुहूर्त निकलवाते हैं और दूसरे दूसरे समयों पर भी ब्राह्मणों से पूछताछ करते रहते हैं, पूर्व के घोषी यद्यपि मुसलमान भी हैं पर वे गोमांस नहीं खाते और ये लोग किन्हीं दूसरे मुसलमानों के साथ भी नहीं खाते पीते हैं। ये लोग अपने मृतकों का श्राद्ध भी करते हैं पर मुर्दों को गाड़ते भी हैं, भाव यह कि मुसल्मान होते हुये भी ये लोग अपने ढंग से हिन्दू ही प्रमाणित होते हैं।

राजपूताना के घोषियों के विषय में इतिहास महकमे के सुपरिन्टेन्डेन्ट स्वर्गवासी मु० दे० प्र० जी लिख गये हैं कि "ये नामके मुसलमान हैं कल्मा तक भी नहीं जानते अपनी मुसलमानी भी नहीं कराते, इनकी पोशाक व बोली हिन्दुओं की सी हैं इनके बर्तन बड़े उज्वल व पवित्र रहते हैं इसही लिये हिन्दू लोग इन्हें अपने पीतल के बर्तन छुवा देते हैं और इनके हाथों से दूध ले लेते हैं।"

हमने अपने नेत्रों से देखा है कि ये लोग अपने बर्तनों को हिन्दुओं की तरह राख या मिट्टी लगाकर सुखमँजे मांजकर धोते हैं, पखाना जाकर पखाने के लोटे को

मांजते हैं और मिट्टी लगाकर हाथ धोते हैं एक स्थान पर हमने इनसे परीक्षार्थ प्रश्न किया कि आप कैसे मुसल्माम हैं जो इतनो छूतछात करते हैं ?इसके उत्तर में घोषी ने हमसे कहा पंडितजी हम 'तुरकड़े' नहीं हैं वरन आदि से क्षत्रिय हैं हमने पूछा कैसे क्षत्रिय ? उत्तर मिला चौहाण, तब हमने कहा आप शुद्ध हो सकते हैं तब उन्होंने कहा कि हमें कौन हिन्दू करे है ? अर्थात् कोई नहीं इस पर हमने उसे कई तरह समझाया पर उसको विश्वास नहीं हुवा कि हमारा कहना सत्य है अस्तु।

हमने इस पर सोचा कि इस घोषी ने हम पर इतना अविश्वास क्यों किया ? तो हमें बड़े विचार के पश्चात् निश्चय हुआ कि हमने जो कुछ कहा वह हिन्दू जाति की ओरसे कहा था पर उन घोषी महाशय ने हिन्दूजाति में उदारता व विचार बुद्धि का अभाव पाकर ही हमारा विश्वास नहीं किया अन्यथा कुछही सैकड़ों वर्षों से जुदे हुये हमारे भाई अबतक हमसे जुदे कैसे रहते ?

इन घोषियों के इतने पवित्र हिन्दूपन से रहते हुये भी कोई कोई हिन्दू इन्हें ग़लीच मुसल्मानों की तरह मुसल्मान समझकर इनके यहां का दूध नहीं भो लेते हैं। इनके विवाह सम्बन्ध गोत की गोत में व खाँप की खांप में नही होते हैं।

ये लोग सती की पूजा व मानता करते हैं दिवाली के दूसरे दिन 'गोर्धन' पूजा के दिन अपने समग्र गाय बैल व भैंसों के सींग रंगते हैं इनकी लोक संख्या राजपूताने में हजारों व मारवाड़ में ५३०५ है युक्तप्रदेश में २७६६० है जिनमें से जिलेवार इस प्रकार हैं।

झांसी में २७४, मिर्जापुर में ११६, गोरखपुर में, १५४६,

बस्ती में २३०, तराई में १८१२- लखनऊ में ६६६, रायबरेली में ११०८, खेड़ी में ८६६, फयज़ाबाद में २०६५, गोंडा में ७४६, बहराइच में १२७०, सुलतानपुर में ५१६२, परतापगढ़ में ५४५, बाराबंकी में ३५८, सहारनपुर में २०८६, मुजफ़्फ़रनगर में २१७, मेरठ में ७५३, अलीगढ़ में ४८२, मथुरा में १२७, आगरा में ११६, बिजनौर में १३६८, मुरादाबाद में ४१६६, कानपुर में २८१, फतेहपुर में १६०, बांदा में २२८ और अलाहाबाद में २८६ नवमुसलिम घोषी हैं।

२२—चूड़ीगर, दांती

हाथी दांत का चूड़ा बनाने से दांती व चूड़ीगर नाम हुवा है यह लोग नारियली और गैंडे की ढाल का चूड़ा भी बनाते हैं लाख और कांच का नहीं बनाते हैं। इसके सिवाय पंखे की डंडी, कंघा, कंघी, सुरमादानी, कलम, चौपें और हाथीदांत के बटन आदि बहुत बनाते हैं नारियल और हाथीदांत की और भी कई चीज़ें खराद पर बनाते हैं। यह हाथीदांत की बागबाड़ी बहुत कीमती बनाते हैं जिसमें बड़ो कारीगरी खर्च होती है। यह जाति विशेषरूप से राजपूताना प्रान्तर्गत मारबाड़ देश में है। इसही से मालदार भी हैं क्योंकि इनके बनाये हुए एक [illegible] चूड़े पचास पचास साठ साठ रुपये को बिकते हैं यह हिन्दू व मुसलमान भी हैं रीति भांति भी कुछ हिन्दुआनी कुछ मुसलमानी दोनों तरह की [illegible] हैं अतएव इनके शुद्ध किये जाने में कोई आपत्ति नहीं।

चूड़ीहार—यह एक नौमुसलिम राजपूत जाति है, यह जाति विशेषरूप से युक्तप्रदेश में होती है 'चूड़कार' शुद्ध शब्द का बिगड़कर चूड़हार कहाया और चूड़हार कहाते कहाते चूड़ीहार कहाया और चूड़कार में चूड़+कार=चूड़कार जिसका अर्थ चूड़ी का काम करने वाला ऐसा होता है इसका दूसरा नाम मणिहार भी है जो मणिहार=मणिहार जो मणि-कार का बिगड़ा हुवा रूप है। मणि+कार=मणिकार अर्थात् मणि का काम करने वाला ऐसा अर्थ होता है मनुष्यगणना में इस जाति के १०७ भेद लिखे हैं जिनमें से बगलरिया, भोजपुरिया, दखिनाहा, गोपालपुरिया, कन्नौजिया, कानपुरिया, मकनपुरिया, नई कनपुरिया पूरबिया, सरवरिया, संकरपुरिया, शेखपुरिया, श्री वास्तव, सिसपुरिया, रूविलपुरिया, सुकलपुरिया, सूरजपुरिया, ताजपुरिया आदि आदि यह भेद ग्रामों से निकास होने के कारण से पड़े हैं।

इस जाति में क्षत्रिय वंशों की अधिकता है जैसे वैस, चौहाण, जोला, कछवाहा, काकन, नूरबाफ़, सँगरा और तरकीहार आदि आदि।

इसके अतिरिक्त इनके भेद N. W. F. गज़ेटियर में भूसिये अलाहाबादी, टोडरमली, बनैत, चेला, सोलसिंघी आदि आदि भी लिखे हैं यह सब पहिले राजपूत थे मुसलमानों की नंगी तलवारों के नीचे आकर के अपना क्षत्रियत्व न रख सके और मुसलमान कर लिये गये मिस्टर मोनियर विलियम ने अपने ग्रन्थ में इस जाति का अन्वेषण करते हुए लिखा है कि यह लोग पहिले राजपूत थे और मुसलमान होते हुए भी कालीजी और सहजामाई की पूजा करते हैं यह हरदुआ लला

की पूजा करते हैं यह लोग ईद और बकरीद पर अपने पुरखों का श्राद्ध करते हैं इनकी स्त्रियें हिन्दू स्त्रियों की तरह धूप खेती हैं यह लोग अन्य हिन्दू और मुसलमानों की तरह शराब नहीं पीते हैं युक्तप्रदेश में इनकी आबादी बहुत थोड़ी सी हैं आगरा बांदा और ललितपुर, झांसी की तरफ़ कुछ थोड़े से हैं। इनकी रीति भांति में हिन्दुत्व बहुत कुछ विद्यमान है अतएव शुद्ध कर लेने योग्य हैं।

२२—चौहाणः—

यह एक प्रसिद्ध राजवंश है इनको कर्नल जेम्स टॉड साहब ने ३६ राजकुलों को सूची में लिखा है यह नाम कैसे पड़ा ? इस पर विचार करने से एक विद्वान् ने लिखा है कि

नाम विवर्ण

(१) इस राजपूतवंश के पास चतुरंग सेना थी अतएव ये चतुरंग राजपूत कहाते कहाते चौहान कहे जाने लगे।

३—एक दूसरे ऐतिहासिक विद्वान का ऐसा मत है कि, **चतुर्बाहु** एक बड़ा प्रतापी राजा हुवा है उससे ये चौहान कहे जाने लगे।

२—तीसरे विद्वान का मत ऐसा है कि '**चौवंस**' का बिगड़ कर चौहाण बना है अर्थात् अग्निकुल की चालुक्य, प्रमार आदि चार शाखाओं का समुदाय बाची नाम चौहान हुवा है।

४-चौथे विद्वान का ऐसा मत है कि यह नाम चौ+हानि इन दो शब्दों के योग से चौहानि बना है और यह ही चौहानि शब्द बिगड़कर आजकल का चौहान व चौहाण शब्द बनगया है। चो का अर्थ चार और हानि का अर्थ नुकसान अर्थात् जिनके चार नुकसान होगये वे चौहान कहे जाने लगे और यही चौहान शब्द आजकल कहीं कहीं चौहाण भी पुकारा जाता है लिखा है:—

When crossing the Indus with Mansingh's army in 1586 A. D. they lost the four requisities viz Dharm, Riti, Daya and Karam.

(C. & T. P. 308)

अर्थात् ईस्वी सन १५८६ में जब राजपूत लोग महाराज मानसिंह को फौज के साथ सिंधु नदी पार कियी तब इनका धर्म, रीति, दया और कर्म ये चारों बातें जाती रहीं तबसे ये चौहाण कहे जाने लगे।

इसका भावार्थ यह है कि यह जाति वीर थी और यवनों से बहुत लड़ती भिड़ती थी अतः यवनों ने राज्यबल द्वारा ऐसा प्रचार देश में बढ़ाया कि समुद्र व जल यात्रा करनेसे महापाप लगता है तदनुसार जब यह वीर जाति सिंधु नदी पार उतरी तो इन्हें अपना धर्म कर्म रीति और दया त्यागने वाले बताया गया और तदनुसार इनका नाम भी चौहानि पड़ा होना सम्भवसा है जो द्वेष बुद्धि की घड़ंत होने से अमाननीय है। इसही के अनुसार इस जाति के लिये Low grade नीच पद का प्रयोग भी किया गया है पर यह कुतर्क ठीक नहीं।

५-पांचवे विद्वान का ऐसा कथन है चाह+मान्य =

चाहमान्य अर्थात् जिन्हें मान्य की इच्छा थी वे राजपूत चाहमान्य चाहमान्य कहाते कहाते चौहान कहे जाने लगे।

६-छठवें विद्वान का मत ऐसा है कि चौमान्य शुद्ध शब्द से बिगड़कर चौहाण व चौहान होगया है इस चौमान्य में दो शब्द हैं चौ = चारों ओर से मान्य = प्रतिष्ठित अर्थात् जो वंश चारों ओरसे प्रतिष्ठित था जिसकी चहुँओर धाक जमी हुयी थी वे चौमान्य चौमान्य कहाते कहाते चौहाण व चौहान कहे जाने लगे। इसही भाव की पुष्टि निम्न लिखित शिला लेख से भी होती है:—

श्रीमद्वत्समहर्षि नयनोद्भूतांबुपूर प्रभा।
पूर्वोर्वीधर मौलि मुख्य शिखिरालंकार तिग्मद्युतिः ॥१
पृथ्वींत्रातुमपास्तदैत्य तिमिरः श्री चाहमानःपुरा।
वीरः क्षीर समुद्र सोदर यशोराशिप्रकाशोभवत् ॥२॥

भावार्थः—मारवाड़ राज्य में जसवंतपुरा गांव से दस मील उत्तर की ओर पहाड़ी के ढलाव में 'सूधामाता' नामक देवी का एक मन्दिर है उसमें के विक्रम सम्वत् १३१८ ईस्वी सन् १२६१ के चौहान चाचिम देव के उपरोक्त लेख में चाहमान शब्द आया है।

आजकल चौहाणवंशी राजपूतों की धारणा ऐसी है कि 'हम अग्निवंशी राजपूत हैं और वशिष्ठ के अग्निकुंड से पैदा हुये हैं' परन्तु विक्रम सम्वत् १०३० से १६०० तदनुसार ईस्वी सन ९७३ से १५४३ तक के इनके कई शिलालेख मिले हैं उनमें कहीं भी इस प्रकार का उल्लेख नहीं मिलता है। कालोनियल मि०

जेम्स टॉड को अन्वेषण करते हुये हांसी के किले में वि० सम्वत् १२२५ तदनुसार ईस्वी सन ११६७ का एक शिला लेख* मिला था उसमें इस वंश को चन्द्रवंशी लिखा है।

इनकी वंश परापर के विषयक प्राचीन लेखों पर विचार करने से यह वंश चन्द्रवंशी वत्स्य ऋषि की सन्तान प्रमाणित होते हैं।

चौहाणों का राज्य पहिले पहल अहिच्छत्रपुर में था उस समय यह देश पाञ्चालदेश की राजधानी माना जाता था, बरेली से करीब दस कोस की दूरी पर रामनगर के आसपास अब भी प्राचीन भग्नावशेष विद्यमान हैं।

विक्रम सम्वत् ६९७ (ई० सन ६४०) के करीब प्रसिद्ध चीनी यात्री हुएन्त संग भारत भ्रमण को इस देश में आया था तब वह यहां रहा था उसने लिखा है कि अहिच्छत्रपुर का राज्य छःसौ माइल याने ३००० तीन हजार ली के घेरे में है इस नगर में बौद्धों का १० संघाराम जिनमें एक हजार भिक्षुक रहते हैं, यहां पर ब्राह्मणों के भी ६ मन्दिर हैं जिनमें तीनसौ पुजारी हैं।

इसही अहिच्छत्रपुर से ये लोग मारवाड़ प्रदेशान्तर्गत शाकम्बरी (सांभर) में आये और यहां ही अपनी राजधानी बनायी जिससे ये लोग शाकम्बरीश्वर कहे जाने लगे, अजमेर भी इसही वंश का बसाया हुआ है राजपूताने में कोटा बूंदी और सिरोही आदि आदि राज्य इसही वंश के हैं।

राजपूताने में चौहाणों की खांपें:-नीमराणा, नाडोल, सो-

---

*Chronical of the Pathan Kings of Delhi and B. Harat Ke P. Rajbhans.

नगरा, देवड़ा, सांचोर, मोयल, वालिया, जोजा, पावेचा, मादरेचा, बोड़ा, हाडा, खांची, निरवाण और पूरबिया।

युक्तप्रदेश में भी चौहाण वंश का राज्य बहुत रहा है और दिल्ली तो पीढ़ियों तक चौहाणों के कब्ज़े में रही ही दिल्ली के महाराज पृथिवीराज चौहाण एक प्रसिद्ध अधीश्वर थे।

युक्त प्रदेश व अवध में दीक्षितयाना व दीक्षितयाना एक देश था इसही के दक्षिण व गंगा के बीच में का देश चौहाना कहा जाता था इस चौहाना से अवध में इस वंश के जाने के विषय में ऐतिहासिज्ञों ने एक आख्यायका ऐसी लिखी है कि मैनपुरी में एक चौहाण राजा था जिसके एक रानी थी उससे उसके दो पुत्र थे परन्तु राजा वृद्धावस्था में किसी एक दूसरी राजकुमारी पर आसक्त होगया और उसके साथ विवाह कर लेने को उतारू हुवा परन्तु उस राजकुमारी के माता पिता ने पुत्रवती रानी के होते हुये वृद्ध राजा के साथ अपनी लड़की का विवाह करना उचित न समझा अन्त को बड़े उद्योग करने पर यह प्रतिज्ञा ठहरी कि इस नव-विवाहिता बधु को सन्तान राज्याधिकारिणी होगी तदनुसार प्रतिज्ञा-पत्र पर हस्ताक्षर होकर द्वितीय विवाह होगया और वह राजकुमारी भी पुत्रवती होगयी, इतने ही में वह वृद्ध राजा स्वर्गलोक को सिधार गया, इस पर उस द्वितीय रानी ने भाई बिरादरी के सन्मुख वह प्रतिज्ञा-पत्र पेश करके अपने पुत्र को राज्याधिकारी बना लियो, अतः प्रथम रानी के दोनों पुत्र अवध में जा बसे एक भाई मैनपुरी में रहा और दूसरा गोमती के किनारे इसोली ग्राम में जा बसा जहां चौहाणों के बहुत कुछ देश हैं।

युक्तप्रदेश के चौहाणों में मैनपुरी, राजोर, प्रतापनेर और

चकरनगर के चौहाण प्रसिद्ध हैं, ईस्वी सन १३०० के लगभग ये लोग इधर आकर बसे थे महाराज रुद्रप्रताप भी इसही वंश के एक महान व्यक्ति थे, यह रुद्रप्रताप दिल्ली के महाराज पृथिवीराज चौहाण के पड़बाबा थे, मथुरा, बुलन्दशहर, बरेली, बदायुं, मुरादाबाद आदि आदि युक्तप्रदेश के कई जिलों में चौहाण राजपूत विशेष हैं, दिल्ली की गद्दी पर चोहाणवंश का प्रसिद्ध व अन्तिम राजा पृथिवीराज चौहाण हुवा है जिसने मुसल्मानों के साथ बड़ी लड़ाइयें लड़ी हैं और जो ईस्वी सन ११९३ में बादशाह शाहबुद्दीन गोरी से पराजित होकर स्वर्गधाम को चलागया।

मुसल्मान बादशाह और चौहाण बादशाहों की प्रायः बड़ी बड़ी मुटभेड़ हुवा ही करती थीं महा प्रतापी दिल्लीश्वर महाराज पृथिवीराज चौहान के बादशाह शाहबुद्दीन गोरी के साथ बड़े बड़े युद्ध हुए हैं यहां तक कि सम्राट पृथिवीराज चौहान ने शाहबुद्दीन को पांच दफे क़ैद किया परन्तु अपनी दया के भाव में आकर और बादशाह की गिड़गिड़ाहट को सुनकर उसे पांचो ही बार छोड़ दिया। छठे बार के युद्ध में बादशाह की जीत और पृथिवीराज क़ैद करलिया गया तब पृथिवीराज ने बादशाह से अपने को छोड़ देने की प्रार्थना की, अर्थात् चौहान सम्राट ने बादशाह से कहा कि, 'मैंने आपको पांच बार छोड़ दिया था आप मुझे एक बार ही छोड़ दीजिये।" इस पर बादशाह ने कहा कि आप नीति नहीं जानते भला कबजे में आए हुए शत्रू को कोई छोड़ता होगा। बादशाह ने पृथिवीराज चौहान की संपूर्ण फौज को कैद करली और सब धन दौलत लूटकर लेगया क्योंकि पृथिवीराज चौहाण बड़ा बली था अत-

एव उसके भाग जाने के भय से पृथिवीराज के हथकड़ी, वेड़ी जड़ी जाकर सवा मन पक्के की जंजीर से वो बांधा जाकर जेलखाने की बड़ी मजबूत हवालात के पिंजरे में रखा गया। इस पर भी बादशाह सन्तुष्ट न हुवा और सम्राट चौहान की जीते जी आंखें निकलवा ली गईं।

सम्राट को ऐसी दशा करते हुए उनकी फौज व उनके कुटुम्बीजन व अन्य राजपूत गणों को बड़े बड़े सन्ताप दिये जारहे थे अन्त को हजारों राजपूतों ने विवश इस्लाम धर्म को स्वीकार करके अपने प्राणों की रक्षा की !

पृथिवीराज चौहान का परम प्रिय मित्र चन्द्रभाट था अपने मित्र वीर शिरोमणी की दुर्दशा देखकर चिन्तित था। अन्त को उसने बादशाह को इस बात पर राजी किया कि मुझे अपने मित्र से जेल में मिल आने की आज्ञा दे दी जाय। तदनुसार आज्ञा मिलने पर पृथिवीराज से चन्द्रभाट जेल में जाकर मिला चूंकि पृथिवीराज देख नहीं सकता था अतएव पिंजरे के पास खड़े होकर सम्राट को विरदावली सुनाने लगा महाराज अपने मित्र की आवाज को पहचान कर व वीर रस के वाक्यों को सुनकर हथकड़ी बेड़ियों से जड़ा हुवा व सवामन पक्के की जंजीर से बंधा हुवा एक दम खड़ा होगया। और परस्पर वार्तालाप होने लगा समय पाकर चन्द्रभाट ने पृथिवीराज चौहान को एक गुप्त मंत्र सुना दिया और चला आया फिर बादशाह से चन्द्रभाट ने कहा कि "पृथिवीराज को आप मरवावेंगे परन्तु उसके मरने के पूर्व उससे एक विद्या सीख ली जाती तो बड़ा अच्छा होता। अन्यथा वह विद्या उस ही के साथ सदा के लिये नष्ट हो जायगी। अर्थात् पृथिवीराज

शब्द भेदी तीर से सात लोहे के तवों में एकदम छेद कर देने की विद्या जानता है। इस पर बादशाह राजी हुए और इस कार्य्य के लिये चन्द्रभाट अकेले बादशाह को थोड़े से नौकरों के साथ ही जेलखाने में ले गया। एक तरफ़ बादशाह को बिठाया और दूसरी तरफ़ सात तवे लोहे के जड़वाये। अब यह सब तैयारी करके बादशाह से कहा कि तवों की दूरी को नाप कर दूर से मैं पृथिवीराज को समझादूं इस पर बादशाह ने आज्ञा दे दी। तब चन्द्रभाट ने पृथिवीराज को ज़ोर से चिल्लाकर समझाया किः—

चार बांस चौवीस गज, अंगुल अष्ट प्रमाण।
मार मीर मोटे तवे, मत चूके चौहाण॥

भा०-चन्द्रभाट ने पृथिवीराज को समझाया कि तेरे से लेकर चार बांस चौबीस गज आठ अंगुल की दूरी पर बादशाह बैठा हुआ है सो उसकी आज्ञा पाते ही उसे तीर से गिराले। इस भावार्थ को समझाने के पश्चात चन्द्रभाट ने बादशाह से कहा कि हुजूर आप पृथिवीराज को तीर चलाने की आज्ञा दीजिये। आपकी आज्ञा पा लेने पर ही वह तीर चलायेगा ज्योंही बादशाह ने आज्ञा दी त्योंही पृथिवीराज ने उनके शब्द पर तीर चला दिया जिससे बादशाह के टुकड़े २ होगये। तब चन्द्रभाट ने पृथिवीराज से कहा कि अब तुम्हारी हमारी खैर नहीं है इसलिये अपनी तलवार पृथिवीराज के हाथ में देकर कहा कि तुम मेरा सिर काटदो और मैं तुम्हारा सिर काट दूं इस पर पृथिवीराज ने कहा कि पहिले तुम्हारा सिर काट दूं तो फिर तुमसे मेरा सिर नहीं कटेगा तदनुसार दोनों मित्रों ने ऐसा करके सच्ची मित्रता का परिचय दिया। इन दोनों मित्रों के

परस्पर मरने का कारण यह था कि यह लोग मुसलमानों के हाथ से मारे जाने की अपेक्षा अपने हाथों से ही मर जाना अच्छा समझते थे।

इस तरह चौहाण राजपूत व मुसल्मान बादशाहों से बड़े बड़े युद्ध होते रहे हैं जिनमें जब जब मुसल्मान बादशाह व उनकी मुसल्मान फौजें गिरफ़ार हुयीं तब तब हिन्दू राजा लोग अपनी बेवकूफी के दया भाव में फंसकर बादशाह व उसकी फौजों को छोड़ देते थे पर उस समय के बादशाह लोग **संगठन** के महत्व को जानते थे अतएव फ़तवा होता था कि 'या तो मुसल्मान बन जाओ अन्यथा क़त्ल किये जावोगे' तदनुसार लाखों ही मुसल्मान कर लिये जाते थे भारत में क्याम-खानी, खानज़ादे, देशवाली आदि आदि नामधारी मुसल्मान पहिले सब चौहाण राजपूत थे, भारत के एक युक्तप्रदेश में हिन्दू चौहान राजपूत आजकल ३९७१४२ हैं और **नौमुस्लिम** चौहाण ६४३१२ हैं जिसका व्योरा इस प्रकार से है।

नाम जिला	हिन्दूचौहाण	नौ-मुस्लिम चौहाण	योग
देहरादून	४०४६	२४८	४२९४
सहारनपुर	१३२५०	७७६६	२१०१६
मुजफ्फरनगर	७०४१	४०५६	११०९७
मेरठ	१९५२९	१७९	१९७०८
बुलन्दशहर	१३९४४	७२३६	२११८०
अलीगढ़	१६३४४	५१	१६३९५
मथुरा	३८२५	४१६	४२४१
आगरा	११९३९	१५४	१२०९३
फर्रुखाबाद	५४९५	७	५५०२

युक्तप्रदेश में चौहान राजपूतों की संख्या।

नाम जिला	हिन्दू चौहाण	नौ मुसलिम चौहाण	योग
मैनपुरी	२४६८०	१५	२४६९५
इटावाह	९८९७	१६८	१०६५
एटाह	१३७०६	९४३	१४६४९
बरेली	७०११	२३९	७२५०
बिजनौर	७७८९०	०	७७८९०
बदायूं	६३६८	२८३	६६५१
मुरादाबाद	३७८३६	१२२८	३९०६४
शाहजहांपुर	९०१६	३७५	९३९१
पीलीभीत	२०८२	१३	२०९५
कानपुर	८७९४	१०६	८९००
फतेहपुर	२८४७	७६	२९२३
बांदा	१४९८	४३	१५४१
हमीरपुर	५३३	१९	५५२
अलाहाबाद	१४८३	५२३	२००६
झांसी	७५३	३९	७९२
जालोन	५५१५	९	५५२४
ललितपुर	५७८	२४	६०२
बनारस	५९१	२५३	८४४
मिर्जापुर	१६७५	२३	१६९८
जौनपुर	१६८०	९८९	२६६९
गाज़ीपुर	१३५६	६५६	२०१२
बलिया	२१३१	३५७	२४८८
गोरखपुर	३४६१	४६४९	८११०
बस्ती	१७४६	१०४५६	१२२०२
आज़मगढ़	२९२५	३९२६	६८५१
कमाऊं	१३४	०	१३४

युक्तप्रदेश में चौहान राजपूतों की संख्या।

नाम जिला	हिन्दू चौहाण	नौमुस्लिम चौहाण	योग
तराई	७९८७	०	७९८७
लखनऊ	५७४५	१५१	५८९६
उन्नाव	१०५४०	१६	१०५५६
रायबरेली	६१८९	७६७	६९८६
सीतापुर	५५६२	३४२४	८९८६
हरदोई	६७१२	०	६७१२
खेड़ी	४०२७	२७६६	७३९३
फयज़ाबाद	५८५८	१९७८	७८३६
गोंडा	८९९७	४०२	९३९९
बहराइच	२६७८	६८४५	९५२३
सुलतानपुर	४४२५	१४७८	५९०३
परताबगढ़	३०६५	१४४	३२०९
बारावंकी	३३५६	८४०	४१९६
जोड़—	२९७३४३	६४३६३	४६१७०६

इन नौमुसलिम चौहान राजपूतों का खान पान, रहन सहन चाल ढाल व रीति भांति हिन्दुआनी व मुसलमानी दोनों मिली जुली सी हैं। यह लोग चाहते हैं कि हम लोग शुद्ध किये जायं और हिन्दू जाति हमें अपनावे, ऐसी स्थिति में यह जाति अवश्य शुद्ध की जाय ऐसा हमें न्याय संगत प्रतीत होता है।

चौहान राजपूत मुसलमान किये जाकर कहीं पर 'क्यामखानी' और कहीं पर 'खानजादे' कहीं पर 'नायक' कहीं पर 'जोया' कही पर 'बेहलीन' कहीं पर 'खिलजी'

और कहीं पर 'काजी' नाम से प्रसिद्ध हुए इन सबका विवर्ण अक्षर क्रमानुकूल इसही ग्रन्थ में मिलेगा।

राजपूताना में चौहान राजपूतों की संख्या १०१८२० है। इनके अतिरिक्त उपरोक्त लेखानुसार मुसलमान हुए राजपूतों की संख्या जैसे क्यामखानी आदिकों की संख्या हजारों है इन राजपूत मुसलमानों से जैपुर, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, आदि आदि रियासतें भरी हुई हैं जिनका उद्धार होना भी आवश्यक है।

२३-चन्देलः-

यह एक प्रसिद्ध राजवंश है ऐतिहासिक विद्वानों ने लिखा है An importaut sept of Rajputs. कि 'एक बड़ा बलिष्ट राजपूत कुल अर्थात् जिस वंश ने धर्म व जाति की रक्षणार्थ बड़े बड़े युद्ध किये, देश व धर्म की रक्षा के लिये अपने प्राणों को नौछावर करते हुये धर्म रक्षणार्थ खून की नदियां बहायीं व जिन्होंने बड़े साहस व धैर्य्य के साथ मुसल्मान बादशाहों के अत्याचारों को रोका वह वंश आज चन्देल राजवंश एक बलिष्ट राजपूत वंशों की गणना में लिखा गया है।

इस वंश की उत्पत्ति के विषय में सरकारी अनुसन्धान-कर्त्ता विद्वानों ने लिखा है कि* काशी के गहरवार राजा के

*Bundelkhand G.

पुरोहित हेमराज के एक अति सुन्दरी लड़की हेमावती थी जिसको चन्द्रमा ने बिवाह करके अपनी पत्नी बना लियी—चन्द्रमा (चन्द्रदेव) ने ब्राह्मण की लड़की से बिवाह करके हेमावती को बरदान दिया कि 'तुम्हारी सन्तान बड़ी प्रतापी होगी और ये लोग जब तक अपने नाम के साथ ब्रह्म लगाते रहेंगे तबतक बराबर राज्य करते रहेंगे और यह भी कहा कि:—

And they continuend to shun unchastity to avoid the Vicious, lepers and one eyed, and to take care not to slay a Brahmin or to drink wine.

(Bund. G. P. 625)

भा०—और जबतक वे अपवित्रता से दूर, परस्त्री गमनादि कुकर्मों से अलग, कोढ़ी और कानों से अलग तथा मद्यादि मादक द्रव्यों से अलग, और ब्रह्महत्या से बचे रहेंगे तब तक अटल राज्य करते रहेंगे।

ऐसे बरदानयुक्त हेमवती के पुत्र उत्पन्न हुवा उसका नाम चन्द्रब्रह्म व चन्द्रवर्म्मा रक्खा गया, विद्वानों का कहना है कि इसही राजा चन्द्रवर्म्मा ने चन्देरी बसायी थी जो पहिले चन्देली कहाती थी। यह चन्देल वंश की प्रभुत्वता विक्रम सम्वत् १०५६ व ईस्वी सन ९९९ से जमी जान पड़ती है इस वंश के भिन्न भिन्न स्थानों में अनेकों शिला लेख मिले हैं जिनके आधार पर चन्देलवंशी राजाओं की सूची इस प्रकार है:—

१ चन्द्र वर्म्मा २ राम वर्म्मा ३ रूप वर्म्मा ४ राहिल वर्म्मा ५ वाल वर्म्मा ६ रतन वर्म्मा ७ विजय वर्म्मा ८ वेल वर्म्मा ९ गंगा वर्म्मा १० दिलीप वर्म्मा ११ खजूर वर्म्मा १२ नवल-वर्म्मा १३ केशव वर्म्मा १४ हडा वर्म्मा १५ सुरूप वर्म्मा १६ घन्ता वर्म्मा १७ माधव वर्म्मा १८ कल्यान वर्म्मा १९ मदनवर्म्मा

२० कीरतिवर्म्मा २१ परमल वर्म्मा २२ ब्रह्मजीत वर्म्मा और २३ परमलदेव ।

इन्हीं नामों के अन्त में ब्रह्म शब्द अथवा वर्म्मा शब्द लगाना आवश्यक है इससे कुल परम्परा का बोध होता रहता है। चन्द्रब्रह्म व चन्द्र वर्म्मा ये दोनों शब्द एक ही माने गये हैं इस वंश के लिये बरदान था कि जब तक ब्रह्म व वर्म्मा कुल साङ्केतिक शब्द अपने नामों के अन्त में लगाते रहोगे तुम्हारा राज्य अटल रहेगा तदनुसार इस वंश के राजाओं ने ब्रह्म व वर्म्मा अपने नामों के अन्त में लगाया परन्तु राजा परमल दूसरे ने अपने नाम के अन्त में बर्म्मा के स्थान में 'देव' शब्द लगाकर परमलदेव कहाने लगा अतएव बरदान के अनुसार इस चंदेल वंश का राज्य यहां ही समाप्त होगया ।

हमने बड़े बड़े ग्रन्थों में अन्वेषण करके पता लगाना चाहा कि इस वंश का 'चंदेल' नाम कैसे पड़ा ? पर ठीक ठीक पता कहीं नहीं लगा अतएव ऐसा निश्चय होता है कि हेमावती के पुत्र चन्द्रवर्म्मा का विवाह किसी इला नाम्नी राजकन्या से हुआ जिनके वंस की शाखा का नाम चन्देल पड़ा होना सम्भव हो सकता है क्योंकि चन्द्र+इल = चन्देल ऐसा रूप भाषा में बन जाना सम्भव जान पड़ता है ।

इस वंश के विषय में अन्वेषण करते हुये कुछ प्राचीन आख्यायिकायें भी लिखी हुयी मिलती हैं यहां तक कि सरकारी अफसरों ने भी उन्हें मानकर अपने ग्रन्थों में लिखीं हैं और उनका यह प्राचीन शोध होने से सम्भव है कि इनमें विशेषांश सत्य ही होगा अस्तु ।

हेमावती बनारस के गहरवार राजा इन्द्रजीत के पुरोहित

हेमराज की लड़की थी अथवा इन्द्रजीत की ही लड़की होगी* यह हेमावती बड़ी धर्मनिष्ठा थी, इसे अर्द्धरात्री में सोते हुये चन्द्रमा के साक्षात् दर्शन हुये, यह उठी और जगकर भी अपने सम्मुख चन्द्रमा को देखा, तब चन्द्रमा जाने लगे तब हेमावती ने निवेदन किया कि "मैं गौतम की स्त्री जैसी नहीं हूँ जो आप छोड़कर जारहे हैं" इस पर चन्द्रमा ने कहा कि भगवान श्री कृष्णचन्द्र का श्राप पूर्ण हुवा अर्थात् तुम्हारे एक पुत्र बड़ा बलवान होगा और अटल राज्य करेगा इस पर हेमावती ने पूछा कि "भगवन यह बतलाइये कि मेरे लड़के का श्राप मोचन कैसे व कहां होगा' इस पर चन्द्रमा ने कहा कि 'तुम्हारे जो लड़का होगा वह तुम्हारा कटार होगा अर्थात् जब आपका प्रसवकाल समीप हो तब तुम कालिंजर के समीप आसु में जाकर निवास कर लेना, बालक जन्म हो चुकने के कुछ दिन पश्चात् वहां से तुम केन नदी पार कर खजरैं चली जाना जहां चिन्तामणि बनिया के पास जाकर ठहरना, तुम्हारा लड़का बड़ा भारी यज्ञ करेगा इस कलिकाल में यज्ञ होते भी नहीं हैं तब मैं वहां ब्राह्मण के रूप में प्रकट कर यज्ञ करा दूंगा तब तुम्हारा श्राप दूर हो जायगा, इस प्रकार हेमावती के पुत्र का नाम चन्द्रवर्म्मा पड़ा और यही चन्देल खांप में पहिला राजा हुवा, इस चन्द्रवर्म्मा का जन्म विक्रम सम्वत् २१४ तदनुसार ईस्वी सन १५७ में हुआ था इसही चन्द्रवर्म्मा से परमलदेव तक चन्देलवंश के २३ राजा हुये।

---

*क्योंकि धर्मज्ञ राजा लोग ब्राह्मणों की लड़कियों से विवाह नहीं किया करते थे अतएव हेमावती इन्द्रजीत की राजकन्या होगी ऐसा निश्चय होता है।

—ग्रन्थकर्ता

राजा परमलदेव के पास कालिंजर का किला था जिसे बादशाह कुतुबुद्दीन ने १२०२ ईस्वी में ले लिया बड़ा भारी युद्ध हुवा सैकड़ो ही नहीं हजारों क्षत्रिय वीर काट गिराये गये और उतने ही जबरदस्ती तलवार द्वारा मुसल्मान कर लिये गये। मुसल्मान बादशाहों के साथ इस वंश को बहुत वार घमासान युद्ध करना पड़ा इनकी वीरता देखकर दिल्ली के बादशाह ने इनसे कर लेना भी बन्द कर दिया था लिखा भी है:—

One of the Cawnpure families fasten their Coats on the right side of the chest like muhamadans. They say that they do this in memory of the Delhi Emperors who remitted their Tribute.

भा०—यह सरकारी ग्रन्थ का प्रमाण है कि कानपुर की ओर के चन्देल लोग अपने कोट को दहिने हाथ की ओर मुसल्मानों की तरह बांधते हैं वे कहते हैं कि यह दिल्ली के बादशाह की याद में जिसने कर छोड़ दिया था किया जाता है इस तरह युक्तप्रदेश में **नौ मुसलिम** चन्देल २३४४ हैं जिनके आचार विचार व रहन सहन पर से निश्चय होता है कि ये शुद्ध करलेने योग्य हैं। बस्ती, सीतापुर, खेड़ी और सुलतानपुर के जिलों में अधिक हैं।

युक्तप्रदेश में हिन्दू चन्देल राजपूत ७११४६ हैं जिनमें से कानपुर के जिले में १२८६८, जौनपुर मे ७६०१, आज़मगढ़ में ५१८६- हरदोई मे ५३७६, उन्नाव में २८३४. सीतापुर में १०३७ बलिया में ३१०६, मिर्जापुर में ४६४७, बनारस में १६४४, अलाहाबाद में १६५६, हमीरपुर ५५४, बदायूं १०३८, फरुक्खाबाद १३४६, बांदा में ६५८ आदि आदि।

अन्देव वंश की रीति भांति पर विचार करते हुए विद्वानों ने लिखा है कि इनमें मनियादेव की तथा महादेवजी का पूजन होता है, मनीराम कोई महापुरुष हुवा है उससे यह पूजा इनमें कुलदेव के स्थान में कियी जाती है बाकी सब बातें क्षत्रियों की सी ही हैं कोई विशेषता नहीं। हां ये लोग राजपूताने की अपेक्षा आचार विचार से अधिक रहते हैं।

२४—छीपी:—

यह जाति हिन्दू व मुसल्मान दोनों ही प्रकार की है, हमारे अन्वेषण की यात्रा में विद्वानों ने बतलाया था कि यह छीपी शब्द 'क्षिपी' शुद्ध शब्द का बिगड़ा हुवा रूप है जो 'क्षिप्' धातु से बना है जिसका अर्थ फैंकना, उँडेलना, छापना आदि होता है अतएव जो छापने का काम करे व "क्षिपी" कहाते कहाते भाषा में 'छिपी' होकर 'छीपी' कहा जाने लगा। क्योंकि भाषा में "क्ष" बदलकर प्राय: "छ" हो जाता है यथा:—

शुद्ध शब्द	क्ष' भाषा में 'छ' होगया
क्षत्री	छत्री
क्षत्रिय	छत्रिय
क्षत्र	छत्र
क्षात्र	छात्र
क्षात्रवृत्ति	छात्रवृत्ति
क्षत्रिय वंधु	छत्रिय वंधु

शुद्ध शब्द	'क्ष' भाषा में 'छ' होगया
क्षोभ	छोभ
क्षमा	छमा
क्षेम	छेम
क्षत्रिय राजा	छत्रिय राजा
क्षत्रिय मित्र	छत्रिय मित्र
क्षत्ता	छत्ता
क्षेत्र	छेत्र
क्षेतर	छेतर
कुशलक्षेम	कुशलछेम
क्षमा	छमा
क्षमादान	छमादान
क्षेपक	छेपक
कुरुक्षेत्र	कुरुछेत्र
क्षुरी	छुरी
क्षौर	छौर
क्षेतरु	छेतरु
निक्षत्री	निछत्री

इस तरह यथार्थ में अनेकों क्षत्रियवंश अपने को छिपा छिपाकर व 'छिपो' छिपी कहाते कहाते छीपी कहाये जाकर प्रसिद्ध हुये और इस बदलाव से ये छीपी कोई अलग जाति ही माने जाने लगे।

इस जाति के विषय में एक विद्वान ने ऐसा भी लिखा है कि यथार्थ में "शिवि" राजा के वंशज अपने क्षत्रिय वंश के स्मृत्यर्थ अपने को "शिवि शिवि" कहाते कहाते भाषाभाषियों द्वारा "शिपि" कहे जाने लगे और दक्षिणी भाषा में 'शिपि शिपि'

कहाते कहाते जब परशुरामजी महाराज ने क्षत्रिय संहार किया तब इस शिपि जाति ने अपने को छिपाया और जहां जिसको स्थान मिला तहां ही जाकर अपनी जीव रक्षा किथी तबसे विपत्तिवश इन्होंने रंग विरंग को चित्रकारी वस्त्रों पर करना आरम्भ करके अपने को क्षत्रियत्व से छिपाया, ऐसा करने से यह ही इनके जीवन का मुख्य धन्धा होगया और तदनुसार ही ये लोग पुकारे जाने लगे अर्थात् शिपि से छिपी व छीपी कहे जाने लगे।

शिवि राजा चन्द्रवंशी था जिसके सात पुत्र हुये जिनके नाम १ कैलास २ कृष्णदत्त ३ भावसार, ४ रंगारा ५ दलीप ६ बन्भार ७ गोजू।

इन सातों से छीपियों की सात खांपें प्रसिद्ध हुयी यथाः— कैलास के टांक, कृष्णदत्त के गोले भावसार के भावसारे रंगारे के रिल्हे आदि आदि।

दक्षिण प्रान्तस्थ छीपा जाति के सम्बन्ध में एक सिविलियन अंग्रेज अफ़सर ने अपनी तहकीकात का फल बा० ग० के पृष्ठ ७३ में ऐसा लिखा है किः—

When Parsuram was exterminating the Kshatriya race they were Rajputs living at Mathura, and fearing the same fate as their brethren, became followers of one Ramdevji, a mendicant and came to Marwar. This Ramdevji being a calendar his followers at first were called Chhippas.

भा० परशुरामजी महाराज जब क्षत्रियवंश का संहार कर रहे थे तब छीपी लोग राजपूत थे और मथुरा प्रान्त में रहते थे

जब ये क्षत्रियगण परशुरामजी के भय से रामदेवजी के अनुयायी हुये और मारवाड़ में चले आये तबसे ये लोग छीपीपने का काम करके अपनी रक्षा करते हुये रामदेव वंशी छीपी कहाये।

फयजाबाद व सहारनपुर के भूतपूर्व कलेक्टर मि० डबल्यू० सी० ने अपनी रिपोर्ट में लिखा है कि:—

The Chhipi as a rule, ranks fairly high in social estimation. To the East of the Province he does not drink spirits or eat any meat. All Hindus including Brahmin will, it is said, eat pakki cooked by him.

भा०—छीपी जाति का जातिपद हिन्दू जाति में बिलकुल उच्च है, पूर्व में ये लोग न तो मदिरा पीते और न मांस खाते हैं, सम्पूर्ण हिन्दू याने ब्राह्मण लोग इनके यहां की बनी पक्की रसोई जीमते हैं।

The chhipi is the Calico printer and has been said to rank high by some writers.

U. P. C. Report. P. 229

भा०—छीपी लोग सूती कपड़ा रंगने वाले होते हैं अतएव कई विद्वानों ने इनका जाति पद उच्च लिखा है।

पुनः—

Chhipi caste of calico printers and chintz stampers, of whom they are both a Hindu and Mohomedan branch. The Hindu branch have a tradition that they were once Rathaur Rajputs.

C & T. Page 222

भा०—छीपी लोग सूती कपड़ा रंगने तथा छींट छापने का कार्य्य करते हैं जो हिन्दू व मुसल्मान दोनों ही तरह के होते

हैं। हिन्दू छीपी जाति में यह कहावत सदैव से प्रचलित है कि ये लोग राठौर राजपूत थे।

छीपी जाति के भेद।

पलहारिया, सूरजवंशी, दिल्लीवाल, बुलबुला, कनौजिया, दिलवारी, दुसुआ, पड़िया, गोला, साध, रेली, मारवाड़ी, सांगानेरी, नवछीराक, कछोट, मिल्कु, सुनावार, बनावार, कुढ़ियापेल, पानीसप, गधैया, अवधिया, कुपेंडिया, धरावने, दुसाये, जैनी, देसवारी, मेरठवाल, रेलिया, मथुरिया, गोठलवार टांक, पछैया, अयोध्यावासी, छत्रपुरिया, पंजाबी, पूरबिया, बैस, छत्री, श्रीवास्तव, बैसवार, दर्जी, अग्रवाल, बागड़ी, ढाकरिया, अग्रहारी, चौहाण, जादु, काछिया, रुहेला, राटौड़, राजपूत, सकरवार, रावत, उमर, तोमर।

चौपाई—आये भरथ संग सब लोगा,
कृष तन सब रघुबीर बियोगा।
बामदेव बसिष्ट मुनि नायक,
देखे प्रभु महि धरि धनु सायक॥

तु० रामा० उत्तरकांड।

भा०—छीपी जाति के प्रसिद्ध अगुवा वामदेवजी एक ऋषि थे और ये वामदेवजी भाषा भाषियों द्वारा 'नामदेव' जी कहे जाकर लोक में प्रसिद्ध हुये अतएव छीपी जाति के वंश का एक गोत्र भी 'नामदेव' ही है जो एक प्रसिद्ध ऋषि का नाम है।

छीपी जाति के अनेकों भेद हमने आगे लिखे हैं उनमें से

विद्वानों ने नामदेव बंशियों का है उनमें से विद्वानों ने नामदेव वंशियों का व साधों का पद उच्चतम माना है।

काव्यादि पुराणों में भी लिखा हैः—

वसिष्ठो विजयश्चैव जाबालि रथ काश्यपः।
कात्यायनो गौतमश्च वामदेवस्तथैवचः ॥ २ ॥

भा०—इन ऋषियों ने श्री रामचन्द्रजी महाराज का यज्ञ के सुगन्धित जल से अभिषेक किया था। इन्हीं वामदेव ऋषि के वंशज छीपी लोग वामदेव वंशी कहाते कहाते रामदेव वंशी कहाने लग गये।

पूर्बिये छीपियों का आदि निकासस्थान ढेहरी अबरेराछ स्थान से है, यह स्थान बुन्देलखंडान्तर्गत जालौन और झांसी के बीच समथर रियासत में है जहां की छपी छींटें प्रसिद्ध हैं। (Govtt. G. 423)

नामदेवजी के मन्दिर।

पहिला मन्दिर गंगापुर में बना है जो नामदेवजी के बाबा राजा गंगदेव ने बसाया था यह गंगापुर राजपूताना प्रदेशस्थ जयपुर राज्यान्तर्गत है, दूसरा मन्दिर दक्षिण प्रान्तर्गत पंढरपुर में बना है जो गुजरात का एक शहर है।

तीसरा मन्दिर काशी जी में श्री रामानन्दजी के मन्दिर के पास बना है। चौथा मन्दिर बृन्दावन में बना है जो मथुरापुरी के जिले में है।

पांचवां मन्दिर आगरा के समीप धौलपुर स्टेट में बना है मसजिद के पास, छठवां मन्दिर कोटा बूंदी के समीप झालरा-पाटन (झालावाड़) रियासत में सूखा कूवा के पास ही है।

सातवां मन्दिर कोटाबूंदी में है, आठवां मन्दिर मैगुगल जिला छपरा में बना है।

नवाँ मन्दिर खलचीपुर में है, दसवां मन्दिर सीतामढी में, ग्यारहवां मन्दिर सारंगा में, बारहवां मन्दिर खानपुर में, तेरहवां मन्दिर पंजाब प्रान्तर्गत राजगढ़ में तथा नरसिंहगढ़ में है, पन्द्रहवां मन्दिर छपरा रियासत ग्वालियर में सोलहवां मन्दिर बेरसिया गुजरात में, सत्रहवां मन्दिर सिरोल जिला भोपाल में अठारहवां मन्दिर रहली जिला सागर में, उन्नीसवां जबलपुर में श्री नामदेवजी के पांच मन्दिर तथा सागर में दो मन्दिर हैं।

अत्रैव नाम देवो भून्महाभागवतः सतु।
तस्योत्पत्तिं च कीर्तिञ्च वक्ष्यामाश्चर्य्य मुत्तमम् ॥
बभूव पंढरपुरे वामदेवेति नामतः।
जात्या शीपीति विख्याता, क्षात्र कर्म रता सदा ॥

—भा० मा० स० ३३

अर्थः—महाप्रतापी भक्त नामदेव हुये जिसकी उत्पत्ति व कीर्त्ति जो आश्चर्य युक्त है उसे मैं कहता हूँ॥ २॥ दक्षिण प्रान्तस्थ पंढरपुर ग्राम में वामदेव नाम हुवा जिसके वंशज शीपी (छीपी) कहाये जो सदा क्षात्रकर्म में रत थे।

श्री नामदेवजी का संक्षिप्त इतिहास।

यह एक दक्षिणी थे, घर में खाते पीते थे इनके प्रपिता बिट्ठल भक्त थे यह जाति से शिपी थे। इनके यहाँ कपड़ा बेचने व छापने का धन्दा होता था। इनका आदि स्थान कृष्णा नदी के किनारे नरसिंहपुर नाम का एक खेड़ा था। वहां से इनका

आगमन पंढरपुर हुवा। तहां कार्तिक वदी एकादशी को मेला भरा करता है। इनके बाबा का नाम नरहरि था। जिनके १ पुत्र हुवा। जिसका नाम दाम शेठ हुवा जो अपनी बाल्यावस्था में ही बड़ा ईश्वरभक्त हुवा। जो अपने माता पिता का भी पूर्णभक्त था। नरहरि ने उसे विद्याभ्यास कराया और अपने धन्धे में भी कुशल किया। नरहरि दामशेठ को सब काम सौंपकर कार्तिक मास को एकादशी को पंढरपुर चले गए और वहां ईश्वराधन करने लगे। दामशेठ जब १६ वर्ष का हुवा तब नरहरि ने उन्हें पंढरपुर में बुलाकर धार्मिक शिक्षा दी। इसके पश्चात् नरहरि का स्वर्गवास होगया। तब दामशेठ अपने मामा के घर आकर रहा। उसके मामा ने उसकी ईश्वर भक्ति देखकर उससे बड़ा प्रेम किया। और गोविन्दसेठ साहूकार की लड़की गोणाबाई के साथ उसका विवाह कर दिया।

दामसेठ के एक लड़की पैदा हुई जिसका नाम आऊबाई हुवा। दामशेठ व गोणाबाई को एक पुत्र की बहुत समय तक इच्छा रही अन्त में आप पंढरपुर गये और वहां पुंढरीष भगवान की सेवा करने लगे अर्थात् प्रातःकाल उठकर चन्द्रभागा नदी में स्नान करके नित्य श्री विट्ठलनाथ के दर्शन किया करते थे। जिसके फल से गोणाबाई को गर्भ रहा और कार्तिक शुक्ला एकादशी रविवार को प्रभव नाम संवत्सरे शाके ११९२ प्रातः काल सूर्योदय के समय एक लड़का जन्मा जो बड़ा ईश्वरभक्त 'नामदेव' नाम करके प्रसिद्ध हुवा। गोणाबाई ने उस पुत्र को पुंढरीषजी के अर्पण करना चाहा परन्तु रात को उसे दृष्टान्त हुवा कि तुम उसे भक्ति मार्ग में लगादो। तदनुसार 'नामदेव' भक्ति मार्ग में रत होकर प्रसिद्ध ईश्वर भक्त हुवा।

नामदेव जब दो तीन वर्ष के हुये तब केवल बिट्ठल बिट्ठल बोलने लगे। जब छः वर्ष के हुये तब दामशेठ ने उन्हें पढ़ने के लिये पंतोजी की पाठशाला में बिठाया। पंतोजी ने पाटी पर श्री गणेशायनमः और ओनामसिधं लिख दिया पर नामदेवजी उसे न बोल सके और बिट्ठल बिट्ठल पढ़ने व बोलने लगे। नामदेवजी के पिता दामशेठजी नित्य पुंढरीषजी की पूजा करके सप्रेम नैवेद्य चढ़ाया करते थे और उस भोग में से प्रसाद अपने घर लाकर भोजन किया करते थे ऐसा उनका पक्का प्रण व नियम था। एक समय व्यापारार्थ दामशेठ को बाहर जाना पड़ा तब चलते समय अपना भगवत नियम नामदेवजी के सुपुर्द किया कि "तू मेरी अनुपस्थिति में मेरी तरह से नित्य भगवान की सेवा पूजा व भोग लगाया करना" इसे नामदेवजी ने स्वीकार किया। जब दामशेठ ग्राम को चलेगये तब दूसरे दिन गोणाबाई ने नामदेव को मिष्टान्न देकर सेवा पूजा के लिये भेजा। नामदेवजी माता पिता की आज्ञानुसार मन्दिर में सप्रेम मंगल स्नान करके व पीताम्बर पहिनकर धूप दीप द्वारा षोड़षोपचार युक्त पूजन कियी और नैवैद्य भगवान के सन्मुख रखकर हाथ जोड़कर नामदेवजी प्रार्थना करने लगे कि "भगवान् भोजन करने को पधारिये" इस तरह थोड़ी देर तक प्रार्थना करते होगया और नैवेद्य जैसे का तैसा रक्खा हुवा दीखा तब नामदेवजी बड़े सोच में हुये कि नित्य जब मेरे पिता पूजन करते थे तब तो नारायण नैवेद्य लेजाते थे, परन्तु आज जब मैं अभागा सेवा में उपस्थित हुवा हूँ तब नैवेद्य क्यों नहीं ग्रहण कियी जाती है ? तब नामदेवजी पुनः नम्र बिन्ती करने लगे कि "हे कृपावन्त आज मेरे पूजन करने में क्या कोई त्रुटि रहगयी ?"

जो आप नैवेद्य ग्रहण नहीं करते, आपका भक्त दामशेट कहीं बाहिर गांव गया है और अनुचर को नैवेद्य देकर पूजा अर्चना के निमित्त भेजा है, हे भक्त वत्सल जब आप नैवेद्य नहीं ग्रहण करते तो मैं अपने मा बापों के सन्मुख क्या मुंह दिखलाऊंगा ? हे दीनबन्धो ! दीनानाथ !! मेरी लज्जा रखिये और नैवेद्य ग्रहण कर लीजिये अन्यथा आज मैं अपने प्राण ही अर्पण करदूंगा पर जाऊंगा खिलाकर। नामदेवजी इस प्रतिज्ञा पर दृढ़ होकर बिसूर बिसूर के रोने लगे और दक्षिणी भाषा (अपनी मातृभाषा) में यह रटने लगेः—

केशवा माधवा गोबिन्दा गोपाला,
जेवी तुं कृपाला पांडुरंगा ।
अच्युता वामना दशरथी नन्दना,
जेवी तुं गा कृष्ण पांडुरंगा ॥
कृष्णा विष्णु हरिः मधुसूदन मुरारी,
जेवी तुं नरहरि पांडुरंगा ।
ऐसी ग्लानि करता बिठ्ठल पावला,
नैवेद्य जेविला नामयाचा ॥

इस प्रकार जब अनेकों प्रकार से नामदेवजी ने अनन्य भक्ति के साथ भगवान की प्रार्थना कियी तब देव प्रसन्न होकर उसे साक्षात् दर्शन दिये और नामदेव से बोले "अरे छोकरे क्यों रोता है ? ले हम नैवेद्य खा जाते हैं और शेष प्रसाद तू घर लेजा। इस पर प्रसन्न होकर नामदेव ने पुनः साष्टांग नमस्कार किया और देव अन्तर्धान होगये तब शेष प्रसाद लेकर नामदेव घर चला गया। घर जाकर जरासा प्रसाद जो बिट्ठल भगवान

ने उसे दिया था लेजाकर अपनी माँ को देदिया इस पर माता ने नामदेव से पूछा अरे आज तू वह जरासी सी मिठाई कैसे लाया ? मैंने तो भोग के लिये तुझे बहुत अधिक दियी थी तब नामदेव बोला "भगवान ने जीम लियी और मुझे तो जो उन्होंने येही दो चार पेडे दिये थे सो मैंने तुमको लादिये इसपर नामदेव की माँ बड़ी क्रोधित हुयीं और कहा अरे भगवान तो वासना के भूखे हैं वे खाते नहीं हैं तू सच कह नहीं तो मारुंगी क्योंकि या तो तू खागया या किसी को दे आया होगा इस पर नामदेव की मा गोणाबाई और भी अधिक गुस्से हुयी और बोली, तेरे बाप को आने दे देख कैसा पिटवाती हूँ ?

इस पर नामदेव दिन भर व रात भर बड़ा सोच में रहा कि पिताजी के आने पर पीटा जाऊंगा। दूसरे दिन नामदेव का पिता दामशेट गांव से आगया और गोणाबाई ने सब कुछ कह सुनाया तब पिताजी के पूछने पर नामदेव बोला आप मेरे साथ चलिये मैं भगवान से पुछवादूं, इस पर नामदेव के पिता दामशेठ राजी हुये और दूसरे दिन पूर्ववत् धूप, दीप, नैवेद्य लेकर दोनों पिता पुत्र मन्दिर गये तहां नामदेवजी ने पहुंचते ही साष्टांग दण्डवत् बिट्ठल भगवान से कियी और दामशेठ व नामदेवजी पूर्ववत धूप दीप करके व षोड़शोपचार करके भगवान के सन्मुख नैवेद्य रक्खा और प्रत्यक्ष रूप से भोग करने को बिन्ती करने लगा जब बिट्ठल भगवान नहीं उठे तब नामदेव अपने छोटे से दुध मुंहे मुख से कहने लगे "देव ! तुम बड़े कपटी हो कल तो आपने भोजन कर लिया और आज मेरे पिता के सन्मुख आप जरा हिलते तक भी नहीं क्या आप मुझे पिटवाना चाहते हैं ?" इतना कहकर नामदेव बिट्ठल भगवान

के सन्मुख औंधे मुख पृथिवी पर लेटकर बिसूर बिसूर के रोने लगा इसपर भक्त वत्सल पुंडरीश भगवान बिट्ठलजी को दया आई और उन्होंने साक्षात् रूप धारण करके नैवेद्य का भोजन करना आरम्भ किया और नामदेव से बोले "छोकरे उठ रोता क्यों है" ले यह प्रसाद लेजा। दामशेठ इस दृश्य को देखते ही भगवान के चरण स्पर्श करने लगे कि इतने में भगवान अन्तर्धान होगये। तब दामशेठ व नामदेव प्रसाद लेकर घर आये और दामशेठ ने अपनी स्त्री से कहा कि "अपने घर में नामदेव ईश्वर का अंश है आज पुंडरीश बिट्ठल भगवान के साक्षात दर्शन हुये हैं अतएव अपने को भाग्यवान् मानना चाहिये कि अपने घर में ऐसा पुत्र रत्न पैदा हुवा है।

इस तरह की अनेकों आश्चर्य्ययुक्त घटनायें व कौतुकीय दृश्य नामदेवजी के जीवन काल के हैं उनको पुस्तकवृद्धि भयात् लिखने से असमर्थ हैं।

जब नामदेव दस वर्ष के हुये तब दामशेठ ने नामदेव को एक भगवद्भक्त बालक जानकर उसकी शिक्षा दीक्षा का सुप्रबन्ध किया जिससे वह होनहार बालक पांच वर्ष के परिश्रम से एक योग्य विद्वान व महात्मा माना जाने लगा और भूत भविष्य की बातें कहने लगा जिससे लोग चकित होते थे।

एक समय ज्ञानेश्वर महाराज व कई अन्य अन्य महात्माओं में 'ब्रह्मज्ञान' के किसी प्रश्न पर बिबाद पड़ा तब उस बिबाद को नामदेवजी ने निबटाया था तबसे उनकी और भी प्रसिद्धि बढ़गई।

नामदेववंशी व पीपावंशी इस नाम के छीपा लोग दर्जीपना

करते हैं और छीपापना भी, और कहीं कहीं वे दोनों दोनोंही काम करते हैं अतएव इनही धन्दे के कारण से ये लोग कहीं कहीं एकही माने व समझे जाते हैं।

मुंशी दे० प्र० जी ने ऐसा लिखा है कि 'परशुराम अवतार हुआ जब बाणासुर दैत्य के वंश से वामदेव राजा दक्खिन में पंढरपुर में था, उसने परशुरामजी के भय से क्षत्रिय धर्म छोड़कर रंगत का काम शुरू किया जिसकी सन्तान वामदेव वंशी छीपा कहलायो, फिर इसही के खान्दान में नामदेवजी बड़े भगवद्भक्त हुये, जब औरंगजेब बादशाह हिंदुओं को पकड़ पकड़कर मुसल्मान करता था तो नामदेवजी ने उसको ५२ परचे देकर, यह इज़ाजत हासिल किये कि 'जिसको बचाना हो उसके कंठी बांधदे' इस पर नामदेवजी ने ५२ गोत के सैकड़ों राजपूतों को बचाकर अपना चेला करलिया और उनको कपड़े सीने का काम सिखाया क्योंकि वह खुद भी रंगत के धंदे में अधिक खटराग और पाप देखकर सीने का काम किया करते थे उनके दो मुख्य चेले टीकम और गोबंद हुए टीकम के चेले टांक और गोबंद के गोले कहलाते हैं मारवाड़ में यह दोनों जातें छीपियों की अधिक हैं इनमें रोटी ब्यौहार तो है मगर बेटी ब्यौहार नहीं टांक की खांपें नथोय, रूंडआल, गोसलिया, सखा, उखाड़, मींड़ा, लूडर और नागो वगैरह हैं धर्म वैष्णव है कोई शिव औ शक्ति को भी मानते हैं सगाई व्याह आम रिवाज मुल्क के माफिक होता है मगर नाते में यह खास रिवाज है कि टांकों में तो बेवाके मा बाप की मारफ़त ५० से १०० तक रुपये उसके सासरेवालों को देकर पहिले उनकी फ़ारखती कराते हैं और फिर सनीचर की रात को गहना क-

पड़ा और चूड़ा पहिनाकर औरत को पीहर से नाते लेजाते हैं पीहरवालों को कुछ नहीं देते। गोलों में औरत के सुसराल वालों को रुपये देने और उनसे फ़ारखती कराने का दस्तूर नहीं है सिर्फ २४) पीहरवालों को दिये जाते हैं और नाता उसी तरह सनीच्चर की रात को होता है।

मुरदें को टांक छीपे सीड़ी में लेटाकर और गोले बैकुण्ठी में बैठाकर लेजाते हैं गोलों की न्यात में तीया क्रिया और बारहां नहीं होता है। गोलों के गोत भाटी, पड़ीहार, खोलंखी, और गहलोत वगैरह हैं खांपें कोई ७२ कोई ८४ कोई १७२ और कोई ११५० बताते हैं भाट ने ११०० लिखाई मगर मारवाड़ में इतनी हैं तुपंधर, बीडरूर, ऊंटवाल, पुरबिया, ईडीवाल, खासी, मालंगिया, कीजड़ा, नागा, डीडवाणिया, सारण, बाट्ठू, कावली, जाट्ठू, नामदेव बंशी, बांदी, मोयल, छापरवाल, रुणवाल, सखा, सीकरवाल, बोला, पाडवा, तोलंगिया, नई-वाल, मेड्ढू, जाकल, पीला, छदामन, मींट, खारनोकिया, तारवान, मलको, मेर, रतन, कोगचा, कछोट, गंपूड़ा, गदईया, मुसला, कूला, गोटवाल, बिदनिया वगैरह।

पेशा कपड़ा सीने का है गांवों में सावण साख की खेती भी करते हैं मर्द पगड़ी में सुई रखते हैं औरतें पांव में नेवरी वगैरह बजने वाला गहना नहीं पहिनती हैं।

अन्वेषण करने से पता चला है कि भारतवर्ष में दर्जी जाति के काम व धन्दे के कारण मुख्य दो भेद होगये हैं अर्थात् जो समुदाय सीने का काम करता है वे लोग दरजी तथा जो छापने व रंगने का काम करने लगा वह 'छिपि' कहाता कहाता भाषा भाषियों द्वारा 'शिपि' कहाजाने लगा और कहीं कहीं 'छिपि'

शब्द 'छिपि' में बदल गया और विद्या के अभाव से ह्रस्व इकारान्त छिपि, शिपि व छिपि शब्द बदलते बदलते युक्तप्रदेश व राजपूताने में "छीपी" होगया दक्षिण प्रान्त में तो अभी तक 'छीपी' को 'शिपि' ही कहते व लिखते पढ़ते आरहे हैं।

कई स्थानों में हमने देखा है कि दर्जी लोग रंगने व सीने का दोनों ही काम करते हैं परन्तु शहरों व छावनियों में जिसकी दुकान जिस ढंग की जमगयी वे लोग उसही तरह का एकही धन्दा करने लगगये इसलिये सैकड़ों वर्षों के लगातार काम करते रहने से दर्जी व छीपी कहे जाने लगे। और ये लोग भी मुसल्मानों के अत्याचार के समय इस देश में विशेषरूप से क्षत्रियवंश पर आपत्तियें आती थीं तदनुसार यह छीपी जाति भी इस महान् विपत्ति से नहीं बच सकी हजारों ही क्षत्रिय नित्य क़त्ल किये जाते थे और हज़ारों ही नित्य मुसल्मान किये जाते थे। उस समय के मुसल्मान बादशाह कट्टर मुसल्मान नहीं थे किन्तु उनका ध्येय विशेषरूप से अपने संगठन पर रहता था। अर्थात् वे लोग विशेषरूप से क्षत्रियों का इस कारण से नाश करते थे कि ये लोग सदैव से राज्याधिकारी होने के कारण मुसल्मान बादशाहों के पैर इस देश में नहीं जमने देते थे अतएव क्षत्रियवंश ही मुसलमानों के आंखों में कांटा सा खटकता था। इसलिये मुसल्मान बादशाहों को अपनी शक्ति बढ़ाने और भारतवर्ष में राज्य कर सकने के लिये दो उपायों का अवलम्बन करना पड़ा अर्थात् सबसे प्रथम जिस तरह हो सके उस तरह से क्षत्रिय जाति के हिन्दू लोग मुसलमान किये जांय जिससे उनका और हमारा रहन सहन खान-पान व धर्म एक होजाय ऐसी दशा में हिन्दू लोग हमारे राज

मार्ग में किसी प्रकार की कोई अड़चल (बाधा) पैदा न करेंगे। दूसरा उपाय उन्होंने यह सोचा कि जो क्षत्रियगण मुसलमान न हों वे एक दम क़त्ल कर दिये जांय यद्यपि मुसल्मानी धर्म के अनुसार किसी मनुष्य को जान से मार देना महापाप माना है तथापि उस समय के बादशाह ऐसी शरह की कुछ परवाह न करके गाजर मूली की तरह से हजारों ही क्षत्रियों को नित्य कटवा डाला करते थे क्योंकि उनका सर्वोच्च मुख्य सिद्धान्त यह था कि समयानुकूल शरह की आज्ञा से बढ़कर अपनी संगठन शक्ति को बढ़ाना है इसही तरह आजकल भी तुर्किस्तान के बादशाह कमालपाशा ने शरह की कुछ परवाह न करके ख़िलाफत को मिटादी और अपने राज्य में बहुतसी बातें ऐसी चलादीं हैं जो मुसल्मानी धर्म के विरुद्ध हैं यहही नहीं किन्तु वहावियों ने हज़रत मोहम्मद साहब के चचा की कबर को मक्के मदीने में तोप बन्दूकों द्वारा नष्ट भ्रष्ट करवा दिया यह सब बातें बहुत पुरानी नहीं किन्तु सन् २३ व २४ की ही हैं। यह सब लिखने-लिखाने का भाव यह है कि उस समय के बादशाह लोग बड़े बड़े विचार वाले राज्य नीतिज्ञ थे और होने भी चाहियें। इसलिये वे लोग देश काल के अनुसार काम किया करते थे और जिस प्रकार हो उस प्रकार से अपनी संगठन शक्ति को प्रौढ़ बनाया करते थे। वे लोग लीक के फ़कीर नहीं थे किन्तु विचार से काम लिया करते थे। परन्तु हिन्दू समुदाय में इस समय जो बुड्ढे खुड्ढे सुड्ढे और लुड्ढे हैं वे न देश काल को जानने वाले हैं न राजनीतिज्ञ हैं न कुछ पढ़े लिखे हैं और न प्राचीन बातों के ज्ञाता हैं किन्तु हैं एकमात्र थोड़े से काल की चली हुई लीक के फ़क़ीर उनसे क्या

आशा की जा सकती है ? कुछ भी नहीं ! हिन्दु जाति का कैसे उद्धार होगा यहीं हमें तो बड़ा असमंजस है ?

छीपियों में नामदेव वंशी और रामदेव वंशी ये दो बड़े भेद हैं इनके क्षत्रियत्व के विषय में विस्तृत विवर्ण अलग ग्रन्थ में लिखेंगे। परन्तु उपरोक्त क्रमानुसार जब क्षत्रिय जाति पर अत्याचार बहुत बढ़ा तब वे लोग अपना प्राण बचाने के लिये अपने कुछ एक भाइयों की देखा देख छीपी का काम करने लग गये और इस धन्धे के द्वारा इन्होंने अपनी जाति छिपा ली और अपने प्राणों की रक्षा की। परन्तु इनमें से फिर भी बहुत से मुसलमान कर लिये गये। एक विद्वान ने हमें यह सम्मति दी है कि मुसलमानों के डर से जिन क्षत्रियों ने अपने को छिपा लिया था और जो छिपे हुए पकड़े जाकर के मुसलमान किये गये वे छिपे छिपे कहाते कहाते छीपे मुसलमान प्रसिद्ध हुए जिनकी रीति भांति बहुतसी हिन्दुओं की सी है हमने उनमें से कइयों को अपनी असली दशा पर वापिस आजानेको भी कहा परन्तु उन्होंने उत्तर दिया कि बापजी ! हिन्दू होजाने पर हमें अपने बाल बच्चों के विवाह शादी की बड़ी अड़चलें (कष्ट) पड़ेंगी यह कहना उनका किसी अंश में ठीक भी था हमारी सम्मति में यह अड़चलें भी मेट देनी चाहिये।

बादशाही अत्याचार के समय जब क्षत्रियजाति पर बिपत्ति पड़ी और जबर्दस्ती मुसलमान बनाये जाने लगे तब बहुतसों ने तो अपने को रंगने के काम में लगाकर रंगरेज (छीपा) प्रसिद्ध किया और बहुतसे मुसल्मान बनाये जाकर मुसल्मान छींपा कहाये, जिनके आचार विचार व रहन सहन को हमने देखा तो इन नौ मुस्लिमों में विशेषांश हिन्दुवानी रीतियों का पाया अतएव ये मुसल्मान छीपा शुद्ध कर लेने योग्य हैं।

भारतवर्ष के एक युक्तप्रदेश में छीपियों की लोक संख्या इस प्रकार से है:—

नाम जिला	हिन्दू	नौमुसलिम	जोड़
देहरादून	८१	०	८१
सहारनपुर	३४५४	८	३४६२
मुजफ्फरनगर	१६८६	३०२	१९८८
मेरठ	३८९४	१०५	३९९९
बुलन्दशहर	१३५५	०	१३५५
अलीगढ़	१३५७	०	१३५७
मथुरा	१३४२	०	१३४२
आगरा	१२४६	०	१२४६
बरेली	७४१	०	७४१
बिजनौर	१३८५	५३९१	६७७६
मुरादाबाद	२१४६	१४४४	३५९०
शाहजहांपुर	३१	२२१	२५२
कानपुर	३१	१३१	१६२
फतेहपुर	०	५०८	५०८
बांदा	०	३८०	३८०
हमीरपुर	१३९१	१९२	१५८३
अलाहाबाद	२९	५३०	५५९
झांसी	७१२	३०	७४२
जालौन	४८६	०	४८६
ललितपुर	२९९	०	२९९
बस्ती	१५६	०	१५६
तराई	१९७	२४२५	२६२२
रायबरेली	१३७	०	१३७
खेड़ी	३११	२	३१३
गोंड़ा	१४९	०	१४९
जोड़ —	२३२४९	११८७१	३५१२०

नोट–जिन जिलों में सौ से कम लोक संख्या थी उन्हें हमने छोड़ दिया पर जोड़ में वह संख्यायें सम्मिलित हैं।

मुसल्मान छीपे राजपूताने में भी हजारों ही हैं जिनमें से अकेले जोधपुर राज्य में २३३१ हैं, मारवाड़ के इतिहास पृष्ठ ५८१ में लिखा है कि ये हिन्दू राजपूतों से मुसल्मान बनाये गये हैं।

राजपूताने में हिन्दू व मुसल्मान छीपों के भाट एक ही हैं दोनोंही भाटों (Bards) को मानते हैं गोत्र भी दोनों के एक ही हैं, ये लोग अभी भी अपने पूर्वज नामदेवजी को मानते हैं और उनकी आज्ञानुसार जीव हत्या नहीं करते हैं यहांतक कि नील में जीव हिंसा देखकर उसे गलाते तक नहीं हैं और उसकी रंगत भी नहीं करते हैं।

ये लोग गोत की गोत में ब्याह नहीं करते हैं और दूर से इनकी चाल ढाल हिन्दुओं की सी चली आती है इनकी स्त्रियों के पहिनाव घाघरा (लहंगा) का है सुथन बहुत कम पहिनती हैं–इनके पिरोहत ब्राह्मण आते हैं उन्हें ये लोग दक्षिणा देते रहते हैं तथा बनिये के यहां से आटा सामान दिला देते हैं और वे लोग अपने आप बनाकर खाकर चले जाते हैं। ऐसा होते हमने अपने नेत्रों से देखा है।

साध यह युक्तप्रदेश की एक क्षत्रिय जाति है पर रहन, सहन व खान पानादि के द्वारा यह जाति उच्चपद रखती है अर्थात् ये लोग पूर्णतया अहिंसाधर्म के पालन करने वाले हैं। एक समय इस देश में वाममार्ग व बामहस्थ पंथियों की बड़ी प्रबलता थी उस समय इस देश में हिंसाकांड खूब फैला हुआ था सर्वत्र मांस मदिरा का उपभोग करना

धर्म का एक अंग माना जाता था यहांतक कि हिन्दूधर्म ग्रन्थों में व यज्ञों में भी इस प्रकार के हिंसायुक्त वाक्य कई स्थानों में मिला दिये गये थे तबही से इस देश के क्षत्रियों ने मांस मदिरा खाना पीना अपना कर्त्तव्य सा मानलिया था परन्तु उस समय ब्रह्मावर्तदेश में श्रीगंगाजी के किनारे एक परम विवेकी शिव-गिरी नामक एक साधु रहते थे। आजकल भी ऐसी प्रथा है कि जहां जहां श्री गंगाजी हैं वहां वहां के श्रेष्ठ पुरुष प्रायः गंगा स्नान करने नित्य जाया आया करते हैं और स्नान पूजन करके साधु महात्माओं के दर्शन व सत्संग करके आया जाया करते हैं तदनुसार उपरोक्त शिवगिरिजी महाराज पूर्णवैश्नव थे और वे सदैव अहिंसाधर्म का उपदेश दिया करते थे अतएव जिन जिन क्षत्रियों ने हिंसा त्याग कर अहिंसाधर्म ग्रहण किया और शिवगिरिजी की कंठी बांधी वे उन्हीं की तरह 'साधु' 'साधु' कहाने लगे अर्थात् लोग इन्हें श्रेष्ठ श्रेष्ठ मानने लगे इस ही शुद्ध शब्द 'साधु' का बिगड़कर 'साध' होगया है।

राजपूताना प्रान्तस्थ खंडेले के आसपास बीदासर कांचली एक स्थान है वहां के भाट शिवलाल गुरुबक्स ने हमें बतलाया कि बादशाह औरंगजेब से नारनवल (नारनौल) के आसपास निर्वाण राजपूतों का युद्ध हुआ था उसमें राजपूतों पर विपत्ति आयी तो बहुतसे राजपूत साध होकर उपरोक्त साधों में मिल गये। पहिले शूद्र जाति के लोग भी साधों में मिल जाते थे पर अब नीच जातियें नहीं मिलायी जाती हैं इसे दूसरे शब्दों में पांथिक जाति भी कह सकते हैं अर्थात् जैसे कबीर के पंथवाले कबीरपंथी, दादू के पंथवाले दादूपंथी, नानक के पंथ वाले नानकपंथी, तैसेही इस जाति की दशा समझना क्योंकि सबही तरह की उच्च जातियें साध हो सकती हैं।

कोई भी जाति का मनुष्य साध बनाया जा सकता है पर यदि वह नीच जात्युत्पन्न मनुष्य है तो उच्चजाति वाले उससे सम्बन्ध नहीं करेंगे क्योंकि लोकाचार भी मानते हैं।

साध बनाने की विधि

जिस प्रकार उच्च जातियों में जनेऊ संस्कार होता है तदनुसार इनकी सन्तानों का भी संस्कार होता है, तथा अन्य लोगों का भी। जब किसी को साध करना होता है तो विवाह के समय व बीसवें वर्ष तक वह साध करलिया जाता है। इनके यहां एक मोहराइच* होता है अतएव जब कोई कन्या व बालक, मनुष्य व स्त्री साध होना चाहती हैं तब अपने सिरपर मिठाई रखकर लाता है जिसे साध लोग "जुगत" कहते हैं फिर आने वाला मनुष्य मोहराइच से दण्डवत् कर के उस जुगत को उन के सामने रख देता है तब मोहराइच उस से कुछ धार्मिक प्रतिज्ञा करा कर फिर उसे गुरुमंत्र (शब्द) दे देता है तब उपस्थित समुदाय को परशाद बांट दिया जाता है तब वह साध हो जाता है।

इन का धार्मिक ग्रन्थ 'निर्वाण' कहाता है। जो लिखित है, छपवाना पाप समझते हैं, सर्व साधारण को देना व दिखलाना तथा स्पर्श कराना भी पाप समझा जाता है कबीरजी का ग्रन्थ दूसरी कोटि में प्रमाण माना जाता है।

अनेकों भक्तजनों के महावाक्यों का संग्रह 'निर्वाण' कहाता है

मांस मदिरा व मादक द्रव्यों से परहेज़, तम्बाकू, पान बीड़ी, सिगरेट, सोडा, लिमिनेड और बर्फ तक से परहेज़ किया जाता है।

*ब्राह्मण, गुरू व आचार्य्य की तरह इनमें का एक मनुष्य नियत कर लिया जाता है जो मोहराइच कहाता है।

ये लोग पूर्णमासी के दिन को पवित्र व सतयुग का दिन समझते हैं उस दिन इन के यहां मिठाई बटती है।

दान पुण्य अन्य हिन्दुओं की तरह नहीं करते किन्तु भूखे को रोटी दे देते हैं। लहसुन, प्याज़ और सलगम नहीं खाते हैं

इन का धन्धा रंगना व भिन्न २ प्रकार के कपड़े छापना है अनजान लोग कहीं कहीं इन्हें छींपे भी कह बैठते हैं ये लोग रंग में नील को काम में नहीं लेते पर नीले कपड़े को धोबी से धुलवा कर काम में ले लेते हैं विलायती नील जो तारकोल से बनती है उसे काम में लेलेते हैं क्यों कि उस में हिंसा नहीं समझी जाती, रेशम रँगने के लिये ग्लीसरीन और किरमदाना भी काम में नहीं लेते हैं। रंग भी तीन तरह के होते हैं १ जवा-तात, २ नबातात और ३ हवानात इन में से हवानात रंग में हत्या होती है जिसे ये लोग काम में नहीं लाते हैं केवल Veg-eterian or Material ही काम में लेते हैं, ये लोग बकरी व सूअर आदि की लेंडीं रंगने के काम में नहीं लेते हैं। वर्णाश्रम धर्म को ये लोग नहीं मानते हैं ब्राह्मणों को भी नहीं मानते हैं। श्राद्धादि नहीं करते, विवाह भी स्वयंवर क्रम से कुछ कुछ मिलता जुलता सा होता है, हिन्दुओं की तरह देवी देवता गंगा आदि को कुछ नहीं मानते हैं, ये लोग डाढ़ी व चोटी रखना व तिलक छाप आदि कुछ धारण नहीं करते हैं, हिन्दुओं के मन्दिरों की तरह इनके एक गुरुद्वारा होता है जिसे 'चौकी' भी बोलते हैं।

सूत की व काच की माला रखते हैं सूत की माला में १००० गांठ होती हैं इस का भाव यह है कि रात दिन में प्रत्येक मनुष्य २१६०० श्वास लेता है इस लिये २१॥ माला जप लो

तो उस ने समझ लिया २१५०० जप हो गये माला जपने में इन का महामंत्र "सत्य अवगत" है।

जन्मसूतक व मरण-सूतक एक मास का मानते हैं पर यदि पूर्णमासी को मरे तो उसका सूतक एक ही दिन का माना जाता है क्यों कि पूर्णमासी सतयुग का दिन है। मरने पर पवन दाग, जल दाग, अग्निदाग और मिट्टी दाग ये सब इन में होते हैं, सब से श्रेष्ठ जलदाग होता है पर जलदाग में अग्नि संस्कार नहीं किया जाता है। लड़की के पुनर्विवाह की चाल इन में है पर अन्य उच्च वर्णों की देखा देखी नहीं भी करते हैं इन की स्त्रियें भी रंगीन कपड़े पहिनती हैं पर मर्द नहीं अन्य उच्च हिन्दुओं की तरह इन की स्त्रियें नथ बिछिये सौभाग्य का चिन्ह समझ कर नहीं पहिनती किन्तु सोने की चूड़ियाँ पहिनती हैं विधवा खाली हाथ रहती है सुहागिन स्त्रियें बोरला पहिनती हैं किन्तु विधवा नहीं। ये लोग व्रत उपवास को नहीं मानते।

प्रत्येक मनुष्य समाज की पहिचान तीन बातों से हुआ करती है कि १ रफ्तार, २ गुफ्तार और ३ रफ्तार तदनुसार इन के पहिचानने के लिये इन के सिर पर एक खास ढंग की बँधी हुई पगड़ी होती है जिसे सब साध पहिनते हैं।

इन के धर्म ग्रन्थों के काव्य इस प्रकार के होते हैं।

धावजी धर्म भरम मत भूलो मन माया त्यागो
काचे कुरंभे नहीं छ कोई कारज बिधि से बिरियाबाहो

भा०—चलना धर्म पर, भरम के जाल में मत फँसना, मन से माया जाल छोड़ो, बेवकूफी के बुरे बोल से कोई कार्य्य नहीं बनता है, विधि से समय की कमाई करो।

पुनः

लालच लोभ संशय नहीं, ममता मुज्य मरंत,
ऐसी रीति सतयुग की, सत ही सत भाखंत ॥
सम दृष्टि शीतल सदा, कोदृष्टि नहीं व्यापंत,
ये ते लक्षण साध के, मूढ़ कहा समझंत ॥

भावार्थ—लालच, लोभ; संशय और ममता ये मरण काल तक न हों ये सत्ययुग की रीतियें हैं जो सत् द्वारा सत् ही कही गयी हैं जो सब पर सम दृष्टि रखता है और किसी पर कुदृष्टि नहीं रखता ये सब साध के लक्षण हैं मूर्ख लोग साध के गुण को क्या समझें ?

इस जाति के अन्वेषण करने के लिये हम गये तहां मण्डल के सभ्य पंडित काशीनाथजी तथा पंडित गौरीशंकरजी के सन्मुख अन्वेषण किया इस जाति का विवर्ण जानने के लिये हमने बड़े उद्योग किये रजिष्ट्री पत्र भी इन के मुखियाओं को दिये पर कुछ उत्तर नहीं मिला अन्त को स्वयं इस समुदाय से मिले पर ये लोग बतलाना भी नहीं चाहते अन्तको बड़ी कठिनता से एक सज्जन ने जो कुछ नोट करवाया वही सारांश स्वरूप में लिखा गया है।

इस जाति के सम्बन्ध में बड़े बड़े अंग्रेज़ व देशी सिविलियन अफसरों ने अपने अपने ग्रन्थों में ऐसा लिखा है:—

जा० भा० नामक ग्रन्थ में लिखा है कि:—

फर्रुखाबाद में यह जाति पाई जाती है, एक मुहल्ले सधवाड़े में इन के अनेक घर पाये जाते हैं, यह अपने को वैश्य कहते हैं, उसमें अन्य वर्ण का कोई पुरुष मिल जाय तो वह साधा कहलाता है।

यह समुदाय विशेष रूप से युक्तप्रदेश के फतेहगढ़ जिले में हैं वहां ये लोग छींपीपने के काम के साथ साथ कपड़े के व्यापारी भी हैं और वहां इनका जाति पद भी उच्च माना जाता है, मिस्टर होर ने लिखा है:—

In Fatehgarh he will eat Pakki prepared by Agrawala Baniyas and Kachchi by Gaur Brahmins. Water they drink from the vessel of a Brahmin or Baniya but they will smoke only from a pipe of a Member of the tribe. Brahmins will eat Pakki prepared by them.

भा०—फतेहगढ़ के जिले में ये लोग अग्रवालों के यहां का बनी पक्की रसोई खालेते हैं और गौड़ ब्राह्मणों के हाथ का कच्ची रसोई जीम लेते हैं। ये लोग ब्राह्मण व बनियों के वर्त्तनों का पानी पी लेते हैं पर ये लोग हुक्का व चिलम केवल अपनी ही जाति वालोंके यहां पीते हैं। ब्राह्मण लोग इन के हाथ की बनी पूरी मिठाई खा लेते हैं।

इन के आचरणों की प्रशंसा करते हुये मिस्टर W. C. ने लिखा है कि:—

Sadh or "Saints," who pretend to special purity and will not eat meat or kill animals.

भा०—साध जिस का अर्थ पवित्र पुरुष के है वे अपने को विशेष पवित्र मानते हैं और न मांस खाते न कोई जीव की हिंसा करते हैं। इस जाति का समुदाय विशेषरूप से फरुक्खाबाद, बरेली और मिर्जापुर आदि आदि शहरों में हैं।

इस जाति की उच्चता को स्वीकार करते हुये सरकारी अ-

फ़सर मिस्टर बोर्न ने अपनी रिपोर्ट के पृष्ठ ३१४ में ऐसा लिखा है कि:—

The only restriction on marriage being that intermarriage is forbidden between two families, as long as the recollection of a former marriage connection between them remains.

इस का भावार्थ यह है कि यह जाति गोत्र टाल कर अन्य उच्च जातियों की तरह योनि सम्बन्ध करती है। अर्थात् गोत्र टालने का सांकेतिक रूप इन में यही है कि जिस के साथ पहिले कोई विवाह सम्बन्ध नहीं हुवा तो उस के साथ विवाह कर लेते हैं।

२५—जाट

यह एक क्षत्रिय जाति है इसका विवर्ण हमने बहुत कुछ संग्रह किया है उसे हम अलग पुस्तकाकार छपावेंगे अन्यथा आगे के भाग में देंगे।
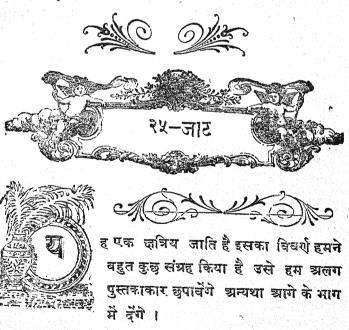
यह जाति बड़ी वीर व एक समय भारतवर्ष की राज्याधिकारिणी थी अतएव इस जाति ने मुसल्मान बादशाहों से

बड़ी बड़ी मुठभेड़ें लिखीं तिससे कई स्थानों में इन्होंने बादशाहों को हराये और कई स्थानों में ये भी खूब हारे व इनकी बड़ी बड़ी फौजें गिरफ्तार कियी जाकर कहीं कत्ल कर दियी गयीं और कहीं जबर्दस्ती मुसलमान करलियीं गयीं अतएव भारतवर्ष में ऐसे नोमुसलिमों की संख्या बहुत अधिक है - भारत के अकेले युक्तप्रदेश में ही इनकी लोक संख्या १४१९० है यथाः—

हिन्दू व नौमुस्लिम जाटों की लोक संख्या।

नाम जिला	हिन्दू	मुसलमान	सिख	जोड़
देहरादून	२८५	७	७१	३६३
सहारनपुर	१२३१६	३६४	३६१	१३०४१
मुजफ्फरनगर	७१८४८	८७९२	३२६	८०९६६
मेरठ	१४८५८०	४७०७	२१०३	१५५३९०
बुलन्दशहर	५४२९०	५८	२०	५४३६८
अलीगढ़	८०५८५	०	५१	८०६३६
मथुरा	१ १०१	९५	७३२	१२३६२८
आगरा	५४९४३	३	३१९	५५२६५
फर्रुखाबाद	२४०	४	६	२५०
मैनपुरी	९५२	१३	१२	९७७
इटावाह	२९४	०	१३	३०७
एटाह	२०४	५	९	२१८
बरेली	८८७६	०	०	८८७६
बिजनौर	५७०९७	०	६४७	५७७४४
बदायूं	४६४९	२७	०	४६७६
मुरादाबाद	८०२१५	०	४३	८०२५८
शाहजहांपुर	३८३	०	७	३९०
पीलीभीत	८३१	०	०	८३१
कानपुर	८८९	०	६	८९५
फतेहपुर	११५	६	०	१२१
बांदा	५	१	१५	२१

हिन्दू व नौमुस्लिम जाटों की लोक संख्या ।

नाम जिला	हिन्दू	मुसलमान	सिख	जोड़
इलाहाबाद	५६४	४१	०	६०५
झांसी	३२८	१०	७३८	१०७६
जालौन	१०२	०	१	१०३
ललितपुर	८५	०	४६	१३१
बनारस	५५	०	३४	८५
जौनपुर	८५	०	०	८५
बस्ती	४७६	०	०	४७६
तराई	११८०	०	०	११८०
लखनऊ	२३०२	२	१४७	२४५१
उन्नाव	९२	०	०	९२
सीतापुर	९३	०	६	९९
खेड़ी	७९३	४	१८	८१५
गोंडा	८९९	६	४२	९४७
बहराइच	७९	१८	८८	१८५
बाराबंकी	७९	०	७	८६

जोड़ —— ७०७८५४ १४११९० ६०५८ ७२८१०२

नोटः—जिन जिलों की लोक संख्या ५० से कम की थी उन्हें हमने लिखने से छोड़ दिये हैं।

२६ जांघड़ा जागिड़ा जांगड़ा जागड़

भारतवर्ष में यह एक जाति है, देश भेद व देश भाषा के कारण कहीं ये जाति जांघड़ा, कहीं जांगिड़ा, कहीं जांगड़ा, और कहीं जांगड़ कहाते हैं। जिस तरह इस जाति के नाम में परिवर्तन हुआ है तैसे ही इन के धन्धों में भी परिवर्तन हैं, राजपूताने में जांघड़ा नामक एक राजपूत समुदाय है जो अपने क्षत्रिय धर्म पर स्थित है, भिन्न भिन्न प्रांत व प्रदेशों में इन नामों से मिलती हुई कई जातियें हैं जो राजपूत नहीं किन्तु अपनी अपनी उत्पत्ति व स्थिति के अनुसार वे दूसरे दूसरे वर्ण में मानी जाती हैं जैसेः—

इस नाम की एक जाति मुंबई प्रान्त में है जिस का दूसरा नाम 'धारी' भी है ये लोग प्रातःकाल राजा महाराज व देवता लोगों को मंगलीक गीत गाकर जगाया करते हैं, उत्तरी हिन्दुस्थान में भी ये लोग होते हैं, ये सरदारों के यहां गवैये का काम भी करते हैं, इन का जाति पद कुन्बियों के बराबर लिखा मिलता है।

बुन्देलखंड में भी एक जांगड़ा जाति है जो वहां कपड़ा रंगने का काम करते हैं और छींपी कहाते हैं। इस खंड में जांगड़ा राजपूत भी हैं जो राजपूताना प्रदेशान्तर्गत जयपुर राज्य के रणथंभोर से उधर गये हुये हैं।

यह जांगड़ा नाम कई छोटी छोटी जातियों के भेद उपभेदों में भी सरकारी ग्रन्थों में लिखा पाया गया है जिनमें से कई जातियें शूद्र वर्ग में हैं।

राजपुताना में एक जांगिड़ा खाती जाति है जिनका जाति पद बड़ा विवादग्रस्त है। इन के विषय में हम ने सुना है कि इन में से कोई कोई लोग अपने को ब्राह्मण वर्ण में मान कर अन्य वर्णों से घृणा करने लगे हैं। तिस का प्रभाव बढ़ते २ राजपुताने मे एक कलह उत्पन्न हो गया अर्थात् एक ऐसी हवा चली कि कई ग्रामों में खातियों को Public-Well पवलिक-कूवों तक पर न चढ़ने देकर एक अलग कूवा पानी भरने को बतलाया गया—यह ही नहीं किन्तु कई स्थानों में अन्य अन्य जातियों ने सब तरह से खातियों के साथ कई तरह के असहयोग Non-Coperations किये इस ही तरह से खातियों की ओर से ११००० ग्यारह ग्यारह हज़ार के इनामी नॉटिस व शास्त्रार्थों के चेलेञ्जों की हज़ारों ही कापियें मुफ्त में बांटी गयीं कि 'यदि जांगिड़ा जाति को ब्राह्मण मानने में कोई शंका करे वह शास्त्रार्थ (बा कायदा बहस) कर के निश्चय कर ले,, यदि कोई आदमी जांगिड़ा जाति को अब्राह्मण सिद्ध करे और गांवों में फैली हुई गुमनाम चिट्ठियों में लिखी बातों को बा कायदा बहस कर के सही साबित करे तो उस को ६०००) छह हज़ार रुपये इनाम दिये जावेंगे''

इस तरह के नोटिस चेलेंज हमारे पास भी बहुत आये कि शास्त्रार्थ कर लो, पर हम तो उस बिवाद से अलग ही रहना चाहते थे और मौन रहना श्रेयस्कर समझते थे परन्तु समय समय पर इन नोटिसों के आधार पर कोई कोई खाती हम से अटकने लगते थे अतः हम इस पर भी विचार करने की तैयारी करने वाले नहीं थे कि इतने में खातियों में ही परस्पर विवाद उत्पन्न हो गया और अपने को ब्राह्मण मानने वाला समुदाय व

अपने को ब्राह्मण न मानने वाला समुदाय दोनों ही पार्टियें निर्णयार्थ काशीजी पहुँचो तहां की विद्वत्परिषद् ने यह निर्णय किया कि 'जांगिड़ा जाति शूद्र है।'

हमें लिखते दुःख होता है कि किसी किसी अंश में हिन्दू पबलिक की खातियों के साथ ज्योदती व कहीं कहीं खातियों की, पर हम ऐसे कृत्यों को अच्छा नहीं समझते क्यों कि लड़ने झगड़ने का समय नहीं वरन प्रेम व संगठन का है।

हमारे से हिन्दू पबलिक भी इनके विषय में बहुत कुछ पूछ ताछ करती रहती है अतः यहां कुछ न कह कर इस पर फिर विचार करेंगे।

राजपूताने में कुछ कम व युक्तप्रदेश में जांघड़ा राजपूतों की विशेषता है अधिकतर ये रुहेलखंड में है, इनके वीरत्व की प्रशंसा लिखते हुये विद्वानों ने लिखा है कि ये लोग अपने बल पौरुष के कारण किसी की परवाह न करके चाहे जिसके साथ अड़ मरते थे अर्थात् हर किसी के साथ झगड़ बैठते थे यहां तक कि घमासान युद्ध तक में रत होजाते थे इसलिये लिखा है कि:—A large and Some what turbulent sept of Rajputs. अर्थात् अकड़ेदम राजपूतों का यह एक भेद है।

इस नाम की उत्पत्ति पर विचार करने से पता चलता है कि यथार्थ में 'जंगहार' शब्द का बिगड़ा हुवा रूप जांघड़ा है—जो राजपूत समुदाय जंग नाम युद्ध को हार गया वह जंगहार कहाते कहाते जांघड़ा कहाजाने लगा क्यों कि इस वंश ने युद्ध में अतुल बल लगाया था, इस वंश का राजा हरनन्द-पाल बयाना में था जिसका व बादशाह शाहबुद्दीन गौरी का युद्ध छिड़गया जिसमें पराजय होजाने से यह नाम पड़ा।

राव महरूपसिंह के समय में ये लोग बरेली में गये तहां से सन् १४०५ ईस्वी में ये लोग बिलासपुर में गये। बदायूं में ये एक प्रसिद्ध बलशाली महापुरुष 'धप्पूधाम' के समय में बड़े शक्तिशाली थे जिसके वीरत्व विषयक ऐतिहासिकों ने लिखा है:—

नीच धरती ऊपर राम, बीच में लड़े धप्पूधाम।

अर्थात् नीचे जमीन और ऊपर राम तिस के बीच में धप्पू धाम लड़े हैं।

यह जांघड़ा वंश तोमर वंश की एक शाख है। इन का एक भेद गूजर जांघड़ा भी है इन का जाति पद उच्च है युक्त प्रदेश में इन के सम्बन्ध उच्च राजपूत कुलों में होते हैं।

बादशाह शाहबुद्दीन के साथ हार जाने से एक बड़ी भारी राजपूत फ़ौज की टुकड़ी जबर्दस्ती कैद की जाकर मुसलमान बना लियी गई तब से युक्त प्रदेश में जांघड़ा नौमुसलिम भी हैं जो शुद्ध किये जाने योग्य हैं।

ह एक प्रसिद्ध राजपूत वंश है इस को यादों भी बोलते हैं, सूर्य वंश के पांचवें महाराजाधिराज ययाति के बेटे यदु की सन्तान 'जादों' राजपूत कहाये, इस वंश के राजपूत राज-

पुताना, पंजाब और युक्त प्रदेशमें सर्वत्र ही हैं आज कल करौली के महाराज यदुवंशी हैं, ग्वालियर चम्बल और सबलगढ़ के आस पास का भाग "जादोंवाटी" कहाता है इस ही वंश का राज्य पूर्व में सर्वत्र फैला हुआ था जादों राजपूतों के दो भेद हैं जादों और जादोंवंशी। इन में जादों राजपूतों का पद छोटा व जादोंवंशियों का बड़ा पद माना जाता है।

जादों वंशी कृष्ण के वंश में से हैं अर्थात् कृष्ण से ७७ वीं पीढ़ी में 'धर्मपाल' एक राजा हुआ है जिस से पाल वंश चला है यह ही पालवंश अब तक ईस्वी सन् ८०० से करौली में चला आ रहा है, उस समय करौली राज्य का राज तख्त बयाना में था। सन् ११९६ ईस्वी में बादशाह मुहम्मद ग़ौरी और कुतुबुद्दीन ऐबक से युद्ध हुआ तहां इस वंश की पराजय हुई और ये लोग वहां से निकल भागे। इन की फौज गिरफ्तार हो गयी तब इन्हें बादशाही फर्मान सुनाया गया कि या तो ये इसलाम धर्म कबूल करें वरना क़तल कर दिये जांय इस पर जीव रक्षार्थ वेचारे मुसलमान बन गयेः—

The Jadon musalmans are known are Khazadas and Mevs.

(C. & T. P. 109)

जादों राजपूत जो मुसलमान बने वे खानज़ादा और मेव कहलाये *

युक्त प्रदेश में इस वंश के राजा एटा के जिले के जलेसर परगने में एक आवा स्टेट है।

इस ही वंश की एक शाखा जेवर राजपूत भी हैं जो बुलन्दशहर के जिले में हैं।

---

*यह दोनोंही जातियें विस्तृतरूप से अलग भी लिखी गयी हैं।

एक भेद 'बड़ेसिर' भी इस जादों वंश में है जिन्हे बादशाह अकबर ने बहादुरी का पद दिया था।

"जसावत" भी एक भेद है जो जैसल्मेर से आये हुये हैं।

नारा भी इस वंश का एक भेद है जो नायन की सन्तान बतलाये जाते हैं।

युक्त प्रदेश में जादों राजपूत ४८६१० हैं नौमुस्लिम ३५८४० हैं दोनों संख्यायें मिला कर ८४४५० हैं ये सब नौमुसलिम शुद्ध कर लेने योग्य हैं क्यों कि इन की रीति भांति भी हिन्दुवों से मिलती जुलती सी ही हैं।

२८ लाहा- यह एक हिन्दूजाति वैदिक काल से यह जाति चली आरही है इस जाति का व्यवसाय वस्त्र बुनना है ये ही कोरी व कोली भी कहे जाने लगे। मुसलमानी अत्याचार के समय कोरी जाति पर दबाव पड़ा अतएव इस वेदोक्त काल की जाति के कुछ समुदाय ने विवश मुसलमानी धर्म स्वीकार कर लिया था वे उस समय अर्बी फारसी के प्रचार के कारण 'जुलाहे' कहे जाने लगे। भारतवर्ष के युक्त प्रदेश में ही केवल सात लाख

अस्सी हजार दो सौ इकत्तीस जुलाहे हैं ये सब आदि से आर्य्य याने श्रेष्ठ हिन्दू थे बादशाही अत्याचार से बेचारे मुसल्मान बना लिये गये हैं जिनमें अभी तक भी कई रीतियें हिन्दुओं की सी चली आरही हैं वेद में लिखा है:—

ओं सीसेन तन्त्रं मनसा मनीषिणं ऊर्णा सूत्रेण कवयो वयन्ति । अश्विना यज्ञꣳ सविता सरस्वतीन्द्रस्य रूपं वरुणो भिषज्यन् ॥ यजुर्वेद॰

पदार्थः—हे मनुष्यो जैसे (कवयः) विद्वान् (मनीषिणः) बुद्धिमान लोग (सीसेन) सीसे के पात्र के समान कोमल (ऊर्णासूत्रेण) ऊन के सूत्र से कम्बल के तुल्य प्रयोजन साधक (मनसा) अन्तःकरण से (तन्त्रम्) कुटुम्ब के धारणके समान यन्त्र कलाओं को (वयन्ति) रचते हैं जैसे (सविता) अनेक विद्या व्यवहारों में प्रेरणा करने हारा पुरुष और (सरस्वती) उत्तम विद्यायुक्त स्त्री तथा (अश्विना) विद्याओं में व्याप्त पढ़ाने और उपदेश करने हारे दो पुरुष (यज्ञम्) संगति मेल करने योग्य व्यवहार को कहते हैं जैसे (भिषज्यन्) चिकित्सा की इच्छा करता हुआ (वरुणः) श्रेष्ठ पुरुष (इन्द्रस्य) परम ऐश्वर्य के (रूपम्) स्वरूप का विधान करता है वैसे तुम भी किया करो ।

इस मंत्र से सिद्ध होता है कि वाचकलु जैसे विद्वान लोग अनेक धातु व काष्ठादि के यन्त्रों द्वारा स्वयम् वस्त्र बनाकर अपने कुटुम्ब का पालन करते रहे हैं तैसेही हिन्दूमात्र को वस्त्र बना कर अपने को व दूसरों को लाभ पहुंचानेमें कोई दोष नहीं है। पुनः—

ओं तन्तु तन्वन् रजसो भानु मन्विहि ज्योतिष्मतः पथो रक्षधिया कृतान्। अनुल्वणं वयत जोगुवामपो मनुर्भव जनया दैव्यं जनम् ॥ १० । ५३६ ॥

हे मनुष्यो ! (रजसः-भानुम्) अनेक रंग के प्रकाश किरण के समान देदीप्यमान (तन्तुम्-तन्वन्) सूत को बनाते हुए आप (अनुइहि पूर्वजों का अनुकरण किया करें और इस प्रकार (धिया कृतान्) ज्ञान के द्वारा निर्मित (ज्योतिष्मतः पथ) उत्तम पथ अर्थात् वस्त्रादिक निर्म्माण कर्म्म को (रक्ष) रक्षा कीजिये। और (अनुल्वणम्) शान्ती पूर्वक (जोगुवाम) जोगू=जुलाहों के (अपः) कार्य्य को (वयत) करो। इस प्रकार (मनुभवः) मननशील मनुष्य बनो और सदा (दैव्यम्-जनम्) उत्तम स्वभाव के मनुष्य को (जनय) उत्पन्न करो।

"अप" नाम कर्म का है। (नि० २-१-) 'धी' यह नाम भी कर्म्म का है। 'वयत' वेञ् तन्तूसन्ताने। 'वे' धातु का प्रयोग बुनाने अर्थ में सदा आता है। इसी हेतु जुलाहे को 'तन्तुवाय' कहते हैं, (तन्तुम्-वयतीत) यहां 'जोगू' नाम जुलाहे का है। इसी शब्द से 'जुलाहा' पद निकला है।

इन वैदिक प्रमाणानुसार यथार्थ में सम्पूर्ण जुलाहा जाति पहिले हिन्दू थी जो शुद्ध किये जाने के योग्य है।

कोरियों को प्राचीन वैदिक काल में जुलाहे कहते थे परन्तु संसार भर को विद्या वेदों से निकली है तदनुसार अर्बी में भी जुलाहा ही नाम रख लिया गया जैसा कि आगे की तर्क से सिद्ध है।

यह एक नौमुस्लिम जाति है कपड़े बुनने के पेशे को करने से जुलाहा कही जाती है बादशाही समय में उर्दू फ़ारसी का इस देश में बड़ा प्रचार था तदनुसार उस समय 'यथा राजा तथा प्रजा' के अनुसार अर्बी के जानने वाले अच्छे आलिम समझे जाते थे और नवीन शब्दों की रचना व उस समय जातियों की संज्ञा भी अर्बी के शब्दों से मिलती जुलती बांधी जाती थी, सूत के गोले को अर्बी में जुला या जुल्ला कहते हैं और 'हा' कहते हैं हिलाने वाला अर्थात् जो सूत के गोलों को इधर उधर चलाकर जीविका करने वाला है वह जुलाहा कहाया गया। जब इस देश में मुसल्मान बादशाहों ने हिन्दुओं को नंगी तलवार दिखलाकर मुसल्मान किया उनमें कपड़ा बुनने वाली हिन्दू जातियें जैसे कोरी, कोली, चमार, मोची, बलाई आदि आदि जातियें भी मुसल्मान करलियी गयी थीं तब उन सबके मुसलमान होजाने पर सबका एक संयुक्त जुलाहा नाम रक्खा गया परन्तु उनके साथ उनकी हिन्दूजाति का पुछल्ला जैसे का तैसा ही लगा रहा अर्थात जो कोरी मुसल्मान हुये वे कोरी जुलाहा, जो कपड़ा बुनने वाले मोची मुसल्मान बनाये गये वे मोची जुलाहा, जो कपड़ा बुनने वाले चमार मुसल्मान बने वे चमार जुलाहा, जो कपड़ा बुननेवाले बलाई मुसल्मान बने वे बलाई जुलाहा, जो कपड़ा बुननेवाले रामदासी मुसल्मान बने वे रामदासी जुलाहा कहे जाने लगे इसही तरह जुलाहों के भेद बनगये हैं।

The Julahas or weavers with 898032 are.

(Burn I. C. S.)

यह सर्कारी रिपोर्ट का लेख है कि युक्तप्रदेश में जुलाहा याने कपड़े बुनने वाले ८९८०३२ हैं।

पुनः

It has been supposed that they represent some menial Hindu weaving caste who were converted whole sale to Islam.

(C. & T.)

भा०—ऐसा अनुमान किया जाता है कि जुलाहों में छोटी श्रेणी की कपड़ा बुननेवाली ये हिन्दू जातियें हैं जो हिन्दू से मुसल्मान कर लिथी गयीं थी।

अन्वेषण करने से पता चलता है कि इनमें कोली, चमार, बलाई, मोची और रामदासी, सालवी आदि आदि कपड़ा बुनने वाली जाति हैं जो मुसलमान कीआने पर अपने वही नाम 'जुलाहा' शब्द के पीछे लगाये हुये हैं जैसे कोली जुलाहा, चमार जुलाहा, बलाई जुलाहा, रामदासी जुलाहा, कोरी व कोली जुलाहा और सालवो जुलाहा आदि आदि, इसलिये कपड़ा बुनने वाली जातियें मुसल्मान को जाकर जुलाहे कहाये ऐसा सिद्ध होता है।

रुहेलखंड प्रान्त में परसोतिया जुलाहा होते हैं जो यथार्थ में कोरी हैं जिनके २४४ भेदों का पता लगता है जिनमें बैस, बड़गूजर, बिशन, चौहान, गाड़, तम्बोली आदि आदि भेद हैं, जहां इनमें क्षत्रियत्व सूचक भेद मिलते हैं तहां मदारी, मुहम्मदी मोमिन, मुगल, पठान, शेख, सादिकी और सुन्नी आदि आदि भेद भी मिलते हैं।

मनुष्य गणना कमिश्नर ने लिखा है कि जिन गरीब राजपूतों को मुहम्मद गज़नी ने मुसल्मान बनाये वे मुहम्मदी नाम से प्रसिद्ध हुये, जो मुग़ल बादशाही में बने वे राजपूत मुगल जुलाहे, जो जाट अहीर गूजर आदि आदि लड़ने वाली जातिय

मुसलमान होकर कपड़े बुनने का धन्दा करने लगीं वे पठान जुलाहे कहे जाने लगे। इसही तरह अन्य भेदों की दशा समझ लेना चाहिये।

इन जुलाहों में भिन्न भिन्न हिन्दू जातियों का समुदाय होने से मुसल्मानों में एक कहावत प्रसिद्ध है कि:—

आठ जुलाहा नौ हुक्का

जिसपर भी थुक्कम थुक्का।

अर्थात् जुलाहों में भिन्न भिन्न हिन्दू जातियों का समावेश होने से एक जाति के जुलाहे दूसरी जाति के साथ हुक्का नहीं पीते हैं इसही लिये यह कहावत चली आरही है।

राजपूताने में जुलाहों के दो भेद हैं एक देशी और दूसरा मुल्तानी है, इनके भेद राजपूताने में गोरी, कुरेशी, वहलीम रूमी आदि आदि हैं।

जुलाहों में राजपूत भी हैं यथा:—तुंवर, चौहाण, पंवार, गदिया और गुहलोट आदि आदि मुलतानी जुलाहों में सिरोल, पाजुवाड़, खुसरा, लीडर, तड़, सुखार और मुकुट है।

राजपूताना व मारवाड़ में इनकी बोलचाल व पहिनाव हिन्दुओं से मिलता जुलता है।

जुलाहों की लोक संख्या जिलेवार इस प्रकार है:—

देहरादून १३४६, सहारनपुर ४००७१, मुजफ्फरनगर २३२६६, मेरठ में २५६२५, बुलन्दशहर में १३१४७, अलीगढ़ में ३०५६, मथुरा में ३६, आगरा में १२७१, फरुक्खाबाद में ४३३४ मैनपुरी में १३२६, इटावा में २३५२, एटा में ४२०३, बरेली में ४२६५४, बिजनौर में ६१५२३, बदायूं में १६८६४, मुरादाबाद में ३२४०१, शाहजहांपुर में १८१०२, पोलीभीत में १५४६१,

कानपुर में ४३४७, फतेहपुर में २६३६, बांदा में ७५, हमीरपुर में ८८६, इलाहाबाद में ३६६४४, झांसी में ५१, जालौन में ३७७, बनारस में २२४६६, मिरजापुर में १३५८२, जौनपुर में २२३०७, गाजीपुर में २८५६४, बलिया में, ३०५४७, गोरखपुर में ११७८६१, बस्ती में ३००५०, आजमगढ़ में ५३०७५, तराई में १२६६५, लखनऊ में ५६६६ उन्नाव में ३२२१, रायबरेली में ४११७, हरदोई में १००५३, खेड़ी में २०१२७, फैजाबाद में २५४७३, गोंडा में १६६५४, बहराइच में १८२८५, सुलतापुर में १०३४५, परतावगढ़ में ६४६७, बाराबंकी में ३०१८२ हैं यू० पी० में कुल जुलाहे ७६०२३१ हैं ये सब किसी समय हिन्दू थे अब नौमुसलिम हैं। ये कुल नौमुसलिम, भारत के एक युक्त प्रदेश में ७८०२३१ सात लाख अस्सी हज़ार दोसौ इकत्तीस हैं, तब सम्पूर्ण भारत में कितने होंगे ? यह विचारणीय बात है। क्या भारत के सच्चे रक्षक हिन्दु इन जुलाहों को गो भक्षक से गो रक्षक नहीं बना सकते ? भगवान ! श्री कृष्णचन्द्रजी !! हिन्दुओं की दशा कब सुधारोगे ? हमें तो यही चिन्ता है।

२९ जोगी:—

यह शुद्ध संस्कृत शब्द योगी का बिगड़ा हुवा रूप है योग के आचार्य ऋषि पातञ्जलि हुए हैं जिनके नाम से पातञ्जलि योग शास्त्र सर्वत्र प्रसिद्ध है

हिन्दू जनता में योग की बड़ी महिमा है जिसके एकमात्र सा-धन से परब्रह्म परमात्मा के दर्शन व मुक्ति तक मिल सकती है इस प्रकार के तप का नाम योग है। यह बड़ा कठिनतम साधन है जब किसीका श्वास ब्रह्माण्डमें चढ़कर समाधि लगजाती है, तब वह प्राणी सम्पूर्ण सांसारिक विषय वासना से मुक्त हो कर परमात्मा में लवलीन होजाता है तब वह योगी कहलाता है इसही योगी शब्द से भाषा में जोगी शब्द बन गया है।

शिव जिसको आय लोग भोला-भंडारी, भंगड़ जंगड़ तथा अघड़दत्त कहते हैं यथार्थ में यह ऐसी वार्ता नहीं थी किन्तू शिव बड़े भारी योगी थे उनकी लौ परमात्मा में लगी हुई थी अपने योग बल द्वारा भूत भविष्य वर्त्तमान की बातें जानते थे और अपनी योग शक्ति की करामात से उनकी वाणी सिद्ध थी जिससे साधारण जन हिन्दू समुदाय ने उन्हें परमेश्वर का अ-वतार मान लिया। उन्हीं के शिष्यवर्ग अपने को योगी कहते कहाते जोगी कहे जाने लगे। जो पूर्ण जोगी होते थे उन्हें स-म्पूर्ण प्रकार की शक्तियें प्राप्त होजाती थी।

अब यह नाम मात्र का एक पंथ रह गया है इस पंथ के लोग अब केवल गेरुआ कपड़े पहनते और कानों मे' मुद्राधारण करते हैं और निरक्षर भट्टाचार्य्य होते हैं और केवल भीख मांग करके अपना निर्बाह करना कर्त्तव्य समझते हैं इसीलिये एक कहावत प्रसिद्ध हुई है कि:—

जोगी जुगत जाने नहीं,

कपड़े रँगे तो क्या हुआ?

अर्थात् इनको नाम मात्र का जोगी समझ के ही लोग इन्हें

ऐसा कहा करते हैं कि इन लोगों ने योग मार्ग को तो जाना नहीं तो केवल कपड़े रँग लेने ही से क्या फल।

इन जोगियों में कई सिद्ध और महात्मा भी हुए हैं, जिनके नामों से अलग अलग सम्प्रदायें चली हैं इनके मुख्य दो भेद हैं:-
१-औघड़, २-गोरखपंथी, यह दोनों ही महात्मा बड़े योगीराज और सिद्ध हुए हैं और बड़े के सहारे से छोटे भी अपनी रोटी कमा खाते हैं इनमें जलंधरनाथजी कनीपावजी आदि आदि कई सिद्ध हुए हैं यह लोगः—

१—कानों में मुद्रे धारण करते हैं और बिना मुद्रों के रहना पाप समझते हैं।

२—अँगवां कपड़े और धोती बगैरा बांधते हैं।

३—यह सेली धारण करते हैं जो काली उनकी तगड़ी जैसी बनी हुई होती है जिसको सिरपर बांधते हैं और कोई कोई गले में भी पहन लेते हैं।

४—हिरन के सींग का नाद रखते हैं और जिसे शंख की तरह काम में लेते हैं।

५—गले में रुद्राक्ष की माला धारण करते हैं।

६—आरने छाणे को जलाकर और उसको पानी में घोलकर छानते हैं और फिर उसको नितार कर सूख जाने के पीछे दूध में पिंडी बांधकर पकाते हैं फिर वह बभूत तैयार हो जाती है जिसे यह लोग नित्य लगाया करते हैं।

मुद्रा पहनने के लिये यह लोग कान फड़ाया करते हैं जिस से यह लोग कनफटे जोगी कहलाते हैं। यह लोग जब किसी को चेला करते हैं तो उस के कान फाड़ कर उस को चेला करते हैं अर्थात् जिस प्रकार से खतना कर के मुसलमान लोग

मुसलमानी का चिन्ह सदा के लिये लगा देते हैं तैसे ही ये लोग भी कान फाड़ कर सदा के लिये अपनी संप्रदाय का चिन्ह लगा देते हैं। इन लोगों का कहना है कि:—

'राख लगाये धो दे, और कान फाड़ने बो दे।'

अर्थात् राख लगाई हुई तो धुल जा सकती है पर कान फटा हुआ बदला नहीं जा सकता इस ही लिये यह कान फाड़ कर शिष्य किया करते हैं। इन में दो तरह के गुरू होते हैं। **चीरा गुरु** और **शब्द गुरु** जो कान का चीरा कर मुद्रा पहनाता है वह चीरा गुरु और जो उपदेश देता है वह शब्द गुरु कहाता है तब 'नाथ' कहाने लगते हैं और कान फटाने से कनफटे भी कहाते हैं। अतएव इन दोनों का विवरण अलग अलग लिखेंगे तहां देख लेना चाहिये।

जोगियों के आदि गुरु गोरखनाथजी हैं, इन का विस्तृत विवरण तो नाथ जाति के साथ लिखेंगे। गोरखनाथजी के १२ शिष्य उनके नाम ये हैं:—१ सतनाथ, २ धर्मनाथ ३ कायानाथ ४ आदि नाथ ५ मस्तनाथ ६ अयपंथी ७ कलेपा ७ धाजपंथी ९ हंडी त्रिरंग १० राम के ११ लछमन के और १२ दरियानाथ।

दूसरे ऐसा भी लेख मिला है कि १ ऐपंथी २ राम के ३ भरथरी ४ सतनाथ ५ क़नीबाकी, (कनीपा) ६ कपलमुनी ७ लछमन ८ नटेसर ९ रतननाथ १० संतोषनाथ ११ धजपंथी और १२ माननाथ।

जोगियों की लोक संख्या:—

देहरादून में ११०३, सहारनपुर में १३७३४, मुजफ्फरनगर में ११९९८, मुसलमान जोगी ७६७, मेरठ में १३१२२९ जिस में से ११४२ नवमुसलिम, बुलन्दशहर में ३७६६, अलीगढ़ में

३३७८, मथुरा में १२८ नौमुसलिम जोगी, आगरा में नौमुसलिम ७५८ कुल ३०२३, इटावा कुल जोगी ८०८ नवमुसलिम १६६ एटा नवमुसलिम १६६, कुल १०८०, बरेली नवमुसलिम २५४, और सब मिला कर ६६२ बिजनौर नोमुसलिम ४२८ और सब मिला कर २४०४ मुरादाबाद में नौमुसलिम ८४० सब मिला कर २५६६ शाहजहांपुर में नौमुसलिम ७३० सब मिला कर ७७१ कानपुर में नौमुसलिम ३२६ सब १२७० हमीरपुर ३४६ सब मिलाकर ६७८ अलाहाबाद नवमुसलिम ५१२ सब १११६, जौनपुर नवमुसलिम ६४० सब मिलाकर १०५६, गोरखपुर नौमुसलिम ३८० सब १५७३, बस्ती नौमुसलिम १३५५ सब ५४६१, आज़मगढ़ नौमुसलिम ४७० सब ६२३४, लखनऊ नव-मुसलिम २७६, सब १३३३ उन्नाव नौमुसलिम ३५२ सब ३६८, रायबरेली मुसलमान २६६ सब ३२२, सीतापुर नौमुसलिम ४७१ और सब मिला कर ५०८, हरदोई नौमुसलिम ३६८ सब ३६८ खेड़ी नौमुसलिम २०२ सब ५३३ फ़ैज़ाबाद नौमुसलिम ७३१ सब मिला कर ७३५, गोंडा नौमुसलिम ११८० सब १३००, बेहराइच नौमुसलिम ३६१ सब ४११ सुलतानपुर नौमुसलिम ८६४, परताबगढ़ नौमुसलिम ४५८ और बाराबंकी में ३६३ हैं।

राजपूताना प्रान्तर्गत मारवाड़ में ३०२१३ जोगी हैं इन में से २७२५ मुसलमान जोगी हैं। युक्त प्रदेश में कुल ६५६८० जोगी हैं जिस में से १७५६३ नव मुसलिम जोगी हैं राज-पूताना भर में ६६३२१ हैं जिन में से नवमुसलिम जोगी १०१०६ हैं अजमेर मेरवाड़ा में २०४६७ हिन्दू जोगी हैं इन में कम से कम पांच हज़ार नौमुसलिम जोगी होंगे।

इन सब जोगियों का धन्दा का पालन पोषण भिक्षा द्वारा

होता है अतएव राजपूताना और युक्तप्रदेश के जोगियों की लोक संख्या ६६३२१ + ९५९८० = १६२३०१ हैं अतएव विचारणीय यह है कि जब भारत के राजपूताना और युक्तप्रदेश में एक लाख बासठ हजार तीन सौ एक जोगी जाति है तो इस ही तरह भारत के सम्पूर्ण भागों में कितने होंगे ? तथा इस एक भिक्षुक जाति की तरह भारत में अनेकों भिक्षुक जातियें हैं तब उन सब का हिसाब लगाने से पता चलता है कि भारत में क़रीब ५६ लाख भिखारी हैं इन सबके खरचे का भार हिन्दुओं पर है अतएव एक भिखारी का ख़र्चा कम से कम ६) रु० माहवार का भी रक्खा जाय तो ५६००००० × ६ = ३३६००००० तो तीन क्रोड़ छत्तीस लाख रुपया मासिक हिन्दुओं का ख़र्च होता है कहिये पाठक ! इससे देश का क्या लाभ है ?
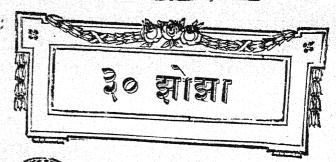
आदि से यह एक राजपूत जाति थी । मुसलमानी अत्याचार के समय ये राजपूत गण मुसलमान कर लिये गये थे तब से ये लोग मुसलमान होकर खेती करने लगे हैं। इन का अनुसंधान करते हुए सरकारी रिपोर्ट में लिखा है:—

Jojha:- A caste of cultivators in the western part of the Province whose origin is very uncertain. They claim to be musalman Rajputs, but probably an offshoot of the Banjaras.

(Census Report P.246)

मा० झोझाः—कृषी करने वाली एक जाति है जो युक्त प्रदेश के पश्चिमी भागों में पायी जाती है जिन के निकास के बारे में कुछ ठीक पता नहीं लगता है, ये लोग अपने को राजपूतों से मुसलमान हुये बतलाते हैं पर कदाचित ये लोग बनजारों में से हैं। ये लोग विशेषरूप से देहातों में रहते हैं, ये नाम मात्र के मुसलमान हैं। बहुतसे लोग इन्हें मुसल्मान ही नहीं समझते क्योंकि इनका रहन-सहन खान-पान बिलकुल हिन्दू कृषीकारों का जैसा है इनमें सगाई ब्याह नुकता व्यवहार भी हिन्दुओं की तरह होते हैं दूर से तो ये लोग हिन्दू ही जँचते हैं इतने पर भी ये शुद्ध क्यों नहीं किये गये ? यही असमंजस है।
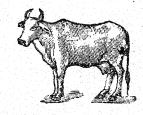
क राजपूत वंश है, युक्त प्रदेश के पश्चिम भाग में ये लोग बहुतायत से हैं, भारतवर्ष के छत्तीस ३६ राजकुलों में इनकी गणना है, महाभारतादि ग्रंथों में तक्षक राजपूतों का वर्णन मिलता है, इसी तक्षक शब्द का लघुत्तम रूप टांक प्रतीत होता है, इस वंश का विवरण लिखते हुए अनेकों विदेशी विद्वानों ने नाना प्रकार की कल्पनायें लिखी हैं युक्त प्रदेश में भी इस वंश के लोग विशेष हैं। युक्तप्रदेश के मैनपुरी ज़िले में ये लोग अधिक तर हैं वहां ये लोग यदुवंशी माने जाते हैं, करौली और जैसल-मेर के राजाओं से इन का निकटस्थ संबंध है, पहले ये लोग घिरोर पर्गना में कोसमा के आसपास साढ़े बारह गांवों के मालिक थे, ये लोग उस समय बड़े वीर थे। तदनुसार एक समय कोसमा के राजपूत लोगों ने दिल्ली के बादशाह का सरकारी सामान जो उधर से जा रहा था उसे लूट लिया था इसलिये इन में से बहुत से आदमियों को ज़बर्दस्ती मुसलमान बना लिया गया था लिखा भी हैः—

During the reign of Akbar, the kosma men headed by the two sons of their late chief attacked and plundered some imperial stores Pas-

sing through the District, and as a punishment for this daring robbery, one of the brothers was carried off to the Capital and then compelled to embrace the Mohammeadan faith.

(C. & T. 461)

भा० बादशाह अकबर के समय में कोसमा में टांक राजपूतों का राज्य था, उस समय दिल्ली के शाहनशाह का सामान कोसमा के राज्य में से कहीं को बड़े प्रबन्ध के साथ जा रहा था, उसे इन टांक राजपूत सरदारों ने लूट लिया, इस पर युद्ध हुआ जिस से कोसमा सरदार का भाई टांक राजपूत पकड़ा जाकर दिल्ली लाया गया और शाही हुक्म से वह जबर्दस्ती से मुसल्मान बना लिया गया। जिसका नाम जाफ़रखां रक्खा गया। इस तरह से युक्त प्रदेश में कुछ टांक राजपूत हिन्दू और कुछ टांक राजपूत मुसलमान हैं, उस समय में जांफ़रखां का भाई गुलाबसिंह टांक राजपूत हिन्दू सरदार था।

युक्त प्रदेश में जो टांक राजपूत नौमुसलिम हैं उन का रहन सहन रीति, भांति, चाल ढाल व खान पान सब अपने हिन्दू राजपूत भाइयों की जैसी हैं एक सिविलियन अफ़सर A Civilian officer ने लिखा है:—

The customs of the Muhammadan brother hood still partake grately of a Hindu charactor. At the ceremonies attendant on births, marriages, deaths, and at meetings of the tribal council amongst the Hindu brother-hood, Jaffarkhan is always summond and takes a prominent part.

भा० कोसमा सरदार गुलाबसिंह और फतेसिंह ये दो भाई थे, जिन में से फतेसिंह पकड़ा जाकर शाही हुक्म से मुसलमान

कर लिया गया था जिस का नाम जाफरखां रक्खा गया था, उस का दूसरा भाई गुलाबसिंह टांक कोसमा में राज्य करता रहा चूं कि जाफ़रखां (फतेहसिंह) और उस के साथी गण नाम मात्र के मुसलमान थे इस लिये जब कोसमा में गुलाबसिंह के यहां जब कोई भी जन्म मरन विवाह शादी त्यौहारवार आदि आदि समय में काम पड़ा तब तब फतेसिंह (जाफरखां) वह उस के साथियों में को बेरोक टोक बुलाया जाता था क्योंकि उस का रहन सहन, खान पान सब राजपूतों ही का सा था इस लिये टांक राजपूत जो जो नोमुसलिम हैं वे सब शुद्ध करने योग्य हैं।

युक्त प्रदेश में इन की लोक संख्या करीब ४ हज़ार के है जिस में से मैनपुरी के ज़िले में १००४, झांसी में ६४७ और शाहजहांपुर में २२६ हैं बाकी अन्य ज़िलों में सौ सौ पचास पचास मनुष्य कुछ जिलों में हैं।

३२ ढाढी :—

यह एक राजपूत जाति है, दढी, शुद्ध संस्कृत शब्द का बिगड़ा हुवा रूप ढाढी है, राजपूतों में जो बड़े दढी (मज़बूत) होते थे वे दढी नाम से सम्बोधन किये जाते थे, पूर्व काल में राजपूतों की फौजों में दढी लोग सब से आगे रहा करते थे जिन की नौकरी बड़ी बड़ी वीरता सूचक व उत्साह वर्धक गीत व कढ़खे सुनाया करते थे, सारंगी बजा कर गाया करते थे और फौज को उत्तेजना दिया करते थे। इस से पहले ये ही मारे जाते थे ! बादशाही जमाने में ये दढी वीर पकड़े जा कर सैकड़ों कतल कर दिये गये और सैकड़ों ही

मुसलमान कर लिये गये थे। पहिले इन का चलन फौजों में बहुत था पर अब तो बहुत कम रह गए हैं और डूम, भाटों की तरह मांग कर अपना निर्वाह करते हैं।

आईन अकबरी में तथा मा० रिपोर्ट में लिखा है कि ढाढी लोग रण में शूरवीरों को बड़ी बड़ी तारीफें करते हैं और युद्ध के मैदान को खूब चमकाया करते थे, इसही लिये बहुत से ढाढी भी मुसलमान बनाये गये।

इन में एक भेद 'मलानूर' है जो यथार्थ में पहिले राजपूत थे जो कहीं पर हिन्दू मलानूर व कहीं कहीं पर मुसलमान मलानूरी कहाते हैं।

मुसलमान ढाढियों में व हिन्दु ढाढियों में कुछ विशेष फर्क नहीं है बल्कि मुसलमान ढाढियों की रीति भांति बहुत कुछ हिन्दुओं से मिलती जुलती सी हैं, ढाढियों की प्रतिष्ठा पूर्वकाल के अनुसार अब नहीं रही है अब तो ये बिचारे बहुत ग़रीब रह गये हैं, विवाह शादी व जन्म मरण के समय केवल गा-बजा कर व अपने यजमानों की बड़ाई कर के निर्वाह करते रहते हैं, इस जाति की जन संख्या अब विशेष नहीं है क्यों कि निर्वाह न होते देख कर ये लोग खेती व अन्य अन्य धन्दे करने लग गये हैं।

मुसलमान ढाढी विशेष कर आज कल रंडियों के यहां नौकरी करते हुए देखे गये हैं इस ही लिये कहावत प्रसिद्ध है कि "रंडी की कमाई या खाय ढाढी, या खाय गाडी" अर्थात् रंडियें जो सैकड़ों रुपैया कमाती हैं उन की कमाई ढाढी व घोड़ा गाड़ी खा जाती हैं।

मुसलमान ढाढियों की लोक संख्या राजपुताना व युक्त

प्रदेश में विशेष है। जिलेवार इस प्रकार से हैं आगरे में ८६, फर्रुखाबाद में ६७, शाहजहांपुर में १८०, लखनऊ में १०७, रायबरेली में ११५, सीतापुर में ८०, हर्दोई में ६१, खेड़ी ११८, गोंडा ६३, सुलतानपुर में ७३, आदि आदि, जिन जिन जिलों में ४० से कम थे उन को हम ने छोड़ दिया है।

यह एक हिन्दु व मुसलमान जाति है, हिन्दुवों से ही मुसलमान बनाये गये हैं इन को कहीं डूम, कहीं डोम, और कहीं डोम्ब कहते हैं यह एक जंगली जाति है इन की स्थिति सर्वत्र एक सी नही है ये भारतवर्ष के प्रत्येक प्रदेश में पाये जाते हैं, ये लोग राजपूताने में भी हैं जहां ये लोग बहुत गरीब हैं, ये अपने अपने यजमानों को पीढ़ियें याद रखते हैं और जब उन के पास जाकर सुभरात करते हैं तब दस दस बीस बीस पीढ़ियें के मुंह से बोल सुनाते हैं और उन की कीर्ति के अच्छे अच्छे गीत व छावली बना कर सारंगी और रबाब पर गाते हैं

स्मृतियों में इन की उत्पत्ति उग्र स्त्री व क्षत्रिय पिता द्वारा लिखी है इस लिये वीर्य प्रधानता के नियम,से यह जाति क्षत्रिय वर्ण में ठहरती है।

मिस्टर क्रोक ने लिखा है:—

Another story, again makes the Doms the descendants of Raja Ben & from him one of their sub Castes has taken the name Ben bansi.

दूसरी कहानी से डोम लोग राजा बेन के वंश में से ठहरते हैं जिस से इन का एक भेद बेनवंशी प्रसिद्ध है।

पर इन के भेद उपभेदों के देखने से पता लगता है कि इन में कई तरह की जातियें सम्मिलित हैं जिस से इन की स्थिति सर्वत्र एक सी नहीं जैसे तुरकिया. गेपर, गायमार, (गो हत्यारे) वारकर, चमरेल, चुरेलिया, सतचुलिहा, समंद, असरेंत, महतमा, नहरकारे, मंगरिया, नानेत, कैथल, सुवादोर, जुगिन, नगरबंद, धोंसिया, बिड़हा, सरखिया, बकसरिया, गुजरिया और लंगोटिया।

मुसलमान डूमों की लोक संख्या जिलेवार इस प्रकार से है बस्ती के जिले में ११०, जौनपुर में १३५, अलाहाबाद में १८८, पीलीभीत में २५६, शाहजहांपुर में ३०७ मुरादाबाद में ३४२८, बदायूं में ६०३, बिजनौर में २६२६, बरेली में ५६८, इटावाह में १४३, मैनपुरी में १५२, फर्रुखाबाद में ११७ आगरा में ८१६, मथुरा में ८७३, अलीगढ़ में ६६५ बुलंदशहर में ५६६३, मेरठ में ४२५७, मुजफ्फरनगर में २२६६, सहारनपुर में २४८२, देहरादून में २१०, आजमगढ़ में १३५ तराई में ५१६, बहराइच १०६ सुलतांपुर १०२ और बाराबंकी में २७२ हैं।

नोट—युक्त प्रदेश में जिन जिन जिलों में १०० सौ से कम मुसलमान डूमों की लोक संख्या है उन्हें यहां छोड़ दिया है।

इस तरह भारत के एक युक्तप्रदेश में २८२६३ नो। मुस्लिम

डूम हैं। हिन्दू व मुसलमान मिला कर सम्पूर्ण युक्तप्रदेश में २९८९२३ डूम हैं। इन सब की स्थिति बड़ी शोचनीय है। इन दीन हीन गरीबों की दशा कैसे सुधरेगी यह भगवान ही जाने!

३४-डोगरः—

से दोगर भी कहते हैं, यह जातिपंजाब में विशेषरूप से है और पंजाब से ही युक्तप्रदेश में आयी है यह जाति हिन्दू व मुसलमान दोनों ही तरह की है हिन्दू राजपूतों से ही ये मुसलमान बनाये गये हैं। इनके विषय में फिरोजपुर की सरकारी रिपोर्ट में मिस्टर ब्रांडरेट लिखते हैं किः—

The Dogars are supposed to be converted Chauhan Rajputs from the neighbourhood of Delhi.

भा०—डोगर लोग चौहाण राजपूतों से मुसल्मान दिल्ली के आसपास के देशों में किये गये हैं, ये पक पटन की ओर गये जहां से ये सतलज के किनारे किनारे के देशों में पहिले और तहां से फिरोजपुर के जिले में आये, इनका आना डेढ़सौ वर्ष से फिरोजपुर की ओर हुवा है, फिरोजपुर के डोगर बहलोल की सन्तान हैं जो महु डोगर कहे जाकर प्रसिद्ध हैं यह मह

बहलोल का दादा था अतएव ये मट्टु डोगर कहाये, बहलोल के तीन बेटे थे जिनके नम बम्बू, लंगर और सम्मू थे। फिरोजपुर और मल्लनबाला के डोंगर बम्बू के बेटे हैं, खई डोंगर लंगर के और सम्मू के बेटे कसूर की ओर रहते हैं।

डोंगरों के तीन भेद परचत, चोपड़ा और तोपरा भी हैं। चोपड़ा डोंगर मंडोत में हैं, फिरोजपुर के डोंगर अपने को इनसे उच्च समझते हैं।

ये लोग अपनी लड़कियों के विवाह करते समय बड़ा विवेक करते हैं।

मिस्टर लारेन्स ने इन के वारे में बहुत कुछ अन्वेषण करके लिखा है कि ये डील डौल के सुन्दर मज़बूत क्रोधी, और मज़-बूत सिपाही होते हैं। इन की वंशपरंपरा के विषय में लिखा है कि "There is a Chauhan blood in their Veins, with which they trace their connection with that ancient family of Rajputs.

इन में चौहाण रक्त विद्यमान है। जिन से यह अपनी वंश परंपरा का सम्बन्ध राजपूत कुल से बतलाते हैं।

इन लोगों का पेशा चोरी करने का सा है तथापि भले आदमी इन में बहुत हैं। पुनः इन को रीति भांति और चाल चलन के विषय में लेख मिलता है:—

The Dogras preserve evident traces of some connection with the Hindus, in most of their family customs, in which they resemble the Hindus much more than the orthodox Mohammadans.

भा०-डोगर मुसलमानों की रीति भांति और चाल चलन देखने से प्रत्यक्ष निश्चय होता है कि इनकी रीतियें व चाल ढाल मुसलमानों की अपेक्षा हिन्दुओं से विशेष मिलती हैं अतएव वंश परंपरा से ये हिन्दू ही हैं।

मिस्टर अबटसन बहादुर लिखते हैं:—

Their social standing seems to be about that of a low class Rajputs. They are practically all Musalmans. Their chief class mattar, China, Tagra Mahu and Chokra.

इन का सामाजिक पद छोटी श्रेणी के राजपूतों का सा मालूम होता है पर ये आज कल सब मुसलमान हैं इन के कुल भेद मत्तर, चीना, तगरा, महु और चोकड़ा हैं।

युक्तप्रदेश में इन की लोक संख्या मुजफ्फरनगर के ज़िले में है बाकी विशेष रूप से ये लोग पंजाब में हैं। ये लोग अपने आचार विचार व उत्पत्ति के कारण शुद्ध होने योग्य हैं। देखें, पंजाब की क्षत्रिय जाति इन भाइयों को **गो-भक्षक** से **गो-रक्षक** बनाने में कितना साहस दिखलाती है ?

ह चौहान वंश का एक भेद है पर विशेषता इन में अब मुसलमानों की है अर्थात् यह वंश पहिले अलीगढ़ और बुलन्दशहर के जिलों में राज्याधिकारी था परन्तु मुसलमानों से युद्ध होने से पराजित होजाने से ये जबर्दस्ती मुसलमान कर लिये गये थे।

मिस्टर C. S W. C. कलक्टर ने लिखा है:—

A Rajput sept, now almost all Muhamedans who before the Coming of Bargujars were the chief owners of the country, now included in the Aligarh and Bulandshahr Districts.

भा०–डोर एक राजपूत कुल है जो अधिकतर सब ही मुसलमान हैं जो बड़गूजरों के पहिले राज्याधिकारी उस जगह थे जो आजकल अलीगढ़ और बुलन्दशहर के बीच में है।

मिस्टर नेविल I. C. S. ने इस जाति के लिये लिखा है कि

The Dors, the descendants of the ancient Lords of the district, with 4878 acres in the Aligarh Tehsil.

भा०—डोर राजपूत अलीगढ़ के जिले के प्राचीन मालिक हैं जिनके पास अलीगढ़ तहसील में ४८७८ एकड़ ज़मीन है।

Colonel Todd कर्नल टाड ने लिखा है कि :—

The Local traditions in Aligarh and Bulandshahr agrees that they were Lords of a large tract of country between the Ganges and Jumna long anterior to the Muhammadan Invasions.

भा०—बुलंदशहर और अलीगढ़ में एक पुरानी कहावत चली आ रही है कि डोर राजपूत गण गंगा और जमुना के बीच के देश के स्वामी थे यह वार्ता मुसलमानी राज्य के बहुत पहिले की है।

इस वंश का राजा हरदत्त था जिसने अपना शीस (सिर) देवता के अर्पण किया था जिससे यह वंश डुंड डुंड कहाते कहाते डोर कहाने लग गये, कदाचित यह सत्य हो।

बारहवीं शताब्दि के आस-पास इनकी शक्ति कम हो गई थी और बची बचाई को शाहबुद्दीन ग़ौरी ने नष्ट भ्रष्ट कर दिया और हज़ारों को क़तल करवा दिया और हज़ारों को मुसलमान कर लिया तब से दोनों ही तरह के डोर हिन्दू राजपूत व डोर राजपूत मुसलमान चले आ रहे हैं।

डोर मुसलमानों में अभी भी क्षत्रिय खून दौरा करता है जो हरेक मुसलमान के साथ खाते पीते तक नहीं है और अपनी चाल ढाल भी राजपूतों की सी बनाये हुये हैं आवश्यकता है कि इन्हें इनके पूर्वज राजाओं की कथायें व उनके वीरत्व विषयक गाथायें सुना कर ये सन्मार्ग पर लाये जायँ तो देश का बड़ा भला हो।

३६-तगा

यह एक ब्राह्मण जाति है, त्यागी शुद्ध शब्द का बिगड़ कर 'तगा' शब्द हुआ है। इन ब्राह्मणों के विषय में बहुत कुछ विवरण ब्राह्मण निर्णय ग्रंथ में लिखा जा चुका है। यह जाति विशेष रूप से युक्तप्रदेश के गंगा, यमुना दुआवा और रुहेलखंड प्रदेश में है। इस जाति के पास किसी किसी देश में बड़ी बड़ी जायदाद व जागीरें भी हैं। इनकी इस प्रभुता के कारण से ये लोग अपने को व अन्य लोग इनको कहीं कहीं ठाकुर व राजपूत कहते हैं, इस जाति ने भी मुसलमानी राज्य के समय में अपने हिन्दू धर्म रक्षणार्थ वीरता का परिचय दिया था, अतएव मुसलमान बादशाहों की दृष्टि में ये लोग कांटे से खटके जाने लगे। इसलिये मुसलमानों ने अपनी संगठन शक्ति बढ़ाने को इन्हें ज़बर्दस्ती से मुसलमान कर लिया, इसलिये धर्म के भेद से ये लोग हिन्दू और मुसलमान दोनों प्रकार के हैं।

इस जाति का आदि स्थान बंगाल प्रदेश था, जब राजा जनमेजय ने यज्ञ किया था, तब इन्हें बंगाल से इस प्रांत में बुलाया था, यह कथा महाभारत में वर्णित है, अर्थात् राजा

परीक्षित को सर्प ने किस प्रकार डसा था, कैसे कैसे उपाय किये गये और वे सब के सब किस प्रकार निष्फल हुये ? उत्तंक मुनि और जनमेजय का विवाद ? तक्षक, आदित्य और वासुकी का सम्वाद आदि आदि विवरण महाभारत में विशेष रूप से लिखा है।

नागयज्ञ की पूर्ति के लिये राजा जनमेजय ने गौड़ ब्राह्मणों को बंगाल से बुलाया था, जिन्होंने यज्ञ कराया था, राजा ने यज्ञ के अनन्तर इन्हें योग्य ब्राह्मण समझ कर दक्षिणा दी। राजा ने दक्षिणा में ब्राह्मणों को योग्यतानुसार गांव, जमीन व जागीरें दी थीं, उस दक्षिणा को बहुत से ब्राह्मणों ने तो स्वीकार कर लिया और बहुतों ने नहीं की। तब से इनका नाम त्यागी हुआ, जिन लोगों ने यह यज्ञ दक्षिणा स्वीकार कर ली थी वे विशेष रूप से हरियाना प्रांत में आकर रहे और जिन्होंने राजा की दान दक्षिणा स्वीकार नहीं की वे तगा ठाकुर कहलाने लगे।

सरकारी ग्रन्थ में बावन भेद हिन्दू तगाओं के और पचपन मुसलमान तगाओं के हैं, इनमें राजपूतों के से भेद पाये जाते हैं, जैसे बाछल, बैस, वरगहा, चौहान, चंडेल, दीक्षित, गौड़, सनाढ्य और बशिष्ठ आदि हैं, युक्तप्रदेश में इनकी लोक संख्या इस प्रकार से है:—

नाम ज़िला	हिन्दू तगा	मुसल्मान तगा	जोड़
सहारनपुर	१५९६१	२८५५	१८८१६
मुज़फ्फरनगर	१२७९२	६६३७	१९४२९

मेरठ	४३२९०	१२०४६	१५३३६
बुलंदशहर	६५०८	४०	६५४८
बिजलौर	१०९५२	... ...	१०९५२
मुरादाबाद	९८२२	६५३७	१६३५९
तराई	४९	... ...	४९
जोड़	९९४०६	२८११८	१२७५२७

नोट—जिन ज़िलों में ५० से कम आबादी थी वे छोड़ दिये गये हैं। भारत के एक युक्तप्रदेश में २८११८ नौमुसलिम तगा हैं हिंदू धर्म शास्त्रों में प्रायश्चित के सम्बन्ध में अध्यायों के अध्याय भरे पड़े हैं पुराणों में हज़ारों लाखों यवनादिकों की शुद्धि के प्रमाण मिलते हैं तब पुराने विचारों के मनुष्य शुद्धि न करें तो यह उनका अज्ञान नहीं तो क्या है ?

सको तुंवर व तोमर भी कहते हैं, यह प्रसिद्ध क्षत्रिय वंश है—भारत के प्रसिद्ध ३६ राजकुलों में इस वंश की गणना है इनकी उत्पत्ति के विषय किसी किसी विद्वान् ने इन्हें यदुवंश में व किसी ने इन्हें पांडु वंश में से लिखा है

ऐतिहासिक विद्वानों ने लिखा है कि :—

A famous sept of Rajputs. Though a sub-divisions of Yaduvansi they are usually reckoned as one of the thirty-six royal races.

(C. & T. P. 512).

भा०—यह एक प्रसिद्ध राजपूत वंश है, यद्यपि ये यदुवंश का एक उपभेद है तथापि इनकी गणना ३६ राजकुलों में की गई है।

एक समय इस वंश का दौर-दौरा बड़ी दूर तक था इस ही वंश ने सैकड़ों वर्षों की बरबाद हुई दिल्ली को फिर से बनाया था क्योंकि ये उस समय दिल्ली के महाराजाधिराज थे, इस ही वंश में महाराज विक्रमादित्य हुये हैं जिनकी प्रभुता व धर्मज्ञता के कारण भारतवर्ष में उनका सम्वत चला कर उनका स्मरण किया जाता है और प्रत्येक कर्म काण्ड के समय संकल्प में 'शुभसम्वत सरे विक्रमादित्यराज्यात्' ऐसा पाठ पढ़ा जाता है। कहते हैं कि इनके समय में संस्कृत विद्या का बड़ा प्रचार व ब्राह्मणों का बड़ा मान्य था—महाराजा प्रति वर्ष विद्वानों को लाखों रुपयों का दान देते थे अतएव भारत-वर्ष के विद्वानों ने उनके इस उपकार के बदले में सम्वत् चला दिया जो आज का विक्रम सम्वत् १९८३ है ये विक्रमादित्य अवन्तिकापुरी (उज्जैन) के महाराजाधिराज थे, इन्हीं के वंश में महाराज अनंगपाल तंवर हुये हैं जिन्होंने अपने शासन काल में सम्वत् ८४८ में दिल्ली को फिर से बनाया।

अंग्रेज़ अफसरों ने अन्वेषण करके अनंगपाल द्वारा दिल्ली फिर से बसाई जाने का ईस्वी सन् ७३१-७३६ लिखा है। विक्रम

सम्वत् व ईस्वी सन् में इस हिसाब से ११७ वर्ष का फ़र्क़ आता है पर यह उचित नहीं सम्भव है कि इसमें कुछ भूल हो गई हो क्योंकि ईस्वी सन् व विक्रम सम्वत् में केवल पचास पचपन वर्ष का फर्क है।

इस अनंगपाल की बीसवीं पीढ़ी में दूसरा अनंगपाल हुआ जिसने निस्सन्तान होने से सम्वत् १२२० में अपने दोहिते (धेवते) पृथिवीराज चौहान को गद्दी पर बिठाया, बस यहां से ही दिल्ली में चौहान वंश का राज्य आरम्भ हुआ जिसने पांच बार शाहबुद्दीन ग़ोरी को क़ैद कर करके दयार्द्र भाव से उसे छोड़ छोड़ दिया पर छठी लड़ाई बादशाह शाहबुद्दीन ग़ोरी ने कन्नौज के राजा जयचन्द राठोड़ को मिला कर पृथ्वीराज पर चढ़ाई की और बादशाह ने पृथिवीराज को हरा कर उसे क़ैद कर लिया, पृथिवीराज बहुत गिड़गिड़ाया कि मैंने आपको पांच बार छोड़ दिया था आप मुझे इस बार छोड़ दीजिये। तब बादशाह ने कहा कि आप लोग हिन्दू हैं दूसरे की बातों में सहसा फंस कर उसका विश्वास कर लेते हैं भला शत्रु आग और कांटा चाहे छोटे हों चाहे बड़े कभी नहीं छोड़े जाने योग्य हैं बल्कि समूल नष्ट कर देने में ही कल्याण है तदनुसार ही पृथिवीराज का भी अन्त हुआ।

आजकल हसननिज़ामी के ऐसे ऐसे परचे निकलते देखे जाते हैं कि जिनके द्वारा सनातनधर्मी हिन्दू व आर्य्यसमाजी हिन्दुओं में फूट फैलाई जाती है कि जिससे हिन्दू संगठन में हानि पहुंचे। कोई कोई सनातनधर्मी कहाने वाले पंडित भी हसन निज़ामी से मिले हुये हैं जिनका उद्देश्य हिन्दुओं को आर्य्यसमाजियों से लड़ाना है। अतएव कहना पड़ता है कि भोले भाले हिन्दुओ:—

सावधान ! सावधान !! सावधान !!!

जिस समय दूसरा अनंगपाल तंवर दिल्ली में राज्य करता था उस समय इनका राज्य बहुत दुर तक फैला हुआ था। चम्बल की दहिनी ओर और जमुना के किनारे किनारे इन्हीं का राज्य था। राजपूताने में भी इनकी ध्वजा सर्वत्र सी ही फहराती थी, आजकल के जयपुर राज्यान्तर्गत जीलोपाटन में भी इस ही तंवर वंश का राज्य है जो आजकल रावजी की पदवी से विभूषित हैं, यह भाग अब तक तंवरावाटी नाम से प्रसिद्ध है जो आजकल जयपुर राज्यान्तर्गत है। जीलोपाटण के रावजी दिल्ली के तंवर सम्राट के वंशधर हैं।

तंवर वंशजों का राज्य महमूद गज़नवी की चढ़ाई के पहिले कन्नौज तक चला गया था।

सन् १०५० ईस्वी तक लखनऊ के उत्तर की ओर बारी नगर में तंवरों की राजधानी रही।

दिल्ली का लालकोट जिसे लाल किला कहते हैं तंवर महाराज अनंगपाल का बनाया हुआ ही बताया जाता है वहां पर एक लोह स्थम्भ है जिस पर सन् १०५२ का एक लेख खुदा हुआ है। सन् ११५१ ईस्वी में अनंगपाल तीसरा हुआ जिसे वीसलदेव चौहान ने सन् ११५२ में परास्त किया था।

तंवर वंश का राज्य ग्वालियर में वीरसिंह देव ने जमाया था उस समय बादशाह अलाउद्दीन खिलजी का राज्य था। सन् १४८४ में ग्वालियर में डूंगरसिंह राज्यासन पर बैठा तत्पश्चात् सन् १४८६ में मानसिंह गद्दी पर बैठा, पर सन् १५१६ में 'बादशाह इब्राहीम लोदी ने अपना आधिपत्य जमा लिया।

सन् १२०२-१२०६ में शाहबुद्दीन गोरी की लगातार कई चढ़ाइयें हुई जिससे तंवर राज्य नष्ट भ्रष्ट सा हो कर लाखों तंवर राजपूत गिरफ्तार किये जाकर हज़ारों क़त्ल कर दिये गये और हज़ारों ही मुसलमान बना लिये गये, वेनो मुसलिम राजपूत एक युक्तप्रदेश में ६०३६ हैं। दिल्ली की तलहटी में जो देशी व देशवाली मुसलमान कहाते हैं वे सब तंवर राजपूत थे।

संभल मुरादाबाद में ई० सन् ७०० के लगभग तंवरों का राज्य था जो सन् ११५० ईस्वी तक रहा। बरेली में भी तंवर लोग हंसराज के अधिकार में राज्यासीन हुये जिन्होंने सन् १३८८ में ग्वालवंशी राजाओं को निकाल भगाया।

तंवरों की एक शाखा बटोला भी है जिनका राज्य गढ़वाल की ओर रहा है।

एक समय तंवर महाराज ज्योंतिषियों के फन्देमें फँस गये अर्थात् ज्योतिषियों ने कहा कि अमुक मुहूर्त में कीली गाड़ी जाय तो पृथिवी में शेषनाग के मस्तक में जा गड़ेगी सो जब तक कीली गड़ी रहेगी तंवर राज्य की नींव भी जमी रहेगी तदनुसार राजा ने अष्टधात की एक लम्बी कीली बनवा कर गड़वा दी और फिर ज्योतिषियों के भरोसे पर खर्राटे लेने लगे अर्थात् तंवर राजा निर्भय होकर चैन की बंसरी बजाने लगे इतने में बादशाह ने चढ़ाई करके युद्ध में पराजय देकर तंवर राज की फौज तक गिरफ्तार कर ली और खूंटी की करामात रक्खी ही रह गई, तब से यह कहावत चली कि 'कीली तो ढीली हुई तंवर हुये मति हीन' भावार्थ तो सीधा ही है।

मारवाड़ में भी तंवरों का राज्य रहा है जिनमें रामदेव जी तंवर बड़े करामाती हुये हैं जिनका दूसरा नाम रामशाह पीर है इनकी पूजा मालवा व मारवाड़ आदि देशों में होती रहती है।

भारत के युक्तप्रदेश में हिन्दू तंवर राजपूत और नौमुसलिम तंवर राजपूतों की लोक संख्या इस प्रकार है :—

नाम ज़िला	तंवर राजपूत	नवमुसलिम	जोड़
कानपुर	६५६	०	६४८
फतहपुर	६११	०	६११
बांदा	५८४	२३	६०७
हमीरपुर	७६	०	७६
इलाहाबाद	२६८	०	२६६
झांसी	२७०	०	२७०
जालोल	४	०	४
ललितपुर	१२४	०	१२४
बनारस	१५७	०	१५७
गाज़ीपुर	२	५	७
बलिया	३८६	०	३८६
गोरखपुर	८६	१३५	२२१
बस्ती	... ...	७०८	७०८
आजमगढ़	१	१७१	१७२
तराई	१५८	०	१५८
लखनऊ	१०५	३	१०८
उन्नाव	११५	३७	१४२
रायबरेली	१७७	०	१७७

नाम ज़िला	तँवर राजपूत	नव-मुस्लिम	जोड़
सीतापुर	१८८२	१	१८८३
हरदोई	१२२७	०	१२२७
खेड़ी	११६४	६	११७३
फ़ैज़ाबाद	१५१	०	१५१
बहराइच	२६	०	२६
सुलतानपुर	१२	०	१२
परताबगढ़	६१	०	६१
बाराबंकी	६६	०	६६
जोड़—	३२६१५	६०३६	३८६६

इन नव-मुस्लिमों की रीति भांति चाल ढाल अपने राजपूत भाइयों से मिलती जुलती सी हैं अतएव इन्हें शुद्ध कर लेना चाहिये।

मुंशी देवीप्रसादजी प्रसिद्ध इतिहास वेत्ता विद्वान ने भी अपने ग्रन्थों में इन नव-मुस्लिम राजपूतों के विषय में लिखा है कि इनकी बहुतसी रीत-भांति हिन्दुवानी हैं और दिल्ली की तलहटी में ये देशी मुसल्मान नाम से प्रसिद्ध हैं।

यह दर्वंकार का विगड़ा रूप है इनकादूसरा नाम "कुप्पेसाज" भी है यह हिन्दू और मुसलमान दोनों ही तरह के होते हैं, इनके भेद दहली-वाल, दरी, मोची, श्रीपत और बेनगर हैं।

इसके अतिरिक्त Prehistoric Antiquities Page 360. नामक ग्रन्थ में इनके भेद बेनवंसी, बांकर, ढालगर, गोलीवाला, जाटी, कनौजिया और श्रीवास्तव भी लिखे हैं यह सब राजपूत प्रदर्शक नाम हैं। इस देश में पहले जब कनस्तर नहीं होते थे तब कुप्पों में घी व तेल भरा जाता था परन्तु अब कुप्पों का प्रचार बहुत कम होगया है इन लोगों का मुख्य धंधा कुप्पे व कुप्पी तथा ढाल इत्यादि बनाना है।

यह लोग हिन्दू और मुसलमान भी हैं परन्तु हिन्दू ज्यादा और मुसलमान थोड़े हैं। युक्तप्रदेश में इनकी लोक संख्या केवल ११५० है इनकी रीति भांति मिली जुली सी हैं यह लोग चमड़े के कुप्पे व कुप्पियें बनाया करते हैं। इसलिये इनका पद अन्य चर्मकार जातियों के तुल्य मानना चाहिये।

३९–दिवाना

यह एक मुसलमान बने फ़क़ीरों की जाति है। इनका यह कथन है कि हम खुदा की इबादत में दिवाने (संलग्न) हैं अतएव इस समूह का नाम दिवाना प्रसिद्ध हुवा, यह जाति युक्तप्रदेश व पंजाब दोनों ही प्रदेशों में विशेष है ये सबके सब हिन्दुवों से मुसल्मान बने हुये हैं।

युक्तप्रदेश में इनका Headquarter मुख्य स्थान मिर्ज़ापुर के जिले में चुनारगढ़ में है, जहां ये जमाल नामक दिवाना की सम्प्रादय में हैं दस दस व बाराह बारह वर्ष के लड़के इसमें शिष्य कर लिये जाते हैं, इनमें एक Head Faqir मुर्शिद होता है दूसरे फ़क़ीर लोग किसी हिन्दू के लड़के को बहकाकर शागिर्द होने को राज़ी करके मुर्शिद फ़क़ीर के पास उसे लेजाते हैं तब वह मुर्शिद उस लड़के से पूछता है कि "क्या तुम मेरे साथ प्याला पीने और सब तरह की मेरी आज्ञा मानने को तत्पर हो ?" वह लड़का उत्तर देता है जी हां, तब उसके लिये गेरुवे व पीले रंग का एक सुवाफ़ा (फैंटा), एक कफ़नी, एक गुलूबन्द, एक लंगोटी ये चार कपड़े लाये जाते हैं नाई को बुलाकर उसका चोटी सहित मुंडन कराते हैं और

फिर उस लड़के को स्नान कराकर वे नवीन वस्त्र पहिनाते हैं तब मुर्शिद उत्तर की तरफ़ बैठकर अपने मुरीद शिष्य को अपने साम्हने बिठाता है तब मिट्टी के प्याले में क़रीब पाव भर शरबत लाया जाता है; तब मुर्शिद दरूद पढ़कर उस शरबत के प्याले में से थोड़ासा आप पीता है तब मुर्शिद उस मुरीद से कहता है कि मेरी ओर देखते जावो और इस बाक़ी शरबत (मेरे झूंठे) को तुम पीजावो, जब वह पी चुकता है तब मुर्शिद उस शिष्य से कहता है कि "अब मैं तुम्हारे पापों का ज़िम्मेवार हूँ" फिर वह मुर्शिद उससे कहता है मेरी ओर ध्यान लगावो लो यह माला लेवो वह माला जैतू की लकड़ी की बनी हुई होती है फिर इसको रँगा हुवा एक अंगोछा दिया जाता है और मांगकर खाने को एक "कजकोल" खप्पर सा दिया जाता है। एक लकड़ी की फावड़ी भी इसे दियी जाती है जिसे कमर में अटका लेते हैं, तब वह मुरीद शिष्य इस तरह तय्यार होकर वहां उपस्थित समुदाय से भिक्षा मांगता है और तब 'मीयां' शब्द कहकर सबको सलाम करता है तब इसके उत्तर में वे सब लोग कहते हैं 'हक्क मियां' यह सब हो चुकने पर उसे तकिये (कुटी) में रख देते हैं फिर वह मुरीद 'सज्जादे-नशीन' (महन्त) के पास से दोनों समय वह रोटी मांग ले जाता है अर्थात् दो रोटी सुबह और तीन रोटी शाम को मिला करती हैं और दो चम्मच दाल के भी मिल जाते हैं, यहां कासिम सुलेमान की दर्गाह है जहां सज्जादेनशीन रहा करते हैं जो मुरीद वहां नहीं रहना चाहे वे दूसरी जगह जाकर भी रह सकते हैं और चाहें तो शादी भी कर सकते हैं।

उन्नाव के भूतपूर्व कलक्टर ने लिखा है कि:—

In the Punjab they are Hindus, wear uncut hair,n ecklace of shells and a large feather in their turbans.

भा०—पंजाब में ये निरे हिन्दू ही हैं, जो बाल बढ़ाये रहते हैं और अपने गले में माला और साफ़े में पांख लगाये रहते हैं।

यह हिन्दुवों के लड़कों को जाल में फँसाने को एक स्थान है जहां अबारा बदमाश व आलसी हिन्दुवों के लड़के इनके जाल में फँसजाते हैं औरअपनेपाप सब मुर्शिद पर चले जायँगे ऐसे बुरे भावों को धारण करके ये मनमाने पाप कर्म करते रहते हैं। इसलिए मिस्टर C.S. कलेक्टर ने लिखा है कि:-

The Diwana are a useless sect of beggars and not held in much estimation by any one.

भा०—दिवाना भिखारियों का एक निकम्मा फ़िरक़ा है और जिसको कोई भी अच्छा नहीं बतलाता है।

परन्तु आजकल के हिन्दू सच्चे ही दिवाने हैं। कोरी ही दया के भाव में फसकर ऐसे लोगों को भीख देते हैं पैसा व कपड़ा आदि भी देते हैं यह भारत के अन्-अहोभाग्य की बात है। ये लोग हिन्दुवों ही का माल खांय, हिन्दुओं के ही देवी देवताओं को नष्ट करें, हिन्दुवों ही की बहिन बेटियों को उड़ावें, हिन्दुओं की प्राण-प्यारी गो माता का गला काटें और हिन्दुवों को ही छुरे व बन्दूकों से मारें।

हमें दुःख इस बात का है कि हिन्दू सन्तान को सुमार्ग पर चलाने वाले हमारे स्वजाति भाई ब्राह्मण हैं पर इन्होंने एकमात्र हिन्दुवों को पुंगव बना दिया है, अपना कर्त्तव्य केवल एकमात्र यजमान के यहां से न्योता व दान दक्षिणा प्राप्त करलेना समझ

रक्खा है अन्यथा उनका कर्त्तव्य था कि धर्म शास्त्रों में से हिन्दू जाति को उपदेश-पूर्ण आज्ञायें सुनाते, पर इसका इस भारत में अभाव है।

भारत के हिन्दू तो हिन्दू ही हैं जिनके धर्मार्थ से म्लेच्छों को धर्म मिलता है, जिनके धर्म स्थानों में यवन लोग आकर ठहरते हैं, गो-मांसादि पकाते खाते हैं, उनके सदाव्रतों में सदा-वर्त लेते पर ऐसे अन्धे दाताओं की आंखें ज़रा भी नहीं खुलती हैं। भारत ! तेरी हिन्दू सन्तान का भविष्य क्या होगा ? हमें तो यही सोच है।

भगवन् ! हमारी वृद्धावस्था है, मृत्यु के किनारे बैठे हुये हैं न जाने कब चल बसेंगे ? क्या हमारे जीवन-काल में हिन्दू-जाति का उत्थान हम देख सकेंगे ? ऐसा हो जाना हे प्रभो !! असम्भव नहीं तो अति-कठिन अवश्य है। दीनानाथ !!! हिन्दू-जाति को उभारो और इन्हें सद्बुद्धि दीजिये कि जिससे कल्याण हो।

ह क्षत्रिय वर्ण का एक भेद है इनके पूर्वजों में से एक का विवाह हमीरपुर के बसाने वाले हमीरदेव कर्चुली की कन्या के साथ हुवा था तबसे बुन्देल-खंड के हमीरपुर जिले में इन्हें दायजे में चौबीस

गांव मिले थे वे आज तक इनके पास हैं। ऐतिहासिक विद्वानों ने लिखा है 'A powerful Sept of Rajputs.' अर्थात् यह एक शक्तिशाली राजपूत वंश है, ये लोग अयोध्या के सूर्यवंशी राजाओं में से हैं सूर्यवंश में से जिस शाखा को ऋषि ने दीक्षा दियी थी वह समुदाय दीक्षित नाम से प्रसिद्ध हुवा, इक्ष्वाकु की ५१ वीं पीढ़ी में दुर्गावाहु एक राजा हुवा है जो अजुध्या छोड़कर गुजरात चला गया था जहां उनके नाम से दुर्गवंश की एक शाखा गुजरात में हुयी। दुर्गावाहु से २४ वीं पीढ़ी में राजा कल्यान हुवा जिसने उज्जैनाधिपति विक्रमादित्य को कर दिया था, इस कल्यान के वंश को दुर्गवंश के स्थान में दीक्षित की पदवी मिली थी तबसे ये लोग दीक्षित कहे जाने लगे। (C. & T. P. 407)

इस दुर्ग वंश को यह पदवी ईसा से ५० वर्ष पूर्व महाराज विक्रमादित्य ने दियी थी, ये लोग वर्षों तक गुजरात में रहे, इसही दुर्ग वंश के वीर बलभद्र दीक्षित ने कन्नौज के राठौड़ राजा के यहां एक उच्चाधिकार पाया, बलभद्र के पिता का नाम समप्रधान था, प्राचीन समय में प्रधान रजिष्ट्रार कानूंगो का पद था और उन्हें बड़े बड़े अधिकार होते थे, इन्हीं के नाम पर एक प्रदेश का नाम दीक्षितयाना रक्खा गया था, किसी समय यह देश कायस्थों के आधीन था युद्ध के समय कायस्थों ने दीक्षितों से मदद ली जिसकी याद में उस देश को दीक्षितयाना कहने लगे। जसवन्तसिंह दीक्षित के चार पुत्र थे जिसमें सबसे बड़ा समोनी में रहा जहां अबतक दीक्षितों का राज्य है। दूसरा पुत्र उदयभान था जो अवध में चला गया और वहां अपने भाग को दीखितयाना व दीक्षितयाना प्रसिद्ध किया।

तीसरे पुत्र का नाम वनवारी था जो उत्तर की ओर हिमालय की तलहटी के जंगल में जा बसा। चौथा पुत्र खैराज पूर्व की ओर जाकर परतापगढ़ के जिले में विलखर पर अधिकार किया तबसे दीक्षित राजपूतों की एक शाखा विलखरिया कही जाने लगी।

दीक्षितयाना प्रदेश पूर्व में बैसवाड़े के किनारे किनारे पश्चिम में मरुस्थलीय पाली तक तथा गोमती से गंगा के आस पास का मुल्क दीक्षितयाना कहाता था और इतने बड़े प्रदेश पर दीक्षितों का शासन था इसही से इस वंश की प्रभुत्वता के विषय में सिविलियन अफ़सरों ने यहां तक लिखा है कि:—

There can be no doubt that during this period the Dikhit Raja held a very high position in the country, and this was the time when Dikhityana became famous for a Geographical expression.

भा०—इसमें कोई सन्देह नहीं है कि आजकल भी दीक्षित राजपूतों का देश में बड़ा ऊंचा पद है और इसही से दीक्षित-याना भूगोल (जुगराफिया) में भी जाकर प्रसिद्ध हुआ।

दीक्षित वंश में बड़े बड़े राजघरानों की लड़कियें ब्याही हुई आई हैं और प्रायः राजपूत लोग अपने से ऊंचे कुल की लड़कियें लेने में अपना गौरव समझते हैं तदनुसार दीक्षितों के सम्बन्ध घरोरा के जांगड़े राजाओं के, करोर के बछ गोतियों के, अर्गल के गौतमोंके, अमेठी गढ़ के बन्धल गोतियों के, चौर मानिकपुर के विसन राजपूतों के हुये हैं इसलिये यह प्रतिष्ठित वंश है। पुनः—

The Chiefs of Eastern Oudh make it their ambition to marry their daughters only into the great Kachhwaha and Chauhan Clans of Mainpuri and Etawah; that they should choosen the Raja of Dikhityana for their son-in-law is a proof that at that time his rank and influence were as great as those of the older Western Rajas are now.

भा० पूर्वी अवध के राजा व सरदार लोगों की यह इच्छा कि हमारी लड़कियें मैंनपुरी और इटावा के उच्च कुल कछवाहा व चौहान वंश में ब्याही जांय तदनुसार ये लोग अपनी लड़की दीक्षित राज वंशों में ब्याहते थे। इससे प्रमाणित होता है कि उस समय इस दीक्षित वंश की बड़ी महिमा व दौर दौरे थे जैसे कि आज कल पश्चिम में कई राजा लोग हैं।

नोट:—आजकल राजपूताना प्रान्तस्थ जयपुर जोधपुर में भी ऐसी पृथा है कि जयपुर राज्य में पटरानी जोधपुर की लड़की ही होती है।

युक्त प्रदेश के गाज़ीपुर में भी दीक्षितों की प्रतिष्ठा है वहां जो इनका देश पछतोरिया कहाता है ये भी सूरजवंशी हैं ये लोग बुलंदशहर से आकर पछोतर में अपना अधिकार किया। आजमगढ़ में भी दीक्षित लोग हैं जो पुराने राज घराने के हैं, उन्नाव के ज़िले में भी इस राजवंश के लोग हैं। पर इन सब में संगठन का अभाव था इससे मुसलमान बादशाहों ने इस वंश को तित्तिर बित्तिर कर दिया और ये लोग अब साधारण स्थिति के राजपूत रह गये।

बादशाही समय में इस वंश ने मुसल्मानों से बड़ी टक्कर ली थी पर अन्त में इनके हज़ारों मनुष्य क़ैद होकर क़तल किये

गये और हज़ारों ही नौमुसलिम बना लिये गये और मरता क्या न करता के अनुसार इन विचारों ने मुसलमान हो कर ही प्राण रक्षा की थी, ऐसे नौमुसलिमों की संख्या २१५२९ एक युक्त प्रदेश में है। हिन्दू दीक्षित राजपूतों की लोक संख्या ६०७२७ है।

इन नौमुसलिमों की रीति भांति राजपूतों की सी हैं अतः शुद्ध कर लेने में आपत्ति नहीं।

यह एक नौमुसलिम राजपूत जाति है, पंजाब में ये लोग बहुत हैं तहां से ही ये लोग आपत्ति काल में युक्त प्रदेश में चले आये थे, मिस्टर ग्रंडरेट ने लिखा है:—

The dongers are supprosed to be converted Chauhan Rajputs from the Neighbour hood of Delhi

भा० दोगर लोग पहिले चौहान राजपूत थे और दिल्ली के चौहाण वंश से थे परन्तु मुसलमानो अत्याचारों के समय मुसलमान कर लिये गये।

पंजाब में अत्याचारों से पीड़ित होकर ये लोग पहिले पाट पटन के समीपस्थ नगरों में आ बसे तहां से धीरे धीरे सतलज

के किनारे की ओर बढ़े और फिरोजपुर भी आ बसे, ये फिरोज-पुर के दोगर लोग ठाकुर बहलोलसिंह की सन्तान हैं और दोगर कहाते हैं क्योंकि बहलोलसिंह के पिता का नाम माहु-सिंह था, बहलोलसिंह के तीन पुत्र थे बम्बू लंगर और सम्मू फिरोजपुर और मल्लतवाला में जो दोगर हैं वे बम्बू की सन्तान हैं, खाई में के दोगर लंगर के वंश में से हैं और शम्भु के वंशज कसूर में है।

दोगर जाति के उपभेद में से परचत, तोपारा और चोपड़ा ये मुख्य हैं इनमें से चोपड़ा दोगर मन्दोत में रहते हैं इनमें फिरोजपुर की ओर के दोगर उच्च माने जाते हैं ये लोग अपनी कन्याओं के सम्बन्ध करने में बड़े विचार व देख भाल करते हैं।

ऐतिहासिज्ञ विद्वानों ने इनकी आकृत के विषय में इनको अफ़गानों की बराबर बतलाया है-पहिले ये लोग प्रायः नंगे सिर रहते बतलाये गये हैं।

इस जाति की उत्पत्ति के विषय में एक विद्वान् ने लिखा है कि—

अर्थात् दोगर जाति का राजपूत से होना सन्देह-जनक है, पर हमारी सम्मति में यह सन्देह केवल सन्देह मात्र है क्योंकि हमने अपने भ्रमण में अन्वेषण करके निश्चय किया है कि ये लोग पहिले राजपूत थे क्योंकि एक दूसरे विद्वान् ने लिखा है कि Their soical slanding seems to be about that of a low class Rajput.

अर्थात् इनका जाति पद छोटी राजपूत जातियों के बराबर है, ये लोग सर्वत्र विशेष रूप से मुसलमान व कुछ कम हिन्दू हैं—मुसलमान दोगर शुद्ध किये जाने योग्य हैं।

४१—देसवाली

यह पहिले राजपूत थे, मुसलमानी राज्य में राजपूतों से जबर्दस्ती मुसलमान बनाये गये थे तब मुसलमानों में ऐसे नवमुसलिमों की "देसवाली" संज्ञा हुई, ये राजपूताना में विशेष रूप से तथा सामान्या रूप से युक्त प्रदेश में भी हैं, मारवाड़ में ये लोग खेती और सिपाहीगीरी करते हैं, जयपुर रियासत में भी देसवाली मुसलमान बहुत हैं इनके चाल चलन रीति भांति और खान पानादि व्यवहार सब हिन्दुवाना हैं, ये लोग हरएक मुसलमान के साथ खाते पीते नहीं हैं और न उनके साथ बेटी व्यवहार ही करते हैं ये लोग नाम मात्र के मुसलमान हैं क्योंकि इनमें राजपूती पन कूट कूट कर अभी तक भरा पड़ा है। मारवाड़ के इतिहास सुपरडन्ट ने अपनी रिपोर्ट में लिखा है।

"जालोरी और साचोरी के देसवाली मुसलमान बिलकुल हिन्दुओं जैसे हैं और इस ही सबब से वहां के राजपूत उनसे बहुत कम परहेज खाने पीने में करते हैं यहां तक सुना है कि एक चूल्हे पर दोनों रोटी कर लेते हैं और ज्यादा मेल जोल होने पर एक दूसरे के घर को खा पी लेते हैं यही हाल उमरकोट और जैसल्मेर में भी है।"

इनकी ऐसी ही दशा जयपुर राज्य में भी है एक समय साहब के ठाकुर सुलतानसिंह जो गाँव डांगड़ी ज़िला जैसल्मेर में शादी करने गये थे, वहां उन्होंने देखा कि मुसलमान खाना परोसते हैं इससे उस दिन ठाकुर साहब ने खाना ही नहीं खाया और चुपके से उठ खड़े हुये, दूसरे दिन डांगड़ी वाले (बेटी वाले) ने छाछ और राब खिलाई * तब ठाकुर साहब से लोगों ने कहा कि कल तो आप जीमण छोड़ बैठे थे आज छाछ राब कैसे खाई? यह किस के घर की थी? तब उन्होंने मान लिया कि ये लोग नाम मात्र के मुसलमान इसका भाव यह है कि मारवाड़ में देसवाली राजपूत मुसलमान-विशेष हैं और इन का रहन सहन ऐसा अच्छा है कि इन लोगों को देख कर कोई यह नहीं कह सकता कि यह मुसलमान हैं। यह लोग मर्द तो कमरी पहिनते और धोती बांधते हैं पायजामा तो कोई इका दुक्का ही पहिनता होगा सिर पर ठाकुरों की तरह पगड़ी बांधते हैं।

इनकी औरतें देशी लाल कपड़े की कुरती और इजार पहनती हैं। कुरती घुटने तक लम्बी होती है और उसके ऊपर पीले डोरों का कसीदा होता है और काच भी लगे रहते हैं। और ओढ़नी भी अकसर उसी कपड़े की होती है इनमें जाट पालत्तियों की तरह परदा नहीं होता। यह स्त्री पुरुष खेती करते रहते हैं यह ब्याह शादी अपनी ही जाति में नख (गोत्र) टाल कर करते हैं, इनमें निकाह के सिवाय सब रीति भांति राजपूतों से मिलती हुई हैं।

---

* यह छाछ राब देसवाली मुसलमानों के घर की थी

राजपूताने में सन् १८९१ की मनुष्य गणना के अनुसार देसवाली मुसलमानों की लोक संख्या १८०९५ अठारा हजार पचानवे है। इन्हीं देशवाली मुसलमानों में से एक जाति गाडीतों की है यह मारवाड़ राज्य के तीन गावों में विशेष रूप से हैं। मुसलमानों के अत्याचार से पीड़ित हो कर यह लोग मालवा और गुजरात तक चले गये हैं।

यह लोग पहिले तो सिपाही पेशा करते थे परन्तु कुछ पीढ़ियों से गाड़ियां रख कर इधर का उधर माल व सवारी पहुंचाते रहते हैं। अब रेल के निकल जाने से बैल गाड़ियों की उतनी आवश्यकता न रही। तब यह लोग महनत मज़दूरी कर के गुजारा करने लगे। पहले जहाजों का माल भावनगर घोगा बंदर पर आकर उतरता था तहां से सैकड़ों बैल गाड़ियें माल लाद कर पाली में उतारती थीं और पाली से ऊंटों में माल लद कर सम्पूर्ण हिन्दुस्तान में जाता था, मारवाड़ में मीणे लोग इनका पहरा देते थे और गुजरात में कोली लोग पहरा देते थे और गांव रुपावास में प्रत्येक गाड़ी वाले से एक रुपया चौकीदारी लेते थे गुजरात में कोली लोग पैसा गाड़ी बुलावे का तथा एक टका रात की चौकी पहरे का लिया करते थे और अपनी अपनी हदों में से उन गाड़ियों को सही सलामत से निकाल देते थे इनकी गाड़ियें चौबलदी होती थी। भाड़े का हिसाब ऊंट के बोझ पर था।

गाडितों की खांपे १ बहलीय २ लामजा ३ रावड़ा ४ चौहान ५ मंडल ६ मांगो ७ जंदराव ८ संवर ९ राठौड़ १० गुलत्थे और परिहार हैं अर्थात् इन ९ खाँपोंके राजपूत जो जबरदस्ती मुसलमान बना लिये गये थे वे अपनी उसी खांप को लिये हुये देश-

वाली मुसलमान कहाये। जैसे जो चौहान, राजपूत मुसलमान बनाये गये थे वे चौहान देशवाली मुसलमान कहाये और जो परिहार राजपूत मुसलमान बने वे परिहार देशवाली मुसलमान कहाये और इसी तरह सब खापों की दशा जान लेनी चाहिए।

इनके मर्द लोग टखनों से ऊपर पजामा और अंगरखी पहिनते हैं और सिर पर डुपट्टा बल देकर बांधते हैं। औरत इजार और लाल कुरती टखनों तक पहनती हैं। औरतें लाख की चूड़ियां पहनती हैं। गुजरात और मालवे में जो गाड़ीत रहते हैं वे नागोरी व मारवाड़ी कहलाते हैं।

इनकी रीति भांति मरण जीवन की बिलकुल हिन्दुओं की सी हैं, इनका रहन सहन का ढंग हिन्दुओं से मिलता जुलता है, इनका अन्वेषण करने से कई बातों में हमने इन्हें अन्य मुसलमानों की अपेक्षा सुविचारी और दयावान पाया राजपूताने में अनेक स्थानों में अभी तक इनका अन्य राजपूतों के साथ भाईचारा है अतएव ऐसे लोगों को शुद्ध कर लेना अत्यावश्यक है।

४२-दौवा

यह एक राजपूत वंश है ऐतिहासिक विद्वानों ने लिखा है किः—बुंदेला राजपूतों में ऐसी प्रथा है कि बड़े बड़े घरों में स्त्रियें अपने लड़के को अपने आप दूध न पिला कर अहीर जाति की स्त्री को दे देती हैं जिसे धाय कहते हैं उस धाय से जो सन्तान पलती है वह 'दौवा' कहाती है इस ही से बुंदेला राजपूतों का व अहीरों का समीपी सम्बन्ध बताया जाता है।

अजैगढ़ G. P. 365 के फुट नोट में ऐसा लिखा है किः—

The Dawas are a sub-division of the Ahirs and their woman are employed as met-nurses by the Bundelas whose wifes seldom suckle their offspring.

भा० दावा यह अहीर जाति का एक उपभेद है जिनकी स्त्रियें बुंदेलों के यहां बच्चों को पालन पोषण के लिये धाय की तरह रहती हैं क्योंकि बुंदेले राजपूतों की स्त्रियें अपने बच्चों को बहुत कम दूध पिलाती हैं। पुनः—

At the close of 1803 an action was fought at Kamta with khet Singh a noted Bundela leader,

and in the same year another was fought at Bahara with Bhim Dauwa Gotai Dauwa and Khet Singh.

Lieutenant Burrell encountered the combined forces of Parasram the two Dauwas of Kamod Singh and Kabar Khan at Garhchhappa in 1804 and routed them with great slaughter. Colonel Meiselback also defeated the forces of Bhim Dauwa at Garhnasni and Oran near Badausa in 1804 and Rajaram was defeated at Parwar near Banda, by Himmat Bahadur in the same year. colonel Meiselback and Colonel Muhammed Zaman Khan were defeated at Deogaon by Luchhman Dauwa on attempting to the Ajiegarh.

(Bundila G. P. 38)

भा० अजैगढ़ युद्ध के समय सन् १८०३ ईस्वी में कर्नल मेसलबेक ज़मान खां और मेजर जे अन्डरसन की आधीनता में फौजें अजैगढ़ से पाँच मील की दूरी पर देव गांव की पहाड़ी के नीचे पहुंची तब चंपतराय के प्रसिद्ध वीर लछमन दावा ने मुहम्मद ज़मानखाँ की फौज पर बड़े ज़ोर की चढ़ाई की जो कि गदर में भी बांदा में प्रसिद्ध था। इनकी फौज वहां आस पास के नालों व जंगल में इस ढंग से छिपी कि जिससे अंगरेज़ अफ़सर भी एक बड़े विस्मय में पड़ गये जिसका प्रतिफल यह हुआ कि अंगरेज़ों की बहुत सी फ़ौज वहां कट गई और तोप बन्दूकें हाथ लगीं और सरकारी फौज सब की सब तितिर

विस्तर हो गयी तत्पश्चात् कर्नल मेसल बेंक ने पुनः अपनी कला कौशल से संभल कर युद्ध किया और उसमें विजय प्राप्त की सरकारी फौजें आगे को बढ़ीं और नौ शहर में जा पड़ाव डाला जो अजयगढ़ के समीप ही था वहां के किलेदार के पास किला खाली कर देने की सूचना पहुंची और चोंकि किलेदार तेरह हज़ार रुपया लेकर किले को खाली कर देने को राज़ी हुआ क्योंकि उसको अपनी फौज की चढ़ी तनख्वाह चुकानी थीं कर्नल मेसल बेक की फौज की दो कंपनियें रुपया लेकर गयीं और किले में प्रवेश किया जब लछमन दावा को यह ज्ञात हुआ तब उन्होंने रात के समय गुप्त रीति से अपने वकील को किलेदार के पास भेजा जिसने अठारह हजार रुपये किलेदार को देने की सम्मति की कि वह किले पर अधिकार कर लेने दे। इस पर किलेदार राजी हुआ और रुपये ले कर किलेदार ने लछमन दावा को दो हज़ार फौज के साथ सिड्ढी लगा कर किले की दिवाल पर से अन्दर घुस आने की आज्ञा दे दी तब लछमन दावा ने कर्नल मेसल बेंक को वहां से निकल जाने को कहा और वह विवश किला खाली करके पांच कोस की दूरी पर नहरी स्थान को चला गया और क़िले पर लछमनराव का अधिकार होगया।

(अजयगढ़ जी० पी० ४६५)

इस जाति का अनुसंधान करने से निश्चय हुआ है कि इनका जाति-पद उच्च है और मान मर्यादा वाले हैं पर आज कल इनकी स्थिति विद्या के अभाव से साधारण सी रह गयी है

४२-धुनिया [पिनारा]

रुई धुनने का जो काम करे वह धुनिया कहाता है, इसका दूसरा नाम बेहना भी है संस्कृत धू धातु से यह शब्द बना है, अरबी में नद्दफ बोलते हैं, राजपूताना में इस को 'पिनारा' बोलते हैं' इसही को पिंजारा भी कहते हैं। भारतवर्ष में रुई धुनने वाले हिन्दू तो इने गिने ही होंगे परन्तु विशेषता मुसलमान पिनारों (धुनियों) की है इन के विषय में लिखा हैः—

To the west of the Province the Hindu Dhuniyas claim to be of Rajput origin. They are divided into five sub Castes, Chauhan and Bargujar, which are well known Rajput septs, and the Dhakari, Bargali and Chhunkari.

भा०—युक्त प्रदेश के पश्चिम में हिन्दू धुनियां राजपूत कुल से हैं। इन के पांच कुल हैं चौहाण, और बड़गूजर, ये तो प्रसिद्ध राजपूत कुल हैं और ढाकरी, बरगली, और छूँकरी ये भी राजपूत वंश हैं।

जोधपुर की मनुष्य गणना में इन के भेद चौहान, सोलंखी,

तंवर, मोमल, भाटी, खत्री, खोखर जेदराणा, खींची और बग-गड़ आदि हैं।

जोधपुर रियासत के जालोर, सांचोर और भीनमाल आदि आदि परगनों में चौहाण वंशान्तर्गत सोनगरे पिनारे हैं उन्हें राज्य की ओर से कोटवाल कहते हैं।

तंवर खांप के पिनारे राजपूताने में सर्वत्र हैं पर डीडवाना व मेड़ता आदि में भी हैं। इन का आदि पुरुष राजा अनंगपाल तंवर था, जिस ने एक रात दिल्ली में जाकर अपनी कीली गाड़ दी थी और पृथिवी पर सोया था।

१ उस ही याद में ये लोग भी एक वर्ष में एक वार सब के सब ज़मीन पर सोते हैं।

२ व्याह में बींद घोड़े पर नहीं चढ़ता। कहते हैं कि जब दिल्ली तंवरों के हाथ आवेगी तब हाथी पर चढ़ कर तोरण मारेंगे।

३ स्त्री या पुरुष कच्चे रंग का कपड़ा ख़रीद कर नहीं पहिनते

४ लाख का चूड़ा मोल लेकर नहीं पहिनतीं।

५ बड़ी (मँगौड़ी) नहीं टोड़ते।

६ नामदेव वंशी धुनिये भी होते हैं।

पँवार गोत के पिनारे मालण माता को पूजते हैं और उस के चूरमा चढ़ाते हैं।

इस प्रकार हिन्दु व मुसलमान दोनों ही तरह के धुनिये (पिनारे) होते हैं इन दोनों ही में क्षत्रियों के भेद उपभेद मिलते हैं। हिन्दू पिनारों में जो क्षत्रियों के उपभेद हैं उस का कारण यह था कि तलवार के डर से क्षत्रियों ने अपने को हिन्दू पिनारों में बतला कर व वैसा ही काम कर के अपने

प्राण बचाये थे तदनुसार इन के भेद उपभेदों में वही ज्यों के त्यों क्षत्रियत्व सूचक भेद बने रहे।

इस प्रकार के बहुत से क्षत्रिय गण फिर भी अपने को न बचा सके और हज़ारों ही जबर्दस्ती मुसलमान कर लिये गये फिर भी उन में वही भेद अब तक चले आते हैं जिन से निश्चय होता है कि ये लोग किसी समय में क्षत्रिय थे। लिखा भी हैः-

"जब बादशाह शाहबुद्दीन गौरी ने दिल्ली फ़तह की तब सब राजपूतों को मुसलमान होजाने का हुक्म दिया अन्यथा प्राण दण्ड" से० रिपोर्ट पृष्ठ ६५१

पुनः—

The Dhuniyas when they entered the country in the train of the early Muhammedan Invaders.

(T. & C. P. 397)

भा० धुनियां लोग पूर्वकाल में मुसल्मानी अत्याचार के समय बने।

जिस प्रकार युक्त प्रदेशमें रुई धुनने वाले को धुनियां कहते हैं वैसे ही राजपूताना में रुई धुनने वाले को पिंजारा व पिनारा बोलते हैं क्योंकि रुई धुनना, रुई पींजना और रुई पीनना यह एक ही बात है पिनारों का एक भेद गोरी पठान भी है इसके सम्बन्ध में मा० से० रि० में लिखा है कि जब बादशाह शाहबुद्दीन गौरी ने दिल्ली फतह की तो राजपूतों से कहा था कि 'मुसल्मान होजाओ नहीं तो मार डालूंगा उस वक्त जो राजपूत मुसलमान हुये वे गौरी पठान कहलाये और उनमें से जिन्होंने अपने निर्वाहार्थ रुई पीनने का धन्दा स्वीकार कर लिया।

इन मुसल्मान धुनियों में एक भेद, गौरी पठान भी है ये बादशाह शाहबुद्दीन गौरी की आज्ञा से राजपूतों से मुसल्मान किये गये थे इसलिये इनका नाम गौरी पठान पड़ा।

दूसरा भेद मन्सूरी धुनियां है जो ख्वाजा नामक एक अफ़सर बादशाह अलाउद्दीन के यहां था जिसके फतवे से राजपूत गण मुसलमान किये गये वे मन्सूरी पिनारे कहे गये अर्थात् ख्वाजा मंसूर के बनाये हुये ऐसा भाव निकलता है और ऐसा ही जाति व कौम नामक सरकारी ग्रन्थ में भी लिखा है :—

सरकारी मनुष्य गणना में मुसल्मान धुनियों के १५२ भेद उपभेद लिखे हैं जिनमें कुछेक तो इधर उधर शहरों के निकास के कारण से हैं जैसे अजुध्यावासी, अवधिया, बहराइची, बकसरिया, गंगापारी, पूरबिया, मथुरिया, अंसारी, चरपारी, जलाली, मंसूरी, हम्फी, मोमिन, शेखिया, तुरकिया और उस्मानी।

इन भेदों के अतिरिक्त इन मुसल्मान धुनियों में अब तक क्षत्रियत्व बोधक भेद चले आ रहे हैं जैसे बड़गूजर. चौहान, धांगर, पंवार, राजपूत, भायल, खींची राठोड़, रावत आदि आदि इन भेदों को सहारनपुर के भूतपूर्व कलक्टर ने भी अपनी रिपोर्ट में लिखे हैं।

इन मुसलमान पिनारों की रीति भांति व रहन सहन के ढंग सैकड़ों वर्षों के बीत चुकने पर कई बातों में हिन्दुओं से मिले जुले हैं जसे—

But they have retained in their domestic Ceremonies many of the forms of the Hindu ritwal of the Rajput castes, from which most of them are probably converts. (C. & T. P. 397)

भ० यह एक सिविलियन अफ़सर के अन्वेषण का फल है अर्थात् इनमें कई घरेलू रीति भांति हिन्दुस्तानी हैं जो राजपूतों के तुल्य हैं इनमें से विशेष लोग राजपूतों से ही मुसलमान बनाये गये हैं।

स्वर्गवासी मु० दे० प्र० जी ने एक ठिकाने लिखा है:—
"यह लोग सगपन अपनी और मा की खांप टालकर करते हैं"

पिनारों की स्त्रियों का पहिनावा हिन्दुवाना चला आरहा है।

इन मुसलमान पिनारों में अभी तक क्षत्रियत्व का खून जोश मार रहा है यहां तक कि इनके यहां की स्त्रियें भी राजपूतनियों की तरह से वीर होती हैं एक समय की कथा इतिहास सुपरइण्ट ने अपनी रिपोर्ट में लिखी है कि जब अकबर बादशाह मरा तब एक पिनारिन (धुनिये की स्त्री) ने जब यह खबर सुनी तो जोश में आकर बोली :—

दो दो पिंजन पींजते, मुरगे चरते बार।
बूधू पिंजारे मर गये, अकबरशा क्या भार॥

भा० अर्थात् हमारे बुद्धू मींयां एक साथ दो पींज चला कर रुई धुनते थे और मुरगे बाहर चरते थे वे ही मर गये तो अकबर बादशाह के मर जाने का क्या अचम्भा हुआ ?

मिस्टर C. S. W. C. कलेक्टर ने इस जाति की रीति भांति के बारे में लिखा है कि:—They collect the sacred earth at marriages, carry out the night watch (रतजगा) before marriage.

अर्थ—ये लोग विवाह के समय पवित्र मृतका मंगवाते हैं और विवाह के पूर्व रतजगा करते हैं। यह इनमें हिन्दुवानी चाल है।

लोक संख्या—राजपूताने में इस जाति की लोक संख्या बहुत है जोधपुर रियासत में हिन्दू पिनारे ४७६८ हैं और मुसलमान पिनारे ३२६ हैं परन्तु युक्त प्रदेश में विशेषता उन मुसलमान पिनारों की है जो पहिले राजपूत थे और अब मुसलमान हैं, युक्त प्रदेश में इनकी लोक संख्या ३०३४६७ है इसके अतिरिक्त ६८५२० मन्सूरी धुनिये हैं और ये सब मिला कर ४०१६८७ हैं इनका जिलेवार हिसाब इस प्रकार से है।

युक्त प्रदेश के धुनियें मुसल्मानों की संख्या

ज़िले	मन्सूरी धुनिये	दूसरी तरह के धुनिये
बुलन्द शहर	०	१५००
अलीगढ़	१३२०	५०४१
मथुरा	०	६४
आगरा	११	३९९
फर्रुखाबाद	१	७३२९
मैनपुरी	०	३२६३
इटावा	५१	३७९७
एटा	०	४५८५
बरेली	१५२०	११७०८
बिजनौर	०	११०५६
बदायूं	४४	१८०८
मुरादाबाद	०	७८६२
शाहजहांपुर	११८	८५८९
पीलीभीत	१५	५९३२
कानपुर	१२६	८३८३
फतेहपुर	१६३९	३७५६
बांदा	२६८१	४७२५
हमीरपुर	०	८३४१
अलाहाबाद	२२३८	१५८४१
झांसी	२८८	४३७५
जालौन	७०	२८९४
ललितपुर	०	१;१६
बनारस	७ ३	४५५३

युक्त प्रदेश के धुनिये मुसलमानों की लोक संख्या

ज़िले	मन्सूरी	दूसरी तरह के धुनिये
मिर्ज़ापुर	३७२	६००३
जौनपुर	११७१०	२०४९
गाज़ीपुर	२०५५	२३१८
बलिया	६०८	३०४२
गोरखपुर	३९५२०	९९४९
बस्ती	२८५५९	१०२५
आजमगढ़	२२५६	१८४२८
तराई	०	१७४४
लखनऊ	१४६०	४१८६
उन्नाव	५६६	७३५५
रायबरेली	११५	९०३५
सीतापुर	५८४५	७७४९
हरदोई	५०	१०७०८
खेड़ी	५११	१११२७
फयज़ाबाद	१	१२७८७
गोंडा	६९९	१२२६४
बहराइच	१०९६	१५०३७
सुलतांपुर	०	७९०९
परताबगढ़	२५८	७३६०
बाराबंकी	१०६४	१३१८६
जोड़	९८५२०	३०३४६७
	कुल जोड़	४०१९८७

प्रिय देश के सच्चे शुभचिन्तको ! समग्र भारत की दशा को जाने दीजिये आपके अकेले युक्त प्रदेश में चार लाख एक हज़ार नौ सौ सत्तासी धुनिये मुसल्मान हैं जिनमें विशेषांश हिन्दू नौ मुसलिमों की है जो कुछ काल पूर्व आपके ही भाई व सहयोगी थे, इन की रीति भांति से भी इनमें हिन्दुत्व झलकता है इनमें से बहुतेरे जिज्ञासुभाव से हिन्दू धर्मावलम्बि होना भी चाहते हैं अतएव इनके साथ उदारता का परिचय दिया जा कर यदि ये अपना लिये जांय तो गोवंश की कितनी रक्षा व उपकार हो ? तथा इनके साथ हिन्दुत्व का सहयोग होने से कितना लाभ हो कुछ कहा नहीं जा सकता। इसलिये संकीर्ण भावों को छोड़िये देश व काल के अनुसार चलिये शास्त्राज्ञानुसार इन्हें शुद्ध कीजिये और परस्पर प्रेम बढ़ाइये तब ही देश का कल्याण होगा अन्यथा नहीं ।

हमें दुःख इस बात का है कि हमारे देशवासी हिन्दू देश, काल व देश की स्थिती को नहीं जानते इस ही से देश की दशा बिगड़ी जा रही है। हम स्वयं कुछ नहीं करते पर दूसरों को ओर उंगली उठाते हैं सो क्यों ? जब धर्म शास्त्रों के अक्षरों के अनुसार हम नहीं चलते तब केवल दूसरों के ही लिये उनका उपयोग क्यों व कैसे किया जाता है ? पहिले आप सब लोग धर्म शास्त्र के अक्षर अक्षर के अनुकूल चलने वाले अपने को प्रमाणित करो फिर दूसरों को कहिये जब आप उनके अनुसार नहीं चलते हैं और शास्त्राज्ञा उल्लंघन का दोष आप पर लाखों बातों से प्रमाणित है तब आप देश के शुभ कामों में बाधक भी क्यों बनते हैं ?

हिन्दुओ ! परमात्मा को अपने हृदय में रख कर देखो कि तुम कैसे कैसे पाप व महापाप नित्य करते रहते हो फिर भी

आप शुद्धि करने वालों के विरुद्ध शुद्ध किये हुवों के साथ सहयोग करने वालों से नाराज, विधवाओं के आर्तनाद पर करुणा दिखाने वालों के शत्रु बनते हैं सो क्यों ? हमें तो दुःख इस बात का है कि आप पूर्वा पर विचारते तक नहीं और जो चाहा कर बैठते हो ? क्या ईश्वर ने संसार के सब सुख व ऐश्वर्य्य भोगने का तांबा पत्र केवल पुरुषों के लिये ही कर दिया है ? यदि कहो कि धर्म शास्त्रों में वाक्य विद्यमान हैं तो यह उत्तर ठीक नही, क्योंकि हिन्दू धर्म में आज ५२ स्मृतियें वे सब की सब देश काल के अनुसार रची गई हैं तब आज कल को देश स्थिति के अनुसार धर्म शास्त्र कहां ? मनुस्मृति आदि आदि धर्म शास्त्र उस समय के हैं जब क्षत्रियों का राज्य था, वेदज्ञ ब्राह्मण विद्वान् थे, वेदज्ञों की धर्म व्यवस्था सभायें थीं। राजा लोग महावीर स्वयं वेदज्ञ व तपस्वी तथा न्यायी होते थे आज वह दशा कहां रही ? क्षत्रिय लोग हिजड़े तथा कोट, पतलून, टोप पहिन कर होटलों में खाने पोने वाले रिश्वत-खोर अन्यायी रह गये, ब्राह्मण लोग पीर, बबरची, भिश्ती, खर रह गये, वैश्य लोलुप कामी, महामूर्ख, ब्याज के लोलुप हिंसक रह गये, शूद्रों की तो गिनती ही क्या उन्हें तो आप नीच नीच व अछूत अछूत कह कर ही ठुकराते रहते हैं आप कुत्ते कौवों से प्रेम करें पर शूद्रों से नहीं, कहिये यह अन्याय नहीं तो क्या है ? शास्त्रों की कड़ाई क्या इन विचारे दीन हीन मुख मलीन दुखियों ही के लिये है या आपके लिये भी कुछ ? स्मृतियें व धर्म शास्त्र ये सब आप ही लोगों के तो बनाये हुये हैं कोई ईश्वर ने स्मृतियें लिखी ही नहीं अतएव चाहे जैसे श्लोक उसमें मिलाये व घटाये व बदले जा सकते हैं तब उनमें विशेषता क्या रही ? स्त्री वर्ग व शूद्रादिकों ने आपका क्या बिगाड़ा,

परमात्मा के न्याय से सब बराबर हैं सब को समान अधिकार होने चाहियें।

प्यारे ! हिन्दूसन्तान !! कपट जाल को हटा कर सन्मार्ग व न्यायानुकूल सबके साथ बर्तिये यही हमारी प्रार्थना है।

६४—धोबी
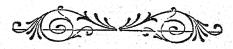
यह एक हिन्दू व मुसलमान दोनों ही प्रकार की जाति है, देश भेद व देश भाषा के कारण इस जाति के भिन्न भिन्न नाम पड़ गये हैं, बंगाल में इस जाति को धोपा, उत्तरी हिन्दुस्तान व राजपूताने में धोबी, मध्य प्रदेश में वार्थी, दक्षिण में अगसिया और तैलंग देश में इस जाति को चकली कहते हैं। इनका कर्म शास्त्रकारों ने यह निश्चय किया है कि—"वस्त्र निर्णेजनं कुर्यादात्म वृत्यर्थ मेवच" अर्थात् अपने जीवन निर्वाहार्थ यह जाति कपड़े धोने का काम करे, तदनुसार यह जाति आज कल सब ही जाति के सब ही तरह के मैले कपड़े धोती है जिस समय में स्मृतियें बनी थीं उस समय इस देश में ईसाई, अंग्रेज़, मुसलमान आदि आदि जातियें इस देश में नहीं थीं पर आज कल इस देश में सब ही जातियें हैं धोबी लोग उन सब के ही कपड़े धोते हैं अतएव किन्हीं २ विद्वानों ने इन्हें अस्पर्शनीय जाति

लिखा है परन्तु ये लोग हिन्दू व गोरक्षक हैं अतएव गोमहिमा व गोमहात्म्य के अनुसार इनका जाति पद भी वेद विरोधी विधर्मिन जातियों से ऊंचा है अर्थात् जितना हम ईसाई व मुसलमानों से व्यवहार करते हैं उससे कई अंशों में बढ़ कर इस जाति की प्रतिष्ठा करनी चाहिये जब हम ईसाई मुसल्मानों से छू लेते हैं तो यह जाति भी छू लेने योग्य है क्योंकि वर्तमान काल में हिन्दू लोग गुड़ खांय गुलगुलों (पूओं) से परहेज करें सो ठीक नहीं इसलिये इस जाति को हम अछूत नहीं मानते। इस जाति में कई कुरीतियें हैं जिनके सुधार हुए बिना लोग इन्हें अछूत समझें तो समझ सकते हैं। यह शब्द 'धव' धातु से जिसका अर्थ धोना होता है बना है धर्म शास्त्रों में क्षत्रिय के वीर्य्य से शूद्रा में उत्पन्न सन्तान को 'धोबी' कहा है अतएव शास्त्रीय वीर्य प्रधानता के नियमानुसार यह जाति क्षत्रिय वर्ण में ठहरती है इस ही आधार को लेकर मिस्टर C. S. W. C. कलक्टर ने लिखा है कि :—

Another account makes them out to be the offsping of a Kshattiya father.

भा० दूसरे प्रमाणानुसार यह जाति क्षत्रिय बाप से पैदा हुई सन्तान है। प्राचीनकाल में अर्थात् मनुस्मृति धर्म शास्त्र के मतानुसार क्षत्रिय गण अपने से नीचे वर्ण की स्त्रियों से सन्तानोत्पत्ति कर सकते हैं तदनुसार धोबी क्षत्रिय वर्ण में हैं ऐसा निश्चय मानना चाहिये।

मनुष्य गणना कमिश्नर ने अपने ग्रन्थ में धोबियों का एक भेद गढ़ी भुइया भी लिखा है जो क्षत्रियों के भेदों में से एक भेद है।

सी अन्डटी रिपोर्ट में धोबियों का एक भेद रावत भी लिखा है।

मा० स० रो० के पृष्ठ ६५३ में एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक विद्वान् ने सरकारी जांच रिपोर्ट में धोबियों के भेद चौहान परिहार, राठौर, पंवार, तंवर, सोलंकी, भाटी आदि २ लिखे हैं, मनुष्य गणना कमिश्नर ने धोबियों के भेद उप भेद बहुत से लिखे हैं जिनमें से क्षत्रियत्व सूचक कुछ भेद नीचे दिये जाते हैं।

बैस, कैथिया, कन्नोजिया, मथुरिया, श्रीवास्तव मघैया, चौहान, होंकर, ये मेरठ मुज़फ्फरनगर और मिरजापुर में विशेष हैं, मैंनपुरी में सकरबार धोबी, बरेली में वाखर, जलक्षत्री और पाठक मुरादाबाद में राजपूत नाम के धोबी; शाहजहांपुर में भदोरिया, जलक्षत्री और मेहदवार नाम के धोबी कानपुर में अमेठिया और बेलवार धोबी, फतेपुर और बांदा में माथुर और बेलवार धोबी, फैज़ाबाद और बहराइच गोंडा में जैसवार धोबी इस ही तरह यह राजपूत धोबी सब जगह फैले हुये हैं। धोबियों का काम सब तरह के मैले कपड़े धोने का है इस ही लिये उच्च हिन्दू समुदाय कुछ काल से इनसे घृणा करने लग गया है इसका कारण यह है कि गांव और देहातों के रहने वाले होने व इनमें विद्या का अभाव होने से इनका रहन सहन मैला है क्योंकि गांव व देहातों का रहन सहन व पहिराव गरीबी के कारण मोटा झोटा होता है परन्तु शहरों के धोबियों की दशा में बड़ा अन्तर है वे जर्क मर्क व साफ सुथरे रहते हैं धोबी लोग कभी कपड़ा मोल लाकर नहीं पहिनते हैं वरन जो धुलने को आते हैं उन्हें धोकर व साफ करके पहिन लिया करते हैं।

यद्यपि इनका काम मैला है तथापि काम करने से ये सदा के लिये अशुद्ध व अपवित्र नहीं हो सकते हैं, जितनी देर इन्होंने काम किया उतनी देर अपवित्र पर जहां साबुन से

हाथ धोकर व स्नान करके स्वच्छ कपड़े पहिने कि पवित्र के पवित्र; यदि ये कहा जाय कि ये बड़े बड़े मैले कपड़े धोते हैं इससे अपवित्र व अछूत हैं तो यह ठीक नहीं क्योंकि एक डाक्टर व वैद्य हकीम भी बीमारों के मल मूत्रादि को छूते व धोते हैं पर वे अछूत नहीं होते न माने जाते हैं वैसे ही धोबी भी अछूत नहीं है अर्थात् छूने योग्य हैं यही कारण है कि इनके छूये हुए व धोये हुए कपड़े सब ही लोग बिना रोक टोक ग्रहण कर लेते हैं यदि ये अछूत होते तो इन्हें कपड़े नहीं छुवाये जा सकते हैं।

धोबियों में क्षत्रियत्व सूचक नाम क्यों कैसे आ गये ? इस का उत्तर यह है कि जब मुसलमानी ज़ोर व ज़ुल्म इस देश में बढ़ रहे थे तब लाखों राजपूत एक साथ कतल किये जाते थे व लाखों ही मुसलमान किये जाते थे ऐसे विकराल समय में विपत्ति ग्रस्त राजपूतों को जिधर व जिस काम से प्राण रक्षा होती दीखी वही स्वीकार करके अपने प्राण बचाये, तदनुसार कई राजपूत जातियें धोबियों में मिल गईं और अपने को धोबी ही समझने व कहने सुनने लग गये।

इस तरह जहां हिन्दू धोबी होते हैं तहाँ मुसलमान धोबी भी भारतवर्ष में लाखों ही हैं जिनमें शेख, बहलीम और खोखर आदि कई भेद हैं और चौहान, राठोर और जोया आदि आदि अनेकों राजपूत भेदों वाले मुसलमान धोबी भी बहुत हैं इनकी रीति भांति उच्च हिन्दू जाति से मिलती जुलती सी हैं।

धोबियों को अंग्रेज़ी राज्य के कारण से धुलाई खूब मिलती है इसलिये इनमें कई तरह की कुरीतियें भी आ गई हैं अर्थात् शराब पीते हैं इसलिये नशे में चूर रह कर अपनी दशा बिगाड़ रक्खी है इसलिये इन्हें इससे बचना चाहिये।

ये लोग गधे भी रखते हैं और बैल भी रखते हैं जिन पर धोने के कपड़े लाद कर घाट को ले जाया व लाया करते हैं इनमें से कोई कोई कुत्ता भी पाल लेते हैं जो कभी घर व कभी घाट पर रहता है जो न घर की ही चौकसी कर सकता है और न घाट की ही इसलिए एक कहावत बन गई है कि 'धोबी का कुत्ता घर का न घाट का' इसका भाव यह है कि इधर उधर फिरते रहने से वह कुत्ता कहीं की भी चौकीदारी अच्छी तरह नहीं कर सकता इसलिये जो आदमी घर के व बाहर के किसी भी काम का नहीं होता है उस ही के लिये इस कहावत का प्रयोग होता है।

राजपूताने में धोबी की जाति को अच्छी समझते हैं और शकुनावलि में लिखा है कि:—

धाबी धोया कापड़ा सामो आय मिलंत।
शकुन विचारो पंथिया पग पग तीख करंत॥

इसका भाव यह है कि धोबी कपड़ा धोकर आता हुआ सामने मिल जाय तो वह कमाई करने जाने वाले के लिये बड़ा शुभ है।

जैसा हम ऊपर लिख आये हैं गांव व देहातोंके धोबी बहुत मैले रहते हैं तिस से यह कहावत प्रसिद्ध हुई कि 'धोबी की हांते गधा खाय' अर्थात् धोबी जो अपने पित्रों का श्राद्ध करे तो श्राद्ध में गधा हो जीमे दूसरा कोई नहीं।

राजपूताना प्रदेश मारवाड़ प्रदेश में कई स्थान ऐसे हैं जहां पानी नहाने को ही नहीं मिलता है वहां कपड़े कहां से धुलें किसी ने कहा है:—

जहां न जाकी गुण लहैं तहां न वाकी ठांव ।
धोबी बस के कहा करे बाघम्बर के गांव ॥

अर्थ—जहां गुणी के गुण को जानने वाला कोई नहीं तहाँ गुणी कैसे रहे ? जोगियों के गांव में जहां सब मंगवे रंगे हुये कपड़े पहिनने वाले हों वहां धोबी बसके क्या करें ? इस तरह जहां नहाने तक को पानी न हो वहां धोबी रह कर क्या करें ?

धोबियों में विद्या का बड़ा ही अभाव है अतएव ये लोग अपनी असली दशा को भी नहीं समझते कि अमुक कर्म जो हम कर रहे हैं हमारे क्षत्रियत्व के विरुद्ध हैं ।

हिन्दू सम्प्रदाय ने इनके कुआचरणों को देख कर ही इन्हें अछूत मान लिया इसलिये इस जाति को विद्या पढ़ा कर सुमार्ग पर लाना चाहिये और पाठशालाओं में सबके साथ इनके लड़के लड़कियों को शिक्षा दिलानी चाहिये ।

धोबी लोग कुत्ते भी पालते हैं और इनके कुत्ते कभी घर पर और कभी घाट पर रहते हैं अर्थात् एक जगह न रहने के कारण धोबी का कुत्ता न घर की ही रक्षा कर सकता है और न घाट की ही अतएव ऐसी कहावत प्रसिद्ध है कि 'धोबी का कुत्ता न घर का और न घाट का' अर्थात् A man Can not serve two masters अर्थात् एक आदमी एक ही समय में दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता ऐसे प्रसंगों में उपरोक्त कहावत चरितार्थ होती है ।

धोबी लोग सब जातियों के मैले से मैले व अपवित्र कपड़े तक धोते हैं फिर भी यह अपवित्र धन्दा कर चुकने के उपरान्त अपने को साफ सुथरे व पवित्र नहीं बनाते अर्थात् जैसे के तैसे ही अपवित्र बने रहते हैं इस ही लिये "आर धार और

मुसकार" की कहावत प्रसिद्ध है अर्थात् धोबी सदैव मैले कपड़े धोते रहने से अपवित्र बने रहते हैं इसलिये लोग इन्हें अछूत मानते हैं कोई कोई अपरसी लोग तो धोबी के धुले कपड़े को सोने के पानी के छींटे देकर अथवा उन्हें शुद्ध जल से पुनः धोकर ग्रहण करते हैं इसलिये धोबियों को उच्च जातियों की तरह पवित्रता से रहना सीखना चाहिये।

लोक संख्या—राजपूताने में हिन्दू धोबियों की लोक संख्या ४४१८२ है मारवाड़ में ४७९८ और युक्त प्रदेश में १९७-५८२ है मुसलमान धोबियों की लोक संख्या अकेले युक्त प्रदेश में ७८६४७ है जिसकी जिलेवार संख्या इस प्रकार से है:—

सहारनपुर में ४३४०, मुजफ्फरनगर ५४१३, मेरठ में ८६८४, बुलन्दशहर में १६०६, अलीगढ़ में ११८७, मथुरा में १०१६, आगरा ६७५, फरुक्खाबाद में २६६, ऐटाह में ३७९, बरेली में ३३३८, बिजनौर में ७०३०, बदायूं में ४१७४, मुरादाबाद में ७३८४, शाहजहांपुर में ३२५, पीलीभीत ३१४, कानपुर में ११७, फतेहपुर में ७०८, बांदा में १७१, हमीरपुर में ३७७, इलाहाबाद में ७१५, जालोन में १४४, बनारस में ८१८, मिर्जापुर में ६७२, जौनपुर में १०८०, गाजीपुर में १२५०, गोरखपुर में ८६७१, बस्ती १७६५, आजमगढ़ में २२१२, तराई में २०६६, लखनऊ में ७६६, उन्नाव में ३११, रायबरेली में ४७४, सीतापुर में ८८६, हरदोई में ४५२, खेड़ी में १७५५, फैज़ाबाद में ६३८, गोंडा में २४५०, बहराइच में ३४६६, सुलतानपुर में १३१६, परतापगढ़ में १३८५ और बाराबंकी में २५९१ हैं. जिन जिलों में इनकी संख्या सौ से कम थी उन्हें हमने छोड़ दिये हैं।

सन् १९२४ जब गोंडा और सहारनपुर में दंगे हुये तब

वहाँ के मुसलमान दर्जी व धोबी लोग जो हिन्दुओं के घरों में आने जाने के कारण सब बातों से भेदी थे। उन्होंने हिन्दुओं पर खूब हाथ दिखलाये, निज की तिन चीजों की व बहुमूल्य आभूषणादि की खूब लूट की, हिन्दुओं की अवलाओं व विधवाओं को खूब धर्म भ्रष्ट किया, नाना प्रकार के बलात्कार व अत्याचार जो मुसलमानों ने किये उनमें मुख्य भाग लेने वाले वहां के खलीफा दर्जी व मुसलमान धोबी थे, किस निर्दयता के साथ हिन्दू घर द्वार लूटे गये ? किस लोम-हर्षता के साथ निरपराध हिन्दुओं की जानें ली गयीं ? किस कठोरता व क्रूरता के साथ छोटे छोटे हिन्दू बच्चे तलवार की धार पर चढ़ाये गये ? किस प्रकार से हिन्दू दूकानें लूटीं व जलायी गयीं ? आदि आदि बातों को याद करते ही पत्थर का हिया भी दाड़िम सा धड़कने लग जाता है. सहारनपुर में मुसलमान धोबी ४०४० × और मुसलमान दर्जी ११७०=५५१० हैं ये दोनों वहांकी लूट मार व काटा फांसी के मुख्य अंग हैं, इस ही तरह गोंड़े में मुसलमान दर्जी ८६४० + मुसलमान धोबी २४५०=११५६० हैं हिन्दुओं को काफिर बनाने वालों में अधिकतर ये ही ११५६० मुसलमान बतलाये जाते हैं।

अब विचारणीय यह है कि इन मुसलमान धोबी व दर्जियों की आजीविकायें किन से चलती हैं ? तो इसका स्पष्ट उत्तर यह होगा कि अधिकतर हिन्दुओं से तब प्रश्न होता है कि इस का क्या कारण है ?

उत्तर—हमारी बेवकूफी ! बेवकूफी !! बेवकूफी !!!

प्रश्न—यह कैसे कहा ?

उ०—हमारा ही जूता और हमारा ही सिर !

प्र०—हम तो इस उत्तर को ठीक ठीक नहीं समझे !

उ०—ध्यान के साथ सुनिये :—

मुसलमान धोबी व दर्जियों को सिलाई व धुलाई का काम देने वाले हिन्दू, उनकी परवरिश व पालन पोषण करने वाले हिन्दू उनको कर्ज देने वाले हिन्दू, उनको नौकरी देने वाले हिन्दू उनको सब तरह की सहायता पहुंचाने वाले हिन्दू और फिर उनसे गला कटवाने वाले भी हिन्दू। अब कहिये क्या रहा ?

उ०—इति श्री ! इति श्री !! इति श्री !!!

प्र०—हिन्दू ऐसा क्यों करते हैं ?

उ०—अपनी अज्ञानता से ! अज्ञानता से !! अज्ञानता से !!!

प्र०—ऐसों से कैसा बर्ताव करना चाहिये ?

उ०—असहयोग ! असहयोग !! असहयोग !!!

प्र०—क्या असहयोग करना धर्म शास्त्र सम्मत है ?

उ०—हां ! हां !! हां !!!

प्र०—हमें तो यह नवीन शब्द जान पड़ता है अर्थात् कांग्रेस द्वारा इसका प्रादुर्भाव हुआ है जिसे अंग्रेजी में Non-Coperation (कतः ताल्लुकात) कहते हैं।

उ०—नहीं ! नहीं !! आप भूलते हैं आपने वेद वेदांगोंको नहीं देखा क्योंकि हिन्दू धर्म में असहयोग सर्वत्र पाया जाता है।

यथा——

ना धार्मिके वसेद् ग्रामे, नव्याधि बहुले भृशम्।
नैकः प्रपद्ये ताध्वानां, न चिरं पर्वते वसेत्॥
न शूद्र राज्ये निवसेन्ना, धार्मिक जना वृते।
न पाषण्डि गणा क्रान्ते, नोप सृष्टेऽन्त्यजैर्नृभिः॥

म० अ० ४ श्लोक ६०-६१

भा० उस स्थान में न रहे जहां धर्म का पालन न होता हो, जहाँ बहुत बीमारी हो वहां, यात्रा में अकेले तथा पर्वत में बहुत काल तक न रहे ॥६०॥

शूद्र के राज्य में न रहे, न अधर्मात्माओं के समुह में रहे, जहां पाखण्डियों का (वेद विरोधियों का) समुह रहता हो, जहां म्लेच्छादि उपद्रव मचाते रहते हों वहां भी न रहे अर्थात् ऐसों से सब तरह का असहयोग कर लेवे।

नोट—यही आशय गोतम स्मृति अ० ९।६५, आप० १-१५, २२, ३२, १८ बौ० २।६ २१-३१ विष्णु० ७१, ६४, ६८ में भी लिखा है। पुनः—

पाखण्डिनो विकर्मस्थान् वैडाल वृत्तिकान् शठान्।
हैतुकान्बक वृत्तींश्च वाङ्मात्रेणापि नार्चयेत् ॥३०॥

अर्थ—वेद विरुद्ध कर्मों में स्थित, वैडाल वृत्ति वाला, धूर्त, कुतर्की, बगुले की वृत्ति वाला इनसे ऐसा असहयोग करे कि ऐसों का वाणी मात्र से भी सत्कार न करे।

नोट—इस ही की पुष्टि याज्ञवल्क्य स्मृति १।१३० द्वारा भी होता है।

उपरोक्त श्लोक में जो वैडाल वृत्ति व बक वृत्ति आदि शब्द आये हैं उनकी विस्तृत विवेचना शास्त्रकार यों करते हैं:-

धर्मध्वजी सदा लुब्धश्छाद्मिको लोक दम्भकः।
वैडाल वृतिका ज्ञेयो हिंस्रः सर्वाभिसन्धकः ॥१९५॥
अधो दृष्टिर्नैष्कृतिकः स्वार्थ साधन तत्परः।
शठो मिथ्या विनीतश्च वकव्रतचरो द्विजः॥
ये वक व्रतिनो विप्रा येच मार्जारलिंगिनः।
ते पतंत्यन्धतामिस्रे तेन पापेन कर्मणा ॥१९७॥

अर्थ—(धर्मध्वजी) जो धर्म का काम करे बहुत कम और दिखलावे दूसरों को बहुत अधिक, (सदा लुब्धः) सदा लालची (छाद्मिकः) बहाने बनाने वाला (लोक दम्भकः) लोगों को धोका देने वाला (हिंस्र) दूसरे को हानि पहुंचाने के स्वभाव वाला

(सर्वाभिसन्धकः) सबको बदनाम करने वाला, ऐसे गुणों वाले मनुष्यों को वैडाल वृत्ति कहना चाहिये ॥ १९५॥ (अधोदृष्टि) कपट युक्त भाव से नीचे दृष्टि रखने वाला (नैष्कृतिकः) बहुत क्रूरता से बदला लेने वाला, (स्वार्थ साधन तत्परः) अपने मतलब का पक्का, कुटिल, मिथ्या विनीत ऐसे लक्षण वाले द्विज को 'वक वृत्ति' कहते हैं ॥ १९६ ॥

ऐसे लक्षण युक्त वैडाल वृत्ति व वक वृत्ति वाले अपने पाप कर्मों के कारण अन्धतामिश्र नर्क में पड़ते हैं ॥ १९७ ॥

त्यजे देकं कुलस्यार्थे ग्रामार्थे कुलंत्यजेत् ।
ग्रामं जन पदस्यार्थे आत्मार्थे पृथिवीं त्यजेत् ॥२५॥

अर्थ—कुल के लाभ के लिये एक को छोड़ देवे ग्राम के लाभ के लिये कुल को छोड़ दे (कतः ताल्लुक करले) सर्व साधारण के लाभ के लिये ग्राम से असहयोग करले और आत्मा के लाभ के लिये पृथ्वी भर से असहयोग करले ॥ २५ ॥

यत्सकाशान्न लाभस्यात् केवलास्युर्विपतये ।
स स्वामी दूरतस्त्याज्यो विशेषादनुजीविभिः ॥२६॥

अर्थ—जिसके द्वारा कुछ लाभ नहीं और केवल दुःख ही हो तो ऐसे से असहयोग कर लेना चाहिये और नौकरों को तो ऐसे स्वामी से विशेष रूप से Non Coperation कर लेना चाहिये ॥ २६ ॥

दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्ययालङ्कृतोपि सन् ।
मणिनालङ्कृतस्सर्पो किमसौ न भयंकरः ॥२७॥

अर्थ—विद्वान् भी हो और दुर्जन हो तथा मणि युक्त सर्प को छोड़ देना चाहिये अर्थात् इनसे असहयोग कर लेना चाहिये क्योंकि ये दोनों भय के देने वाले हैं ॥ २७ ॥

अतः ऊर्ध्वं त्रयोप्येते यथाकाल मसंस्कृताः ।
सावित्री पतिता व्रात्या भवन्त्यार्य विगर्हिताः ॥

मनु० अ० २।३६

अर्थ—नियत काल तक ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यों का जनेऊ न हो तो वे आर्य्यों से बाहर व्रात्य कर दिये जांय। अर्थात् आर्य लोग उन व्रात्य संज्ञकों से कोई व्यवहार न करें किन्तु कतः ताल्लुक करलें ॥ ३६ ॥

योऽवमन्येत ते मूले हेतुशास्त्राश्रया द्विजः ।
स साधुभिर्बहिष्कार्यो नास्तिको वेद निन्दकः ॥११॥

मनु० अ० २।११

अर्थ—जो द्विज हेतु शास्त्र के आश्रय से धर्म के मूलों का अपमान करे उस नास्तिक को श्रेष्ट लोग अलग कर दें अर्थात् उससे असहयोग करलें क्योंकि वह वेद निन्दक है ॥ ११ ॥

न तिष्टति तु यः पूर्वा नोपास्ते यस्तु पाश्चिमाम् ।
सशूद्रवद् बहिष्कार्यः सर्वस्मात् द्विज कर्मणः ॥१०३

मनु० अ० २।१०३

अर्थ—जो प्रातःकाल और सायंकाल को संध्या नहीं करता है वह शुद्र के समान द्विजों के सब कामों से अलग कर दिया जाय अर्थात् उससे सब प्रकार का असहयोग कर लिया जाय ॥ १०३ ॥

पाठक ! अब आप समझ गये होंगे कि गो भक्षक, हत्यारों व वेद निन्दिकों से तथा हिन्दुओं को काफिर समझ कर मारने वालों से कतः ताल्लुक कर लेना आपका परम धर्म है या नहीं ?

ह एक हिन्दू जाति है ये लोग हनुमान के वंश में से हैं जिस प्रकार हनुमान कला-कौशल व कूदने फांदने व उछलने कूदने में निपुण थे वैसे ही इस जाति की दशा जाननी चाहिए यह लोग प्रत्येक काम में हनुमान जी की पूजा किया करते हैं इसीलिए यह लोग हनुमान जी को अपना आदि पुरुष मानते हैं। हनुमान जी इतने शक्तिशाली थे कि समुद्र में कूद फांद कर लङ्का में तत्काल जा पहुंचे और बड़े २ विशाल वृक्षों की चोटी व बड़े बड़े पहाड़ों के शिखिरों पर तत्काल चढ़ व उतर जाते थे तथा तार की तरह रस्सी बांध कर उस पर चलने फिरने की विद्या भी जानते थे तदनुसार ये विद्या हनुमान जी ने इस ही जाति को सिखाई थी उस समय यह नट जाति आज कल को जैसी नहीं थी किन्तु इनके स्त्री पुरुष सब ही पूर्ण ब्रह्मचर्य को पालन करने वाले होते थे।

इनकी उस दशा और आज कल की दशा में पृथ्वी आकाश का सा भेद हो गया है अर्थात् पूर्व काल में जितनी यह जाति उच्च थी उतनी ही यह जाति आज कल नीच समझी जाती है कारण यह है कि यह जाति कर्म भ्रष्ट और सदाचार रहित हो गई है पहिले इनके वालक बालिकायें ब्रह्मचर्य में रह कर विद्वान् होते थे तो अब यह लोग बिलकुल गंवार हैं यहां त

कि धर्म से विरुद्ध ऐसे कई कर्म करते हैं जिनसे यह लोग सर्व साधारण की दृष्टि में बड़े घृणित देखे जाते हैं। आज कल इस जाति ने अपना पेशा उछलना, कूदना, नाचना, गाना व तरह तरह की कसरतें अपने लड़के लड़कियों से करवाके दिखवाना व अपनी युवा लड़कियों से वेश्यापन करवाना आदि मान रक्खा है ये प्रायः स्थायी रूप से कहीं नहीं रहते हैं वरन इधर उधर घूमते फिरते हुये ही ढोलक, बांस, रस्सी साथ लिये हुये कलाबाजी दिखाते फिरते हैं और इस ही के द्वारा रुपये कमाया करते हैं।

इनके लड़के लड़की जब पाँच सात वर्ष के होते हैं तब ही से इन्हें ऊंचे से ऊंचे बांस पर चढ़ना उतरना व रस्सी के ऊपर से चलने फिरने की विद्या सिखाते रहते हैं, छोटी उम्र से ही लड़के लड़कियों के हाथ पैर तोड़ते मरोड़ते रहते हैं, घी की जगह पर उन्हें खूब तेल खिलाते रहते हैं उनके बदन पर तेल की मालिश भी खूब किया करते हैं जिससे भीतर व बाहर से हड्डियों के जोड़ खुले रहें और जंग खाकर जकड़ें नहीं। वैद्यक में लिखा है कि शरीर की नसों व जोड़ों को मुलायम व लचलचे तथा पुष्ट बनाने के लिये कडुआ तेल (सरसों का तेल) खाने पीने व लगाने में बड़ा लाभदायक है, इनके जब लड़का लड़की पैदा होता है तब जच्चा को भी विशेष तेल ही खिलाया जाता है जिससे माता के दूध में तेल का शेषांश हो और वह बच्चे को बल वर्धक हो, ये लोग हनुमान जी के पूजन में भी तेल व चूरमा ही चढ़ाते हैं।

जिस प्रकार अन्य जातियों में खांप व गोत्र होते हैं तैसे इनमें टोले होते हैं और टोले की टोले में ये लोग विवाह नहीं करते हैं इनके घरों को डेरे बोलते हैं और प्रायः ये लोग अपने

डेरे झोंपड़ियों द्वारा चाहें जहां ही बना लेते हैं तथा कपड़े के डेरे भी रखते हैं व कहीं कहीं सिरकियों के झोंपड़े भी खड़े कर लेते हैं।

राजपूताना प्रान्तर्गत मा० के इतिहास में लिखा है कि:—

जालौर के राजा कानड़देव ने एक लम्बी रस्सी अपने किले से शहर के ऊपर होकर दूसरी पहाड़ी से बंधवा दी थी। और राजा ने नटनी से यह शर्त की थी कि जो तू इसके ऊपर होकर एक बार जाकर वापिस उसी रस्सी पर से जो किले में आ जावेगी तो आधा राज मैं तुझे दे दूंगा इस शर्त के अनुसार वह किले से पहाड़ी तक पहुंच गई परन्तु अहलकार लोग बड़े दुष्ट होते हैं उन्होंने देखा कि जब यह नटनी किले से पहाड़ी तक रस्सी पर चल कर सही सलामत से पहुंच गई तो वापिस भी यह जरूर ही आ जावेगी और ऐसी दशा में यह सहज में ही आधे राज्य की मालिक बन जावेगी इसलिये जब वह रस्सी पर आ रही थी रस्सी को कहीं से बीच में से कटवा दी और वह नटनी गिर गई और मर गई जिससे दुष्टों ने यह प्रसिद्ध किया कि रस्सी टूट गई जिससे नटनी मर गई इस पर राजा कानड़देव को बड़ा दुःख हुआ राजा ने उस नटनी की छतरी उसी पहाड़ी पर बनवाई और बहुत कुछ इनाम इकराम नटनी के घर वालों को देकर वहां पर बसाया जो अब तक "गुलाब का टोला" नाम से प्रसिद्ध है। इस टोले में दस पन्द्रह डेरे नटनियों के हैं जो इसी गुलाब के खानदान में से बतलाये जाते हैं।

नटों में एक भेद कोलहाटी भी है जो प्रायः गुजरात व दक्षिण में होते हैं जिन्हें डोम्बारी भी कहते हैं इनका धन्दा व उपरोक्त नटों का धन्दा दोनों का एक सा है परन्तु इनमें विशेषता एक यह है कि जब लड़की अपनी उमर पर आती है तब

उससे पूछा जाता है कि "तुम घर गृहस्थिन बनोगी अथवा वेश्या" ? इस पर यदि वह विवाह करना चाहती है तो उसके लिये विवाह का प्रबन्ध किया जाता है और जब तक विवाह न हो तब तक उसकी खूब निगाह की जाती है और यदि वह रंडियों की तरह से रहना चाहती हैं तो उसे अपनी पंचायत को जिमाना पड़ता है।

मेज़र गन्थार्फ ने लिखा है कि यह लोग सांसियों में से हैं और मल्लानूर के वंश में से हैं जो सांसमल का भाई था इनके दो भेद हैं अर्थात् डुकरकुलहाटी और पाल कुलहाटी हैं डुकर-कुलहाटी खेती आदि करते हैं और पालकुलहाटी चोरी आदि का धन्दा करते हैं।

प्राचीन काल में संस्कृत की उन्नति के समय में इस जाति का नाम नर्तक था जिनका काम नाचना, गाना व बाजा बजाना था वे ही नाचते गाते गाते व्यभिचार में प्रवृत हो गये और समय के बदलाव के साथ साथ नर्तक शब्द का बिगड़ कर नट हो गया।

इनके भेद ब्रजबासी, ग्वालबंसी, जोगीला, कबूतर, कला-बाज, महावत, राठौर, ग्वालियरी, कपूरी भाटू, बछगोती, बजनिया, चन्देल, चौहान, क्षत्रिय, जादू, कंचन, पंवार, पतु-रिया, राजपूत, सकरवार, जैसवार, गौड़, भधोरिया, बैस, तोमर आदि हैं।

उपरोक्त भेदों पर दृष्टि डालने से निश्चय होता है कि मुस-लमानी ज़ुल्मों से दुखी होकर बहुत से राजपूत वंश इधर उधर भग कर जंगलों में छिपते छिपाते नटों में आ मिले जिससे वे अपनी अपनी पुरानी खांपों के नाम से नट पुकारे जाने लगे जब इस प्रकार से राजपूतों के बहुत से भेद नटों में मिल गये

और जंगलों में नटों के साथ रहते सहते व खेती करते कराते हुओं का पता भी बादशाह को लग गया और उन्होंने उनको पकड़वा कर मुसल्मान कर डाला जो आज कल नवमुसलिम कहलाते हैं इनके लिये बड़ा भारी अन्वेषण करके लखनऊ गवर्नमेण्ट के क्यूरेटर साहब ने अपने ग्रन्थ में लिखा है कि:—

They are no minally Muhammadans, but carry out hardly any of the rules of the faith, They worship the goddess Bhitari and sayari etc.

भा० ये नाम मात्र के मुसल्मान हैं और बड़ी कठिनता से कोई इक्की दुक्की बात मुसलमानी धर्म की मानते होंगे अन्यथा ये हिन्दू के हिन्दू ही हैं जो बिठारी देवी और सयारी देवी को ही पूजते हैं इनमें सब हिन्दुआनी बातें प्रचलित हैं बहुत से तो गोमांस से बहुत ही परहेज़ करते हैं परन्तु कोई कोई अन्य मुसल्मानों के सत्संग से गोभक्षक बन गए हैं इन नौमुसलिमों में अधिकता राजपूतों की है और अगाड़ी के हिसाब से प्रकट होगा कि अकेले एक युक्त प्रदेश में बीस हजार सातसौ दो नौमुसलिम नट हैं हिन्दुओं में विचार शून्य हिन्दुओं की अधिकता है जो शुद्धि से विरोध करते हैं परन्तु गौ रक्षा करने के लिये तो सब ही सहमत हैं अतः दुःख से कहना पड़ता है कि वे गौ रक्षा करना नहीं जानते यदि वे समझ लेते कि—'चोर को क्या मारे चोर की मा को मारना चाहिये' जो जनने से रह जाय अर्थात् गौ की कुरबानी करने वालों व गाय के मारने वालों से हम क्यों लड़ें ? उचित तो यह था कि हिन्दू शास्त्रों की आज्ञानुसार गाय के खाने वालों को शुद्ध करके पालने वाले बना दिये जावें तब अपने. आप ही गौरक्षा हो जावेगी। नट जाति की लोक संख्या युक्त प्रदेश में इस प्रकार है:—

युक्त प्रदेश में हिन्दू व नौमुसलिम नटों की संख्या

नाम जिला	हिन्दू	नौमुसलिम	जोड़
देहरादून	०	२८	२८
सहारनपुर	२६६	४६८	७३४
मुज़फ़्फ़रनगर	२५१	३५४	६०५
मेरठ	१५२४	४६१	१९८६
बुलन्दशहर	१५९८	७०२	१६००
अलीगढ़	२४४	१९३	४३७
मथुरा	२२५	५७	२८३
आगरा	९१७	१९८	१११५
फ़र्रुखाबाद	१३६५	१३६	१५०१
मैनपुरी	१३५१	६२	१४१३
इटावा	१४९५	१९८	१६९३
एटा	८८१	९१	९७६
बरेली	२५०७	२५	२५३२
बिजनौर	१५१६	१५४	१६७०
बदायूँ	२४४१	३८२	१२२३
मुरादाबाद	१२१४	३०४	१५१८
शाहजहांपुर	२१४५९	४९	२१०८
पीलीभीत	११२६	३०३	१४२९
कानपुर	९२०	१०२	१०२२
फतेहपुर	३७१	४८६	८५७
बांदा	१०५	१९५	३००
हमीरपुर	८३	३५२	४३५
अलाहाबाद	१७६२	६३६	२३९८
झाँसी	५२	२८२	३३४
जालौन	३	५१८	५२१
ललितपुर	६	३२१	३२७
बनारस	४४०	२३५	६७५

मिर्ज़ापुर	७३६	३२३	१०६२
जौनपुर	५६६	७७२	१३३८
गाज़ीपुर	६१६	११००	१७१६
बलिया	३१८	१५०	४७५
गोरखपुर	१०६६	२८२६	३६२५
बस्ती	६६७	३०१३	३७१०
आज़मगढ़	५६६	१३२७	१६२३
तराई	२७१	५३	३२४
लखनऊ	५६१	३२४	८८५
उन्नाव	१०६७	६६	१७०३
रायबरेली	५६३	४५६	१०१६
सीतापुर	१७६६	४६१	२२५७
हरदोई	२३५५	१	२३५६
खेड़ी	१७७०	६१	१८३१
फैज़ाबाद	७४२	५६७	२३०६
गोंडा	११४८	१७८	१३२६
बहराइच	१२६०	३७६	१६३६
सुलतांपुर	४४१	२६२	७३३
परताबगढ़	३१	३६२	४२३
बाराबंकी	८७४	६६२६	१५०३
जोड़	४२५८०	२०७०२	६३२८२

४५-नाई

यह एक हिन्दू व मुसलमान दोनों ही प्रकार की जाति है संस्कृत में इसको नापित कहते हैं। भाषा भाषियों द्वारा कहीं ये नाई, कहीं नापित, कहीं खवास, कहीं नाई ठाकुर, कहीं नेवगी और कहीं बिर्तिया कहाते हैं।

इस जाति में कुछ दो चार मन चले नाइयों ने यह प्रसिद्ध किया कि—'नाई जाति ब्राह्मण वर्ण में हैं' यह नहीं इस ब्राह्मण बनने वाले नाई समुदाय ने भारतवर्ष की सम्पूर्ण हिन्दू संस्थाओं को शास्त्रार्थ का चेलैंज भी दे डाला था और अपनी विजय-पताका भी छाप दी थी, हमारे ग्रन्थों के लेखों को अदल बदल करके व धर्म शास्त्र के लेखों को उटल पलट करके अपने ब्राह्मणत्व पक्ष में कई छोटी छोटी पुस्तकें रच कर 'न्यायी वर्ण निर्णय' नामक एक पुस्तक भी प्रकाशित कर दी थी, पर ये सब इनके करते रहने पर भी हमने चुप रहना उचित समझा हमारी चुप का परिणाम यह हुआ कि इस समुदाय ने हमें भी शास्त्रार्थ का चेलैंज दे ही दिया अतएव हमने विवश हो कर 'नाई वर्ण मीमांसा' नामक ग्रन्थ तथा सप्तखंडी जाति निर्णय द्वितीय भाग ये दोनों ग्रन्थ * प्रकाशित किये जिनमें नाई जाति

* ये दोनों ग्रन्थ १॥) और २॥) कुल ३॥) में दोनों मेनेजर हिन्दू धर्म वर्ण व्यवस्था मंडल फुलेरा से मिल सकते हैं।

के साथ शास्त्रार्थ व बड़े बड़े प्रसिद्ध विद्वानों की सम्मतियें व अदालत का फैसला भी दिया हुआ है अतएव इस जाति का ब्राह्मणत्व अब्राह्मणत्व विवाद का बड़ा भारी रहस्य इन ग्रन्थों में मिलेगा अब यथार्थतया इस जाति का विवर्ण जो कुछ संग्रह हुआ वह इस प्रकार से हैः—

शास्त्रों में नाइयों को वर्ण व्यवस्था उत्पत्ति क्रम से वर्णशंकर शूद्रत्व बोधक है परन्तु सम्पूर्ण भारतवर्ष के नाइयों का जाति पद व जाति स्थिती एक सी भी नहीं है, इस जाति का समीपस्थ सम्बन्ध उच्च जातियों के साथ साथ रह कर उनकी सेवा सुश्रुषा करना है अन्वेषण करने से पता चलता है कि इस जाति में कई भेद हैं उनमें कई भेद तो गोत्र सूचक हैं जिन से निश्चय होता है कि इस जाति में कुछ क्षत्रियगण भी किसी समय में मिल गये थे जिन्होंने अपनी प्राण रक्षार्थ अपने क्षत्रित्व को छिपाया और वे भयभीत दशा से अपने को नाई कहने व मानने लगे और तद्वत ही उनकी प्रसिद्धि हिन्दू जगत में हो गई।

पांच हजार वर्ष नायी जाति की स्थिति आजकल की सी नहीं थी किन्तु उस समय इस देश में सम्पूर्ण जातियें संस्कृत विद्या की जानने वाली होती थी क्योंकि उस समय ऐसा राज नियम था किः—

प्रियोमेयो भवेन्मूर्खः स पुराद्बहिरस्तु मे ।
कुम्भकारोऽपि यो विद्वान्, सतिष्ठतु पुरेमम ॥

भा० अर्थात् राजा की आज्ञा थी कि यदि कोई मेरा प्यारा भी हो और वह यदि मूर्ख है तो मेरे राज्य में न रहे और यदि कोई कुम्हार भी हो और वह पढ़ा लिखा है तो वह मेरे शहर में अवश्य रहे। ऐसी राजाज्ञायें देश में प्रचलित होने के कारण

यहां के समस्त स्त्री व पुरुष पढ़े लिखे होते थे तदनुसार नाई जाति भी उस समय पढ़ी हुयी थी और आजकल की तरह यह जाति तीनों वर्णों की सेवा सुश्रुषा बड़ी ईमानदारी, सच्चाई और स्वामी भक्ति के साथ करती थी तब ही लोगों ने कन्या व बालक का विवाह भार निरन्तर इन्हीं की परीक्षा व परामर्श पर निर्भर कर रक्खा था, यह जाति भी अपनी विद्या बुद्धि के अनुसार बर व बधू का जोड़ा ठीक "बावन तोला पाव रत्ती" के अनुसार ठीक ज्यों का त्यों मिलाती थी तिससे इन्हें न्यायी कहते थे यह न्यायी शब्द आजकल बदल कर केवल नाई रह गया। उस समय की स्थिति व आजकल की इस जाति की दशा में पृथिवी आकाश का सा भेद होगया है। यह भेद केवल इस ही जाति के साथ नहीं किन्तु चारों वर्णों की स्थिति आजकल उलट पुलट है तब इसही जाति पर दोष क्यों? शास्त्र वाक्यों की कड़ाई इन्हीं के साथ क्यों? अतएव यह जाति भी अन्य वर्णों की तरह अपनी उन्नति करना चाहे तो कर सकती है। क्योंकि इस जाति में बहुतसी ऐसी ऐसी कुरीतियें हैं जिनसे लोग इनसे घृणा करते हैं उनका सुधार होना चाहिये। हमने कुरीतियें व शास्त्र विरुद्ध कई कर्म इस जाति में पाये हैं उन्हें यहां लिखकर छिद्रान्वेषणी होना उचित न जानकर इस जाति को सचेत किये देते हैं कि अपनी जाति की दशा ठीक की जाय।

नाईयों के भेद

गोला, मारू, पूरबिया, बेद, जांगड़ा, बाबर, सैनभगती, श्रीवास्तव, उमर, कन्नोजिया, भोजपुरिया, अवधिया, मगहैया

ब्याहता, चमरमुंडा, हुनरते, भेनिया, भिमरू (बनभेरू) सरवरिया, राठौड़, चम्बल, कश्यप, भारद्वाज, गौड़, बैस; अजा, तम्बोली, ढूकलिया, डाबी, डीडवाणिया, टोपसिया, टोगच्चिया, टांक, झागड़, जेपाल, जाला, छालीवाल, छापरवाल, चौहाण, चायल, गोयल, गहलोत, खीमसरा, खीची, खटोर, खरदरा, किरोड़ीवाल, कागड़, कालोया और आमेरिया।

भेद विवर्ण:—जब मैथुनी सृष्टि फैली और वर्णाश्रम धर्म स्थापित हुआ तब क्षौरादि सेवाओं के लिये एक जाति समुदाय की आवश्यकता हुयी तदनुसार एक समुदाय निश्चय हुआ उसमें का आदि पुरुष जिसने सबसे प्रथम हजामत बनाने का धन्दा लिया वह "गवल" ऋषि थे जिनके समुदाय का नाम "गोला'' प्रसिद्ध हुआ।

गवल ऋषि का भाई बनवीर था उसके वंशज 'बनवीरू' नामक नाई समुदाय प्रसिद्ध हुवा, ये नाइयों के प्राचीन भेद हैं, और प्रतिष्ठित माने जाते हैं।

मारू:—मुसल्मानी अत्याचार के समय जब क्षत्रियों पर घोर आपत्ति पड़ी तो इन लोगों ने विपत्तिवश अपने को नाइयों में मिलाकर अपनी प्राण रक्षा की थी क्योंकि उस समय मुसलमान न होने वाले क्षत्रियों के प्रति "मारो मारो''का शाही फ़रमान निकला था तबसे मारो मारो समुदाय वाले क्षत्रिय नाइयों में मिलकर "मारू मारू" कहे जाने लगे क्योंकि इनकी शाखायें व भेद उपभेद जिनमें से बहुत से ऊपर लिखे जा चुके हैं क्षत्रियों के ही हैं जैसे खीची, चायल, चौहान, टांक, तंवर, दहया, निरवाण, परिहार, पंवार, सांखला, सीसोदा, सोलंखी

भाटी, राठोड़ आदि आदि ये लोग विशेष रूप से राजपूताने में पाये जाते हैं।

इनके १४ गोत्र हैं जो राजपूत वंश प्रदर्शक हैं। १ पंवार, २ परिहार, ३ सोलंखी, ४ गहलोत, ५ देवड़ा, ६ भाटी, ७-गोयल, ८ डाबी, ९ खीची, १० चौहान, ११ पडियारिया, १२-जैपाल, १३ राठोड़ और १४ तंवर।

इनकी रीति-भांति साधारण है पर ये लोग दो बहिनें एक पुरुष को नहीं देते, इनमें बिधवा का नाता होता है, पर नाते में भी ये लोग ब्याह की तरह चार गोत टालते हैं।

राजपूताने में इनका धन्दा हज़ामत करना, मशाल दिखाना, हाथ पांव दबाना, मरण जीवन व अन्य अन्य उत्सवादि व संस्कारादि पर अपने अपने यजमानों की सेवा चाकरी करना, बर्त्तन मांजने, धोती धोने, और सगे सम्बन्धियों के यहां सब तरह के पत्र पहुंचाना व सगाई, विवाह में सब तरह की सेवा-चाकरी करना व अपनी महनत के बदले में नेग जोग लेना आदि आदि। ये लोग प्रायः उच्च वर्णों की ही हज़ामत व सेवा-चाकरी करते रहते हैं अतएव उच्चवर्णों के सत्संग से इनका रहन सहन और खान पानादि व्यवहार सुधरा हुवा है इनमें के देहातियों के सुधार होने की बड़ी आवश्यक्ता है।

बेद नाई—मारू और ये एक ही हैं भेद केवल धन्दे का है यह शब्द 'वैद्य नाई' इस शुद्ध शब्द का बिगड़ा हुआ रूप है—वैधगी करने से यह नाम पड़ा है राजपूताने में प्रायः ये लोग Surgery चीरा फाड़ी व फोड़ा फुन्सी की मरहम पट्टी करते रहते हैं। इनके यहां की स्त्रियें प्रायः Nursery धाय

विद्या में बड़ी निपुण होती हैं जहाँ कहीं देहातों में कोई स्त्री कष्टी हो जाती है तो इनके यहां की स्त्रियें बच्चा जनाने को भी बुलाई जाती है इस जाति का हमने अन्वेषण किया ये पवित्रता से रहती हुयीं सदाचारिणी जान पड़ीं। इनके गोत्रों का पता लगाया तो इनमें राठोर, पंवार, चाटी दइया, चौहान, देवड़ा, तंवर, सोलंखी, सांखला और गहलोत आदि हैं इनसे स्पष्ट निश्चय होता है कि यह जाति विपत्तिवश अपने को नाइयों में मिला कर किसी समय जीव रक्षा की थी अतएव ये लोग क्षत्रिय धर्मानुसार चल सकते हैं।

इस जाति के लोगों को राजपूताना प्रदेश मारवाड़ में 'पेटुची' कहते हैं क्योकि ये लोग नसों को (नाफ को) ठीक ठीक बिठाना व टूटी फूटी नसों को हड्डी को जोड़ने का भी काम करते रहते हैं।

जांगड़ा नाई—इस नाम की भी एक नाई जाति है ये लोग विशेष रूप से जयपुर राज्य में हैं राजपूतों का एक भेद जांघड़ा व जांगड़ा राजपूत भी हैं अतएव इतिहासों में किसी किसी विद्वान् ने लिखा है कि राजपूतों पर बिपत्ति आने पर मारू व गोला नाइयों की तरह कुछ जांघड़ व जांगड़े राजपूत भी अपने को नाई कह कर अपनी प्राण रक्षा की थी अतएव इनका राजपूत होना सम्भव है।

बाबर नाई—गे लोग राजपूताने के मरुस्थल देश में व जहां रेल का अभाव है तहाँ सर्वत्र हैं ये लोगभी वैद्य नाइयोंकी तरह जखम पट्टी का इलाज करते हैं तथा अस्पर्शयनी जातियों की हजामत भी करते सुने गये हैं।

सैन भगती—नाइयों में सेनभगत एक भक्त नाई हुआ है जिसकी भक्ति पर भगवानने प्रसन्न होकर उन्हें बरदान दिया था, इस भगत का आदि नाम श्यामा था, यह भगत अपने भक्ति प्रभाव से लोगों को परचे देता था, दारू, मांस, जीवहत्या परस्त्रीगमन, छलछिद्र आदि से बिलकुल दूर था। उसका वंश 'सेन भगती' कहाया, इसके मरणान्तर पश्चात् इसकी मानता नाइयों में बढ़ी यहां तक प्रायः नाई लोग सेन भगत का मन्दिर बनाते और काम पड़ने पर इनके नाम की शपथ लेते हैं। एक दोहा प्रसिद्ध है किः—

सेन भगत का सांसा मेटा आप भये हर नाई।

अर्थात् सेन भगत नित्य अपने यजमान राजा की हजामत बनाने जाया करता था पर एक दिन वह भक्ति में ऐसा लवलीन हुआ कि राजा की हजामत करने जानेकी सुध न रही तब भगवान अपने भक्त की रक्षा करने को खुद जाकर राजा की हजामत कर आये तब से उपरोक्त दोहा प्रसिद्ध हुआ।

पूरबिया— पूर्व से राठोर राजाओं के साथ राजपूताने में आये इससे पूरबिये कहाए इनकी शाखायें सिंघल, तंवर, पंवार, चौहान, भाटी, टाँक; गहलोत, परिहार और सोलंखी आदि हैं ये सेनभगत को पूजते और नाथों से गुरुदीक्षा लेते हैं पर देवी देवताओं का पूजन भी करते हैं। आचार विचार से श्रेष्ठ है।

चमरमुंडा—यह भी नाइयों का एक भेद है अर्थात् चमरादि जातियों की हजामत व सेवा सुश्रुषा करने से नाइयों का एक समुदाय 'चमरमुंडा' कहाया।

बाकी कुछ भेद तो स्पष्ट राजपूतों के हैं बाकी कुछ भेद देश भेद व निवासादि के कारण से पड़ गए हैं।

नाइयों के भेद उपभेदों का अन्वेषण करने से पता चलता है कि इस जाति में कुछ थोड़े से तो क्षत्रिय वर्णस्थ नाई हैं और विशेष रूप से वर्णशंकर शूद्र वर्ण में हैं क्योंकि मनुष्य गणना कमिश्नर लिखते हैं कि:—

The complete returns of the last census Show 888 Sub divisions of the Hindu [Vais] and 197 of the Musalman branch of the tribe.

भा० गत मनुष्य गणना के नकशे में हिन्दू नाइयों के ८८८ भेद तथा मुसलमान नाइयों के (जो हिन्दू से ही मुसलमान बने हैं) उनके १६७ भेदों का पता लगता है अतएव इन सब उपभेदों को लिख कर उनका विवरण लिखा जाता तो केवल नाइयों का ही एक बृहत् ग्रन्थ हो जाता अतएव इस ग्रन्थ में विशेष रूप से क्षत्रिय नाइयों का विवरण ही समझना चाहिए

मिश्रित विवरण

नाई जाति की कार्य्य प्रणाली पर लोगों का कहना है कि 'नाई, दाई, वैद्य, कसाई, इनका सूतक कभी न जाई' अर्थ तो सीधा ही कि नाई, दाई, वैद्य और कसाई का सूतक कभी नहीं जाता है क्योंकि नाई अपने यजमान के यहां जन्म मरण स्यावड़ (सौर) और सूतकमें कई अपवित्रता युक्त सेवायें करते रहते हैं अतएव ये सदा अपवित्र व सूतकी रहते हैं पर विचारणीययह है कि 'वैद्य' भी इस दोहे में आया है और उसका काम भी अपवित्रता का। है जैसे मृतक को छूना, चीरा फाड़ी करना

अस्पर्शनीय रोगों को छूकर उसकी चिकित्सा करना तथा रोगी के मल मूत्रादि की जांच आदि आदि कर्मों से वैद्य भी सदा अपवित्र रहता है पर लोग उसे शूद्र व अपवित्र नहीं मानते तब नाई भी सदा अपवित्र नहीं माना जा सकता, बल्कि नीच से नीच काम करके स्नानादि से वह शुद्ध हो सकता है।

हमारी यात्रा के अन्वेषण में हमें पता लगा है कि नाई जाति में कई ऐसी कुरीतियें हैं जिनके कारण लोग इनसे कई बातों का परहेज भी करते हैं अतएव सुधारार्थ उनका वर्णन किसी अन्य समय करेंगे।

नौमुसलिम नाई भी भारतवर्ष में बहुत हैं जिन्हें कहीं नायता, कहीं खलीफ़ा, कहीं उस्ताद और कहीं हज्जाम कहाते हैं इनकी रीति भांति बोल चाल हिन्दुओं से मिलती हुई है।

इतिहास सुपरिन्टेन्डेन्ट ने लिखा है कि "इनके गोत्र भी मारू नाइयों जैसे राजपूतों के नाम पर हैं, रिवाज भी सब उन्हीं के से हैं, बोली भी उन्हीं के माफिक बोलते"।

देखो मा० से० रि० पृ० ५१६

कुछ हज्जाम लोग जर्राही का काम करते हैं यानी चीरा फाड़ी व फोड़ा फुन्सियों का इलाज व मरहम पट्टी करते रहते हैं जहां अस्पताल नहीं होते हैं तहां ये लोग फुड़िया फुन्सियों की चीरा फाड़ी व इलाज खूब करते रहते हैं।

युक्तप्रदेश के नाइयों की लोक संख्या

नाम ज़िला	हिन्दू	नौमुसलिम	जोड़
देहरादून	९९१	२७२	१२६३
सहारनपुर	८०५७	११०८८	१९१४५
मुजफ्फरनगर	८६६२	५५६७	१४२२९
मेरठ	२१२८७०	८७१०	२९९९७
बुलन्दशहर	१५०८९	३५७०	१८६५९
अलीगढ़	२०९६०	८९३	२१८५३
मथुरा	१४००९	२८६	१४२९५
आगरा	२१०५१	२८१	२१३३२
फर्रुख़ाबाद	१५७८५	६१६	१६४०१
मैनपुरी	१५०८३	७७	१५१६०
इटावा	१५३१७	९४	१५४११
एटा	१३१४०	८१३	१३९५३
बरेली	१२२४४	४०२६	१८४७०
बिजनौर	१८७३७	१०५८५	१८३२२
बदायूं	१३१५४	३१९६	१६३५०
मुरादाबाद	१००५०	१२७२९	२२७७९
शाहजहांपुर	१४८९४	२८८३	१७७७७
पीलीभीत	७४३०	१४११	८८४१
कानपुर	२३७१५	३२८	२४०४३
फतेपुर	१५९२२	१७५४	१७६७६
बांदा	१००७८	१८३	१०२६१
हमीरपुर	४५१४	१०८	४६२२
इलाहाबाद	२७२७७	३७९३	३१०७०
झांसी	७८१०	२५	७८३५
जालौन	७९४०	१६	७९५६
ललितपुर	८०९१	०	८३९१
बनारस	१०९०४	३५१३	१४४१७

मिरज़ापुर	१६५३८	५३९७	१८९३५
जौनपुर	१५११२	६४०२	२१५१४
गाज़ीपुर	९१०३	४९०५	१४००८
बलिया	१२१२७	१८७१	१३९९८
गोरखपुर	४२११८	८६६५	५०७८३
बस्ती	२२१००	१३००२	३५१०२
आज़मगढ़	१३४८८	९१७३	२२६६१
कमायू	११७	०	११७
तराई	१३२५	२३१४	३६३९
लखनऊ	११४१४	३२१७	१४६३१
उन्नाव	२१६४१	५८५	२२२२६
रायबरेली	१९७७५	१८५३	२१६२८
सीतापुर	११९५३	११२८०	२३२३३
हरदोई	१७३१९	१४१९	१८७३८
खेरा	१६७१४	५५५	१७२६९
फैज़ाबाद	१५८०५	४७७७	२०५८२
गोंड़ा	१७६८६	१०९५३	२८६३९
बहराइच	११८१९	९६०१	२१४२०
सुलतानपुर	१६३००	४५२५	२०८२५
परताबगढ़	१३९३५	२४७८	१६४१३
बाराबंकी	१३७२९	१०७११	२४४४०
जोड़	६६८०८७	१९३९३७	८६२०२४

जोधपुर राज्य में हिन्दू और मुसलमान दानों हो तरह के नाई सब ३४४१८ हैं सन १९११ की मनुष्य गणना के अनुसार राजपूताने में नाइयों की संख्या १५९६०८ है और अजमेर मेर-वाड़ में ६५०३ हैं और सन् १८९१ के अनुसार युक्त प्रदेश में हिन्दू नाई ६६८०८७थे और सन् १९०१ के अनुसार ५७०२३९हैं।

भारत के एक अकेले युक्त प्रदेश में नौमुसलिम नाइयों की संख्या एक लाख तिरानवे हजार नौ सौ सैंतीस है सब सम्पूर्ण भारत में कितने होंगे यह पाठक स्वयं विचार करें, दुख इस बात का है कि हिन्दू धर्म के नेता व दानी लोग इन गोभक्तकों को गोरक्षक बनाने में शिथिलता दिखाते हैं यह भारत के अन-अहो भाग्य की बार्ता है देखें भारत के सुदिन कब आते हैं ?

४७—नायक

यह एक फौजों के अफसरों का पद है, जाति नहीं ये लोग व अन्य लोग भ्रम वश इसे एक जाति समझने लगे पर यह भूल है पहिले भी फौजों में नायक हुआ करते थे और अब भी पलटनों में नायक होते हैं अतः एक पद के कारण से यह नाम पड़ गया है केवल भिन्नता इतनी है कि मुसलमानी राज्य के समय नायक एक बड़ी भारी फौज का मालिक होता था तो आजकल नायक कुछ ही सिपाहियों का अफसर माना जाता है।

मुसलमानी राज्य के समय जब हिन्दू राजाओंके साथ बड़े बड़े युद्ध होते थे तब अनेकों हिन्दू राजाओं को भी एक बड़ी भारी सेना रखनी पड़ती थी जिसके अलग अलग कई क्षत्रिय गण नायक हुआ करते थे तब से उनका वंश नायक ही कहायो करता था ऐसी परम्परा आजकल भी चल रही है कि किसी खानदान में कोई दिवान हो गया तो उसका कुल भर दिवान ही कहाया करता है तैसे ही क्षत्रिय जाति की दशा जानना।

बादशाह अलाउद्दीन तथा शाहबुद्दीन गौरी के समय तक यह क्षत्रिय समुदाय बड़ा प्रभावशाली था पर ज्यों ज्यों हिन्दू राजाओं की फौजें कटने मरने व मुसलमान की जानेके कारण घटने लगीं त्यों त्यों इन नायक पदस्थ क्षत्रियों के वंशजों की दशा भी चल विचल होकर अति दीनावस्था को प्राप्त हो गयी और यह लोग भी अपने कालक्षेप करने को कहीं के कहीं जा बसे और खेती आदि करके प्राण रक्षा करने लगे और अपनी पूर्व स्थिति को ऐसे भूले कि कहीं २ तो इनमें क्षत्रियत्व की गंध तक न रही, इस ही से ये लोग इनके साथ कहीं २ घृणा युक्त व्यवहार भी करते हैं यह उचित नहीं।

हिं० पंच ता० १५-१-२७ में लिखा है कि 'ये लोग वस्तुतः क्षत्रिय हैं, वीरोचित कार्य्य भी करते हैं बड़ी पवित्रता से रहते हैं आदि आदि।

यह जाति राजपूताने में गुजरत में व कुमाऊं प्रान्त में विशेष है इनमें का एक बड़ा समुदाय बादशाहों द्वारा मुसलमान बनाया गया।

इस जाति की पहिले प्रतिष्ठा विशेष थी, गढ़ जोधपुर की पोलों (सदर दरवाजों) की चाबियें इन्हीं लोगों के पास रहती थीं और प्रायः सदर दरवाजों का खोलना बन्द करना इन्हीं के हाथ में था अतएव ये विश्वास योग्य माने जाते थे और राजाओं का बहुत कुछ दारमदार किले की स्थिती पर ही रहता है अतएव उस वक्त प्रतिष्ठा सूचक पद इस जाति को नायक का मिला था जिसका अर्थ सरदार के होते हैं इस तरह सरकारी नौकरियों में रहने से इन लोगों की एक जाति नायक बन गई।

इनकी खांप व भेद उपभेदों को देखने से पता लगता है कि इनमें चौहान, राठोर, सीसोदिया, जोया, बहलोम, खिलजी, गोरी और काजी आदि आदि हैं परन्तु सरकारी नौकरियों के कारण ये सब नायक कहे जाकर प्रसिद्ध हैं।

इनकी रीति भांति चाल ढाल को देखने से ये पक्के क्षत्रिय जचते हैं परन्तु बादशाही समय में जबर्दस्ती मुसल्मान बनाये गये तब से नायक कहे जाने लगे। इनमें हिन्दूपन इस प्रकार से अब तक विद्यमान हैं।

१—विवाह शादी ये लोग नायक मुसल्मानों के साथ करते हैं अब तक परदेसी किसी दूसरे मुसल्मान के साथ नहीं करते।

२—निकाह कर लेने के पीछे ब्राह्मण को बुला कर हथलेवा करवाते हैं।

३—मुसल्मानों की तरह ये लोग अपनी स्त्री को तलाक़ (त्याग) नहीं देते हैं।

४—विधवा स्त्री का नाता नहीं करते, यह कुछ शताब्दियों से समयानुकुल चली हुई प्रथा का अनुसरण है।

५—पिता के माल असबाब में बेटी का कोई हक नहीं।

६—क्षत्रियाणियों की तरह से इनमें परदा सिस्टम है।

७—ये लोग क्षत्रियों की तरह गंगा पूजन करते हैं जो भादवा (भाद्रपद) के महीने में हुआ करता है।

चौहाण नामक मुसलमान राजपूताने में फूलानी भी कहाते हैं जोधपुर रियासत में इनका बुजुर्ग ठाकुर फूलखां बड़ा आदमी था जिसने जोधपुर में अपने नाम पर फूलेलाव नामक तलाव खुदवाया और गांगेलाव नामक तलाब पर एक पौल (सदर दर्वाजा) बनाया जा अब तक नायकों की पौल कहलाती है।

ये लोग मारवाड़ (जोधपुर) में विशेष हैं पहिले इनका निवास फूलेलाव और गांगेलाव इन दोनों तलावों में निवास करते थे पर अब इन लो ों ने अपना निव स गोल में कर लिया है।

फूलखां चौहान के वंश में एक ख्वाजबक्स नायक हुआ है जिसने मारवाड़ाधिपति महाराज अभयसिंह जी का कब्जा अहमदाबाद में करवाया, अर्थात् उस समय गुजरात में नवाब का राज्य था जो अहमदाबाद में रहते थे, महाराज अभयसिंह जी का नवाब के साथ युद्ध हुआ और नवाब हार कर भाग गया, पर शहर में कोतवाल कपूर भंडसाली कबजा किये हुए था और महाराज का कबजा नहीं होने पाता था अतएव ख्वाजबक्स नायक ने अपनी जान को हथेली पर रख कर शाही कासिद का भेष बना कर दरवाजे पर गया और दरवानों से कहा कि मैं दिल्ली से कपूर भंडसाली के नाम शाही हुक्म लाया हूं मुझे अन्दर जाने दो इस पर दरवानों ने उसे अं

ल लिया तब वह सीधा कोतवाली में पहुंचा और हुक्म के बहाने से कपूर भंडसाली से प्राइवेट मुलाक़ात की और झट-पट उसे छुरी से घायल करके मार डाला और तत्काल कोट की दिवाल पर चढ़ कर महाराज को फौजों को इशारा करके आप दिवाल पर से पीछे की ओर घास की बागर पर कूद पड़ा जिससे उसके हाथ पैरों में चोट आई।

इस तरह कोतवाल के मारे जाने से महाराज ने सहज में ही अहमदाबाद शहर में दखल कर लिया। इस सेवा के उप-लक्ष्य में महाराज ने ख़्वाजबक्स को मारवाड़ में और गुजरात के थिरात में जागीरें इनाम दीं जिन में से ख़्वाजबक्स ने मार-वाड़ की जागीर अपने लिये रख कर थिराद की जागीर पर अपने भाई को भेज दिया जिस के साथ बहुत से स्वजाति जन वहां गये जो बढ़ते बढ़ते अब गुजरात में एक बड़ी संख्या में नायक जाति हैं ये जागीरें भी इन के पास अब तक हैं, वहां भी इन की रीति भांति आचार विचार हिन्दुओं के से ही हैं परन्तु दुःख के साथ कहना पड़ता है कि हम लोगों ने अपने अज्ञान से हिन्दू धर्म को पानी सा पतला और अकौवा (आक) की रूई के ताँत से हलका बना दिया जो पानी के छींटे लगते ही घुल जाय व हवा के लगते ही उड़ कर छूमन्तर होजाय हायरे! हिन्दू सन्तान तेरा भविष्य क्या होगा?

यह एक प्रसिद्ध राजवंश है इस ही वंश का प्राचीनतम नाम प्रमारे भी है, यह एक अग्नि-वंश की शाखा है, अग्निवंशियों में इस वंश ने संसार में बड़ी ख्याति प्राप्त की है, सरकारी अफसरों ने भी लिखा है:—A noted sept of Rajputs, who in name represent the ancient Pramar race. राजपूतों का यह प्रसिद्ध वंश है जो प्राचीनतम 'प्रमार वंश का द्योतक है कर्नल टांड ने लिखा है कि The world is the pramars is an ancient saying. 'संसार ही प्रमारों का है यह एक प्राचीन कहावत है अर्थात् पृथिवी पर सर्वत्र एक समय प्रमारों का ही राज्य था, सर्वत्र इन्हीं की दुन्दुभी बजती थी इस ही वंश में बड़े बड़े महा प्रतापी राजा भोज व विक्रमादित्य सरीखे अनेकों हुये हैं इस वंश का प्रभुत्व व धर्मज्ञता के कारण इन का नाम सदा अचल रहेगा क्यों कि महाराज विक्रमादित्य का संवत् चल रहा है, लाखों हिन्दू संकल्प पढ़ते समय नित्य इस पवित्र नाम का स्मरण करते हैं, इस वंश की महिमा में राजपूताना में ऐसा प्रसिद्ध है कि:—

पृथिवी बड़ा प्रमार पृथिवी परमारांतणी ।
एक उजैणी धार दूजो आबू बैठणो ॥

भावार्थः—याने पृथिवी भरमें पंवार बड़े हैं क्योंकि ये सब के राजराज्येश्वर महाराज हैं इस लिये पृथिवी भी इन की है जिन का मुख्य स्थान उज्जैन व आबू है।

एतिहासज्ञों ने लिखा है कि इस वंश का प्रमार नाम पड़ने का कारण यह है कि यह अग्निकुल राजपूतों की एक शाखा है जिन्हों ने सब से मारकाट करके अपना राज्य स्थापित किया, क्यों कि 'प्र' का अर्थ प्रथम और 'मार' का अर्थ काटमार अतएव अग्निकुल की सब से प्रथम शाखा जिस ने युद्ध कर के राज्य स्थापित किया वे प्रमार कहाये।

जिस समय प्रमारों का सर्वत्र राज्य चमचमा रहा था उस समय की कहावत सिविलियन अफसरों ने लिखी है किः—

जहां पवार तहाँ धार है, और धार जहाँ पंवार।
धार बिना पवार नहीं और नहिं पवार बिन धार

भावार्थः—धार कहते हैं किसी वस्तु के अन्तिम बारीक छोर को अतएव कवि का भावार्थ ऐसा है कि जहां पवार हैं तहां ही पृथिवी का अन्त है और जहां पृथिवी का अन्त है तहां ही पंवार हैं, जहां पृथिवी का अन्त नहीं है तहां पंवार का भी अन्त नहीं है और जहां पंवार नहीं है तहां पृथिवी का अन्त भी नहीं है अर्थात् जिस प्रकार सर्वत्र चलते चलते पृथिवी का छोर नहीं है तैसे ही सर्वत्र पंवारों की दशा जानना।

जब इस वंश का इतना प्रसार था तब राजपूताना धरणी-बराह नामक पंवार के आधीन था जिस के नौ भाई थे अतएव उस ने अपने राज्य को नौ भागों में बांट कर अपने नवों भाइयों में ऐसा निपटारा कर दिया:—

मंडोवर सावंत हुए । अजमेर सिंधसुं ॥
गढ़पुगल गजमल्ल हुआ । लुद्रवे भानसु ॥
आल पाल अर्बुद, भोजराजा जालंधर ॥
जोगराज धरधाट हुए, हंसू पारक्कर ॥
नवकोट किराड़ू, संजुगत थिर पंवारा थरपिया ॥
धरणी बराह धर भाइयां, कोट बांट जुअ २ किया ॥

अर्थ—राजा धरणीबराह ने पंवारों की जमीन में नौ कोट थाप कर अर्थात् अपने राज्य के 9 Divisions नौ भाग कर के अपने भाइयों में बांट दिये अर्थात् मंडोर का इलाका सांवतसिंह को, २ अजमेर का इलाका सिंधु को, ३ पूंगल का इलाका गजमल को, ४ लुद्रवा का इलाका भानसिंह को, ५ आबू का इलाका आलपाल को, ६ जालोर का इलाका भोजराज को, ७ पारकर का इलाका हंसराज को ८ जोगराज का इलाका धर-धारसिंह को और धरणीबराहने कोट किराड़ अपने पास रखलिया

धरणी बराह संगठन शक्ति के महत्व को नहीं जानते थे अतएव अपने भाइयों को अलग अलग करके सब शक्ति हीन होगये तब भाटी चौहाण पड़िहार आदिकों की चढ़ बनी और एक एक से इन लोगों ने धीरे धीरे राज्य छीन लिये। तब से

पंवार लोग रव्यत की तरह रह कर राजपूताने में निर्वाह कर रहे हैं।

अग्निकुल की शाखा से उत्पन्न हुये परिहार लोग बहुत समय तक पंवार लोगों के आधीन में सामन्त की तरह से रहे थे, कार्तवीर्यार्जुन की प्राचीन माहिष्मती नगरी में पंवार लोग सब से पहिले प्रतिष्ठा को प्राप्त हुए इस वंश का राज्य महेश्व, (माहिष्मती) धारा, मांडू, उज्जयिनी, चन्द्रभागा, चित्तौड़, आबू, चन्द्रावती, मऊ, मैदान पंवारवती, अमरकोट, भिखार लोदुरुआ और पाटन आदि स्थानों में इस वंश का राज्य था संवत् ७७० (सन् ७१४) के आरम्भ में राम नामक एक राजा इस कुल में हुआ था जिसने तैलंग देश में एक स्वतंत्र राज्य स्थापित किया, चन्द्रभट कवि ने लिखा है कि राम पंवार चक्रवर्ती राजा था इसी वंश में राजा भोज महावली, महादानी और विद्वान राजा हुआ है उस के समय में संस्कृत विद्या की अकथनीय उन्नति थी अर्थात् उस समय यह नियम था किः—

प्रियो मेयो भवेन्मूर्खः सपुराद्बहिरस्तु मे।
कुम्भकरोऽपि यो विद्वान् स तिष्ठतु पुरेमम ॥

भा०—अर्थात् मेरा प्रिय अर्थात् कुटुम्बीजन आदि भी जो मूर्ख हो तो वह मेरे राज्य में न रहे और जो कुम्हार विद्वान् हो तो वह मेरे राज्य में रह सकता है। राजा भोज ऐसा दानी था कि एक एक नये श्लोक के लिये लाख लाख रुपये दान में दे देता था उस समय में यहां के स्त्री पुरुष, सब ही छोटी बड़ी जाति के बाल वृद्ध मनुष्य मात्र संस्कृत बोलते थे।

महाराज विक्रमादित्य जो उज्जैन का बड़ा प्रतापी राजा था जिसका सम्वत् आजकल १९८३ चल रहा है यह भी इसी पंवार जाति में उत्पन्न हुआ था। पंवार कुल की मौर्य शाखा में चन्द्रगुप्त एक चक्रवर्ती राजा हुआ है, समय के परिवर्तन के साथ साथ इस मौर्य शाखा के लोग आजल मुराव कहे जा रहे हैं। किसी किसी विद्वान् ने इस ही वंश को मोरी वंश भी लिखा है।

किसी समय इस मुरावा जाति का विपुल गौरव सम्पूर्ण राजाओं पर अच्छादित था अभाग्य से आज इन पर पहिले प्रताप और गौरव का साधारण सा चिन्ह भी नहीं रहा है। भारतवर्ष के स्थान स्थान पर जो इनकी कीर्ति बिराजमान थी काल के कठोरतर प्रहार से आज वह सब चूर चूर हो गई आज ये जाति एक मात्र खेती कर के अपना पेट भर रही है और जब यह विचारी जाति अपनी पूर्व स्थिती के अनुसार जनेऊ आदि पहरने व संध्यावंधन आदि नित्य नैमत्तिक शुभकर्म करने को श्रीगणेश करने लगती है जब ही युक्त प्रदेश और विहार के कतिपय मूढ़ मन्दमति ठाकुर व बम्मन लट्ठा पांड़े लोग अपने मनों में शर्मा कर इन विचारों के जनेऊ तोड़ डालते हैं और फिर फौजदारी मुकदमे अदालत में चल पड़ने पर मुआफी मांगते फिरते हैं।

चौहानों का राज्य हुआ जो १६७ वर्ष तक राज्य करते रहे। कर्नल टाड ने लिखा है:—

The famous Moryas were the Mori, a branch of the Pramar clan, which occupied Chittor in the eighth century.

आ०—प्रसिद्ध मौर्य जो मोरी कहाते थे जो प्रमार वंश की एक शाखा है जो आठवीं शताब्दी में चित्तौड़ की अधिकारणी थी राजपूताने में इनके गोत्र डेलट, कालट, डोडिग खयात और पोलरिया है जब उज्जैन में बादशाह शाहबुद्दीन ग़ोरी की चढ़ाई हुई तब बड़ा घमसान युद्ध हुआ तब राजपूत जाति में संगठन की कमी थी इस कारण ये लोग हार कर अपने अगवा मित्रसैन के साथ उज्जैन छोड़ कर युक्त प्रदेश में आ बसे और जो राजपूत हज़ारों की संख्याओं में कैद कर लिये गये। बादशाह शहाबुद्दीन गोरी आज कल के हिन्दुओं की तरह से विचार-शून्य भोंदू नहीं था वरन् संगठन शक्ति के महत्व को जानता था अतएव कैद किये हुये हज़ारों प्रमार राजपूतों को यह शाही फरमान सुनाया कि—"जो दीन इस-लाम की शरण में आवेगा उसकी जान बक्सी जावेगी वरना तुम सब हलाल कर दिये जाओगे" उस समय विपत्ति वश सैकड़ों ही राजपूत दो घण्टे में क़त्ल कर दिये गये और हज़ारों ही मुसलमान बना लिये गये और ये लोग इस तरह मुसलमान बन कर कैदखाने से छूट कर जहां जिसको जगह मिली तहांही जाकर जो धन्दा मिला उसीसे निर्वाह करने लगे उस समय देश में सर्वत्र लूटमार खसौट और बे चैनी फैली हुई थी और आजकल की तरह से प्रजा व राजा लोग सुव्यव-स्थित दशा में नहीं थे अतएव इन नवमुसलिमों की शुद्धि कर लेना तो हजारों कोस दूर था मुंह से शुद्धि का शब्द निकालने वालों की जुबान हलक़ से निकाली जाती थी ऐसी दशा में उस समय के हिन्दू लोग भी जी हुज़ूर थे जो यह कहा करते थे कि "जो मुसलमान हो गया वह अब हिन्दू किसी भी तरह नहीं हो

सकता। उस समय के पंडित भी अपनी हलक में से जीभ निकाली जाने के डर से कह दिया करते थे कि—मुसलमान हिन्दू नहीं हो सकता ये ही दोनों बातें उस समय तो देश काल के अनुकूल थीं। परन्तु यथार्थ में हिन्दू धर्म शास्त्रों में शुद्धि प्रकर्ण बहुत विस्तृत रूप से भरा है तिन्हीं के आधारानुसार समझदार हिन्दू विद्वान् शुद्धि करने लगे हैं। फिर भी ना समझ हिन्दू व देश के बुड्ढे खुड्ढे लोग कहा करते हैं कि यह नई रीति कैसी? क्योंकि हमने तो कभी भी मुसलमानों को हिन्दू होते नहीं देखा, यह इन भोले भाले अज्ञ हिन्दुओं का कहना कुछ अंश में ठीक है अर्थात् उपरोक्त अत्याचार के कारण अनुमान एक हजार वर्ष पूर्व से शुद्धियें कोई नही कर सकता था इसलिये हमारे वृद्ध सज्जनों ने अपनी दस बीस पीढ़ियों से शुद्धि होती नहीं देखी और न सुनी अतएव उन्हें यह कर्तव्य नवीन प्रतीत होना स्वाभाविक ही है।

इन पंवार नौमुसलियों की लोक सख्या युक्त पदेश में १५८०३ पन्द्रह हजार आठ सौ तीन है जिन में कहीं कहीं के पंवार नौमुसलिमों मे तो लेश-मात्र भी मुसलमानी पन नहीं है और कहीं कहीं मुसल्मानीपन थोड़ा और हिन्दुआनीपन विशेष है पर ये सब शुद्धि किये जाने योग्य हैं, यदि हिन्दू लोग मुसलमान बादशाहों से संगठन का सबक सीख लें तो सच्ची गोरक्षा हो सकती है अन्यथा नहीं।

युक्त प्रदेश में पंवार राजपूतों की लोक संख्या

नाम ज़िला	हिन्दू पंवार	नौमुसलिमपंवार	जोड़
देहरादून	२२६५	...	२२६५
सहारनपुर	२५१	३१३	५६४
मुजफ्फरनगर	१३६	४८६	६२२
मेरठ	१७९४	...	१७९४
बुलन्दशहर	१५१३	५५३	२०६६
अलीगढ़	८१७	...	८१७
मथुरा	६८३	२६८६	३३६९
आगरा	७३६६	१२	७३७८
फरुख़ाबाद	२९९४	८	३००२
मैनपुरी	८१९	०	८१९
इटावा	५०४	०	५०४
एटा	६२४	५	६२९
बरेली	२४३	०	२४३
बिजनौर	२३३	०	२३३
बदायूं	७७८	१२३	९०१
मुरादाबाद	२०३५	०	२०३५
शाहजहांपुर	४६९९	०	४६९९
पीलीभींत	३१०	०	३१०
कानपुर	४६०९	१४१	४३५०
फतेहपुर	१२६३	०	१२६३
बांदा	२२९९	२८	२३२७
हमीरपुर	१२४०	१०	१२५०
इलाहाबाद	५१७	०	५१७
झांसी	१०४५	५	१०५०

झालोन	६७१	०	६७१
ललितपुर	३२४१	१	३२४२
बनारस	४६५	८८	५५३
मिरज़ापुर	१२६	०	१२६
जौनपुर	४१०५	७	४११२
गाज़ीपुर	६६१	७८३	१४७४
बलिया	२२४८	१९१	२४३९
गोरखपुर	३२६७	१२५	३३९२
बस्ती	१३७०	७३६६	८७३६
आजमगढ़	१४६५	१४१७	२८८२
तराई	३२१४	०	३२१४
लखनऊ	२६६४	१	२६६५
उन्नाव	२१४०	९५	२२३५
रायबरेली	१०९७	६१	११५८
सीतापुर,	२८४५	५८७	३४३२
हरदोई	६१४४	०	६१४३
खेड़ी	९	३४८	३५७
फैज़ाबाद	३२६५	३४३	३६०८
गोंडा	३३६	०	३३६
बहराइच	९१	२५	११६
सुलतांपुर	७०५	७३	७७८
परतापगढ़	१९०	०	१९०
बारावंकी	११०८	२२	११३०
जोड़	८०५६३	१५८०३	९६३६६

युक्त प्रदेश के पंवार राजपूतों के विषय में इतिहास वेत्ताओं ने लिखा है कि फर्रुखाबाद के पंवार राजा लिधपाल के वंश में से हैं जो खोड़ के राजा के कृपा पात्र होने से परगना अमृत-पुर में रहते थे खोड़ के राजा साहब का दीवान एक परदित-

राम कायस्थ थे उनसे सिधपालसिंह के लड़के लड़े जिस से वे वहां से निकाल दिये गए। युक्त प्रदेश की मनुष्य गणना रिपोर्ट में लिखा है कि बुलन्दशहर के प्रमार (पंवार) बादशाह शाहबुद्दीन गौरी के जुल्मों से दुखी होकर उज्जैन और नागपुर से भग कर आकर बसे थे। ये उन्नाव के जिले में पंवार लोगों के इलियट क्रानिकल में लिखा है कि इनके दो भेद हैं। परगने मोरावों में जो पंवार है उनके पूर्वज सरदार नरहरसिंह बादशाह अकबर के साथ चित्तौड़ की चढ़ाई में गये थे जिसके बदले में बादशाह प्रसन्न होकर इन्हें तीस गांव इनाम में दिये थे जिन गांवों का नाम सरदार नरहरीसिंह जी ने अपने नाम की यादगार में "नरहई चक"। रक्खा था। इसके विषय में लिखा है कि—These Punwars must have been once a powerfull cian यानी यह पंवार लोग बड़े ही शक्तिशाली थे परन्तु बैस राजपूतों से झगड़ा हो जाने के कारण नष्ट भ्रष्ट से हो गये। इस्टर्न इण्डिया नामक ग्रन्थ के पृष्ठ ४६५ में लिखा है कि सीतापुर में पंवार राजपूत बादशाह अकबर के समय में बड़े दुखी होकर निकल भाग कर आये थे गाजीपुर में जो पंवार हैं वे उज्जैन से भाग कर झांसी में आये थे और झांसी से गाजीपुर में आ बसे यह लोग उज्जैनी पंवार कहलाते हैं इस वंश के अधवा राजा साहब डुमराव हैं जो विक्रमादित्य से छयासी पीढ़ी में हैं। सातवीं शताब्दी के आरम्भ में शिलादित्य राजा जिसने गुप्त वंशी राजाओं को परास्त किया था और मालवा में अपना राज्य स्थापित किया था वह भी इसी वंश में से था। झांसी में जो पंवार हैं वे भी किसी समय उच्चतम शक्ति वाले समझे जाते थे यहाँ तक कि यह लोग बुंदेले राज-

पूतों की लड़कियों को विवाहते थे। और अपने बल प्रताप से लूट खसोट द्वारा खूब दुन्द मचाया करते थे लखनऊ के जिले में जो पंवार हैं यह मोहना परगने के परितिष्ठ माने जाते हैं जिनका कि सम्बन्ध किसी समय देहली कोर्ट से था इन लोगों पर आपत्तियें पड़ने से यह लोग मुसलमान कर लिये गये और बहुत से जो बचे ,उन में भी कुछ मुसलमानी रीतियें घुस गईं।

पंवारों की प्रसिद्ध शाखायें

१ मायल, २ डोड, ३ गल, ४ सोढा, ५ सांखला, ६ ऊमट, ७ कालमा, ८ और काबा।

ये सब शाखा वाले लोग किसी समय राज्याधिकारी थे अर्थात् मामलों का राज्य सिवाने में, डोडों का राज्य डोंडवाने में, गल का राज्य पालनपुर में, सोढों का राज्य थर पारक में था. साँखलों का राज्य जांलल् में, ऊमट का राज्य भीनमाल में, कालमा का राज्य सांचोर में और काबा का राज्य रामसींण में था।

इस वंश का राज्य के मुख्य मुख्य अंग माहेश्वर, धार, उज्जैन, चन्द्रभागा, चित्तौर, आबू, चन्द्रावती, मऊ, मैदाना, परमावत्ती उमरकोट, वैश्वर, लुद्रवा और पट्टन आदि थे।

विद्वानों ने परमार कुल की ३३ शाखायें मानी हैं यथाः— १ बोर, २ सोडा, ३ सांखला, ४ खैर, ५ ऊमरा, ६ बेहिल, ७ मैपावत, ८ बुल्हर, ९ काबा, १० ऊमट, ११ रहबर, १२ डुंडा, १३ सोरटिया, १४ हरेर, १५ चौंरा, १६ खेचड़, १७ सुगड़ा, १८ बरकोटा, १९ पूनी, २० सम्पल, २१ भींचा, २२ कालपुसर, २३ कलमोह, २४ कोहला, २५ पूलया, २६ कहोरिया, २७ धुंधदेवा, २८ वरहर २९ जीप्रा, ३० पोसरा, ३१ धूंता, ३२ रिकुम्बा और ३३ टीका।

४९—पुण्डिर

यह एक राजपूत जाति है, दाहिमा राज वंश की यह एक शाखा है, किसी समय में दाहिमा कुल की प्रतिष्ठा सर्वोच्च थी इस जाति के वीर चरित्र राजाओं के प्रकाशमान गौरव से सम्पूर्ण राजपूत गण अपनी प्रतिष्ठा मानते थे। परन्तु समय के हेर-फेर से ये राजपूत वंश का एक साधारण सी जाति रह गई, सातवीं शताब्दी के आस पास इस जाति का महत्व सर्वत्रो फैला हुआ था। एक समय प्रसिद्ध बयाना पहाड़ी का किला इसी वंश के अधिकार में था और चौहान वंशमणि महाराज पृथ्वीराज के समय में ये लोग सामन्त राजा हो कर रहते थे लिखा भी है कि :—

These brother of this house held the highest offices under the monarch, and the period during which the elder Kaunas, was his minister, was the brightest in the history of the Chauhan. Pundir the second brother, commanded the frontier at Lahore, the third Chcand Rae was the principal Leader in the last battle. (Annals P, 223)

भा० इस वंश के तीन भाई थे जिनके नाम कौनास, पुण्डिर और चौयन्दराय थे, बड़ा भाई कौनास महाराज पृथ्वीराज का एक प्रधान मन्त्री था और जब तक इस पद पर आरूढ़ रहा तब तक चौहान वंश का जीवन चरित्र प्रकाश मय बना रहा, इन चोन्दयराय का दूसरा भाई पुण्डिर था जो भारत के सन्मुख भाग लाहौर की रक्षा करने के लिये नियत था और जिसकी आज्ञा के नीचे फौजों का बड़ा भारी बेड़ा था और तीसरा भाई चोयन्दराय पृथ्वीराज का प्रधान सेनापति था जिसने कगार नदी के किनारे बादशाह शाहबुद्दीन गौरी के साथ अति कठोर युद्ध किया था तब से चौयन्दराय का नाम खाण्डेराव पड़ा क्योंकि इन्होंने युद्ध में अतुल वीरता दिखलाई थी उसका विवरण महाकवि चन्द्र भट्ट ने अपने महा-काव्य में बहुत कुछ लिखा है उस समय के मुसलमान इतिहास लेखकों ने भी चोयन्दराय की वीरता को दरसाते हुये लिखा है कि—"मजदूर खाण्डेराव की खौफनाक तलवार से शाहबुद्दीन ने बड़ी मुश्किल से अपनी जान बचाई थी।"

इस ही महा विकराल युद्ध में बादशाह के साथ घोर युद्ध करते हुये दाहिमा वंश सदा के लिए राज्य पाट विहीन होगया क्योंकि चोयन्दराय इस युद्ध में मारा गया था। तब चोयन्दराय के वंश के हजारों पुण्डिर राजपूत शाही फौज द्वारा गिरफ्तार कर लिये गये जिन्हें बादशाह की ओर से फरमान सुनाया गया कि—"या तो यह सब राजपूतगण दीन इस्लाम को कबूल करें वरना एकदम क़त्ल कर दिये जांय!' इसी फ़रमान के मुताबिक़ बहुत से राजपूत जिन्होंने मुसलमान होना नहीं चाहा

वे कत्ल कर दिये गये और जिन्होंने मुसलमान होना स्वीकार किया वे मुसलमान बना लिये गये और नौ मुसलिम कहे जाने लगे।

पुण्डिर राजपूतों का राज-गृह थानेसर में था परन्तु चौहान वंशी राना हरीराय ने इनसे राज्य छीन कर इन्हें यमुना नदी के उस पार भगा दिया। दुआब में यह लोग हरद्वार की तरफ से राजा डामरसिंह के समय में आये थे, जो अलीगढ़ के पास अकबर के ज़िले गम्भिरा में बसे। डामरसिंह का भाई विजयसिंह था जिसके नाम से विजयगढ़ नामक किला बनाया गया, जो सन् १८०३ ई० में बृटिश गवर्नमेण्ट के तहद में आ गया जो आजकल राजासाहब आवा के पास है अन्य स्थानों के पुण्डीर राजपूतों की अपेक्षा दुआब के राजपूतों को प्रतिष्ठा अधिक है ऐसा बड़े बड़े इतिहास वेत्ताओं ने माना है।

युक्त प्रदेश में पुंडिर जाति की लोक संख्या

नाम ज़िला	हिं० पुंडिर राजपूत	नौमुसलिम पुं०	जोड़
सहारनपुर	१८१२०	७२६७	२५३८७
मुजफ्फरनगर	७१२८	३८७५	११००३
मेरठ	०	१५६८०	१५६८०
बुलंदशहर	९९१	१२२	११-१३
मथुरा	२८५	५	२९०
आगरा	९८	१	९९
मैनपुरी	२९	७	३६
एटाह	१६९३	२२	१७१५
बदायूं	२४७	०	२४७
मुरादाबाद	५४	०	५४
बांदा	४३८	०	४३८
जोड़	२९१४०	२७००४	५६१४४

नोटः—जिन जिन ज़िलों में २६ से कम की संख्या थी उन्हें लिखने से हमने छोड़ दिये हैं।

इन सताईस हजार चार नौमुसलिम राजपूतों की चाल-ढाल रीति-भांति प्रायः हिन्दुओं ने हमें अपने अन्वेषण की यात्रा में हिन्दुवों कीसी बतलाते हुये इन्हें शुद्ध किये जाने की सिफारिश की है अतएव देश सुधारक हिन्दू जनता के प्रति हमारा निवेदन भी यही है कि इनके साथ न्यायानुकूल उदारता का व्यवहार किया जाकर ये लोग अवश्य शुद्ध कर लिये जांय जिससे सच्चे रूप में गो सेवा का पुण्य हो।

८० भट्टी:—

यह एक क्षत्रिय वंश है कई शताब्दियों पूर्व इस वंश की बड़ी प्रभुत्वता सर्वत्र फैली हुई थी। इस ही से यदुवंशी को विद्वानों ने 'भट' कह कर सम्बोधन किया था। इस ही भट शब्द से भट्टी कहे जाने लगे जिन्हें आजकल लोग भाटी राजपूत भी कहते हैं।

संस्कृत शास्त्रों में 'भट' शब्द का अर्थ कवि-कल्पद्रुम में 'भटति भृत्यं स्वामी' ऐसा अर्थ किया है

पुनः—

भटायोद्धारश्च योद्धारः सेना रक्षास्तुसैनिका।

(इत्यमरः २-८-६१)

भा० भट, योध और योधृ ये तीन नाम युद्ध करने वाले के हैं। महाभारत के युद्धमें नष्ट-भ्रष्ट होकर व अपना राज्य पाट खोकर यदुवंशी वीर योद्धा लोग द्वारका से भागकर काबुल गज़नी और बलखबुखारा की ओर चले गये और वहां अपना आधिपत्य जा जमाया परन्तु ये लोग युद्ध करते करते इधर से गये और उधर भी इन्हें लगातरा युद्ध करते रहना पड़ा जिससे वहां के विद्वान लोग इस यदुवंश को भट [योद्धा] कहकर सम्बोधन करते थे।

पुनः—

उष्ट्रैः केचिदिभैः केचिदपरे युयुधुः खरैः।

केचिद्गौर मृगैर्ऋक्षैर्द्वीपिभिर्हरिभिर्भटाः॥

(श्री मद्भागवते ८-१०-९)

भावार्थः-श्री भगवद्भागवत में भी भट शब्द का प्रयोग वीरत्व विषय में हुवा है पुनः और देखियेः—

पदे पदे सन्ति भटारणोद्भटा

न तेषु हिंसारस एष पूर्यते।

धिगीदृशन्ते नृपते! कुविक्रमं

कृपाश्रये यः कृपणे पतत्रिणि॥

नैषध काव्ये १-१३२

भावार्थः—इन शास्त्रोक्त प्रमाणों में भट्ट शब्दका प्रयोग वीरत्व अर्थ में आया है इससे ऐसा निश्चय होता कि जो राजपूत समुदाय रणविद्या में बड़ा निपुण व शक्ति शाली योद्धा था उसके वंशजों का नाम भट्टी प्रसिद्ध हुआ।

These tradition tells that, in very aneient times they were driver accross tne Indus, but in returning they dispossessed the Laugh Joya & others of the couutry south of the Lower Sutlej.

(C. and T. P. 143)

भा० कहावत ऐसी प्रसिद्ध है कि प्राचीनतम समय में ये लोग सिन्धु नदी के पार हटा दिये गये थे। परन्तु लौटते हुये इन्होंने लंगाह, जोया और सतलज नदी के दक्षिणी भाग को अपने हाथों से खोदिया। यह विक्रम सम्वत् १२०० की शताब्दि की वार्ता है कि इन्होंने अपना राज्य राजपूताना में बढ़ाया था, यहां तक कि इनका राज्य सिरसा और हिसार के आस-पास के देशों में सर्वत्र फैला हुआ था, उस समय इनके राज्य का नाम ही 'भिटियाना' कहाता था जिसे किसी किसी विद्वान ने भटियाना भी लिखा है।

एक सिविलियन अफसर ने अपने ग्रन्थ C. & T. में लिखा है कि जब ये लोग काबुल बुखारा की ओर से लौटते हुये पीछे आये तो भट्टी नामक उस समय यदुवंशी एक सरदार था जो अपनी फौज सहित सिंधु नदी पार उतरा था उसके दो पुत्र थे दूसल और जयसाल इनमें से जयसाल ने अपने नाम पर जयसलमेर बसायी जो आज कल एक रियासत है।

यह क्षत्रिय वंश पंजाब प्रान्तमें बहुत अधिकता से है। उपरोक्त बलशाली भट्टी सरदार ने अपने नाम पर भटनेर बसाया, राजपूताना में भट्टी राजपूत जयसलमेर और बीकानेर के राज्य में विशेष है।

जब ये लोग काबुल बलख और बलखबुखारा की ओर से युद्ध करते कराते लौटे तो बादशाह कुतबुद्दीन से बड़ी बड़ी मुट भेड़ हुई जिस से भट्टियों की एक बड़ी फौज कैद कर ली गयी, जिन्हें बादशाह काजी ने शरह देख कर राजपूतों को मुसलमान कर लेने व मुसलमान न बनने पर क़तल किये जाने का फतवा दिया जिससे हजारों भट्टी राजपूत मुसलमान बना लिये गये लिखा है:—

A large number of them became Muhammedan in the time of Qut bud-din & Alauddin.

यह जाति और कौम नामक सरकारी ग्रन्थ का प्रमाण है कि भट्टी राजपूतों में से एक बड़ी संख्या में राजपूत लोग बादशाह कुतबुद्दीन और अलाउद्दीन के समय में मुल्समान बने हैं।

इन नौमुसलिम राजपूतों की बहुत कुछ लोकसंख्या तो पंजाब में है पर युक्तप्रदेश भी खाली नहीं है जहां इन के आचार विचार बहुत कुछ हिन्दुवाना ढंग के हैं, दूर से तो यह लोग मुसलमान मालूम नहीं पड़ते, घर में भी ये लोग और मुसलमानों की तरह गलीच नहीं रहते हैं, तुगलक शाह बादशाह की बेगम (स्त्री) और फ़िरोज़शाह तुगलक की मा भट्टी राजपूतानी थीं अतएव ये नौमुसलिम लोग शुद्ध कर लेने के योग्य हैं।

भारत के एक युक्त प्रदेश में इन की लोक संख्या १७१७० है तो हिन्दू भट्टी राजपूत २१७८६ हैं।

बाराबंकी में नौमुसलिम भट्टी राजपूत १३५३, परतापगढ़ में १६५२ गाजीपुर में ८५४, मुरादाबाद में ५१४, बरेली में ३७६२ एटाह में २६७१ फ़र्रुखाबाद ११७७, अलीगढ़ ५७६, बुलंदशहर २४५५ मुजफ्फ़र नगर ३४३ और सहारनपुर ४४३ आदि आदि।

५१ भटियारा:—

यह एक नवमुसलिम जाति है पहिले ये भट्टि राजपूत थे परन्तु सरदार शेरशाह और सलेमशाह से युद्ध में हार कर कैद कर लिये गये थे। जिन को उस समय 'भट्टिहारे' कहते थे जिस का भावार्थ ऐसा था कि वे भट्टि राजपूत जो युद्ध में हार गये थे वे भटिहारे कहाते २ बिगड़ कर आज कल का प्रसिद्ध नाम 'भटियारा' होगया। उपरोक्त शुद्धशब्द भट्टि + हारा = भट्टिहारा व भटिहारा व भटियारा प्रसिद्ध हुआ। ये राजपूतगण जब बादशाह की ओर से कैद किये गये तब मुसलमान होने को विवश किये गये

थे उन में के भेद भील, चौहाण, भाटी, आदि आदि हैं। भटियारों के दो मुख्य भेद हैं १ भटियारा और २ हरियारा इन में परस्पर तनिक सा भेद है अर्थात् भटियारों की स्त्रियें धातु की चूड़ियें पहिनती हैं तो हरियारों की काच व लाख की चूड़ियें पहिनती हैं। इन के नाम भी हिन्दुओं से मिलते जुलते हो होते हैं ये लोग ईस्वी सन १५५० के लगभग ही मुसलमान हुए थे

शेरशाह और सलीमशाह हुमायूं बादशाह के फौजी सरदार थे, बादशाह के उन दिनों बड़े दौर दौरे थे अतः रेल न होने से सब काम पैदल चल कर होते थे। अतः जगह २ सरायें बनायी गई थीं जहां इन कैदियों को रक्खा गया, मुसलमान लोग दूसरे मुसलमानों के हाथ की खासकते हैं इसलिये उस समय मणों रोटी कबाब व दाल भाजी पकी पकायी नित्य खरच होती थी अत एव इन नवमुसलिमों को यह काम सुपुर्द किया गया जो अब तक ये लोग करते चले आ रहे हैं, जाति अन्वेषणार्थ हमारी यात्रा में कई भटियारे हमें ऐसे मिले जो हिन्दुजाति में शुद्धि के अभाव की एक बड़ी भारी त्रुटि बतलाते थे।

जोधपुर के प्रसिद्ध इतिहास सुपरिन्टेण्डेण्ट मु० देवीप्रसाद जी ने लिखा है कि ये लोग अपनी बेवा औरत का नाता उस के खाविंद के खान्दान में नहीं करते। इस ही तरह और भी इन में कई एक ऐसी रीतियें हैं जिन से इन में हिन्दुपन विद्यमान है अतः शुद्ध होने योग्य हैं।

यह जाति राजपूताना मध्य प्रदेश और विशेष रूप से युक्त प्रदेश में इन की संख्या ३०६५८ है जिन में १५८३ अलीगढ़ में २९८४, मैनपुरी में ११३६, एटा में ११४४, बदायूं में २६०७

मुरादाबाद में ११४७, शाहजहांपुर में १६०१, इलाहाबाद में १५४२, और सब से अधिक ये लोग बरेली के जिले में हैं। तहां इन की लोक संख्या ४४८८ है। जिन २ ज़िलों में एक हजार से कम की लोक संख्या थी उन को हम ने यहां छोड़ दिया है।

यह एक द्विज समुदायान्तर्गत जाति है अन्वेषण करने से पता चलता है कि इस नाम की जाति के अन्तर्गत ब्राह्मण व क्षत्रिय दोनों ही वर्ण के लोग मिल गये हैं और भाटपने का धन्दा करते हैं। जो भाट वर्ण से ब्राह्मण हैं उन का विवर्ण तो हम अपने 'ब्राह्मण निर्णय' ग्रन्थ में लिख आए हैं तहाँ देख लेना चाहिये।

राजपूतों में से धन्दे स्वरूप से जो भाटपना करने लगे वे चारण प्रसिद्ध हुए अतएव यहां चारण जातिका विवर्ण लिखा जाता है। Research Scholars अन्वेषण करने वाले विद्वानों में से

अनेकों ने इस जाति का अन्वेषण किया है पर वह उचित व तथ्य अनुसन्धान नहीं प्रतीत होता जैसेः—

Preliminary Report on the coperation in serch of mss Bardic Chronicles Page 7 नामक ग्रन्थ में महामहोपाध्याय पं० हरप्रसाद शास्त्री एम० ए० सी० आई० ई० वाइस प्रेसीडेण्ट बंगाल एशियाटिक सोसायटी कलकत्ता ने लिखा है कि "कुलकुलामण्डन" में कवि बृजलालजी ने लिखा है कि चारणों की उत्पत्ति सोरठ (जिसे पुराने समय में सौराष्ट्र व काठियावाड़ गुजरात कहते थे) में हुई। ये मिश्रित जाति के हैं अर्थात् वर्णसंकर हैं, चारण शब्द चार से बना है। क्यों कि चारणों के पुरखा जगतनम्मी के तीन पति थे जो स्त्रियों में बहु विवाह का उदाहरण है। चारणों के वंश, गोत, खांप जकत से चली हैं और उस की सन्तान बहुत से प्रान्तों में आदि चारण कहलाती है। जकत के चार लड़के थे नाडू, नरा, चोरड़ा, तुबेटा और गौरी नाम की कन्या थी। चारणों की २८ खांप (चालु गोत्र अल्ल) गौरी से चली जो कि देवी हो गई। गौरी और चौराह गिरनार के राजा के पास गये जिस ने उन कार्य्य से प्रसन्न हो,कर लोगों में उन का दर्जा बहुत बढ़ा दिया जिस से उच्च जातियां भी उन का खाना खाने लग गईं। पुनः-

(२) चारण लोग कुम्हारों के यहां विवाह के समय उन से नेग (फदिया) माँगते थे।

(३) पुनः—

ढोली (नगारची) कहते हैं कि चारण हमारे भाई हैं पर ब्राह्मण उनका बहिष्कार करते हैं।

(४) पुनः—

कुला चुला बापरो भूले प्रजापति को पौर।
दिना गधा चरावतो रातो करतो रौड़॥

यह किसी जले भुने द्वेषी की गढ़न्त है अर्थात् चारण लोग कुम्हार का दरवाजा भूल गये जहां दिन में उनके गधे चराते और रात को कविजी बन जाते हैं।

(५) मि० विल्सन ने लिखा है कि यह नाम पशुओं को चराने के कारण से पड़ा है, इससे चारण लोग सदैव से पशु-चराने वाले सिद्ध होते हैं।

(६) लोगों ने इनको 'चरवाहा' सिद्ध करने के लिये लिखा है कि पारवतीजी के एक सिंह व महादेवजी के एक नांदिया अतः ये दोनों एक साथ नहीं चर सक्ते थे अतः एक पुरुष पैदा किया और उसका नाम चारण रक्खा जो सिंह व नांदिये को चराया करता था। पुनः—

(७) किन्हीं विद्वानों ने इस जाति को पेशेवर मंगते भी लिखकर प्रगट किया है।

(देखो राज० क्षत्रिय० फरवरी १६२६)

(८) पुनः—

अंग्रेजी ग्रन्थ (C. & T. 126) में लिखा है—They ask alms ये भीख मांगते हैं।

किन्हीं अन्वेषणकर्ता विद्वानों ने भाट व चारण जाति एक ही जाति मान कर उनकी उत्पत्ति वर्णसंकर (दोगली) लिखी है अर्थात् मा कोई और बाप कोई उन सबको यहां संग्रह करने से ग्रन्थ बढ़ेगा अतः फिर कभी लिखेंगे। पर यह ठीक नहीं है।

इन सब बातों से व जितने कुछ उपरोक्त सारखे प्रमाण हमारी दृष्टि में हैं वे सबके सब एक दूसरे की ग़लती का Repeatition पुनरुत्थान मात्र है अतएव ऐसे लेखों को हम नहीं मान सकते क्योंकि यह सब विदेशियों की कल्पना व अल्पज्ञता प्रदर्शित करती है अथवा सम्भव है कि द्वेषियों का संग्रह ही उनके दृष्टिगोचर हुआ होगा और तदनुसार ही उन्होंने लिख दिया होगा ऐसा प्रतीति होता है। हमने इस जाति के बारे में बहुत कुछ ग्रन्थ देखे और शास्त्रों में हमें इस विषय में बहुत कुछ प्रमाण मिले उनमें से कतिपय यहां लिखते हैं।

चारण शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार से है कि 'चारयति प्रचारयति नृत्यगीतादि विद्यां तज्जन्य कीर्तिंवा' अथवा एक विद्वान ने ऐसा भी लिखा है 'यो धर्म चारयति प्रचारयति स चारणः' अर्थात् जो गीत नृत्यादि विद्या के व चरित्र धर्म के जो प्रचारक हैं वे चारण कहे जाते हैं, ऐसा भी हो सकता है कि 'चारयति कीर्तिम् इति चारणः।

चारणाश्च सुपर्णाश्च पुरुषाश्चैव दाम्भिकाः।
रक्षांसि च पिशाचाश्च तामसीषुत्तमा गतिः॥ ४४

(धर्मशास्त्रे)

अर्थात्—चारणादि का काम तामसी गतियों में उत्तम गति है। मनुस्मृति के टीकाकार ने इसका अर्थ किया है 'गन्धर्व विशेष' और गन्धर्वगण देवतावों की स्तुति करने वाले थे तैसे ही चारण लोग राजाओं की स्तुति करने वाले हैं अतएव ये उत्तम है।

पुनः—

गन्धर्वाणां ततो लोकः परतः शत योजनात् ।
देवानां गायनास्तेचचारणाः स्तुति पाठकाः ॥

(पद्मपुराणे)

भा०—इस पुराणोक्त बचन से चारण लोग देवताओं के स्तुति पाठक हैं और देवताओं के स्तुति पाठक छोटे नहीं माने जा सकते हैं।

पुनः—

वयांसि तद्व्याकरणं विचित्रं
मनुर्मनीषा मनुयो निवासः ।
गन्धर्व विद्याधर चारणाप्सरः
स्वरस्मृतीरसुरानीकवीर्यः ॥ ३६ ॥

(श्रीमद्भागवते)

भावार्थः—इस प्रमाणानुसार चारण जाति 'देवयोनिविशेष' सिद्ध होती है।

पुनः—

अन्तर्बहिश्च भूतानां पश्यन् कर्माणि चारणैः ।
उदासीन इवाध्यक्षो वायुरात्मेव देहिनाम् ॥१२

(श्रीमद्भागवते)

भावार्थ—इस प्रमाण से भी चारण जाति कोई नीच जाति सिद्ध नहीं हो सकती है।

यजुर्वेद के शतपथ ब्राह्मण में लिखा है कि ' विद्वा ग्वं सोहि देवा ' अर्थात् जो विद्यादि गुण व ऐश्वर्य्य युक्त हैं वे ही देव कहाते हैं अर्थात् श्रेष्ठ सदाचारी विद्वानों की देव संज्ञा होती है वे देव कितनी तरह के हैं इस विषय में श्रीमद्भागवत में लिखा है:—

देव सर्गश्चाष्ट विबुधाः पितरोऽसुराः ।
गन्धर्वाप्सरसः सिद्धा यक्षरक्षांसि चारणः ॥ २७ ॥
भूत प्रेत पिशाचाश्च विद्याघ्राः किन्नरादयः ।
दशैते विधुरा ख्याताः सर्गास्ते विश्वसुक्कृता ॥२८

भावार्थः—१ विबुध, २ पितर, ३ असुर, ४ गन्धर्व व अप्सरस, ५ यक्ष राक्षस, ६ भूतप्रेत पिशाचादि ७ सिद्ध विद्याधर चारण और ८ किन्नर ये देवयोनि की आठ संज्ञायें हैं।

पुनः—

अभिष्टुतश्च विविधः देव-राजर्षि चारणैः ।
अर्चितश्चोच्चमार्घेण देवतैराभि नान्दितः ॥ ४ ॥

महा भा० उ० प० अ० १३३

भावार्थ—देवर्षि राजर्षि और चारणों ने राजा ययाति की स्तुति करके अर्घ्य पाद्य से सत्कार किया।

पुनः—

एव मुक्त्वा महातेजा गौतमो दुष्टचारिणीम् ।
इममाश्रममुत्सृज्य सिद्धचारण सेविते ॥

हिमवच्छिखिरेरम्ये तपस्तेपे महातपाः ।

बा० रा० बा० कां० स० ४८-३३

भावार्थ—महा तेजस्वी गौतमजी अपनी दुष्टा स्त्री को ऐसा कहकर व इस आश्रम को छोड़कर सिद्ध चारणों द्वारा सेवित हिमालय के सुन्दर शिखिर पर जाके तप करने लगे। इससे चारणों का महत्व प्रकट होता है।

पुनः—

अथ गत्वा तृतीयं तु वायोः पन्थान मुत्तमम् ।
नित्यं यत्रस्थिता सिद्धाः चारणश्च मनस्विनः ॥

बा० रा० उ० का० स० ५-४

इस हिमालय पर्वत में सिद्ध और मनस्वी चारण लोग नित्य रहते हैं इससे भाट चारण लोग सिद्ध और मनस्वी प्रमाणित होते हैं।

पुनः—

स तथा चिन्तयंस्तत्र देव्या धर्म परिग्रहम् ।
शुश्राव: हनुमांस्तत्र चारणानां महात्मनाम् ॥२६॥

बा० रा० सु० का० स० ५५-२६

भावार्थः-सीता की चिन्ता करते हुये हनुमानजी ने महात्मा चारणों के मुख से सुना यहां पर चारण जाति महात्मा शब्द से सम्बोधित की गयी है।

पुनः—

तत्र मासं वसेद्धीरः सरस्वत्यां युधिष्ठरः ।

यत्र ब्रह्मादयो देवा ऋषयः सिद्धचारणाः ॥५॥

महा० वन पर्व अ० ८२ श्लोक ५

भावार्थः-यह उस समय का प्रसंग है जब वन में राजा पांडु का देहान्त होगया था, रानी सती होगयीं थी, तब पांडु के पांचों पुत्र और कुन्ती को लेकर चारण हस्तिनापुर में आये थे। यदि चारण कोई नीच जाति होती तो इन्हें इतना सन्मान कैसे मिलता ?

जब चारण जाति उपरोक्त प्रमाणानुसार उच्च जाति सिद्ध है तो विदेशियों के पूर्वोक्त विरुद्ध प्रमाण केवल भ्रमयुक्त होने से अमाननीय हैं और वे प्रमाण शास्त्रीय प्रमाणों के सन्मुख कुछ महत्व नहीं रख सकते हैं।

जैसा कि ऊपर सिद्ध किया गया है तदनुसार चारण जाति का संसर्ग सदैव से राजपूत राजाओं के साथ व ऋषि मुनियों के साथ रहा है अतएव इनके राजपूत होने में सन्देह नहीं मानना चाहिये, यह दूसरी बात है कि इनमें विद्या न होने के कारण इनकी स्थिति बहुत कुछ बदल गयी और ये निरे कृषिकार व छोटे मोटे जागीरदार रह गये।

लिखा हैः-

That Rajputs may have taken up the Profession of Bard to the Chiefs of their tribe.

(C. & T. P. 121)

भा०-कुछ रजपूतों ने अपने जाति सरदारों का भाटपना करना स्वीकार कर लिया।

भाट चारणों का धन्धा अपने अपने यजमान सरदारों का कुर्सीनामा (पैत्रिक वंशवृक्ष) रखना, उनकी स्तुति व कीर्ति का गान करना और त्याग लेकर निर्वाह करना है।

राजपूताने में चारणों की महिमा है इनमें कोई अच्छे कवीश्वर व विद्वान व कई एक जागीरदार हैं जिनमें से कइयों को तो बड़ी बड़ी जागीरें उनकी विद्या बुद्धि व रण-कुशलता के कारण मिली हैं जो उनके सम्मान सूचक हैं कहीं कहीं तो रजवाड़ों में चारणों को राज से ताजीम मिली हुयी है जिससे इनमें कई ताजीमी सरदार भी हैं। जोधपुर के महाराज का राज तिलक हुआ करता है तब वहां के चारण को लाख-पसात्र मिलता है अर्थात् चारण को एक लक्ष का माल देते हैं जिसमें पांच हजार रुपये नक़द हाथी घोड़े जेवर सरोपात्र और बाक़ी एक लाख की भरती में गांव देकर पूरा करते हैं। उस समय महाराजा साहिब सिंहासन से उतर कर अपने सहवर्ती दरबारी सरदारों सहित राजद्वार तक उस चारण को पहुंचाने जाते हैं। वैसे तो मालवा गुजरात आदि में सर्वत्र ही भाट चारणों को छोटी व मोटी जागीरें व कुए जमीन आदि मिले हुये हैं पर मारवाड़ के एक अकेले जोधपुर राज्य में इनके ३६३ ग्राम हैं जिनकी वार्षिक आय २७१४१०) है इन जागीरों के इनके पास ताम्बेपत्र हैं।

जो चारण मारवाड़ प्रदेश याने मरुस्थल में आये वे मारू-चारण, जो कच्छ देश से इधर उधर गये वे काछेलें कहाये।

मुंशी देवीप्रसादजी ने अपने ग्रन्थ में चारणों के गोत्र (९१२) इस प्रकार से लिखे हैं।

१ आडा, २ आसिया, ३ ऊजल, ४ कलहट, ५ कविया, ६ किनिया, ७ केसरिया, ८ खिड़िया, ९ गांगणिया, १० गंगा-आस, ११ गाडण, १२ गूंगा, १३ गोरा, १४ चांछड़ा, १५ जड़े-लचा, १६ जगट, १७ भीबा, १८ झूला, १९ टापरिया, २० तूबेल, २१ थेहड़, २२ दैंया, २३ देभल, २४ धधवाड़िया, २५ धानड़ा, २६ नरा, २७ नांदू, २८ पिड़ियार, २९ बरसड़ा, ३० बाटी, ३१ बीठू, ३२ बोगसा, ३३ भांचलिया, ३४ महिया, ३५ मेंगू, ३६ मींसण, ३७ मुहड़, ३८ मेंडु, ३९ मेहारिया, ४० रतनू ४१ रादा, ४२ रोहड़िया, ४३ लालस, ४४ वणसूर, ४५ सिंडा-यच, ४६ सांदु, ४७ सांवल, ४८ सोलग,४९ सींगड़, ५० सूंगा, ५१ सुरताणिया, ५२ सोदा, ५३ हासाणिया ।

इन गोत्रों में बरसाड़ा, नांदू और जकत अपने को आदि चारण मानते हैं और कहते हैं कि मोतीसर और ढोली आदि जुगार के चारण कहकर सुभराज करते हैं, बाकी खांपें राज-पूतों से बनी हैं और रतनू पोहकरणे ब्राह्मणों से, इसही तरह रोहड़िये राठौड़ों से, सिंडायिच पंवारों से, नांदू खींचियों से, रतनू भाटियों से, सौदा सीसोदियों से, आडा देवड़ों के पोलपात बारहट हैं ।

बारहट भी चारणों का ही नाम है अर्थात् जिन चारणों का नेग दापा व्याह शादी में लगता है और जो तोरण (दरवाजे) के समय अपने नेग जोग के लिये झगड़ते हैं इसही लिये ये बारहट कहाते हैं अर्थात् बार=दरवाजा, हठ=हठ करना जिद् करना अर्थात् तोरण मारने के समय जो चारण अपने यजमानों से झगड़ते हैं वे बारहठ कहाते कहाते आज

कल 'बारेठ' कहाते हैं, इन्हीं का दूसरा नाम मारवाड़ी भाषा में पोलपात भी है।

आसिया—ये सरवैया राजपूत बताये जाते हैं इनके आदि पुरुष आबू सूराजी थे जो राजपूत से चारण हुये थे उनके आठ बेटों से आसियों के आठ उपभेद हुये जैसे बणसूर, मूहड़, लालस, गोरा, सूंगा आदि आदि। आसिया पहिले पड़िहारों के पोलपात थे, पर राजा नाहड़राव के बेटे धूमकंवर को उसके पोलपात बारहट ने चौपड़ के खेल में तकरार होजाने से मार डाला इस पर नाहड़राव ने आसियों को निकाल कर सिंडायिचों को अपना पोलपात बना लिया तब से यह दोहा प्रसिद्ध हुआः—

धूमकुंवर ने मारियो चौपड़ पासे चौल।
तिणदिन छोड़ी आसिया पड़िहाररीं पौल॥

अर्थ तो सीधा ही है कि चौपड़ पासे के खेल में जिस दिन से आसियों द्वारा धूमकुंवर मारे गये तब ही से आसिये पड़िहारों की पौल (दरवाजे) से हटा दिये गये।

१सिंडायच—ये लोग पंवार राजपूत हैं, भांचलिया इनकी खांप है-आसियों के पीछे नरसिंह भांचलिया को नाहड़राव ने अपना पोलपात बनाया था क्योंकि उसने बहुत से सिंह मारे थे जिसको सिंघढायक की पदवी थी उसही के वंशज सिंघायक कहाते कहाते सिंडायच कहे जाने लगे।

रतनू—यह पहिले चंडवाने जोशी थे इनके एक बुजुर्ग खेती किया करते थे उनके सात पुत्र थे, राजा देवराज भाटी

को मुसलमान बादशाह पकड़ने को चले वह भागकर वसुदेव जी के पास आश्रय लिया, वसुदेवजी ने उसे जनेऊ पहिनाकर खेती में लगा दिया, जब तुर्कड़े खोज लगाते लगाते आये तो वसुदेवजी ने कहा 'यहां तो सब मेरे बेटे ही हैं और दूसरा कोई नहीं आया" तब मुसलमानों ने कहा अच्छा ऐसाही है तो तुम सब बैठ कर एक साथ खाना खाओ तब वसुदेवजी ने अपने दो दो लड़कों को एक एक साथ तथा रतना को देवराज जी के साथ बिठाकर खाना खिलाया यह देखकर मुसलमान तो लौट गये पर भाइयों ने रतना को गैर कौम के साथ खा लेने के कारण अपने से अलग कर दिया कुछ समय पश्चात् जब भाटी देवराज ने अपना राज्य प्राप्त कर लिया तो वसुदेव को अपना पुरोहित तथा रतना को 'चारण' नियत किया।

रोहड़िया—इस नाम के चारणों के विषय में मा० म० ग० रिपोर्ट में लिखा है कि "माडलजी वरसडा की बेटी भूमा ने एक दिन सब ज़मीन भीगी व बीच में थोड़ी सी सूखी देखी और पूछा कि 'यह सूखी कैसे रही ?' तब उसके बाप ने कहा कि अमुक राजा के व्याह में जाते हुये अपनी जाति (चारण) के लोग रात को मेह बरसते में खिरकियों के नीचे पड़े रहे थे, इस पर उसने चारणों को ऐसे दीन हीन समझकर भूमा ने उनके साथ विवाह करने से इंकार करके किसी राजपूत के साथ विवाह करने की ठानी तब राव रायपाल राठौड़ ने भांगिया भाटी के बेटे चांदा को जो लूट मार किया करता था पकड़वा मंगवा कर भूमा का उनके साथ विवाह कराके व उसे

धन माल देकर उसे अपना पौलपात (बारहठ) बना लिया। उसकी सन्तान रोहड़िया बारहठ कहाती है इनका बड़ा ठिकाना मारवाड़ में मुंदियाड है जिनकी राज में सरदारों की तरह प्रतिष्ठा है।

इस जाति को द्वेष भाव से चाहे कोई कुछ भी कहे पर पुराने इतिहासों से पता लगता है कि जोधपुर के महाराज अभयसिंहजी कविया करणीदान को एक लाख का पसाव देकर जोधपुर से मंडोर तक उसे पहुंचाने को गये थे जिसकी याद में यह दोहा चला आरहा है:—

अस चढ़ियो राजा अभो कवि चाढ़े गजराज।
पोहर एक जलेब में मोहर बुहे महाराज॥

इसही तरह मूंधियाड़ नामक ग्राम में एक करणीदान चारण हुये हैं जिनकी प्रतिष्ठा के सम्बन्ध में ऐसा लेख मिला है कि उदयपुर के महाराना जगतसिंहजी अपनी ड्योढ़ी से सौ सवासौ कदम बाहर तक उसे लिवा ले जाने को आये थे जिसके सम्बन्ध में कवि करणीदानजी ने यह कहाः—

करनारो जगपत कियो कीरत काज कुरब्ब।
मन जिन धोको ले मुओ शाह दिलीश सरब्ब॥

इसका भावार्थ यह है कि महाराणाजी ने करणीदान चारण का इतना बड़ा आदर किया कि जैसा दिल्ली के बादशाह का भी महाराणाजी न करते अर्थात् दिल्ली के बादशाह भी उदयपुर आते तो महाराणा जी सौ सवासौ कदम बाहर उन्हें लेने न आते इस लिये करणीदानजी चारण का मान्य देखकर

दिल्ली के बादशाह के चित्त में इसका अरमान (धोका) ही रहगया।

राजा लोगों से प्रतिष्ठा प्राप्त करके चारण लोग बादशाही दरबारों में भी सुशोभित होने लगे, पुराने इतिहासों में लिखा है कि बादशाह अकबर जहांगीर और शाहजहां के दरवार में कई चारणों ने प्रतिष्ठा पायी थी, जिनके नाम जाड़ा, मेड, सूराचन्द टापरिया, लक्खाजी बारहठ, पीरजी, आसिया, दुरसाजी आड़ा, रामाजी सांदू आदि आदि।

बादशाही दरबारों में पहिले चारण लोग खड़े रहकर कीर्ति सुनाया करते थे परन्तु जाड़ाजी मेंडु बहुत मोटा था कुछ देर तक मुटाई के कारण खड़ा नहीं रह सकता था पर वह विद्या बुद्धि में बड़ा विलक्षण था वह दरवार में बैठा बैठा ही बादशाह को कीर्ति सुनाने लगा इस पर एक नवाब जो उसके पास ही खड़ा था उसने उस चारण का हाथ पकड़ कर फौरन खड़ा कर दिया तब वह यह दोहा पढ़कर फिर बैठ गयाः—

पगां न बल पतसाह जींभा बल जातक तणो।
म्हेतो अकबरशाह बैठा ही बैठा बोलस्यां॥

भा०—जाड़ाजी मेड़ चारण ने इस एकही दोहे का अर्थ बादशाह को कई तरह का समझाया जिससे अकबर ने हुकम दिया कि "आज से चारण लोग दरवार में बैठकर बोला करें।

पूर्वकाल में जब राजपूतों में लड़ाइयें होती थी तो चारण लोग बीच बिचाव कराकर बीच में जामिन बन जाते थे और जो कोई उस जमानत के विरुद्ध करता तो ये लोग उसे समझाते बुझाते और फिर भी वह नहीं मानता तो ये लोग उसके

घर पर धरणा दे देते थे यहां तक कि ये लोग उसके दरवाजे मर भी जाते थे।

चारणों का धरना राजपूताने में बहुत मशहूर है और यह धरना जियादातर जमीन के वास्ते देते थे कि जब किसी गाँव का जागीरदार या हवालदार इनकी जमीन अरकाता या जब्त कर लेता था तो भाई बन्दों को इकट्ठे करके जागीरदार की काठड़ी पर और जो गाँव खालिसे का होता तो जोधपुर आकर धरना देते थे उसका यह दस्तूर था कि पहिले दिन एक आदमी अपना बदन चीर कर जाजम पर खून छिड़कता फिर सब उस जाजम पर बैठ जाते और तीन दिन तक भूखे प्यासे जोग माया को धूप खेया और स्तुति गाया करते थे जो इस अरसे में राज से उनको मना लिया जाता तो कहते थे कि धरना सुधर गया नहीं तो चौथे रोज खूब खाना पीना करके चांदी करते थे। उसकी यह सूरत थी कि एक बूढ़े मर्द या औरत को तो बहुत सी रुई के कपड़े तेल में भीगे हुये पहिना कर जिन्दा जलाते थे फिर कोई हाथ चीरता कोई जांघ फाड़ता कोई गले घालता यानी गले में छुरी पहनता कोई पेट में कटारी मारता इस तरह कुछ आदमी तो उसी वक्त वहीं जान देते थे और बाकी जखमी होकर दूसरे इलाके में चले जाते इसको धरना बिगड़ना कहते थे।

ऐसे धरनों में से आहुवे का धरना जियादा मशहूर है जो सम्वत १६४३ में मोटा राजा उदयसिंह जी के ऊपर दिया गया था इसका सिर्फ यह सबब था २० वर्ष पहिले जब राव चंदर-सेन जी ने जोधपुर का किला मुगलों को सौंपा तो जनाने को

सिवानोंके पहाड़ों में भेज दिया था रास्ते में एक रथके बैल थक गये पास ही एक चारण कूआ चला रहा था राजा के नौकर उसके बैल ले आये चारण गाँव में जाकर कुछ आदमी लाया उन्होंने आते ही रथ से बैल खोल लिये और रथ को उलट दिया जिससे मोटा राजा की मा का हाथ टूट गया उस वक्त तो जानों की पड़ी हुई थी हाथ को कौन पूछता था अगर सम्वत् १६४० में मोटा राजा को जोधपुर मिलने पर जब जनाना पहाड़ों से पीछा आया तो माजी ने उनको हाथ दिखा कर कहा कि और तो जो मुसीबत गुजरी सो गुजरी मगर उस चारण ने रथ उलट कर मेरा हाथ तोड़ा है वह हरगिज हरगिज मुआफी के काबिल नहीं है इस पर मोटा राजा ने उस की ज़मीन जप्त कर ली यहां तक कि जिन्होंने इसकी शिफा-रिश की उन उन के शासन भी जप्त कर लिये गये इससे चा-रणों में बड़ी हलचल पड़ी, सम्वत् १६४३ के अन्त में राजा जी दक्षिण से सोजत आये और वहां जो शासन उनके बड़े भाई राम और राम के बेटे कल्ला के दिये हुए थे वे भी जप्त कर लिए तब तो ११००० चारणों ने गाँव आहुवे चांदी करने के वास्ते इकट्ठे हो कर महादेव जी के मन्दिर पर धरणा दिया, क्योंकि वहां के ठाकुर चांपावत गोपालदास ने उनसे कहा था कि और तो मुझ से कुछ मदद नहीं हो सकती है पर मैं तुम्हारी चांदी करा दूंगा, राजा जी ने यह खबर सुन कर सोजत से अक्खा जी बारहट को चारणों के समझाने के लिए भेजा परन्तु आहवे पहुंच कर वह भी अपनी बिरादरी में शामिल हो गया तब राजा जी ने एक बड़ा कटार उसके लिए भेज कर कहलाया कि—"और तो गले घाल कर मरेंगे और तुम गुदा

में घाल कर मरना" और फिर फौज को हुक्म दिया कि आकर चारणों को सजा दे पर चांपावत गोपालदास ने चारणों को तसल्ली देकर कहा कि—'मैं फौज से लड़ूंगा, तुम अपना काम करो, चारणों ने पहिले तो शीरा (हलवा) करके खूब खाया और फिर रात भर जोग माया के गीत गाकर प्रातःकाल ही अक्खाजी के ढोली गोयंद को मन्दिर के शिखर पर चढ़ाया कि जब सूरज की किरण फूटे तो ढोल बजा देना परन्तु गोयन्द ने यह समझ कर कि मेरे ढोल बजाने से ११००० चारण मारे जावेंगे अतएव अपने आप गले में छुरी खा कर अपने को नीचे गिराया तब सब चारण छुरी और कटारी ले कर मन्दिर पर गये। किसी ने गला काट कर अपना खून महादेव जी पर छिड़का, किसी ने अपना सिर चढ़ाया, कोई पेट मार कर मरा, कोई जख़्म खा कर गिरा मन्दिर सब खून से भर गया; सात मनुष्य तो उस ही वक्त मर गये उनमें अक्खाजी भी था जब तक यह चांदी हुई चांपावत गोपालदास अपने भाई बेटों सहित फौज का रास्ता रोके खड़ा रहा पर फौज नहीं आई क्योंकि चारणों को खुद मरते देख राजा जी ने फौज रोक ली पर राजा जी ने गोपालदास को कहलवाया कि तुमने चारणों को चाँदी में मदत दी है इसलिये मेरे राज्य से चले जावो, गोपालदास दो लाख का पट्टा छोड़ कर चारणों सहित बीकानेर के राजा रायसिंह के पास चला गया और उनके भाई पृथ्वीराज ने अकबर बादशाह से शिफारिश करके चारणों के शासन फिर बहाल करा दिये। लिखा भी है:—

If a man refused to keep a Promise made to them they brought a girl or an old woman of

their family to the house of the defawlter and threatened to kill or did actually kill her.

(C. and T. P. 126.)

भा० यह एक कलक्टरका लेख है कि यदि कोई मनुष्य इन्हें (चारणों को) कुछ देने की प्रतिज्ञा करके अपनी प्रतिज्ञा से वह फिर जाय तो ये लोग अपने यहां से किसी लड़की को व किसी बुड्ढी स्त्री को लाकर उसे मार डालने की धमकी देते हैं। व उसे उस नादेहन्दा के दरवाजे पर मार डालते हैं। भाट व चारण लोग पहिले बड़े सच्चे व अपनी बात के बड़े पक्के समझे जाते थे। सम्वत् १८०० की शताब्दी में तो भाट व चारण लोग अपनी जमानत देकर बड़े बड़े झगड़े तह कराया करते थे यथाः—

Not a century ago the faith placed in the word of a Bhat or Charan was perhaps the onl of obtaining the feeling the securitp necessary to conduct business of any kind. All men from the Princes to the peasant, trusted to the Bhat or Charan, that he wold keep his word or die.

(Caste and Tribes Vol.II P. 127.)

भावार्थ—एक शताब्दी के पूर्व भाट व चारणों का विश्वास इतना बढ़ा हुआ था कि बड़े बड़े बिवाद इनके वचन मात्र से निबट जाते थे अर्थात् इनका बीच में पड़ कर व लना एक बड़ी भारी जमानत हो जाती थी। शाहज़ादे से लेकर एक किसान तक भाट चारण के वचन पर विश्वास कर लेते थे कि या तो इन लोगों का किया हुआ फैसला अटल रहेगा अन्यथा ये लोग अपने वचन की रक्षा के लिए प्राण भी दे देंगे।

भाट व चारण लोग जैसा पूर्व कहा जा चुका है अपनी बात के बड़े पक्के व सच्चे होते थे और त्याग पसाव लेने के लिए राजपूतों की लड़कियों के विवाह पर हजारों इकट्ठे हो जाते थे जिससे बेटी वाले राजपूत बड़े संकट में पड़ जातेथे इस ही त्याग के डर के मारे बहुत से राजपूत अपनी लड़कियों का विवाह नहीं करते थे और बहुत से तो इस डर से लड़की के पैदा होते ही गला घोट कर मार डालते थे !

इस त्याग पसाव के विवादमें कहीं कहीं कई चारण जानसे मर जाते थे जिससे घोरतम क्लेश उत्पन्न हो जाता था इससे संतप्त होकर स्वर्गवासी महाराज खांडेराव ने इस कुप्रथा को रोक कर भविष्य के लिए ऐसा प्रबन्ध बांधा कि शादी करने वाला अपनो जागीर के हिसाब से याने १०००) की जागीर के पीछे १००) त्याग के देवे जिसमें ६०) चारणों को तथा ४०) भाट व ढोलियों को दिये जांये और यह रुपये केवल हाजिर शुदा चारण भाटादि बांट लेवें।

भाट जाति की वर्त्तमान स्थिति पूर्व की अपेक्षा बहुत ही हीनता को प्राप्त हो गई है अर्थात् आज कल इनमें विद्या का अभाव होने के कारण ये लोग दूर दूर भीख मांगने वाले भिखारी बतलाये जाते हैं और पूर्ववत् प्रतिज्ञा के भी पक्के ये लोग नहीं रहे हैं यहां तक लिखा मिलता है कि :—

भाट भटियारी बेसवां तीनों जात कुजात।
आते का आदर करें जात न पाछे बात॥

अर्थात् भाट, भटियारी (सराय वाली) रण्डी ये तीनों जाति कुजाति होती हैं जब इनके पास कोई आता है तो ये लोग

उसका आदर करते हैं पर जहां उनसे लेना था सो ले चुके तो फिर उनके जाते समय उनसे कोई बात तक नहीं करते।

जैसा ऊपर प्रमाणित किया जा चुका है भाट व चारणों में क्षत्रियत्वता का अंश विशेष माना गया है अतएव मुसलमान बादशाहों ने इन्हें राज दरबारों में पाकर अपनी संगठन शक्ति बढ़ाने को इन्हें जबर्दस्ती मुसलमान कर लिये यथा:—

Others to the West say that they were converted by the orders of Shaha-Budhin Ghori.

पश्चिम की ओर के मुसल्मानी भाटों का कहना है कि हम बादशाह शाहबुद्दीन गौरी के हुक्म से जबरन मुसलमान बनाये गये थे।

मा० से० रिपोर्ट में लिखा है कि मुसलान भाटों में लवा(ण)ा राजपूत हैं जो जबरन मुसलमान किये गये थे ये लोग राजपूताना व मालवे में भी हैं।

पुनः——

Caste and Tribes नामक ग्रन्थ में एक सिविलियन अफसर लिखते हैं:—

They were in the service of Chait Singh and were forcibly converted to Islam by Mr. Jonathan Duncan in revenge for some advice they gave to their master.

भा० राजा चेतसिंह की सेवा में कुछ भाट थे उन्होंने मास्टर को कुछ सम्मति दी थी तिससे नाराज हो कर बादशाह ने उन्हें जबर्दस्ती मुसलमान मिस्टर जोनाथम डंकन द्वारा करा लिया।

इनकी रीत भांति आचार विचार के सम्बन्ध में फर्रुखा-बादके भूतपूर्व कलक्टर मिस्टरC.S. W.C.ने ऐसा लिखा है:-

They practice a curious mixture of Hindu and Muhammadan rites. At marriage they call in a Pandit collect the sacred earth (mat-manger) erect a marriage shed give away the bridge, and make the pair perform the usual circumambulations. When this is all over they send for the Kazi and the Nikah is read in the usual Muhamedan fashion. They circumcise their boys and bury their dead in the usual Muhammadan fashion, but they do a sort of sradh and pay annual worship to the spirits of the dead as Hindus do.

भा० इनकी रीत भांति व चाल ढाल कुछ हिन्दुवानी व कुछ मुसलमानी याने दोनों तरह की मिली जुली सी हैं विवाह के समय ये लोग पहिले पंडित को बुलाते हैं, पवित्र मृतका लाकर वेदी व मण्डप बनाते और वहां वींद बींदनी (नौसे नौसी) के फेरे फिरवाते हैं यह सब हो चुकने पर काज़ी को बुला कर मुसलमानी धर्मानुसार निकाह किया जाता है। (जब हिन्दू इन्हें हिन्दू नहीं मानते) तो ये लोग अपने लड़कों की मुसलमानी (खतना) कराते तथा अपने मृतकों को मुसलमानों की तरह गाड़ते भी हैं, पर ये लोग श्राद्ध भी अपने पितरों का करते हैं जिस प्रकार हिन्दू लोग कनागत (श्राद्ध) किया करते हैं।

इन सब प्रमाणादिकों पर दृष्टि डालने से निश्चय होता है कि यदि ये लोग हिन्दू कर लिये जांय तो ये स्वतः सिद्ध ही

मुसलमानी धर्म को सहज में ही छोड़ सकते हैं, ये मुसलमान होते हुये भी गो-पूजक हैं अतः शुद्ध किये जाने योग्य हैं।

लोक संख्या— युक्त प्रदेश और राजपूताने में इन नव-मुस्लिम भाटों की बहुतायत है, युक्त प्रदेश में इनकी लोक संख्या २९४६३ है। इलाहाबाद के जिले में १५९२, जौनपुर में १३८३, गाज़ीपुर में १०८६, गोरखपुर में २१७६, बस्ती के जिले में २६७४, आजमगढ़ में १६३१, सीतापुर में २१५२, फर्रुखाबाद में २०४१, खेड़ी में १०४१, बहराइच में २७३७, फतेहगढ़ में ११९४ और बाराबंकी के जिले में ११९९ में ११६० लोक संख्या है जिन जिन जिलों में मुसलमान भाटों की संख्या एक हजार से कम थी उनको यहां लिखने से छोड़ दिये हैं।

इनमें भेद अभी तक भारद्वाजी, बिरम (ब्रह्म) दसौंधी गज-भीम, जगा, बंलिया, महापात्र, राय, राज भाट आदि हैं।

इन जाति के स्त्री पुरुष बाल वृद्धादिकों को हमने टोलियों की टोलिये अनेकों बार देखी पर इनके रहन सहन व लिबास से हम यह नहीं जान सके कि ये मुसलमान हैं बरन हमें यही विश्वास होता था कि ये तो हिन्दू ही हैं अतएव इनको शुद्ध कर लेना आवश्यक है।

५३ भाले सुल्तान

यह एक राजपूत जाति है और ये लोग राठौर वंश की तिलोकचन्दी शाखा में से हैं बहलोल बादशाह के समय में इन्हें भाले सुलतान की पदवी मिली थी और बादशाहकी ओरसे इन्हें जागीर दी गई थी।

हिन्दू—भाले सुल्तान राजपूतों के बारे में रिपोर्ट के पृष्ठ २७६ में सिविलियन अफसर ने लिखा है कि अनुमान दो सौ व तीन सौ वर्ष बीते होंगे कि राजा साहिब मोरामऊ के भाई अस्वाराय जी के बेटे रावबरारसिंह जी दिल्ली के बादशाह के यहां बैस राजपूतों की इम्पीरियल सरविस में फौजों के अफसर थे उन दिनों में भाड़ जाति के लोग बड़ी बड़ी लूट खसौट व काट मार किया करते थे इसलिये बादशाह ने रायबरारसिंह को वीर बहादुर समझ कर एक बड़ी फौज के साथ किसौली पर्गने को शत्रु दल के नाश करने को भेजा, रायसिंह ने बड़ी बड़ी विपत्तियां सह कर विजय प्राप्त की और वहां का सुप्रबन्ध करके बादशाह के पास लौट आये, बादशाह उनके इस कार्य्य से प्रसन्न हो कर बोले—Come Spears of the Sultan. आवो भाले सुलतान अर्थात् तुम हमारे भाले हो

अर्थात् जिस प्रकार भाला दूर से ही शत्रु का नाश कर देता है तैसे ही तुमने भी दिल्ली को बचा लिया इसलिये आज से तुम को 'भाले सुल्तान' की पदवी दी है। ऐसा निश्चय होता है कि यह सब बादशाह अकबर के समय में हुआ क्योंकि अबुलफजल ने इनके बारे में अपने इतिहास में कुछ भी नहीं लिखा है, बादशाह ने जब इन्हें पदवी दी थी तब तक सुल्तांपुर में इन्हें कुछ जागीर भी दी गई थी।

इस जाति के क्षत्रियत्व के सम्बन्ध में ऐसा भी लेख मिलता है कि सौराष्ट्र देश में बल्ला नामक एक राजा था उसने मुसलमानों के साथ बड़ा युद्ध किया और मुसलमान बादशाहों को बहुत ही तंग कर डाला था अन्त में एक समय वह युद्ध में हार गया और गिरफ्तार हो जाने पर शाही हुक्म से वह मुसलमान बना लिया गया चूंकि यह सौराष्ट्र देश का राजा था इसलिये बादशाह ने उसको प्रसन्न रखने के लिये सुलतान की पदवी दी और उसका व उसके समुदाय का नाम 'बल्ला सुलतान' रक्खा क्योंकि यही नाम इनके सौराष्ट्र देश में था समय के बदलाव के साथ साथ जब यह बल्ला सुल्तान राजपूत लोग मुसलमान कर लिये गये तब वे लोग बल्ला सुलतान कहाते २ 'भाले सुलतान' कहे जाने लगे लिखा है :—

The Bhale Sultan ar either not mentioned by Abbul Fazal at all, or they are the Bais Nau-muslim of Satanpur.

भा० अर्थात् भाले सुल्तान जिनके बारे में अब्दुल फ़जल ने कुछ नहीं लिखा वे सातनपुर के बैस राजपूत थे जो पीछे से मुसलमान कर लिये गये।

Palhan Deo great Grand son of Rae-Barar is said to have been converted to Islam in Shir Shah's time.

(Caste and Tribes P. 354.)

भा० पलहदेव जो रायबरार का बड़ा पोता था वह शेरशाह बादशाह के समय में मुसलमान बनाया गया था।

युक्त प्रदेश के बुलन्दशहर जिले में जो भाले सुलतान नवमुसलिम है वे परपाटन गुजरात के सोलंकी राजा सिद्धराव जैसिंह के वंशज हैं। यह लोग बादशाह शाहबुद्दीन के समय में मुसलमान बनाये गए थे और बादशाह शाहबुद्दीन के दरबार से भी इन्हें Lord of Lace की पदवी मिली थी। गुजरात के सारंगदेव के वंशज भी इन्हीं में सम्मलित हैं। महाराज हमीरसिंह का पोता कन्नौज के महाराज जयचंद राठोर के उच्च पदस्थ कर्मचारियों में से एक था जिस समय जयचन्द ने महाराज पृथ्वीराज के विरुद्ध बादशाह शाहबुद्दीन गोरी को बुलाया तब इन्हें भाले सुलतान की पदवी दी गई थी। हमीरसिंह की सातवीं पीढ़ी में महाराज कीरतसिंह हुए हैं जिन्होंने बादशाह गयासुद्दीन की सहायता करके जागीर प्राप्त की थी। इस ही कीरतसिंह की सातवीं पीढ़ी में खानचंद एक हुआ है उस समय तैमूर खानदान का राज्य था और खिजिरखां मुसलमान बादशाहों की फौजों का गवरनर था उसके दबाव से खानचंद सकुटुम्ब मुसलमान कर लिया गया।

फैजाबाद में जो भाले सुलतान हैं वे डुंडिया खेड़ा के राव राजा मरदानसिंह जी बैस राजपूत के वंश में से हैं यह सुलतांपुर के जिले में इसौली परगने के पास वाले गंजनपुर में राज्य

करते थे और राज भाड़ों के किले को अपने आधीन कर लिया था। राव मरदानसिंह का बेटा देहली के बादशाह के यहां जा कर नौकर हो गया और चूंकि वह बहुत बली और बड़ा अच्छा घोड़े का चढ़ाक था इसलिये बादशाह ने उन्हें भाले सुलतान की पदवी थी।

इस ही का बेटा बरनदेव जो राजा कहलाता था उसे बादशाह ने प्रसन्न हो कर खानज़ादा की पदवी दी थी तब से उस के वंशज खानज़ादा कहे जाकर पुकारे जाने लगे।

इस प्रकार से युक्त प्रदेश के भाले सुलतान राजपूतों की ऐसी भिन्न भिन्न स्थितियें थीं। आजकल भी यह लोग हिन्दू और मुसलमान भेद से दोनों ही तरह के हैं बहुत सी जगह भाले सुलतान शुद्ध राजपूत वंश ही हैं और बहुत से स्थानों में यह लोग किसी समय में जबरदस्ती मुसलमान कर लिये गए थे ये नवमुसलिम राजपूत हैं परन्तु हमने अन्वेषण करके पता लगाया है कि जो अब तक राजपूत बने हुए हैं वे तो राजपूत हैं ही परन्तु जो मुसलमान भी बना लिए गये थे वे अब तक नाम मात्र के ही मुसलमान हैं क्योंकि इनकी रीति भांति अभी तक बहुत कुछ क्षत्रियों से मिलती जुलती सी हैं और इनमें अभी तक पूर्ववत् राजपूती अहंकार बना हुआ है इसलिए यह लोग शुद्ध किये जाने के योग्य हैं हम हिन्दू समुदाय से भी आशा करते हैं कि इन लोगों को सदा के लिये गौरक्षक बना लेना चाहिए।

युक्त प्रदेश में इनकी लोक संख्या इस प्रकार से है:—

युक्त प्रदेश में भाले सुलतानों की लोक सख्या

नाम ज़िला	हिन्दू	नवमुसलिम	जोड़
सहारनपुर	१७	२७	४४
मेरठ	२०	०	२०
बुलन्दशहर	६३७०	४७९०	१११६०
आगरा	५९	३	६२
फर्रुक्खाबाद	९	६	१५
मैनपुरी	३६	०	३६
बदायूं	११	०	११
शाहजहांपुर	९	०	९
पीलीभीत	१९	४	२३
कानपुर	११	७५	८६
फतेहपुर	३	०	३
बाँदा	१	०	१
इलाहबाद	३२४	१८	३४२
ललितपुर	२	२	४
बनारस	१५	८६	१०१
जौनपुर	२५	३	२८
गाजीपुर	०	७	७
गोरखपुर	३५	६४	९९
बस्ती	१५५	५३	२०८
आजमगढ़	१२२	२९	१५१
लखनऊ	१७	२८३	३००
उन्नाव	५	३८	४३
रायबरेली	३५७	३७२	७२९
सीतापुर	२०	२३	४३
खेड़ी	३	१०८	१११
फयजाबाद	७५७	६८७	१४४४

गोंड़ा	४०६	३५२	७५८
बहराइच	१०८	२७१	३७९
सुलतानपुर	८०१६	४६०७	१२६२३
परतावगढ़	४९	१७	६६
बाराबंकी	३२९	७३५	१०६४
जोड़	१७३२०	१२६७०	२९९९०

५४—भिश्ती

यह एक मुसलमान जाति है, जिस प्रकार हिन्दुओं के यहां कहार, महरे जलादि की सेवा करते हैं, तदनुसार मुसलमानों में भिश्ती। असल में ये लोग सक्का कहाते थे जो अरबी के सक्के शब्द से बना है, जिसका कि अर्थ पीने का पानी देने वाले के हैं। परन्तु इन लोगों ने अपना बड़प्पन का नाम भिश्ती इस कारण से रक्खा है, कि जिससे इनकी प्रतिष्ठा बढ़े। 'वहिश्त' फारसी में बड़े सुख को कहते हैं और जो इस सुख को भोगे, वो वहिश्ती वहिश्ती कहाते कहाते आज कल का प्रचलित शब्द भिश्ती हो गया। सक्का एक छोटे से नाम से

नाम से इतना बड़ा नाम कहाने को इन लोगों को कैसे सूझी, इसके सम्बन्ध में इतिहास वेत्ताओं ने एक आख्यायिका लिखी है कि एक दफे बादशाह हुमायूं युद्ध करते करते रात्रि को शेर-शाह से हार कर भागे, पीछे शेरशाह के सिपाहियों को आता देख सामने बहती हुई नदी में ही प्राणरक्षा के निमित्त कूद पड़े डूबने को ही थे कि एक भिश्ती ने मशक फुलाये जो नदी पार कर रहा था इन को अपनी मशक के सहारे नदी पार कर दिया दूसरे पार जा कर शत्रुओं से अपनी प्राण रक्षा देख प्रसन्न हो हुमायूं ने उस सक्के से कहा कि बता, तू क्या चाहता है इस पर उस सक्का ने बादशाह से अपनी एक बात पूरी करने का बर मांगा इस पर बादशाह ने उसे बचन दिया कि जो मांगोगे सो देंगे, इस पर सक्का ने आधे दिन का राज्य मांगा, इस पर बादशाह ने उसे शाहीतख्त पर बिठा कर आधे दिन के लिये सर्वाधिकार सम्पन्न बादशाह बना दिया, वह बादशाह बन कर के बहिश्त सुख प्राप्त करने लगा और अपनी जाति भर का नाम बहिश्ती रक्खा जो आज कल भिश्ती कहाते हैं इसी भिश्ती बादशाह ने अपनी मशक को फाड़ कर सिक्के के मानिन्द छोटे छोटे टुकड़े करवाये और हज़ारों थान चमड़े के मंगवा कर जिन्हें सिक्का नुमा कटवा कर उन पर गिल्ट चढ़वाई और सोने की कील लगवा कर व उस पर अपने नाम की मुहर में साल संवत् के लगवा कर अपने नाम का राज्य भर में सिक्का चला दिया और उतने से ही समय में अपने इष्ट मित्र, नातेदार, रिश्तेदार और कुटुम्ब कबीले वालों को खूब धन दौलत ज़मीन ज़ायदाद और खिल्लतें बख्श दीं। उस समय हुमायूं की राज-धानी आगरा थी तहां ही ये भिश्ती महाशय भी आधे दिन के लिये बादशाह बने थे।

इनके भेद उपभेदों पर दृष्टि डालने से पता चलता है कि इनमें बैस, बंजारा, भट्टी, चौहान, गौड़, गूजर, ग्वाल, जादों, जांगड़ा, जाट, केथरिया, पंवार और तोमर आदि आदि क्षत्रिय-वंशों का समूह है। जिनके विषय में देहरादून के भूतपूर्व कलेक्टर मिस्टर सी० एस० डब्ल्यू० सी० अपनी रिपोर्ट में ऐसा ही कह गये हैं। जाति और क़ौम नामक ग्रंथ रचयिता विद्वान् ने लिखा है कि ये लोग अपने मुर्दों को गाड़ते हैं परन्तु हिंदुओं की भांति श्राद्ध आदिक भी करते हैं। अपनी मश्क का पूजन भी करते हैं और उसके धूप देते हैं। ये लोग उच्च जातीय हिन्दुओं के यहां की बनी हुई रोटी, दाल खा लेते हैं, पर नीच जातियों के यहां को नहीं। इसी तरह इनके रीति भाँति, रहन सहन, खान पान और चलन त्यौहार और बहुत सी बातों में हिन्दुओं से मिलता जुलता ही है परन्तु हिन्दुओं में शुद्धि का अभाव होने के कारण ये लोग हिन्दुओं के कट्टर दुश्मन बने हुये हैं जो हिन्दुओं के प्रति अज्ञानमयी वार्ता है।

भिश्तियों की लोक सख्या भारतवर्ष में बहुत अधिक हैं। तथापि राजपूताना, पंजाब, सिंध प्रदेश और युक्त प्रदेश में ये लोग विशेष रूप से हैं। अकेले युक्त प्रदेश में इनको जन संख्या ८०१३७ है जिनमें से अलीगढ़ में १२२७८, सहारनपुर में ४२०३ मुजफ्फ़रनगर में ४६२०, मेरठ में १०२२४, बुलंदशहर में ७६७७, मथुरा में [illegible], आगरा में १०१७२, मैनपुरी में ११११, एटा में ४२६५, बरेली में १६६६, बिजनौर में ३४७६, बदायूं में २१०७, मुरादाबाद में ३३८० और लखनऊ में ११४०५ हैं जिन जिन जिलों में १ हज़ार से कम की आबादी थी उन उन ज़िलों की लोक संख्या को हमने छोड़ दिया है।

जोधपुर में मुसलमान भिश्ती स्त्री पुरुष सब मिला कर क़रीब एक हजार के हैं। राजपूताने में भिश्ती लोगों की औरतें हिन्दू औरतों की तरह घाघरे लूगड़ी भी पहनती हैं। राजपूताने में सक्कों की खांपें परिहार, चौहान और भाटी वग़ैरः हैं अपने लड़के लड़कियों का सम्बन्ध करते समय ये लोग गोत (गोत्र) नात भी टालते हैं। ये लोग मश्क की बड़ी प्रतिष्ठा करते हैं खाली मश्क लिये हुये कभी पेशाब नहीं करते इसी तरह ये लोग तस्मे का भी बहुत ख्याल रखते हैं कमर पर एक लाल कपड़ा बांधे रहते हैं जिससे पानी भरी मश्क कमर पर रक्खी हुई ना पाक पाजामे से न छूने पावे।

सक्का ओछी बोली है, भिश्ती और जमादार इनके लिये एक प्रतिष्ठित नाम हैं। राजपूताना प्रदेशान्तर्गत मारवाड़ प्रदेश में मश्क और पखाल का पानी बड़ी बड़ी हिन्दू जातियां पीती हैं।

अर्थात् भिश्ती लोग मश्क व पखाल द्वारा पानी लाते हैं और हिन्दू लोग अपने मटके और कलशों को नीचे रख देते हैं भिश्ती लोग अपने मश्क व पखाल का मुंह खोल कर ऊंचे से उनमें पानी भर देते हैं। जैसा कि आजकल नलों में से पानी भर लिया जाता है। वहां ये चर्म जल कहलाता है। हिंदू कहार व अन्य हिंदू जातियें जो पीतल लोहे के डोल रस्सी आदि द्वारा कुओं से खेंच कर पानी लाते हैं वह ब्रह्म जल कहाता है परंतु मारवाड़ में विशेष रूप से चर्म जल का ही प्रचार है।

प्यारे हिंदुओ! ज़रा सोचो और श्री कृष्णचन्द्र भगवान को हृदय में स्मर्ण करके ज़रा विचारो तो सही कि आप लोग गोरक्त-रञ्जित यवनों के हाथ के छूये जल को तो बड़ी प्रसन्नता

से ग्रहण करते हो और कुछ परहेज़ नहीं करते पर परहेज़ करते हो गो.सेवक बिचारे अछूतों के हाथों से कहो यह कैसी विछि-अता है? अस्तु !!!

अनुमान एक हजार वर्ष पूर्व जब भारत में मुसलमानों का नाम निशान भी नहीं था तब यह भिश्ती नामक नौमुसलिम जाति भी नहीं थी परंतु मुसलमानी अत्याचार से डर कर व बादशाह के कृपाभाजन होने की इच्छा से राजपूत मुसलमान बन कर विपत्तिवश भिश्तीपना करने लगे अतएव ये सब हमारे हिन्दू भाई ही थे ऐसे नौमुसलिम भिश्ती भारत के एक अकेले युक्त प्रदेश में ८०१३७ हैं जो सब शुद्ध कर लेने चाहियें।

५५ भुर्जी, भुंजवा, भूंजिया, भड़भूंजा व भाड़भूंजा कन्दु कन्दोई व हलवाई—

यह एक हिन्दू जाति है, शास्त्रीय प्रमाणों से यह जाति वैश्य वर्ण की है पर भारत में मुसलमानी अत्याचार फैलने से एक बड़ा भारी क्षत्रिय समुदाय भी प्राण-रक्षार्थ भुर्जी का धंदा करने लगा जिससे वे भी भुर्जी कहे व माने जाते हैं पर वे केवल धन्दे मात्र के भुर्जी हैं अन्यथा उन्हें क्षत्रिय धर्मानुसार चलना चाहिये।

प्रसंग वश हम भी दोनों ही प्रकार के भुर्जियों का कुछ विवर्ण देते हैं कहने का भाव यह है कि भुर्जियों में क्षत्रिय वर्णस्थ समुदाय भी है। अन्वेषण करने से पता चला है कि भुर्जियों में क्षत्रियत्व सूचक ये खांपें हैं यथाः—

१ पंवार, २ भाटी, ३ चौहाण, ४ सोलंकी, ५ मेढ़, ६ भदोरिया, ७ कायस्थ, ८ क्षत्रिय, ९ राठोर, १० बाथम, ११ भटनागर, १२ धनकुटा और १३ तोमर आदि इससे निश्चय होता है और कई ऐतिहासिज्ञों ने लिखा भी है कि क्षत्रियों का एक बड़ा समुदाय विपत्तिवश भुर्जियों में मिल गया।

जैसा हम ऊपर लिख आये हैं भुर्जी जाति वैश्य वर्ण में है यथाः—

क्लीवऽम्बरीषं भ्राष्ट्रो ना कन्दुर्वा स्वेदनी स्त्रियाम्।

कोषकार के इस प्रमाणानुसार कन्दु और स्वेदनी ये दोनों नाम भट्ठी व भाड़ के हैं और इसके द्वारा काम करने वाली

जाति भुजीं कन्दु व कन्दोई, हलवाई ये तीनों जातियें वैश्य वर्ण की हैं इन्हें अपने सब कर्म वैश्य धर्मानुसार करने चाहियें।

देश भेद व देश भाषा की भिन्नता के कारण तथा प्रान्त २ की स्थिती के अनुसार वैश्य जाति के लोग कोई कहीं कन्दु कहीं कन्दोई, कहीं हलवाई और कही भुर्जी कहे जाने लगे ये सब संज्ञायें धन्दे के कारण से बनी हैं।

राजपूताना प्रदेश्थ मारवाड़ प्रदेश में मिठाई बनाने वाले वैश्यों को कन्दोई कहते हैं जो कन्दु शब्द से बना प्रतीत होता है क्योंकि 'कन्दु' नाम भट्टी के हैं और भट्टी द्वारा जो जीविका करे वह कन्दोई कहाया।

राजपूताने में साधरणतया कोई भी वैश्य मिठाई पूरी की दुकान करे तो वह हलवाई कहा जाता है, पर युक्त प्रदेश में वैश्यों का एक समुदाय ऐसा है जो अपने को जाति से हलवाई मानते हैं इनको ओर के कोई कोई ट्रेक्ट व पेम्फलेट किंचित से काल के लिए हमारे देखने में आये थे पर उनमें ऊटपटांग के अतिरिक्त सार कम था। युक्त प्रदेश में इस जाति का अन्य जातियों के साथ वैश्यवत् व्यवहार है।।

हलवाई व भुर्जी तथा कन्दू में कुछ विशेष भेद नहीं है किंतु साधारणतया ये तीनों भिन्न भिन्न नाम वाली जातियें एक ही वैश्य वर्ग की हैं और विशेषांश में समानता रखती हैं, हां यदि कुछ भिन्नता है तो केवल धंदे मात्र की अर्थात् जौ, चने, चावल आदि आदि अन्नों को भूंजने (सेकने) से भुर्जी कहा जाता है। मिठाई आदि बना कर बेचने से कन्दू, कन्दोई व हलवाई कहे जाते हैं हमने अपने भ्रमण व अन्वेषण में यह भी देखा है कि

इन तीनों ही जातियों के कई लोग बड़े बड़े व्यापार करते हुये देखे गये हैं अतएव ये लोग वैश्य धर्मानुसार चले आ सकते हैं।

भुर्जी जाति को किसी किसी ने शूद्र बतलाया है पर यह ठीक नहीं क्योंकि यदि ये शूद्र होते तो इनके हाथ का भुना हुआ चबेना स्वीकार नहीं किया जाता पर जब बड़े बड़े ब्राह्मण लोग भी इनके हाथ का चबेना निधड़क रूप से स्वीकार कर लेते हैं तब ये शूद्र कैसे ? फिर भी यदि कोई कहे कि चबेने में पानी का संसर्ग नहीं होता अतएव शूद्र के हाथ से भुना हुआ भी ग्रहण किया जा सकता है पर यह शंका ठीक नहीं जब जवों की धानियें सिकायी जाती हैं तब पहिले जौ भिगो दिये जाते हैं और फिर वे भुनाए जाते हैं तब धानियें होती हैं। इस ही तरह जब चने भुनाये जाते हैं तब उसके एक ताव भुर्जी लगा देता है फिर उस पर पानी का हलका छींटा देकर वे चने दुबारा भूने जाते हैं तब वे खिल जाते हैं और राजपूताने में भूगड़े कहाते हैं। यही नहीं मक्का के परमल जब बनाये जाते हैं तब पहिले मक्का को उबाला जाता है और फिर उसको कुछ सुखा कर भुनवायी जाती है तब वह भुनी हुई मक्का परमल कहाती है, इस ही तरह चावलों को रांध कर व उन्हें सुखा कर फिर उन्हें भुनवाते हैं तब वे 'मुरमुरे' कहाते हैं अतएव जब हिन्दू मात्र निर्बिवाद रूप से भुर्जियों के हाथ के भुने हुये भूगड़े धाणी, परमल और मुरमुरे निस्संदेह रूप से हिन्दू समुदाय ग्रहण करता है तब यह कैसे कहा व माना जा सक्ता है कि भुर्जी जाति शूद्र वर्ण में है इससे इनका वैश्यत्व ही प्रतिपादित होता है।

सरकारी रिपोर्टों के अन्वेषण से इस जाति के ३६४ भेदों

का पता लगता है परन्तु सब का यहां उल्लेख करने से ग्रन्थ बढ़ जायगा अतएव इस जाति के मुख्य भेद ये हैं :—

भदोरिया	खत्री	अवधिया	गंगापारी
चौबे	लोधी	वाथम	हमीरपुरिया
चौहाण	राठोड़	श्रीवास्तव	कन्नोजिया
कोजर	बधिक	भटनागर	जौनपुरिया
कायस्थ	तेलियाबंश	देशी	मथुरिया
अगरवार	कैथिया	कन्दू	सकसेना
जगजादों	धीवरिया	मगहैया	मधेसिया
ढोंगासिया	तिलभुंजा	धनकुटा	आदि

भावार्थ—भदोरिया क्षत्रियों का एक प्रसिद्ध भेद है, जो भड़भूजियों का कार करने से भड़भूजे कहे जाने लगे। जो वैश्य वेद पढ़ कर विद्वान होते थे उन्हें चौबे की पदवी मिली थी। वेही उन्हीं की निरक्षर सन्तान भी अब केवल भड़भूजे का काम करके चौबे भड़भूजे कहे जाते हैं। चौहान यह प्रसिद्ध राजपूत वंश है पर विपत्तिवश कुछ समुदाय भुर्जीपने से निबाह करते रहने से चौहान शाखा के राजपूत भी भुर्जी समझे जाने लगे, कायस्थ जाति के लोग भी इस जाति में मिल गए, यदुवंशो राजपूत जो जगतदेव के वंशज थे वे विपत्तिवश राजपूतों से अपने को भड़भूजे बना कर छिपाया था इससे जगजादों भी भड़भूजों का एक भेद हुआ। खत्री जाति के लोग जो इनका धन्दो करने लगे उनका भी एक भेद 'खत्री' हुआ। राठोर राजपूतों पर विपत्ति के बादल बहुत ही छाये थे अतएव ये लोग इनमें मिल कर अपनी प्राण-रक्षा कर सके थे, अगरवार, अग्रवाल वैश्यों से अगरवारे कहाये लिखा है:—

To the east of the Province they are usually of the Vaishnav Sect.

अर्थात् पूर्व में ये लोग विशेष रूप से वैष्णव सम्प्रदायी हैं यही कारण है कि इन के हाथ के भुने अन्न ग्रहण किये जाते हैं। पुनः लिखा है :—

All high Castes can eat Pakki from their hands. They will not eat Kachchi Cooked by any Caste, but their own, and will take Pakki Cooked by any Brahmin.

(C & T P 115)

भा० इस जाति की हिन्दू समुदाय में कैसी स्थिती है इसका वर्णन करते हुये सरकारी अफसर ने लिखा है कि सम्पूर्ण हिन्दू जातियें इनके हाथ का पक्का भोजन ग्रहण कर लेते हैं, ये लोग अपनी जाति के अतिरिक्त किसी दूसरे के हाथ का बना कच्चा (सखरा) भोजन नहीं करते हैं पर ब्राह्मण के हाथ की बनी कच्ची रसोई ये लोग खा लेते हैं। इससे यह सब प्रणालियें वैश्यों की ही हैं इसलिए यह जाति वैश्य वर्ण में है ऐसा निश्चय होता है।

इस जाति में एक समुदाय जो थोकबन्द चवेना बेचने के व्यापारी होते हैं वे चर्वन-फरोश कहे जाते हैं जो लाई चिड़वा व खील के बड़े व्यापारी होते हैं।

इस जाति के लोग जो साधारण स्थिति के हैं रात दिन भाड़ में अन्न भूंजते रहने के कारण रंग में कुछ काले व वस्त्रों से श्याम हो जाते हैं क्योंकि हलवाई, भड़भूजा और कन्दू इन का धन्दा ही रात दिन भाड़ व भट्टी की राख व धूंआ-धोर में रहना सहना है अतएव इनके कपड़े साफ़ नहीं रह सकते अत-

अब जब कोई ग़रीब आदमी चटक मटक के साथ शृंगार कर के बाहर निकलता है तब लोग उसे यह कहावत सुनाते हैं— 'भड़भूजे की लड़की और केशर का तिलक' अर्थात् भड़भूजे की लड़की प्रायः भाड़ झोंकने में लगी रहती है वह यदि केशर का तिलक लगावे तो कितनी देर के लिए अर्थात् भाड़ की धूंआ-धोर के कारण वह तिलक भी तत्काल काला व गदमैला हो जायगा।

हलवाई व कन्दु जैसा पहिले कहा जा चुका है कि हलवाई व कन्दु ये दोनों नाम एक ही हैं केवल देश भेद व देश भाषा के कारण ये लोग कहीं कन्दु कहीं कन्दोई और कहीं हलवाई कहे जाते हैं वास्तव में ये एक वैश्य वर्ग की जातियें हैं यथाः—

आरालिका आन्धसिकाः सूदा औदंनिका गुणाः
आपूपिकः कान्दबिको भक्ष्यकार इमे त्रिषु ॥२८॥

भा० आपूपिक कान्दविक और भक्ष्यकार ये तीन नाम शास्त्रों में हलवाई के वर्णित किये हैं कन्दु व कान्दविक भी इस प्रमाण से एक ही सिद्ध होते हैं। पूर्व भुर्जी जाति के साथ जो प्रमाण दे आए हैं उससे व इससे भुर्जी कन्दु और हलवाई एक ही वर्ग की जाति सिद्ध होती हैं। फयजाबाद के भूतपूर्व कलेक्टर ने लिखा है:—

A tribe usually classed as at the last census as a Sule Caste of Banyas

The Kandus are reckoned among the Vaishyas although a great part of them are mere farmers.

(E. India Vol 11P. 465)

भा० कन्दु लोगों की गणना वैश्यों में है। सरकारी मनुष्य गणना में यह उस स्थान पर लिखी गई है जहां Castes of good Social Position distinctly Superior to that of the remaining groups.

भा० वे जातियें जो पूर्व लिखित श्रेणी की जातियों की अपेक्षा नितान्त उच्चपदस्थ हैं ।

॥ उप भेद ॥

सुखसेज्या	बहलीम	किसनगोती
सोलंकी	पंवार	सायद

इन में यद्यपि मुख्यतया भड़भूजे का काम ही होता है तथापि इनके रहन सहन के ढंग से ये लोग उच्चवर्ण दिखते हैं ।

बंगाल बिहार में

१ मधेसिया	५ कन्नोजिया	६ रवानी
२ मगहिया	६ गोनर	१० बल्लमतिरिया
३ बंतारिया	७ कोरंच	११ थाथेड़
४ भाड़भूजा	८ धुरिया	१२ ठठेरा

युक्तप्रदेश में

१ कन्नोजिया	५ मूलकुरी	६ खोपाडीहा
२ मधेसिया	६ खुला	१० दखाइच
३ गुनियाथी	७ गंगापारी	११ चंचरा
४ टंचरा या तचरा	८ बेलवार	१२ गुड़िया

इन लोगों में भिन्न २ स्थानों में रहने से इनके धन्दे में कुछ फर्क भी होगया है जैसे कन्नोजिये व मधेसिये तो नाज भूंजने का काम करते हैं, गोनर लोग पत्थर काटने का काम करते हैं-मधेसिया और बंतीर हलवाईपना व नाज भूंजने का दोनों काम करते हैं कन्नोजिया शोरा बनाते हैं- मधेसिया व गुड़िया प्रायः खेती करते हैं ।

करोंच लोग छप्पर छान झोपड़े बांधने व बनाने का तथा मिट्टी के घर बनाने आदि की राजगीरी भी करते हैं, धुरिया व वानी पालकी उठाते हैं

इन उपरोक्त सब का धर्म सामान्यतया वैश्नव तथा विशेषतया शाक्तिक है।

बिवाह प्रणालि इन में कुल को छोड़ कर मूलकुरी को त्यागकर तथा अपनी मा दादी व नानी के गोत्र को छोड़ कर ये लोग योनि सम्बन्ध करते हैं ।

हलवाई व कन्दोई

कन्दु शब्द से कन्दोई भी मारवाड़ में हलवाई को कहते हैं। यह जाति वैश्यवर्ण में है यद्यपि यह एक धन्दे विशेष के कारण जाति समझी जाति है अन्यथा इस नाम की कोई जाति नहीं क्योंकि यह शब्द मिठाई पूरी बनाकर बेचने वाले के प्रति काम में आता है कोई भी मिठाई पूरी व हलवा बनाने बेचने का का धन्दा करे पर वह 'हलवायी' ही कहाने लगता है ऐसे ही मारवाड़ में हलवाई का नाम कन्दोई है अधिकतर अन्वेषण करने से अग्रवाल वैश्य प्रायः हलवायी देखे जाते हैं जिनके हाथ की मिठाई पूरी प्राय: सम्पूर्ण उच्च हिन्दु समुदाय निर्विवादरूप से ग्रहण करलेते हैं इस लिये विशेष रूप से यह धन्दा वैश्यवर्ग करता देखा गया है, कहीं २ कोई कोई ब्राह्मण लोग भी हलवायी गीरी करते पाये गये हैं

पर युक्तप्रदेश में वैश्यों का एक समुदाय है जो अग्रवाल वैश्यों के अन्तर्गत बतायागया है पर वे वहां एक अलग जाति ही माने जाते हैं अर्थात् उनको जाति का नाम ही वे हलवायी बताते हैं हमने अपने भ्रमण में युक्तप्रदेशान्तर्गत स्थित इस समुदाय का अन्वेषण किया तो ये लोग वहां अन्य उच्च वैश्यों की तरह माने जाते हैं और सब लोग इन के यहां की दुकान की मिठाई पूरी ग्रहण करते देखे गये अतएव ये शुद्ध वैश्य प्रमाणित हुये।

मोदनस्य च वंशाये मोदकानां प्रकारक :
वैश्य वृत्तिसमासाद्य संजाता: पृथिवी तले ॥

अर्थः— मनु के वंश में से मोदन के वंशज मिठाई बनाने वाले 'हलवायी प्रसिद्ध हुये जो वैश्यवृत्ति धारण करने से वैश्यवर्णी माने गये ।

इस जाति के दोचार चलते पुर्जे लोगों ने अपनी जाति में नाम कमाने की इच्छा से दो चार सड़ीसी पुस्तिकायें लिख मारी हैं तिन में कहीं की ईट कहीं का रोड़ा और भानमती ने कुनबा जोड़ा के समान कुछ भी सार नहीं है

अतएव उन का यहां नामोल्लेख करने की हम आवश्क्ता भी नहीं समझते ।

हमारे अन्वेषण से मिलती जुलती सी कई अन्य विद्वान की सम्मतियें भी हैं ।

यथा:—

They are often Confounded with kandus.

ये प्रायः कन्दु जाति के साथ मिलते जुलते से हैं पुनः—

A tribe usually classed as at the last Census as a Sub caste of Banias. (T & C. P. 130)

[illegible] यह कौम जो बनियों की एक उपजाति मनुष्यगणना' [illegible] है। मनु० अ० ५ श्लोक १२९ के अनुसार सदैव [illegible] हलवायी का हाथ, दुकान पर फैलायी हुयी वस्तु, [illegible]री की भिक्षा ये सर्वदा पवित्र हैं, इस से निश्चय होता है कि जो पीढ़ी दर पीढ़ी हलवायी गीरी करते चले आये हैं अथवा इस धन्दे के कारण जिन की जाति ही "हलवायी" सैकड़ों वर्षों से लिखी आरही है वे निस्सन्देह रूप से शुद्ध वैश्य हैं ऐसा मानना पड़ेगा ।

समय के बदलाव के साथ २ हलवायी जाति के पैतृक धन्दे में भी कुछ भिन्नता आगयी जैसा कि आजकल अन्य २ उच्चवर्णों में यथाः—

Making of Confectionery is the special business of this (Halwai) Caste, but some have taken to agriculture and a good many to money lending & other merchantile business.

भा०—यह [illegible] कलेक्टर की सम्मति है कि मिठाई बनाना इस हलवायी जाति का एक मुख्य धन्दा था परंतु किन्हीं २ ने कृषि करना, [illegible] व अन्य २ प्रकार के व्यापार करना भ आरम्भ करदिया [illegible]

युक्तप्रदेश की [illegible] रिपोर्ट में लिखा है

Castes of [illegible] social Position distinctly superior to that of the remaining groups.

अर्थात् हलवायी जाति उस श्रेणी में लिखी जाती है जिनका जातिपद अच्छा है तथा जो इससे पूर्व के वर्ग से उत्तम हैं।

The position of the Halwayi is shown by the act that pakka food is uneversally taken from hishands.

हलवायी जाति का पद इस ही से निश्चय होजाता है कि इन के हाथ का पक्वान्न निर्विवाद रूप से ग्रहण किया जाता है पुनः-

गोकुले कन्दुशालायां तैल चक्रेषु यन्त्रतः (अत्रि)

भा०—गौशाला, हलवायी की दुकान तथा कोल्हू ये सदैव पवित्र होते ह।

स्वर्गवासी पं० ज्वालाप्रसादजी ने अपने ग्रन्थ में लिखा है कि फरुखाबाद के समीपस्थ एक हलवायी ज[illegible] के हाथ की मिठाई पूरी कचौरी सबलोग खा[illegible]

सूचना

पाठको ! जाति निर्णय का यह पांचवां ग्रन्थ सेवा में भेट करते हुये छठे ग्रन्थ को शीघ्र प्रकाशित करने की आशा दिलाते हुए निवेदन है कि य[illegible] आपको किसी भी जाति के विवर्ण जानने की आवश्यका [illegible] निर्णय के किसी विवादास्पद विषय पर सम्मति ले[illegible] आप हमें लिखें और उत्तरार्थ -) के टिकट भें[illegible] दिया जायेगा क्योंकि हमारे पास सम्पूर्ण [illegible] संग्रह है ।

हमारे ग्रन्थों का प्रचार [illegible] चालाकों ने नकल करके हमें हानि पहुंचाय[illegible] भविष्य में ऐसा दुस्साहस कोई न करे क्योंकि ग्रन्थों का सम्पूर्ण प्रकार का अधिकार (हमारी निज की सम्पत्ति होने के कारण) हमने स्वाधीन रक्खा है ।

निवेदक—

श्रोत्रिय छोटेलाल शर्म्मा M. R. A. S. लंदन
पुरातत्व विशारद, व्याख्यान भूषण,
महामन्[illegible] हिन्दू धर्म वर्णव्यवस्था मण्डल फुलेरा जि॰ जयपुर